

तमसो मा ज्योतिर्गमय

SANTINIKETAN
VISWA BHARATI
LIBRARY

262

P97

4 724

अम्बादास चवरे दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला



सम्पादक

हीरालाल जैन, एम्. ए., एलएल. बी.
संस्कृत-अध्यापक, किंग एडवर्ड कॉलेज, अमरावती

सहायक

सिद्धान्तशास्त्री पं. देवकीनन्दनजी
महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, कारंजा

ग्रन्थ १

पुष्पदन्ताचार्यकृत यशोधरचरित

भूमिका, शब्दानुक्रमणिका व अंग्रेजी टिप्पणसहित

परशुराम लक्ष्मण वैद्य, एम्. ए., डी. लिट

संस्कृत-प्राकृत-भाषाओं के अध्यापक

फर्ग्युसन कॉलेज, पूना

द्वारा

सम्पादित

वि. सं. १९८७

JASAHARACARIU

OF

PUṢPADANTA

an Apabhraṃśa work of the 10th Century

CRITICALLY EDITED

With an Introduction, Glossary and Notes

BY

Paraśurāma Lakṣmaṇa Vaidya

M. A. (Cal.); D. Litt (Paris)

Professor of Sanskrit and allied languages
Fergusson College, Poona

1931

A copy of this volume, postage paid, may be obtained directly by sending a Postal Order of Rupees Six and annas Eight or Ten Shillings and six pence from the Secretary, Karanja Jain Publication Society, Karanja, Berar, India.

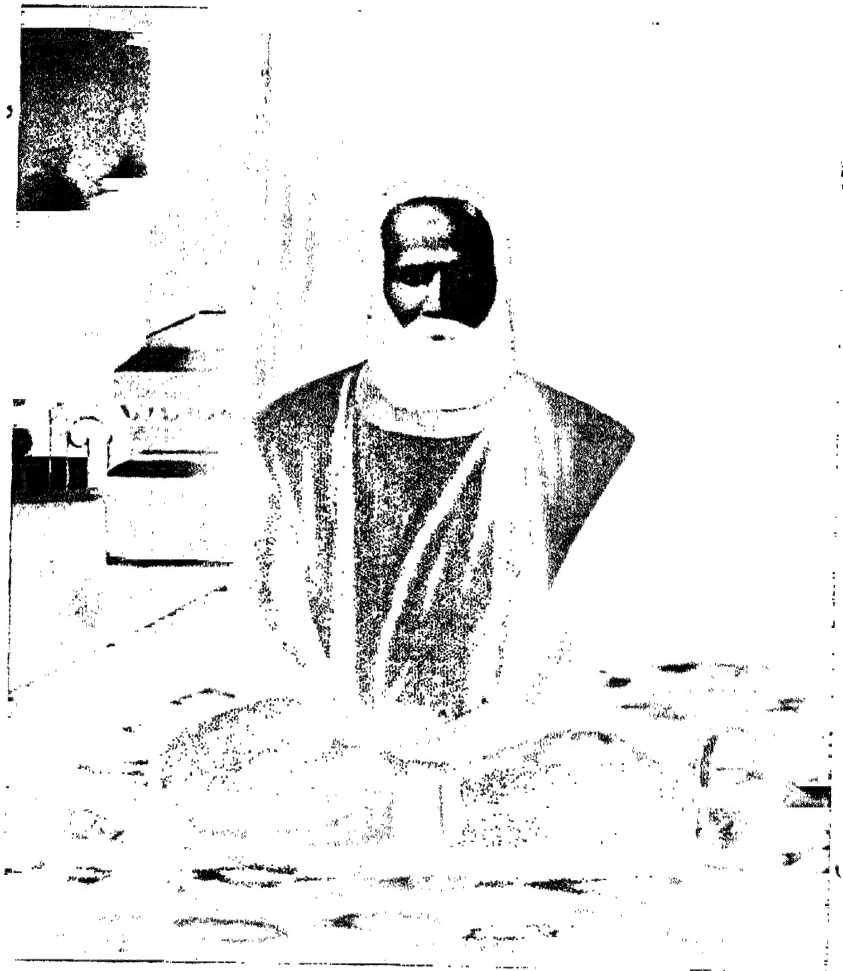


We have great pleasure in announcing that the following Apabhraṃśa works are under preparation and we hope to issue them soon in the forthcoming Volumes of this Series. Orders for Copies may be registered now with the Secretary.

1. *Karakaṇḍucariu of Kanakāmara.*
2. *Sudāṃśaṇḍacariu of Nayanandi.*
3. *Mahāpurāṇa of Puṣpadanta.*
4. *Apabhraṃśa-kathā-saṃgraha.*



Printed from type at the
Shri Ganesh Printing Works, 495-496, Shanwar Peth, Poona
and Published by
Seth Gopal Ambadas Chaware, Karanja, Berar.



श्री १०८ भट्टारक वीरसेनजी स्वामी,
सेनगण, कारंजा (बरार)

समर्पण-पत्रिका



प्रातःस्मरणीय, अध्यात्मविद्याविशारद, सद्गुरु, श्री १०८ भट्टारक

श्री वीरसेनजी स्वामी—

आपकी श्रेष्ठ अध्यात्मविद्यापर मुग्ध होकर तथा आपके उपदेशा-
मृत का आकंठ पान करके मैं जिस प्रकार आपका अतिशय व्रण व
धन्य हुआ हूं उसी प्रकार अनेक विद्वान् पंडित व मुमुक्षु लाकों के
अंतःकरण में भी आपने चिरस्थायी स्थान प्राप्त किया है। हमारे अहो-
भाग्य से हमें आप जैसी अद्वितीय विभूति प्राप्त हुई है।

अपने धर्मोपदेश से आपने जो मेरी आत्मा का कल्याण किया है
उसके लिये मैं आपका चिर ऋणी हो चुका हूं। उसी अनन्त ऋणराशि
के अल्पांश परिशोधनार्थ आपके ही सद्गुपदेश के फल-स्वरूप मेरे पूज्य
पिताजी की स्मृति में स्थापित ग्रंथमाला का यह प्रथम पुष्प 'यशोधर
चरित' आपके अर्पण करता हूं।

आपका विनम्र शिष्य

गोपाल अम्बादास चवरे



प्राथमिक वक्तव्य

जैन धर्म भारतवर्षके सबसे प्राचीन धर्मोंमें से है। इस धर्म ने देशकी सभ्यता व आचार, कलाकौशल्य और विज्ञान पर चिरस्थायी छाप लगा दी है। इस धर्म का प्राचीन साहित्य बहुत विस्तीर्ण तथा सर्वांगपरिपुष्ट है। किन्तु खेद है कि यह साहित्य अभीतक पूर्णरूप से प्रकाशित नहीं हुआ। बम्बई की माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथमाला इस ओर प्रशंसनीय कार्य कर रही है, किन्तु सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य को शीघ्र प्रकाश में लाने के लिये एक नहीं अनेक ग्रंथमालाओं की आवश्यकता है।

हमें यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि कारंजा के उदार तथा धर्मिष्ठ श्रीमान् सेठ गोपाल साहुजी चवरे ने अपने पूज्य पिता अम्बादास साहुजी चवरे की पुण्यस्मृति में उनके नाम से एक 'जैन धर्मोन्नति फंड' खोला है, जिसमें उन्होंने बीस हजार रुपया प्रदान किया है। धर्म की उन्नति के लिये प्राचीन जैन ग्रंथोंका सुचारु रूप से प्रकाशन व प्रसार आवश्यक जान सेठजीने इस द्रव्य के व्याज से 'अम्बादास चवरे दिगम्बर जैन ग्रंथमाला' प्रकाशित करने का निश्चय किया है व इस हेतु एक समिति भी बना दी है। इस ग्रंथमाला में मूल प्राचीन संस्कृत व प्राकृत ग्रंथ उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा वैज्ञानिक शैली से सम्पादित कराकर प्रकाशित किये जायेंगे जिससे उन ग्रंथों का देश व विदेश में आदर हो सके, वे विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं में पाठ्य पुस्तकें नियुक्त की जा सकें तथा उनके द्वारा विद्वान लोग पुस्तक की खोज कर सकें। कारंजा तथा अन्यस्थानों के शास्त्रमंडारों में जो बहुसंख्यक ग्रंथरत्न छिपे हुए हैं उनकी जगमगाती हुई ज्योति को इस ग्रंथमाला द्वारा संसार के सम्मुख प्रस्तुत करनेका उक्त समिति प्रयत्न करेगी।

इस ग्रंथमाला का प्रथम पुष्प 'यशोधर चरित' प्रस्तुत है। इसके कर्ता विक्रमकी ग्यारहवीं शताब्दि के महाकवि पुष्पदन्ताचार्य हैं। ग्रंथ की कथा वही यशोधर महाराज का पवित्र चरित्र है जिसका वर्णन सोमदेवादि अनेक आचार्यों ने संस्कृत में किया है। भाषा की दृष्टि से यह ग्रंथ बड़ा महत्वपूर्ण है। उसकी भाषा वह अपभ्रंश प्राकृत है जो आज की प्रचलित हिन्दी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं की जननी है तथा जिसके ग्रंथों के लिये विद्वत्समाज लालायित हो रहा है।

इस ग्रंथ का सम्पादन फर्ग्युसन विद्यामंदिर के संस्कृत व अर्धमागधी आदि प्राकृत भाषाओं के अध्यापक तथा अनेक प्राकृत संस्कृत जैन ग्रंथों के सम्पादक डॉ. परशुराम लक्ष्मण वैद्य, एम्. ए.; डी. लिट्. द्वारा हुआ है। आपने अनेक हस्तलिखित प्रतियों परसे संशोधन करके ग्रंथ को प्रचुर पांडित्यपूर्ण तथा विद्वानों द्वारा संप्राह्य बनाया है।

जसहरचरित

जिनकी अनुमतिसे गोपाल साहुजीने उक्त उदार कार्य किया है तथा जिनके सदुपदेशके फल-स्वरूप आज कारंजा में श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम, चवरे दि. जैन बोर्डिंग, जे. डी. चवरे, ए. व्ही. स्कूल, तथा जे. जी. चवरे, हायस्कूल नामक धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाएँ दृष्टि पड़ती हैं उन्हीं अध्यात्मप्रेमी श्री १०८ वीरसेन स्वामी भट्टारकको यह ग्रंथ समर्पित किया गया है। उक्त कार्योंके लिये जैन समाज स्वामीजीका चिर ऋणी रहेगा।

हमे यह प्रकट करते हुए असह्य दुःख होता है कि गोपाल साहुजीके बन्धु, बरार दि. जैन समाजके आधार ओर आभूषण तथा हमारी समितिके एक मान्य सदस्य व इस ग्रंथमालाको जन्म देने में भारी प्रयत्न करनेवाले श्रीयुक्त जयकुमार देवोदासजी चवरे वकीलका ग्रंथमालाका यह प्रथम पुष्प प्रस्फुटित होनेके पूर्वही हमसे वियोग हो गया। आपके वियोगसे हमारी समिति तथा जैन समाजको जो क्षति पहुंची है उसकी पूर्ति होना कठिन है !

विद्वत्समाज से प्रार्थना है कि आगे संस्कृत, प्राकृत व अपभ्रंश भाषाके चुने हुए ग्रंथोंको सर्वांगसुंदर और पूर्ण बनाकर प्रकाशित करने में हमे सहयोग प्रदान करें।

हीरालाल जैन



श्रीमान् गोपाल अंबादासजी चवरे
कारंजा (अकोला)

जन्म

२७-२-१८८५



स्वर्गवासी श्रीमान् अंबादास गंगासावजी चवरे
कारंजा (अकोला)

जन्म

२३-८-१८५६

स्वर्गवास

२४-९-१९२३

Mrs. J. C. ...
 ...
 ...



Mrs. J. C. ...
 ...
 ...



A NOTE

BY THE GENERAL EDITOR

JAINISM is one of the most ancient religions of India. It has played a great part in the cultural development of the Indian people. "Ahimsā paramo dharmah" or 'Non-violence is duty par excellence' is the sine-qua-non of this faith which has always stood for universal peace and brotherhood. It has sought to accommodate the different view-points in the domain of thought as well as of action by its philosophy of Anekānta. It has attempted to afford equal opportunities of material and spiritual advancement to all irrespective of the incident of birth and it has tried to avoid clashes of worldly interests by placing spiritual well-being above material gain.

It may appear from this that a faith so pre-eminently spiritual would be unsuited for the development of art and science. But the contributions of Jainism to these departments are also by no means small. Building temples and setting up images for worship forms an important item of the faith amongst the Jain laity and this brought about the introduction of some special features in the architecture and sculpture both in Northern and Southern India where their numerous temples and statues still excite the devotion and admiration of the worshippers and the scholars alike. Books have also been produced on these as well as on the other fine arts such as painting and music. With still greater attention and success have the Jains cultivated the highest of the fine arts—poetry, which is fully represented in their literature in all its branches. Hand in hand with poetry they have produced numerous important works on such technical subjects as grammar, lexicography, poetics, law and polity as well as on sciences such as astronomy, mathematics and medicine, and treatises are not wanting in their literature even on subjects like war-carriages, bows and arrows, elephants and horses, erotics, astrology and magic.

Thus important as the Jain literature is for the study of Indian philosophy and religion, art and science, it is of a still greater importance for the study of the development of Indian languages. It may even be said that the importance of Jain literature is, in this respect, unique. The sacred language of the Brahmins was Sanskrit and they did not, at first, take any important part in the development of the languages of the people—the Prakrits. Lord Buddha gave his preachings in the language of the people but the Buddhist literature confined itself to one language only—Pali, and at a later date it adopted Sanskrit. But Lord Mahāvira gave a permanent impetus to the development of the popular languages and his followers adopted these both for preaching and writing in their religious propaganda. They gave literary shape to many languages even for the first time and took a prominent part in the early development of

A NOTE

even the Dravidian vernaculars of South India. The ancient Prakrits, Māgadhi, Ardha-Māgadhi, Śauraseni and Māhārāṣṭri are extensively preserved in the Jain books whose study is very essential for their adequate knowledge.

Of a very special interest are the Jain works written in what is called the Western Apabhraṃśa. This language is the immediate forrunner of at least three important vernaculars, Hindi, Gujarati and Marathi. All the works in this language that have so far come to light are the productions of the Jains. Till very recently, not a single complete work of this language was available in print, on account of which the study of history and philology of the modern vernaculars could not make any appreciable progress. It was only in the year 1918 that the first complete and systematically edited work of this language appeared. This was the Jain work Bhaṭṭa-kaṭṭa-kāhā of Dhanapāla edited by Professor Hermann Jacobi of the University of Bonn. This same work was again published in the Gaekwad Oriental Series in 1923. This was all and nothing definite or much was known about the other works of this language till I had the occasion in 1924 of examining the Jain manuscript stores at Kāranjā in the Akolā district of Berar, being deputed to that task by my learned patron and benefactor Rai Bahadur Hiralal, B. A., M. R. A. S., Deputy Commissioner who, in his retirement, was entrusted by the Government with the work of compiling a Catalogue of Sanskrit MSS. in the Central Provinces and Berar. Here I discovered a dozen works in Apabhraṃśa, including three Purāṇes of more than one hundred chapters each, the other works being of a more modest size. Information about these works will be found embodied in the Catalogue mentioned above which was published in 1926.

It is a great pity that a very large part of the Jain literature of which I have spoken so far, remains yet unpublished. A few Granthamālās have recently been started with the chief object of making these works available to the scholarly world in the original, and the Manikchand Digambara Jain Granthamālā of Bombay deserves special mention in this connection. It has so far issued thirty volumes containing about fifty ancient Sanskrit and Prakrit works. The work is however, too vast to be adequately handled in a single series and hence the need of fresh efforts to speed up the work of publication.

Two years ago, Seth Gopal Ambadas Chaware of Kāranjā sought my advice in the matter of utilising certain funds which he had set apart for some religious or charitable purpose in the memory of his late father. I suggested to him that the best and most lasting memorial that he could raise to his father and at the same time do a great service to the cause of Jainism was the institution of a book-series for the publication of Jain works that remain yet unpublished, particularly those from MSS. deposited at his own place, Kāranjā. This suggestion of mine was discussed at a meeting of the leading Jains of Berar and was ultimately adopted in preference to other suggestions put forward for the utilisation of the funds. A committee was formed for starting the work of the series to be known at the Ambādās Chaware Digambara Jain Granthamālā or the KARANJA JAIN SERIES of which I was elected General Editor.

BY THE GENERAL EDITOR

We had decided to open the Series with one of the Apabhramśa work recovered from the Kāranjā MSS. when Dr. P. L. Vaidya, M.A., D. Litt, sought my help in obtaining facilities for consulting some of those MSS. I learnt from him that he had already secured some MSS. of the Jasaharacariu of Puspadanta and was engaged in preparing the text for the Press. I told him about our Series and offered to open the Series with that work if he would edit it for us. To this Dr. Vaidya readily agreed and he has spared no pains in presenting the text as accurately and critically as was possible with the apparatus that he had before him.

We are very thankful to Dr. Vaidya for his valuable contribution to the Series as well as for the help he gave in making arrangements for the printing of the book, all this work being undertaken by him merely as a labour of love.

It is our great sorrow that one of the members of our committee who was also a cousin of Seth Gopal Ambādās Chaware and a leading Jain citizen of Berar, Mr. J. D. Chaware, B. A., LL. B., to whose efforts the inauguration of this Series owes a good deal, did not live to see even the publication of its first volume. By his death our committee has suffered an irreparable loss.

I can hardly adequately thank Seth Gopal Ambadasji to whose munificence this Series owes its inception. I pay my humble respects to Svāmi Virasenji Bhattāraka who is the custodian of the manuscript-store of the Sena Gana temple at Kāranjā and who encouraged Seth Gopal Ambadasji in his laudable munificence. I also thank the members of my committee for their co-operation in the work.

I take this opportunity to invite the co-operation of all scholars interested in the study of Jain literature in making the future volumes of this Series as suitable for study and research as possible. With their co-operation we hope to publish soon the remaining Apabhramśa works at Kāranjā.

King Edward College
Amraoti
20th March 1931

}

HIRALAL JAIN

TABLE OF CONTENTS

1. Portrait of Swami Virasena Bhattaraka						
Facing page						5
2. समर्पण पत्रिका						5
3. प्राथमिक वक्तव्य						7-8
4. Photos of Shet Ambadasji and Gopaldasji						
facing page						9
5. A Note by the General Editor						9-11
6. Table of Contents						12
7. Introduction						13-32
8. TEXT OF JASAHARACARIU						१-१००
Pariccheda I						१-२३
Pariccheda II						२४-४६
Pariccheda III						४७-७४
Pariccheda IV						७५-१०
9. शब्दकोशः						१०१-१५
10. Notes						175-18६
11. Addenda et Corrigenda						187-18९

INTRODUCTION

1. GENESIS OF THE UNDERTAKING

WHILE working as Springer Research scholar of the Bombay University during 1926-28 I occupied myself with the surveying work of the Prakrit literature in general and of the Apabhramśa works in particular. In the course of my labours in that direction I commenced examining the Bhandarkar Institute MS. of Puṣpadanta's Tisaṭṭhimahāpurisagunālamkāra, of which the late Dr. P. D. Gune included a short notice in his introduction to the Bhaviṣayattakāhā, published in the Gaekwar Oriental Series at Baroda. It came to my knowledge that the Bhandarkar Institute Library of MSS. contained a few more MSS. of this work and also a MS. of another work, JASAHARACARIU, by the same author. Just at this juncture Rai Bahadur Hiralal published his Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in the Central Provinces and Berar and, on going through it, I discovered, to my delight, that the Kāranjā Jain Bhandars contained several MSS. of the two works mentioned above, and in addition, one more work, Nāgakumāracarīu, by the same author.

While I was studying the Tisaṭṭhimahāpurisagunālamkāra and the Jasaharacarīu at the Bhandarkar Institute, which works were composed at Mānyakheta, the modern Malkhed in the Nizam's territory, another idea struck me, how far would these works of Puṣpadanta, written in the Apabhramśa language and composed in the province of Mahārāṣṭra proper, throw light on the origin and growth of the Marathi language. For, it is a well known fact that a very large number of works in the old Marathi were composed or revised within a radius of about a hundred miles from Mānyakheta, the capital of later Rāṣṭrakūṭas. The discovery of Puṣpadanta's works at Kāranjā in Berar, therefore, particularly delighted me, as I thought, I would find therein pre-Marathi Apabhramśa records composed, and also preserved, in Mahārāṣṭra which would be of great value to the history of the Marathi language. Consequently I made up my mind to visit the Kāranjā Jain Bhandars for this purpose during the Christmas holidays of 1927. It was on that occasion that I made acquaintance of Prof. Hiralal Jain, M. A., LL.B., of the King Edward College, Amroati, who, within a few days of my visit, made a proposal to me that I should edit the Jasaharacarīu of Puṣpadanta before undertaking the bigger work, Tisaṭṭhimahāpurisagunālamkāra, and that I should allow it to be included in the Kāranjā Jain Series as its first volume, which proposal I readily accepted.

INTRODUCTION

2. THE CRITICAL APPARATUS

The critical apparatus on which this edition of the *Jasaharacariu* is based consists of four manuscripts collated in full and three more MSS. partially collated in cases of doubt. I also used pretty frequently the printed edition of the Hindi translation, which here and there gives the *ghattā* lines in the original *Apabhraṃśa*. The details of this apparatus are given below:—

S. This is a paper manuscript deposited in the Sena Gaṇa Bhāṇḍāra of Kāranjā in Berar. The MS. is written in good hand, consists of 78 leaves with 11 lines to a page and about 37 letters to a line, has voluminous notes in the margin in mixed Hindi and Sanskrit. It is dated Wednesday, the auspicious 13th of the dark half of Āśvina of 1656 of the Śaka era, or 1790 of the Vikrama era, i. e., 1734 A. D., as can be seen from the following colophon:—

शके १६५६ मिति आसो वदि मंगलात्रयोदश्यां बुधवारे श्रीमूलसंघे सूरस्थगणे पुस्करगळे ऋषभसेण-
गणधरान्वये पारंपर्यागते भट्टारकश्री १०८ सोमसेन तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनसेन तत्पट्टे भट्टारकसमंतभद्र तत्पट्टे
भट्टारकश्री १०८ छत्रसेन तत्पट्टोदयाद्रिवर्तमान भ० नरेंद्रसेनैर्लिखितोयं जसोधरचरितं संपूर्णं स्वपठनार्थं वा
अन्येषां ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं श्रीसूरतवंदरे श्रीआदिनाथचैत्यालये सं० १७९०.

It will be seen from the colophon that the copy was made at Surat and then it travelled to the Kāranjā temple of the Sena Gaṇa. There is another MS. of this work in the same temple, but it was so old and its condition so delapidated that it could not be safely used. I however consulted it occasionally and found that it generally agrees with the above as regards omission of certain passages for which see below. As the MS. is prepared at Surat, there is no consistency as regards the use of initial *u*.

T. This is another MS. of the Sena Gaṇa group now deposited in the Terāpanthī Jain Mandir of Bombay. It was secured for my use by the kindness of Pandit Nāthū-rām Premi of Bombay. It seems to be the oldest MS. of the work now extant, as it is dated 1390 of the Vikrama era, i. e., 1333 A. D. It is a paper MS. consisting of 98 leaves with 8 lines to a page and about 30 letters to a line. The colophon runs as follows:—

मंगलमस्तु । संवत् १३९० वर्षे आपादशुद्धत्रयोदशी भानौ अद्येह श्रीमहाराजाधिराजश्रीसुरत्राण-
महंमदराज्ये दुर्गामंडपपडिगनामगे (?) पगडीनामनि प्राग्वाटवंशीयसाभावडसंतान मल्लौ पुत्र रामा.....

This MS. seems to have been copied from another older MS. The copyist seemed to be unable to read some lines and letters of his original and put dots and dashes where he was not able to decipher them. As T is now nearly 600 years old, its latter part has become considerably worn out and indistinct to read. It is however striking that the readings of T agree with those of S oftener than with those in A and P. I have used T throughout my work.

P. This MS. belongs to the Deccan College Library, now deposited in the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 1192 of 1891-95. It consists

JASAHARACARIU

of 84 leaves with 11 lines to a page and about 29 letters to a line. It has the following colophon :—

संवत् १६१५ वर्षे भाद्रव सुदि ५ वसितवारे पुष्यनक्षत्रे तोडागढमहादुर्गो महाराजाधिराजराउश्री-
कल्याणराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंधे नंदाग्रये बलत्करगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्येन्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदि-
देवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीश्रुतचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्र.....

It will be seen that this MS. is dated Thursday, the 5th of the bright half of Bhādrapada of 1615 of the Vikrama era, i. e., 1558 A. D. It is a carefully prepared paper MS. belonging to the Balātkāra Gana group, and, what is striking is the consistency with which it uses the initial *ṇ* except in one or two places only. See also under H below.

A, This is another MS. of the Balātkāra Gana group. It was secured for me, when the printing of the text had already considerably advanced, by my friend, Professor Hiralal Jain of King Edward College, Amraoti, from Pandit Jugal Kishore Mukthar of Sarasawa and now of Samantabhadraśrama, Delhi. It consists of 73 leaves of which the first leaf is missing, with 11 lines to a page and about 38 letters to a line. It is also a carefully written paper MS. but is slightly inferior to P. Its colophon runs as follows :—

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२१ वर्षे श्रावणवदि २ सोमवासरे श्रीमूलसंधे
बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे
भट्टारकश्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीसिंहकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीधर्मकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारकश्रीशील-
भूषणदेवा तदाम्नाये आर्याश्रीचारित्रश्रीतत्सिष्यणीत्रतगुणसुंदरी एकादशप्रतिपालिका तपगुणराजीमती शीलतोय-
प्रक्षालितपापपटलाः । बाई हीरा तथा चंदा पठनार्थ इदं यशोधरचरित्रं लिखापितं कर्मक्षयनिमित्तं ॥ ५ ॥
लिखितं पंडितवीणासुतगरीवा अलवरवासिनः ॥ ५ ॥ शुभं वो भूयात् ॥

It will be seen that this MS. is dated Monday, the 2nd of the dark half of Śrāvana of 1621 of the Vikrama era, i. e., 1564 A. D., i. e., about six years after P. As P was prepared in Todā gadh or Todā fort and A in Alwar, and as the genealogies of teachers mentioned therein agree so far as they are available, it can well be presumed that they belong to the same group. The text and the readings in them agree closely except in one detail, viz., P omits the portion IV. 29. 9—IV. 30. 13. which is given only in B and A. A is also almost consistent in the use of initial *ṇ*.

In addition to these four fully collated MSS. described above, I have used the following material at times :—

(a) B. This is a MS. deposited in the Balātkāra Gana Jain Bhāṇḍāra at Kāranjā. I personally examined this MS. on the spot, but had no time at my disposal to fully collate it. A copy of this MS. was recently prepared for the Ailak Pannalal Jain Bhandar of Bombay. Through the kindness of Professor H. D. Velankar of the Wilson College, Bombay, I was able to collate a portion of it, i. e., to the end of the first pariccheda, when I thought that the text there agreed with P, a better and more reliable

INTRODUCTION

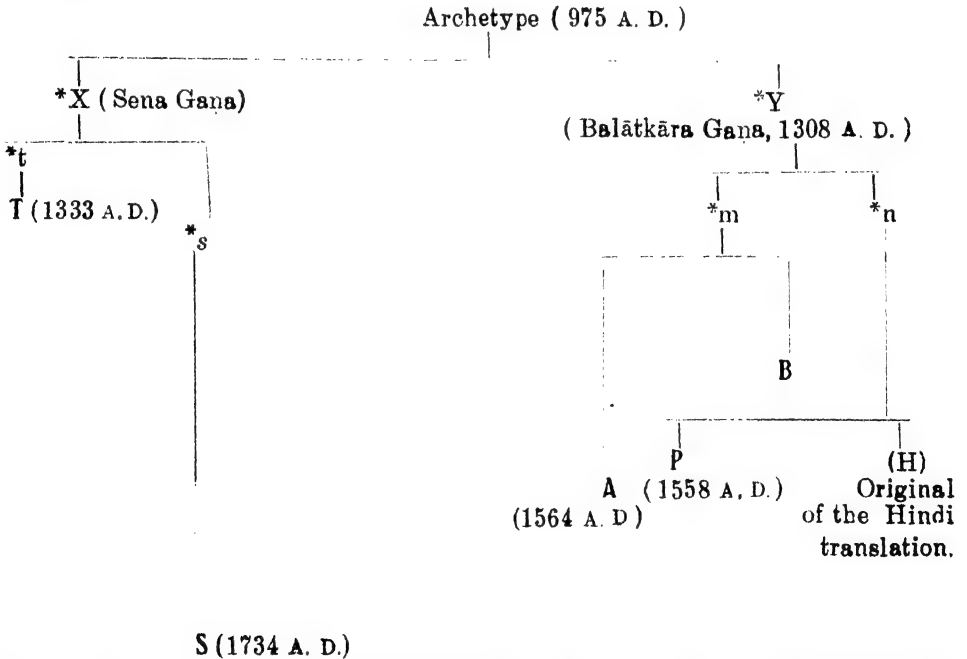
MS., in all essential points, and that it was no use further to collate a secondary MS. like this. On the discovery, however, of the additional passage in A, viz., IV. 29. 9—IV. 30. 13, I wanted to ascertain whether the original MS. B also contained the same. Professor Hiralal Jain got it examined for me again and sent me collation of which I made full use.

(b) H. This is a printed Hindi translation of our text which I purchased in a Bombay bookseller's shop. This printed translation usually gives in the original Apabhramśa the ghaṭṭa portion with its Sanskrit rendering, and translates the rest in Hindi calling the translation as Ṭīkāṛtha. I was not able to discover the name of the translator nor the year of its publication. On the last page I find the following:—

लाला गिरिनारीलाल ने जैनी भाईयों के हितार्थ लाला जैनीलाल के “जैनीलाल प्रिंटिंगप्रेस” देवबन्द जिला सहारनपुरमें छपाकर प्रकाशित किया ।

I consulted this translation throughout for what it was worth, and have come to the conclusion that the translator used a MS. of the text identical with the one in P and not with the same in A or B, as the absence of translation of IV. 29. 9—IV. 30. 13 clearly shows.

The relationship of all the material described above will be clear from the following diagram—



* The asteric indicates conjectural MSS.

JASAHARACARIU

It will be clearly seen from above that there are two recensions† of the text of Jasa-haracariu, of which the older one belongs exclusively to the Sena Gaṇa and is represented in my material by S and T. This group of MSS., in my opinion, presents almost the original text as composed by the author himself. The original of my T, i. e., of the diagram, is irrecoverable, being already worn out in 1333 A. D., and so it may have been two or three centuries older, which is approximately the age of Puṣpadanta. Copies of this recension, however, were being made from time to time in the Sena Gaṇa tradition, and I saw s, a copy of which, S, I have fully collated. This Sena Gaṇa recension omits the following passages from the printed text:—

(a) Verses in Sanskrit in praise of the poet's patron, Nanna, at the beginning of the 2nd, 3rd and 4th pariccheda; and,

(b) (i) A Passage from I. 5. 3 to I. 8. 17. (Bhairava's visit),

(ii) A Passage from I. 24. 9 to I. 27. 23. (Jasahara's marriage; and

(iii) A Passage from IV. 22. 17.^b to IV. 30. 15. (The various subsequent births of several persons in the story).

Of these additions to the Sena Gaṇa recension, I think, those mentioned under (a) may have been made by the author himself during his life-time in some of the copies of his work. For, in the poet's other work, e. g., in his *Tisatṭhimahāpurisagunā-lamkāra*, there are similar verses in Sanskrit in praise of Bharata, Nanna's father, which verses also are found only in some of the MSS. of that work.

As regards additions under (b) all of which (except IV. 29. 9. IV. 30. 13 which passage is found in A and B only), appear in the second recension of the Balātkāra Gaṇa, there is only one conclusion to be drawn, viz., that these additions were made by Gandharva (Sk. Gandharva), son of Kanhada (or Kṛṣṇa), in the Samvat year 1365, on Sunday, the 2nd tithi of the bright half of Vaisākha, i. e., in 1308 A. D., at the request of Visalasāhu, the son or pupil of Khelāsāhu and grandson or grand pupil of Change-sāhu of Paṭṭana. Now, as the passage IV. 29. 13-IV. 30. 15 tells us, this Visala once asked the poet Gandharva to fill up the deficiency in Puṣpadanta's work by adding passages relating to (i) the visit of Bhairava to the royal household; (ii) the marriage of Jasahara; and (iii) the wanderings of the various persons through several subsequent births. Accordingly the poet Gandharva composed these passages, inserted them at appro-

† When my work on the text and on the introduction was completed I had the good luck of securing another MS. from Kolhapur through my pupil and friend Prof. A. N. Upadhye of the Rajaram College. This MS. belongs to Mr. Tatyasaheb Patil of Nandni near Kolhapur. It is of the Balātkāra Gaṇa group and presents the text as in P and (H). I am glad to see that my classification of MSS. as given above and my remarks on the additions to the original text by Gandharva are fully borne out and confirmed by the discovery of this additional MS., which consists of 100 leaves of which the second and third are missing. The MS. was completed in Tōḍā (Tōḍāgaḍ?) on the 11th day of the bright half of Āśvina of the Samvat year 1699 and Śaka year 1564, i. e., 1642 A. D.

INTRODUCTION

priate places and read them on the above mentioned date to Visala, who was then staying at Yoginipura or Delhi. The poet says that he borrowed the material of the above mentioned passages from an older poet on the subject, Vatsarāja by name, and the material for the description of Jasahara's marriage from Vāsavasena's work for which see below. It is a noteworthy thing here that Gandharva makes mention of his own name at the end of all the three passages. Thus we have:—

(१) गंधर्वु भणइ मइं कियउ एउ गिवजोईसहो संजोयभेउ ।

घत्ता—अगइ कइराउ पुप्फयंतु सरसइणिलउ ॥

देवियहि सरूउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ ॥

I. 8. 15-17.

(२) जं वासवसेणिं पुवि रइउ तं पेक्खवि गंधर्वेण कइउ ।

I. 27.23.

(३) गंधर्वे कण्हडणंदणेण आयहं भवाइं किय थिरमणेण ।

महु दोसु ण दिजइ पुविं कइउ कइवच्छराइं तं सुत्तु लइउ ।

IV. 30. 14-15.

Now it may be asked: How is it that the passage IV 29. 9-IV. 30-13 came to be omitted in P and in the original of (H)? My explanation is that the clever and learned copyists of P and the original Apabhraṃśa of H did not like that the passage in question, giving the history of these additions to Puspādanta's work, should continue to remain, as they thought the deficiency would do little credit to the poet, and hence they suppressed it. The retention of IV. 30-14-15 in all the recensions of the *Balāt-kāra Gāṇa* has, however, misled several scholars like Pandit Nāthūrām Premi in the *Jain Sāhitya Samśodhaka*, Vol. II. i. page 62, and Pandit Jugalkishore Mukhtar in the *Jain Jagat* of October of 1926. They interpreted that गंधर्वे कण्हडणंदणेण meant Puspādanta, as Kanhaḍa, they said, was only another name of Keśava, the real name of Puspādanta's father (See iv. 31. 2).

It will be seen from the above discussion that the text in the present edition represents the secondary and amplified version of MSS. A, B and P. If the origin of the additions had been discovered in earlier stages of my labours on the printing of this edition, it would not have been difficult for me to give the smaller, and, should I say, the original, version of the text. I must confess that the externals of P impressed me so much that I thought I had discovered the best version, though the roughness of language, expressions and versification of the additional passages made me frequently pause. It is, however, quite easy from the critical apparatus of the present text, to ascertain what the original version of S and T must have been.

There is only one more point to which I should like to draw the attention of the reader. The date of these additions is 1308 A. D., while the date of my oldest MS. T is 1333 A. D. The additions, thus, did not influence the copies that were made in the

JASAHARACARIU

quarter of the century that followed their composition. Besides, my MS. T is, as pointed out above, a faithful copy of a still older and worn out MS. prepared at least two centuries before which in the diagram I have called *t*.

3. . THE POET AND HIS DATE

The author of this small work in Apabhramśa is Pūspahayamta, Sk. Puṣpadanta. Besides Jasaharacariu he wrote two other works, both in Apabhramśa, viz., (i) Tisaṭṭhi-mahāpurisa-guṇālaṃkāra, better known by its shorter title Mahāpurāṇa, divided into two parts, Ādipurāṇa in 37 chapters and Uttarapurāṇa in 65 chapters; (ii) Nāgakuṃāracariu in 9 chapters, both of which are contemplated to be included in the Kāranjā Series. In all these works the poet gives some account of himself. I give below a tentative sketch based upon the available material in the crude form, reserving a fuller and more accurate information to a future volume of the Series when I hope to have the material critically edited.

Puṣpadanta was a Brahmin by caste and belonged to Kāśyapa gotra. His father's name was Keśavabhaṭṭa and mother's name was Mugdhādevī. He was at first follower of Śaivism but later was converted to Dīghanāgarī Jainism. He seems to have secured several titles and birudas for his poetic genius, such as Ahimāṇameru, Kavvarayanāyara Kavvapisaḷa, Kavvarakkhaṣa, Kaikulatila, Sarasairila, Vāesarighara and others. He had a lean body and dark complexion, but a smiling face, and seems to have no wife nor children. We do not know what his native land was, where he studied and who patronised him before he migrated to Mānyakheta. It is however clear that he had some bitter experience in life, was probably insulted at the court of his patron, whose name, according to Prabhācandra's notes to the Mahāpurāṇa, seems to be Virarāja kāvipati or kāncipati (?) *alias* Śūdraka. After this humiliation at the court of his patron he left his native land, came to a garden in the outskirts of Mānyakheta, where two persons persuaded him to see their patron Bharata, the minister of king Śubha-tuṅgarāya, Tuḍiga or Kṛṣṇarāja III of Mānyakheta, and assured him that he would be well received by the Minister. Puṣpadanta thereupon saw him and was at once offered patronage. After a few day's stay Bharata requested the poet to write on the theme of the Mahāpurāṇa, a theme already made popular in Sanskrit by the work of the same name of Jinasena and Guṇabhadra a century before—, as a prāyaścitta for the sin that the poet committed in writing poems in praise of his former patron Virarāja.

पइं मण्णिउ वण्णिउ वीरराउ उप्पण्णउ जो मिच्छत्तभाउ ।
पच्छित्तु तामु जइ करहि अज्जु ता घडइ तुज्झ परलोयकज्जु ।

The poet was at first reluctant to take up the proposal as he was very much depressed at that time and thought that the age of poetry was gone, but after a good deal of persuasion he agreed to commence the work. Even in the middle of his undertaking

INTRODUCTION

the poet was once more in depressed mood when the goddess in a dream asked him to wake up and finish his labours. In the introduction to his *Tisatṭhimahāpurisagunā-lamkāra* Puspadanta mentions a long list of well-known literary figures which were his predecessors. I give below the passage in full :—

अकलंक-कविल-कणयर-मयाइं	दिय-मुगय-पुरंदर-णयसयाइं ।
दतिलविसाहिलुद्वारियाइं	णउ णाभइं भरहवियारियाइं ।
णउ पीयइं पायंजलजलाइं	इइहासपुराणइं णिम्मलाइं ।
भावाहिउ भारहभासि वासु	कोहलु कोमलगिरु कालिदासु ।
चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोणु	णालोइउ कइ ईसाणु बाणु ।
णउ धाउ ण लिंगु ण गण समासु	णउ कम्म करणु किरियाविसेसु ।
णउ संधि ण कारउ पयसमत्ति	णउ जाणिय मइं एक्क वि विहत्ति ।
णउ बुज्झिउ आयसु सद्धामु	सिद्धंतु धवल जयधवल णामु ।
पडु रुद्धु जडणिण्णासयारु	परियच्छिउ णालंकारसारु ।
पिंगलपत्थारु समुदि पडिउ	ण कयाइ महारइ चित्ति चीडिउ ।
जसइंधु सिंधु कल्लोलसिनु	ण कलाकोसल हियवइ णिहिनु ।

In addition to those mentioned in the passage above he mentions a few more persons prominent amongst them being Pravarasena, the author of *Setubandha*.

It appears that Puspadanta completed his *Mahāpurāṇa* during the life-time of Bharata. After Bharata's death the poet continued to enjoy the favour of Nanna, Bharata's son, under whose patronage he composed his two other works known to us. It appears that besides these three he composed a few more works prior to his arrival at Mānyakheta; at any rate one such work in praise of Virarāja seems to have been alluded to in the lines already quoted above, but is probably lost.

As regards the date of Puspadanta we have the following evidence in his works :
 (i) The mention of his predecessors, particularly of Rudraṭa whose date is fixed by Mr. P. V. Kane of Bombay and Dr. S. K. De of Dacca to lie between 800 and 850 A. D.;
 (ii) the reference to the death of the Cola king in the war waged by Subhatuṅga or Tudiga or Kṛṣṇarāja III, which event, in my opinion, took place at about 940 A. D.;
 (iii) the mention of the name of the year Siddhārtha (of the Śaka era) in which he commenced his *Mahāpurāṇa*, and of Krodhana of the same era in which he completed it, which, in my opinion, are 959 A. D. and 965 A. D.; for I think Puspadanta commenced his work in the same Siddhārtha year in which Somadeva completed his *Yasastilaka* which year is 881 of the Śaka era, i. e. 959 A. D.; (iv) mention by the poet in a verse of the plunder of Mānyakheta by Harsadeva of Dhārā which event took place about the year 1029 of the Vikrama era, i. e. 972 A. D. in the reign of Khotṭiga-deva, the successor of Kṛṣṇarāja III. The *terminus a quo* therefore would be the date of Rudraṭa, say 850 A. D., and the *terminus ad quem*, the plunder of Mānyakheta in the

JASAHARACARIU

year 972 A. D. Now within these limits the Siddhārtha Samvatsara of the Śaka era would occur in 899 A. D. and 959 A. D.; but of these two years we cannot accept the first as the defeat of the Cola king by a Rāṣṭrakūṭa king could not have been effected before 940 A. D., the probable year of the accession of Kṛṣṇarāja III. In fact the event took place, according to V. Smith, in the year 949 A. D. We therefore have to accept 959 A. D. as the year in which Puṣpadanta commenced his Mahāpurāṇa. Puṣpadanta's patron Bharata lived to see the completion of this work, but may have perhaps lost his life in defence of the city in the year 972 A. D. Puṣpadanta mentions or refers to, I think, this event in the last line of following verse at the opening of the 50th chapter of his Uttarapurāṇa MS. of Kāranjā:—

*दीनानाथधनं सदावहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
केदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

As I have already remarked above, the Sanskrit verses in praise of the poet's patron are found only in some of the MSS. of his works, which shows that they were inserted by the poet at his leisure after some of the copies of his work had already gone out. It is not necessary to argue therefore that the plunder of Mānyakheta must have taken place before the Mahāpurāṇa was completed in 966 A. D. Shortly after this event, in 972 A. D., Puṣpadanta once more secured the patronage of Bharata's son Nanna, and resumed his poetic activity which gave to the world two more works, the Jasaharacariu and the Nāgakumāracariu.

In order to make clear the above arguments as to the date of Puṣpadanta, I quote below a long extract from Rai Bahadur Hiralal's Introduction to his Catalogue, page xliv ff.

“As for the date of the author, we have the following verses towards the end of the Uttarapurāṇa :—

पुष्पयंतकइणा धुयपकें	जइ अहिमाणमेरुणामकें ।
कयउ कव्वु भत्तिइ परमत्थें	‡जिणपयपंकयमउलियहत्थें ।
कोहणसंवच्छर आसाढइ	दहमइ दियहे चंदसइरूढइ ।

These verses convey that Puṣpadanta completed the Purāṇa on the 10th of the bright fortnight of Āśāḍha in Krodhana samvatsara. Apparently there is no mention of the year in the verses, and hence we have to look for other data in the work to determine the year. Puṣpadanta tells us that he was the protege of Bharata, the minister of king Subhatuṅgarāya of Mānyakheta. The same king at other places in the work has been

* The Kolhapur MS. of the Uttarapurāṇa does not give this verse at all.

‡ The Kolhapur MS. of the Uttarapurāṇa confirms this reading in the text as against another reading given below from the Poona MS.

INTRODUCTION

referred to as Vallabharāya. On both these names we have in the manuscripts a marginal explanatory note "Kṛṣṇarāja," which proves that the note-maker thought Subhatuṅgarāya and Vallabharāya to be only different names of "Kṛṣṇarāja". History tells us that there have been three kings bearing the name of Kṛṣṇarāja in the Rāṣṭrakūṭa dynasty of the South. In the time of Kṛṣṇarāja I, the Rāṣṭrakūṭa capital was not at Mānyakheta but near Nasik. Amoghavarṣa I whose reign began in 815 A. D., established Mānyakheta as a capital town and Kṛṣṇarāja II and III sat on the throne there. Kṛṣṇa II reigned from about 722 to 788 and for Kṛṣṇa III we have epigraphical and literary records of years ranging from Śaka 861 to 881 (A. D. 939 to 959). In order to decide as to which of these two kings has been referred to by Puṣpadanta, we should examine some other data deducible from his Epic. Quite at the beginning of the great work we have a line in which we are told that the king of Mānyakheta who is here called "Tudiga" killed the king of the Colas.

उववद्वज्जु भूभंगभीसु

तोडेपिणु चोडहो तणउ सीसु ।

We read in Dr. Smith's Early history of India (pp. 424-430) that "The war with the Colas in the reign of Kṛṣṇa III, the Rāṣṭrakūṭa king, was remarkable for the death of Rājāditya, the Cola king, on the field of battle in 949 A. D." Again in the Imperial Gazetteer, Vol. II, page 332, we read, "The Rāṣṭrakūṭa Kṛṣṇa III (940-971) had great success in the Cola country and inscriptions in that tract show that he exercised sovereign rights over parts of it. . . . An inscription at Atkūr, also in Mysore, of the year 949-50 relates that at a time when the Rāṣṭrakūṭa king Kṛṣṇa III was warring against the Cola king Rājāditya, son of Parantaka I, the former's ally Būṭuga II of the Western Ganges of Talkād (who had married Kṛṣṇa's sister), murdered the the Cola sovereign at a place called Tatkola, not far west of modern Madras. . . ." Somadeva also in the colophon to his Yaśastilaka refers to the conquests of Cola by Kṛṣṇa III. Thus it is probable that the line quoted from Puṣpadanta refers to this very event.

Continuing our search we find at the beginning of the 50th chapter of Uttara-purāṇa a verse of some importance for our inquiry. This verse is—

दीनानाथधनं सदावहुजनं प्रोत्कुलवह्नीवनं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।
धरानाथनरेद्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
केदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुण्ड्रदन्तः कविः ॥

In this verse Puṣpadanta refers to the raid of Mānyakheta by some king of Dhārā that took place in his time. Dhanapāla in his Pāiyalacchināmamālā (verse 276) says that he composed the work "when one thousand years of the Vikrama era and twenty nine besides had passed, when Mānyakheta had been plundered in consequence of an attack made by the lord of Mālava." A reference to this plunder occurs in the Udaipur Prasasti as well (Ep. Ind., Vol. I, p. 226), the 12th verse of which runs as follows:—

तस्मात् [वैरिसिंहात्] अभूदरिनरेश्वरसंघसेवा-
गर्जद्भजेन्द्रवसुन्दरतूर्यनादः ।
श्रीहर्षदेव इति खोट्टिगदेवलक्ष्मीं
जग्राह यो युधि नगादसमप्रतापः ॥ १२ ॥

Khottigadeva was the successor of Kṛṣṇa III, and we have a stone inscription of his date in the Śaka year 893 ; while Harsadeva was a Paramāra King of Dhārā contemporaneous with Kṛṣṇa III and Khottigadeva. It is quite possible that Puspadanta in the above quoted verse refers to this plunder of Mānyakheta by Harsadeva. The identifications irresistibly lead us to the conclusion that Puspadanta wrote in the time of Kṛṣṇa III. It has been said above that Puspadanta refers to the king contemporaneous with him by the names of Vallabharāya and Śubhatuṅga. As for the first of these terms, it is known to have been the general title of the Rāṣṭrakūṭa princes. Dr. V. Smith tells us : " All these writers (Arab) agree in stating that they regarded the Balhara as the greatest sovereign in India. They called the Rāṣṭrakūṭa kings Balhara, because those princes were in the habit of assuming the title of Vallabha (Beloved, *Bien aime*) which in combination with the word Rai (prince) was easily corrupted into the form Balhara".

Jinasena in his Harivamśa-Purāṇa-Prasasti calls the Rāṣṭrakūṭa king Indra (son of Kṛṣṇa I,) as Śrī Vallabha.—

पातीन्द्रायुधनाग्निं कृष्णनृपतौ श्रीवल्लभे दक्षिणाम् ।

As for the second name Śubhatuṅga it is well known that it was an alternative name of Kṛṣṇa I, but probably that was also a general title of the Rāṣṭrakūṭa kings. Tuṅga was certainly their common name (cf. Deoli plates). These proofs are, I think strong enough to justify the conclusion that Puspadanta wrote in the time of Kṛṣṇa III. But we have still to determine the year in which Puspadanta completed his Mahāpurāṇa. We have quoted above six lines from the work, expressing the date without any mention of the year. Mr. Nāthūrām Premī, on the strength of many manuscripts of this work seen by him reads the third and fourth lines of these as follows:—

कयउ कव्वु भत्तिइ परमत्थे छसय छडुत्तर कयसामत्थे ।

This gives the year 606 for the completion of the work. Referred however to the Vikrama, Śaka, Kalacūri or Gupta era, the year does not agree with the facts disclosed above, nor does it prove to be a Krodhana Samvatsara as required. Therefore this reading must be held to be erroneous, unless and until it is shown to have reference to an era other than the four mentioned above.

At the beginning of the work Puspadanta tell us that he began writing it in Siddhārtha Samvatsara :—

तं कहमि पुराणु पसिद्धणामु सिद्धत्थवरिसे भुवणाहिरामु ।

INTRODUCTON

Somadeva, in the colophon to his *Yasastilaka*, tells us that he completed the work in the Śaka year 881 (Siddhārtha Samvatsara) when Kṛṣṇa III was reigning (cf. Peterson's III Report, 156). Astronomical calculations also confirm the statement that the Śaka year 881 was Siddhārtha. Krodhana follows Siddhārtha after six years and thus the Śaka year 887 was Krodhana. Hence the *Mahāpurāṇa* may be taken to have been begun in the Śaka year 881 and completed on the 10th of the bright fortnight of Āśāḍha of Śaka year 887. This according to Swami Kannu Pillai's *Indian Ephemeris* is equivalent to Sunday the 11th June, 965 A.D. This date, however, raises a question of some historical importance. If we accept that this *Mahāpurāṇa* was completed in A. D. 965 = V. S. 1022, and also that the raid of Mānyakheta mentioned in it refers to the plunder of the city by Harṣa of Dhārā, it *prima facie* follows that the latter event took place at least not later than V. S. 1022. But as we have seen, the author of *Pāyalaṭchhināmamālā* refers to the same event in a way as to make us understand that it occurred in V. S. 1029. This would make a difference of seven years. I take it that the event in fact took place about the year 1022 V. S. The mention of Dhanapāla may be explained by the probability that King Harsadeva returned to his capital Ujjain seven years after the plunder of Mānyakheta, spending the interval in conquering other parts of the country. In V. S. 1029 the memorable plunder of Mānyakheta must have been still fresh and hence Dhanapāla referred to it in that manner.

Though it is difficult to say how long after the completion of *Mahāpurāṇa*, the *Yasodhara-carita* and *Nāgakumāra-carita* written written, this much is certain that they were written after the *Mahāpurāṇa*, because during the composition of the latter, Bharata was the minister of the King, but when the other two works were composed, his son Nanna is said to have occupied that office. The king has been referred to by the name of Vallabharāya in these two works also, and on their manuscripts we find the marginal note "Kṛṣṇarāja." This is a mistake. As we have seen Khottigadeva had already succeeded Kṛṣṇarāja even before the completion of *Mahāpurāṇa*.

4. POPULARITY OF JASAHARA WITH THE JAIN WRITERS

Jasahara or Yaśodhara, the hero of the present work, seems to be highly popular with both the sects of the Jains. Well-known literary figures like Haribhadra handled the theme, and works bearing the title *Yaśodharacarita* are found in Sanskrit, Prakrit, Apabhraṃśa, old Gujarati, old Hindi, old Tamil and old Kannaḍa. I have been so far able to collect over twentyfive authors on the theme, and I do not feel confident that my list is exhaustive.

1. Somadeva composed his *Yasastilakacampū*, a huge work in Sanskrit prose and verse. He completed the work in 881 of the Śaka era, i. e., in 959 A. D. It is printed and published by the *Nirṇayasāgara* Press, Bombay, together with the commentary of *Śrutasāgara*.

2. Vāsavasena composed in Sanskrit a *Yaśodharacarita* in eight cantos. It is in verse and the predominant metre is *anuṣṭubh*. It is this poet who is mentioned in the

passages added to Puspadanta's work and therefore must be earlier than 1308 A. D. There are two MSS. of this work, No. 550 of 1884-86 and No 307 of 1883-84 at the Bhandarkar Institute. At the opening of his work Vāsavasena mentions Prabhañjana and Hariṣena as his predecessors in writing on Yaśodaracarita :

सर्वशास्त्रविदां मान्यैः सर्वशास्त्रार्थपारगैः ।
प्रभञ्जनादिभिः पूर्वं हरिषेणसमन्वितैः ॥ ३ ॥
यदुक्तं 'तत्कथं शक्यं मया बालेन भाषितुम् ।
तथापि तत्क्रमाम्भोजप्रणामार्जितपुण्यतः ॥ ४ ॥
प्रोच्यमानं समासेन संसारासारसातनम् ।
पठतां शृण्वतां यत्तत्सन्तस्तच्छृणुतादरात् ॥ ५ ॥

The description of the marriage of Yaśodhara which Gandharva added to Puspadanta's work and which, he says, is based upon Vāsavasena's work is found in the second canto of the work.

3. Sakalakīrti composed a Yaśodharacarita in Sanskrit, probably after the model of Vāsavasena's work. It is also written in anustubh metre and in eight cantos. There are two MSS. of this work, No. 1469 of 1886-92 and No. 1051 of 1887-91 at the Bhandarkar Institute. One of these MSS. is dated Samvat 1806 but is itself copied from an other old MSS. dated Samvat 1776, i. e., 1719 A. D. Sakalakīrti, however, must have lived about 1450 A. D., as his grand-pupil Jñānabhūṣaṇa wrote his Tattva Jñānatarāṅgiṇī in Samvat 1560, i. e., in 1503 A. D. See Rai Bahadur Hiralal's Catalogue, Introduction, page xxxviii.

4. Vādirāja, otherwise known as Kanakasena Vādirāja composed a Yaśodharacarita in Sanskrit in four cantos. There is published an edition of this work in Tanjore in 1912. According to that editor, the poet Vādirāja lived in the second half of the 10th century A. D. This work therefore must be regarded as almost contemporaneous with our work. Vādirāja calls himself to be the author of the Ekibhāvastrottra and Pārśvanāthacarita which are published, and of Kākutsthacarita :—

श्रीपार्श्वनाथकाकुत्स्थचरितं येन कीर्तितम् ।
तेन श्रीवादिराजेनारब्धं याशोधरी कथा ॥ ६ ॥

5. Somakīrti composed a Yaśodharacarita in Sanskrit. The work is divided into eight cantos as in Sakalakīrti's. There are two MSS. of this work, No 549 of 1884-86 and No. 167 of 1872-73 at the Bhandarkar Institute. The author gives the date of the composition as samvat (?) 1536, i. e., 1479 A. D. in the colophon which runs as follows :—

नन्दीतटाख्यगच्छे वंशे श्रीरामदेवसेनस्य ।
जातो गुणार्णवौकः (काः) श्रीमांश्च श्रीभीमसेनेति ॥ ९३ ॥
निर्मितं तस्य शिष्येण श्रीयशोधरसंज्ञिकम् ।
श्रीसोमकीर्तिमुनिना विशोष्याधीयतां बुधाः ॥ ९४ ॥

INTRODUCTION

वर्षे षट्त्रिंशसंख्ये तिथिपरिगणिना युक्तसंवत्सरे वै
पञ्चम्यां पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोत्तराश्वे हि चन्द्रे ।
गौडिल्यां मेदपाटे जिनवरभवने शीतलेन्द्रस्य रम्ये
सोमादीकीर्तिनेदं नृपवरचरितं निमित्तं शुद्धभक्त्या ॥ ९५ ॥

6. Māpikyasūri or Māpikyadevasūri composed a Yaśodharacarita in Sanskrit verse. It is divided into fourteen cantos and the Granthasamkhyā is 1350. There are two MSS. of this work, No. 1308 of 1884-87 and No. 1332 of 1887-91 at the Bhandarkar Institute. There is no mention of the date of the work or of MSS. Māpikyasūri, however, mentions Haribhadra as his predecessor on the theme.

7. Padmanābha composed a Yaśodharacarita in Sanskrit in nine cantos. There is one MS. of this work, No. 1161 of 1891-95 at the Bhandarkar Institute which does not give any indication as to the date of the composition or of the MS. Is he the same as Padmanātha, author of MS. No. 7805 in Rai Bahadur Hiralal's Catalogue? He must however be older than Pandit Lakhmidāsa who composed his Yaśodharacarita in old Hindi in Samvat 1781, i. e., in 1724 A. D., after the model of Padmanābha.

8. Pūrṇadeva composed a small work in 311 Sanskrit stanzas on Yaśodhara, of which there is a MS. No. 548 of 1884-86 at the Bhandarkar Institute. I could not get any clue to fix the date of the author.

9. Kṣamākalyāṇa composed a Yaśodharacarita in Sanskrit prose and in eight chapters. There is one copy of the MS., No. 394 of 1880-81, of this work at the Bhandarkar Institute. In the introduction to his work, Kṣamākalyāṇa mentions Haribhadra as a writer of a Prakrit Yaśodharacarita:—

श्रीहरिभद्रमुनीन्द्रैर्विहितं प्राकृतमयं तथान्यकृतम् ।
संस्कृतपद्यमयं तत्समस्ति यद्यपि चरित्रमिह ॥ ८ ॥
तदपि तयोर्विषमत्वादर्थवगमो हि तादृशो न भवेत् ।
तदहं गद्यमयं तत्कुर्वे सर्वोवबोधकृते ॥ ९ ॥

Kṣamākalyāṇa wrote his work in Samvat 1839, i. e., in 1782 A. D., as is clear from the following colophon to his work:—

वर्षे नन्दकृशानुसिद्धिवसुधासंख्ये नभस्ये सिते
पक्षे पावनपञ्चमीसुदिवसे श्रीजिसलाद्रौ पुरे ।

10. There is, at the Bhandarkar Institute one more MS. of the Yaśodharacarita' No. 804 of 1892-95. A few pages at the beginning are missing and the colophon also does not mention the name of the author. The work, however, is divided into four cantos, and the MS. is dated Samvat 1581, i. e., 1524 A. D.

Besides these writers in Sanskrit on Yaśodharacarita whose works I could examine at the Bhandarkar Institute, the following are mentioned in Rai Bahadur Hiralal's Catalogue:—

JASAHARACARIU

11. Mallibhūṣaṇa, No 7788.

12. Brahmanemidatta, No. 7800.

13. Śrutasāgara, No. 7804. Is he the same as the commentator on Somadeva's Yaśastilaka?

14. Padmanātha, No 7805, probably the same as Padmanābha above.

The Jain Granthāvali adds one more name to the list :—

15. Hemakuñjara, whose work consists of 370 ślokas only.

The following writers, presumably in Sanskrit, on the theme are referred to in works already examined :—

16. Prabhañjana, mentioned by Vāsavasena.

17. Hariṣeṇa, mentioned by Vāsavasena.

18. Vatsarāja, referred to by Gandharva in passages added to Puṣpadanta's work.

The following writers wrote on the theme in Prakrit and Apabhraṃśa respectively :—

19. Haribhadra, on the authority of Kṣamākalyāṇa and Māṇikyāsūri.

20. Puṣpadanta, the author of the present work.

Besides these I have discovered the names of the following writers in vernaculars on the theme :—

21. Janna composed his Yaśodharacarita in Kannaḍa in 1209 A. D., in the reign of Vīra Ballāḷī (1173–1220 A. D.). His work is in prose and verse and is divided into four avatāras. In the introductory portion of his work he says that the story was already narrated in Sanskrit, Prakrit and kannaḍa by former poets. (See karnāṭaka-kavi-carite, Vol. I, by R. B. R. Narasimhācārya).

22. Lakṣmidāsa or Pandit Lakṣmidāsa wrote a Yaśodharacarita in Hindi, of which there is a copy at the Bhandarkar Institute and bears No. 681 of 1895-98. The Pandit says that he wrote the work after the model of Padmanābha in the year 1781 of the Vikrama era, i. e., in 1724 A. D.

23. Jinacandrasūri of Kharatara Gaccha wrote a Yaśodharacarita in old Gujarati, a MS. of which, No 1489 of 1887-91, is deposited at the Bhandarkar Institute. I think he belongs to 16th century.

24. Devendra composed in old Gujarati a Yaśodhararāsa, a MS. of which, No. 1468 of 1886-92, is deposited at the Bhandarkar Institute. Both Jinacandra and Devendra have not been mentioned by Mr. M. D. Desai in his Jain Gurjara Kavio vol. I. He however mentions four more poets of old Gujarati on the theme :—

25. Lāvanyaratna composed a Yaśodharacarita in Gujarati which is dated Saṃvat 1573, i. e., 1516 A. D.

26. Manoharadāsa composed a similar work in Gujarati dated Saṃvat 1676, i. e., 1619 A. D.

INTRODUCTION

27. Brahmajinadāsa composed a Yaśodhararāsa in Samvat 1520, i. e., 1463 A. D.

28. Jñānadāsa composed a Yaśodhararāsa in Samvat 1670, i. e. 1613 A. D.

29. An unknown author, perhaps Vādirāja. composed in Tamil a Yaśodharacarita in the 10th century (See Introduction to Vādirāja's Sanskrit work, page 6).

It will be clear from the above list of writers to what extent Jasahara was popular with the Jains from the time of Haribhadra down practically to the close of the 18th century. Of this vast literature on the hero, only two works, Somadeva's Yaśastilaka and Vādirāja's Yaśodharacarita are made known to the world and the present work is the third. Its special interest is not thus the narrative, but the language, the Apabhramśa language of Mahārāstra of the 10th century. I am reserving for my introduction to Puṣpadanta's Tisatṭhimahāpurisagunālaṃkāra, a detailed examination of all his works from the linguistic point of view, their vocabulary and metre, as the present work is only one-twentieth of his extensive literary activity. I have however added to the present text an Apabhramśa-Sanskrit Glossary and a few notes to help the reader.

5. THE STORY OF JASAHARA

There was on this earth a prosperous and beautiful country named Yaudheya, the capital of which was Rājapura. King Māridatta ruled over this country and spent most of his time in the full enjoyment of princely pleasures. One day there came on a visit to the capital, a Kāpātikācārya, named Bhairavānanda. He used to wander in the city for begging alms and also for the purpose of initiating people in the faith of the Kāpālika school. He himself proclaimed that he possessed supernatural powers of visualising things of all times, that he had the power of remaining young for ever and that he could even check the movements of heavenly bodies like the sun and the moon. The news of the visit of Bhairavānanda reached the king's ears, and he sent one of his elderly minister for him. On his arrival at the court the king respectfully bowed down to him and begged of him the favour of the power of moving into the air. Upon this Bhairavānanda said that he would certainly secure for him that power if goddess Candamārī is worshipped with the offering of pairs of all living beings including a human pair. The king immediately ordered his officers to secure such pairs. The officers accordingly brought these pairs except a human pair. The king again ordered one of the officers to secure one and he began to search various places for it.

At this juncture there came on a visit to the town a Jain monk called Sudatta, accompanied by his two pupils in the stage of kṣullaka, named Abhayaruci (boy) and Abhayamati (girl). He at first halted at a garden adjoining the town, but finding that place unsuitable, he went to the cemetery. The two kṣullakas under training with him asked their teacher's permission to go for begging into the town; when they were moving into the town, the king's officers caught them and brought them to the temple of goddess Candamārī. The pair of kṣullakas blessed the king in grave tone which attracted his attention. The king was greatly impressed by their figure and

asked them whether they came from a royal family and how it was that they took the vow of ascetic life in so tender an age. The boy ksullaka thereupon said to the king that a pious narrative like his own would be wasted on an assembly of impious men ; but the king stopped all the noise of drums and other musical instruments and pressed him to give the narrative. Thereupon the ksullaka said :—

There is a country in this Bhārata Varsa called Avanti with Ujjayini as its capital. There ruled at this place a king, Yaśobandhura by name. His son Yaśorha succeeded him to the throne. He married princess Candramati, daughter of king Ajitāṅga. I was the son of this couple and was named Yaśodhara. I was trained in all the princely arts and crafts of the age, and, when in youth, was married to the princess of Krathkaisika and to a few more princesses. In due course of time king Yaśorha saw his hair turning grey and immediately decided to place his son Yaśodhara on the throne and lead the life of an ascetic. The young king Yaśodhara firmly established his rule on the earth in a short time.

II

King Yaśodhara was so much addicted to pleasures of youth that he felt even the responsibility of his king-ship an obstacle to the full enjoyment of life. Now one day in full moon-light, the king Yaśodhara went to the palace of his queen Amṛtamati. At about midnight, when the king was in bed and apparently asleep, the queen gently got herself free from the king's arms and quietly went out to meet her paramour who was an ugly figure of a hump-back. The king was astonished at this conduct of the queen and followed her sword in hand. The queen, on approaching the hump-back, pressed his feet to win him, but he got angry as she was late, and even kicked her. The queen however declared her helplessness and said that she would indeed be glad and worship the goddess if her husband was dead. The king on watching this behaviour of the queen was at one moment about to strike them both with his sword but he thought that he could not with propriety kill a woman and a mean fellow like her paramour. So he returned home in disgust. The queen also returned to her bed before dawn.

Disgusted with what he saw the previous night the king at first thought of leaving the worldly life and becoming an ascetic. Accordingly he declared in the court the next morning to his mother that he saw a bad dream the previous night to the effect that he must at once be a monk or he would die. The mother however proposed that she would rather offer an animal victim to the goddess to counteract the effects of the evil dream. The king proposed that, instead of an animal, a cock made of flour be offered which was done accordingly. The flour was eaten by all as flesh of a cock. But the king, returning home, placed his son on the throne and made preparations to go to the forest. On hearing this the queen came to him and told him that she had arranged a feast after which she also would accompany him to the forest. The king was tempted to wait and partake of the feast, at which the queen poisoned both the king and his mother. The king fell on the ground under the effect, of the poison when the queen, apparently wailing, threw her body on him and strangled him in the neck to death.

INTRODUCTION

His mother also died as a result of the poison. His son Jasavai came to the scene and in grief performed all the funeral rites with due pomp so that his father and grand mother might have good life in the future. But on account of the offering as a victim of the artificial cock, king Yaśodhara was born a peacock and Candramati a dog in a forest. The peacock was brought to Ujjayini and presented to king Jasavai by a forester. Yaśodhara in his birth as peacock saw his queen still leading a vicious life with her paramour and in anger attacked them both. The queen struck the peacock with her girdle and thus broke one of its legs. Her maids persued the peacock, when the dog, queen mother Candramati of the previous life, came there and killed it. King Jasavai came there and with the stroke of a sped killed the dog. In their next birth Yaśodhara and Candramati respectively became a mangoose and a snake. Both these met their death in the forest, the snake being devoured by the mangoose and the mangoose by a boar.

III

Resuming the narrative, Abhayaruci said Jasahara was born a fish in his next birth in the river Śiprā, and his mother's soul a crocodile. While this crocodile attempted to catch the fish, one of the maids of the palace fell on them in the course of their water-sport, and the crocodile caught her. The fish thus escaped from the clutches of the crocodile who was caught by the royal order and so also the fish. The crocodile died on being placed on the ground, while the fish was taken to the royal kitchen, was cut and fried and served to Brahmins by Jasavai in the name of his father Jasahara. In their next life Candramati was born a she-goat and Jasahara a he-goat to her. While in youth the he-goat the son was enjoying sexual pleasures with the she-goat, the he-goat was killed. Jasahara's soul passed into the womb of the she-goat again. One day king Jasavai caught the she-goat and cut her when he saw the child in the womb still alive. The young one was brought up in the palace, but one day Amṛtamati ordered it to be killed. Next Candramati and Jasahara passed through successive births of buffalo, cock and hen. While in this last birth they were placed in a cage under the charge of an officer of Jasavai. This officer met a monk who delivered to him a long discourse on Jainism. The officer was, as a result of the conversation, converted to Jainism and the cocks recollected their previous births. But at this very juncture the cocks in the cage were killed by an arrow of king Jasavai who wanted to show his skill in archery to his queen, Kuśumāvalī, and the souls of Jasahara and Candramati then passed into the womb of the queen as twins, the boy Abhayaruci and the girl Abhayamati. In course of time the twins attained youth. King Jasavai went to the forest to hunt with five hundred dogs. He met there a Jain monk named Sudatta; and thinking his presence to be a bad omen, he discharged all his dogs against the monk. But by the prowess of the monk they all stood before him with bent heads. The king thereupon thought of killing the monk with his sword, when the merchant-friend of the king intervened and asked him to prostrate before the monk who, as the merchant said, renounced his kingdom of the Kalinga country because he punished an innocent person by mistake. King Jasavai was moved by this narrative, bowed down to the monk, and thought in his mind to cut off his head in order to expiate his

JASAHARACARIU

sins. The monk knew the king's thoughts and asked him not to do such a rash act. The king was again surprised to see that the monk possessed the power of knowing the thoughts of others and asked him further to tell him where his father, mother and grandmother were born. The monk thereupon narrated to him their various births, saying in conclusion that his father and grand-mother were born to him as his son Abhayaruci and daughter Abhayamati, while his mother was born in the fifth hell.

IV

On hearing this narrative king Jasavai was moved, and decided, despite the gentle persuasions of his harem, to live the life of a monk. Abhayaruci and Abhayamati also recollected their previous births and fainted. When they were brought round they at first thought of becoming monks, but being too young and being advised on the principles of Jainism by Sudatta, postponed the project for some time, and became ksullakas, novices. Abhayaruci concluded his narrative by saying to king Māridatta that they were, while wandering as ksullakas, caught by his men and brought to the temple of Candamārī.

On hearing this account both the goddess Candamari and king Māridatta repented and requested the ksullaka to initiate them into the fold of Jainism. The ksullaka however replied that he could not do that, but his teacher alone could admit them into Jainism. At this juncture Sudatta came there, narrated the past lives of king Māridatta and others. Bhairavānanda also became disgusted with his mode of life and all the three were converted to Jain faith. At this stage Abhayaruci became a monk and Abhayamati a nun, and after having lived a pious life, were born as gods in the Īsāna heaven.

6. ACKNOWLEDGMENT OF OBLIGATIONS

It now remains for me to perform the pleasant duty of thanking all those who, one way or the other, assisted me in the production of the present work. I must thank in the first place Rai Bahadur Hiralal, who, through the kindness of my friend Mr. V. K. Deshpande B. A.; LL B., Additional District and Sessions Judge in the C. P. and Berar, put me in communication with the late Mr. Jaykumar Devidas Chaware, Pleader of Akola. It was late Mr. Chaware who made all the necessary arrangements for my inspection of the two Bhandars at Kāranjā.

The lovers of Indian scholarship owe a special debt of gratitude to the generosity and munificence of Shet Gopal Ambadas Chaware, Banker and Merchant of Kāranjā in Berar, who has set apart a large sum of money for the purpose of starting the Series Ambadas Chaware Digambar Jain Granthamālā, to perpetuate the memory of his late father. It is through this Series that the valuable treasures of the Kāranjā Jain Bhandars will be made known to the world of scholars. I am particularly indebted to him for the courtesy he showed me during my stay at Kāranjā and for the honour he did me in entrusting the edition of the present work.

INTRODUCTION

To Professor Hiralal Jain, M. A., LL. B., of King Edward College, Amraoti, and the General Editor of the Series, I owe a special debt of gratitude. It was Professor Jain who did me the honour of entrusting the editorship of this first volume, and bore through patiently with me in my protracted labours of editing and printing. It was he, as Rai Bahadur Hiralal had already said in his introduction to the Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in C. P. and Berar, who first inspected the Kāranjā Jain Bhandars and made their precious treasures known to the world. Professor Jain helped me in other ways also. He procured for my use a valuable MS. from Pandit Jugal Kishore Mukhtar of Samantabhandrāsrama, Delhi, and sent me from time to time any piece of information that he might have come across. His articles on the Apabhramśa literature in the Allahabad University Journal, Vol. I and on Puspadanta in the Jain Sāhitya Samśodhak, Vol. II. iii. and others, have been of great use to me.

To Pandit Nāthūrām Premi and to Professor H. D. Velankar of the Wilson College, Bombay, I convey my thanks for respectively procuring for my use the MSS from the Bhandars at the Terapanthi Jain Mandir and the Ailak Pannalal Sarasvati Bhuvan in Bombay.

Nor should I forget to mention the deep obligations on me of my friend Mr. G. K. Gokhale, Secretary, Shri Ganesh Printing works, Poona, who, as Printer, did his best to produce the work with utmost care and promptitude, and never minded the troubles and inconveniences of the rather exacting editor. His staff, I am glad to note, cheerfully co-operated with him and with me in looking even to the minute details of printer's technicalities.

Fergusson College, Poona
January 1931

}

P. L. VAIDYA

जसहरचरिउ

तिहुवर्णसिरिकंतहो अइसयवंतहो अरहंतहो हयवम्महहो ॥
 पणविवि परमेट्टिहि पविमलदिट्ठिहि चरणजुयल णयंसयमहहो ॥ ध्रुवकं ॥
 कौण्डिल्लगोत्तणहदिणयरासु वल्लहणरिंदघरमहयरासु ।
 णणहो मंदिरि णिवंसंतु संतु अहिमाणमेरु कइ पुण्फयंतु ।
 चितइ ये हो धणणारीकहाए पज्जत्तउ कयदुक्कियपहाए । 5
 कह धम्मणिबद्धी का वि कहमि कहियाइ जाइ सिवँ सोक्खु लहमि ।
 पंचसु पंचसु पंचसु महीसु उप्पज्जइ धम्म दयासहीसु ।
 धुउँ पंचसु दससु विणासु जाइ कप्पंधिवखइ पुणु पुणु वि होइ ।
 कालावेक्खइ पढमिल्लु देउ इह धम्मवाइ सियवसहकेउ ।
 पुरुषंउ सामि रायाहिराउ आणंदिउ चउसुरवरणिकाउ । 10

घत्ता—वत्ताणुट्ठाणें जणु धणदाणें पइं पोसिउ तुहुं खत्तधर ॥
 तवचरणविहाणें केवलणाणें तुहुं परमप्पउ परमपर ॥ १ ॥

जय रिसह रिसीसरणवियपाय जय अजिय जियंगयरोसराय ।
 जय संभव संभवकयविओय जय अहिणंदण णंदियपओय ।
 जय सुमइ सुमइसम्मयपयास जय पउमप्पइ पउमाणिवास ।
 जय जयहि सुपास सुपासगत्त जय चंदप्पइ चंदाहवत्त ।
 जय पुण्फयंत दंतंतरंग जय सीयल सीयलियवयणभंग । 5
 जय सेय सेयकिरणोहसुज्ज जय वासुपुज्ज पुज्जाणुपुज्ज ।
 जय विमल विमलगुणसेट्ठिठाण जय जयहि अणंतणंतणण ।
 जय धम्म धम्मतिथयर संत जय संति संतिविहियायवत्त ।
 जय कुंथु कुंथुपहुअंगि सदैय जय अर अरमाहर विहियसमय ।
 जय मल्लि मल्लियादामंगंध जय मुणिसुव्वय सुव्वयणिबंध । 10

1. १. STB read तिहुयण. २. SB चलण. ३. T अइसयमहहो ४. S कौण्डिण ५ STB चितइ हो
 ६. ST लहु मोक्खु. ७. T धुवु. ८. STB पुरुदेवसामि. ९. T चउविहसुरणिकाउ.

2. १. STB णमिय. २. STB सीयल. ३. S अणंत अणंतणण. ४. S सुदय.

जय नमि नमियामरणियरसामि जय नेमि धम्मरहचक्रणेमि ।
जय पास पासलिङ्गकियाण जय वड्डमाण जसैवड्डमाण ।

घत्ता—इय जाणियणामहि दुरियविरामहि परिहिवि णवियसुरावलिहिं ॥
अणिहणहि अणाइहि समियकुवाइहि पणविधि अरहंतावलिहिं ॥ २ ॥

3

पुणु पभणमि जसहरणिवचरित्तु	वइयरविचित्तु जं जेम वित्तु ।	
बहुदीवमहण्णवमंडलिल्लि	इहं तिरियलोइ मयसंकडिल्लि ।	
वित्थिण्णए जंबुदीवि भरहे	खरकिरणकरावलिभूरिभरहे ।	
जोहेयउ णामि अत्थि देसु	णं धरणिए धरियउ द्विव्वेसु ।	
जहिं चलइं जलाइं सविब्भमाइं	णं कामिणिकुलइं सविब्भमाइं ।	5
भंगालेइं णं कुकइत्तणाइं	जहिं णीलणेत्तणिद्धं तणाइं ।	
कुसुमियफलियइं जहिं उववणाइं	णं महिकामिणिणवजोव्वणाइं ।	
गोवालमुहालुंस्त्रियफलाइं	जहिं महुरइं णं सुकयं हो फलाइं ।	
मंथररोमंथणचालियगंड	जहिं सुंदि णिसण्ण गोमहिसिसंढ ।	
जहिं उच्छुवणइं रसदंसिराइं	णं पवणवसेण पणच्चिराइं ।	10
जहिं कणभरणेणविय पिक्कं सालि	जहिं दीसइ सयदलु सदलु सालि ।	
जहिं कणिसु कीररिल्लो लि चुणइ	गहवइसुयाहि पडिवयणु भणइ ।	
छोक्करणरावरंजियमणेण	पहि पउ ण दिण्णु पंथियजणेण ।	
जहिं दिण्णु कण्णु वणि मयउलेण	गोवालगेयरंजियमणेण ।	
जहिं जणधंणकणपरिपुण्ण गाम	पुर णयर सुसीमंराम साम ।	15

घत्ता—रायउरु मणोइरु रयणंचियघरु तहिं पुरवरु पवणुंइयहिं ॥

चलच्चिधहि मिलियहिं णहयलि युलियहिं छिवइ व सग्गु सयंभुंअहिं ॥ ३ ॥

५. S जयवड्डमाण. ६. B परहवि.

3. १. ST इय. २. ST जंबुदीवभरहे. ३. P भंगालय. ४. T णिद्धं तणाइं. ५. T सुकय. ६. SB सुहु-
जिसण्ण; T सुहणिसण्ण. ७. SB पणमिय; T विणमिय. ८. P पक्क. ९. T कणधणभर. १०. SB सणीलाराम.
११. PB पवणुधुइहि. १२. P सयंभुअहिं.

जं छण्णउं सरसहिं उववणेहिं
 कयसइहिं कण्णसुहावपहिं.
 गयवरदाणोल्लिय वाहियालि
 सरहंसइं जहिं णेउररेवेण
 जं णिवभुयासिवरणिम्मलेण
 पडिखलियबइरितोमरससेण
 णं वेढिउ बहुसोहगगभारु
 जहिं विलुलिय मरगयतोरणाइं
 जहिं धवल मंगलुच्छवसराइं
 णवकुकुमरसलइयारुणाइं
 गुरुदेवपायपंकयवसाइं
 सिरिमंतइं संतइं सुत्थियाइं
 जहिं णिञ्च विजयदुंदुहिणिणाउ

णं विद्धउं वम्महमगणेहिं ।
 कणइ व सुरहरपारावपहिं ।
 जहिं सोइह चिहं पवसियपियालि ।
 मउ चि कैमंति जुवईपहेण ।
 अण्णु वि दुग्गउ परिहाजलेण ।
 पंडुरपायारिं णं जसेण ।
 णं पुंजीकय संसारसारु ।
 चउदारइं णं पउराणणाइं ।
 दुतिपंचसत्तभोमंइं घराइं ।
 विक्खित्तदित्तमोत्तियकणाइं ।
 जहिं सव्वइं दिव्वइं माणुसाइं ।
 जहिं कहिमि ण दीसंइ दिउत्थियाइं ।
 तहिं मारिदत्तु णामेण राउ ।

5

10

घत्ता—कोवर्गिं जलियाहिं परमंडलियाहिं जो खंडइ अहिमाणसिह ॥

जसु णिहिघडधारिणि आणाकारिणि वियरइ सिरि घरदांसि जिह ॥ ४ ॥ 15

चाएण कण्णु विहवेण इंदु
 दंडे जसु दिण्णपयंडघाउ
 सुरकरिकरथोरपयंडबाहु
 भसलउलणीलधम्मिल्लसोहु
 गोउरकवाडअइविउलवच्छु

रूवेण कामु कंतीए चंडु ।
 परदुमदलण बलेण वाउ ।
 पच्चंतणिवइमणि दिण्णदाहु ।
 सुसमत्थभडह गोहाण गोहु ।
 सत्तित्तयपालणु दीहरच्छु ।

5

4. १. T सुहावणेहिं. २. ST णं. ३. S चिक्कमंति; T विक्कमंति. ४. ST पवराणणाइं. ५. S भउमइं; T भूमी
 ६. S दिव्वइं. ७. T णिञ्च. ८. S घरि दासि.

5. १. STB परबलदलणबलेण वाउ. २. Portion beginning with this line and ending with
 कडवक 8, is, curiously enough, omitted in S. as well as in T.

लक्ष्मणलक्ष्मिकिउ गुणसमुहं
विष्णाणपाणतेपण तरणि
तहो बुद्धवजससेस सव्व
हिंदइ समवयसभडेहि जुत्तु
जोव्वणमउ सिरिमउ जेतु फार
कहिं दीसइ तहिं सुहमग्गु सार
कइया वि तुरइ आरुहिवि भमइ
कइया वि हत्थि चडिइ मइरंगि
वाणि भमइ कीलउच्छलचित्तु
वल्लीमंडवि कामिणिसमाणु
पुणु कक्खि जाइ सुणहहिं समग्गु
कइया वि पुरउ गिज्जं व गीउ
णञ्चावइ धरिणिं धरेवि तालु
छंदे विरज्जइउ करइ कम्मु

सुपसण्णमुत्ति घणगहिरसहुं ।
परणिवइ ण बुज्झइ धम्मसरणि ।
संठिय जे तरुणसरंतगव्व ।
परिपक्कबुद्धि एक्कु वि ण पत्तु ।
वट्ठंति वेत्थु बहलंधयार । 10
बुहरवियेरोहिं विणु विहिय चारु ।
घर खुंदिवि खरखुरस्सण्णु कमइ ।
अंकुसेण भमाइइ विविहभंगि ।
रमणीहि पउहर णियइ चित्तु ।
रइसुहुं भुंजइ रइबज्जठाणु । 15
अवल्लोयइ मयसूयरइ मग्गु ।
अप्पणु गायइ रहंसि अभीउ ।
वज्जउ वज्जावइ पुणु णिवालु ।
विणु बुद्ध्यणेहिं कहिं लइइ धम्मु ।

यत्ता--तहो रज्जु करंतहो जणु पालंतहो मंतिमहल्लिहिं परियंरिउ ॥ 20
एत्तहिं रायउरहो घणकणपउरहो संपत्तउ कउलायरिउ ॥ ५ ॥

6

तीह जगइ भयाउलु अलियरासि
तहिं भमइ भिक्खअरु देइ सिक्ख
बहुसिक्ख हिंसहियउ डंभधारि
सिरिं टोप्पी दिण्णरवणवण
अंगुलदुतीसपरिमाणु दंडु
गालि जोगवट्टु सज्जिउ विचित्तु
तंडतडतडतडताडियसिगु

भइरउ अहिहाणिं सव्वगासि ।
अणुगयहं जणहं कुलमग्गदिव्ख ।
घरि घरि हिंदइ हुंकारकारि ।
सा झंपवि संठिय दोण्णि कण्ण ।
हत्थे उप्फालिवि गइइ चंडु । 5
पाउँडियजम्मु पइ दिण्णु दित्तु ।
सिगग्गु छेवि किउ तेण चंगु ।

३. B समुह. ४. B सोहु. ५. B करइ. ६. B रइसुहु. ७. B अप्पणु. ८. B घरणिहिं. ९. B परिवरिउ.
6. १. PA जगइ राउलु. २. PA अहिणामि. ३. B हुंकारिकारि. ४. B सिरटोप्पी. ५. B अप्फालिवि.
६. B पावाडिय. ७. AB add before this line बहुवियपासियउवएसदुहु चलधुम्ममाणु परलोभभहु.

अप्पि अप्पहो माहप्पु दप्पु
 महु पुरउ पसंप्पिय जुयचयारि
 णल णहुस वेणु मंधाय जेवि
 मइं दिट्ठ रामरावण भिडंतं
 मइं दिट्ठ जुद्धिट्ठल बंधुसहिउ
 हउं चिरंजीविउ मा करहु मंति
 हउं थंममि रविहि विमाणु जंतु
 सव्वउ विज्जउ महु विप्फुरंति
 इय जंपंतहो तहो जाय वत्त
 जायउ कोऊहलु रहसजुत्तु
 पेसियउ महल्लउ गुणवरिद्धु
 आपसु करेविणु भणइ मंति
 सिग्घउ गउ जहिं ठिउ णरवरिद्धु
 दिट्ठउ जोईसरु णरवरेण
 संमुहु जाणविणु धरणि पडिउ
 आसीसिउ णरवइ भइरवेण
 उच्चासणि बइसाविवि तुरंतु
 तुहुं देव सिद्धिसंहारकारि
 तुहुं चिरंजीविउ जं हुवउ किं पि
 तुहुं महु उप्परि साणंदभाउ

घत्ता—जोईसरु मणि तुट्ठउ चितइ दुट्ठउ इंदियसुहु महु पुज्जइ ॥

जं जं उहेसमि तं भुंजेसमि आपसहु संपज्जइ ॥ ६ ॥

अणउंछिउ जंपई थुणइ अप्पु ।
 हउं जरइं ण धिप्पमि कप्पघारि ।
 महि भुंजिवि अवरइं गयइं तेवि । 10
 संगामरंगि णिसियर पडंत ।
 दुज्जोहणु ण करइ विण्हुकाहिउ ।
 हउं सयलहं लोयहं करमि संति ।
 चंदस्स जोण्ह छांयमि तुरंतु ।
 बहु तंत मंत अग्गइ सरंति । 15
 सा मारिदत्तकण्णंतु पत्त ।
 दीसइ झडत्ति परिसउ पत्तु ।
 गउ तेण भइरवाणंदु दिट्ठु ।
 तुह दंसणि रायहो होइ संति ।
 सहमज्झि परिट्ठिउ णं उविहु । 20
 सीहासणु मेल्लिउ रहसिरेण ।
 दंडु व्व दंडपणिवाइ णडिउ ।
 हउं भइरउ तुट्ठउ णियमणेण ।
 सलहणहं लग्गु तहो पंई पडंतु ।
 तुहुं जोईसरु कुलमग्गचारि । 25
 पयडहि जं होसइ कज्जु तं पि ।
 वियरंहि हो सामि महापसाउ ।

7

ता चवइ जोई महु सयल रिद्धि
 हउं हरणकरणकारणसमत्थु

विप्फुरइ खणंतरि विज्जसिद्धि ।
 हउं पयहु धरायलि गुणपसत्थु ।

८. B जं सह. ९. B समंप्पिय. १०. P चिरु. ११. B सव्वहं. १२. B रविह. १३. B. कण्णंति. १४. B पय.
 १५. PB चिरु. १६. B विरयहि.

7. १. PA राय.

जं जं तुहं मंगहि किं पि वत्थु	तं तं हउं देमि महापयत्थु ।	
पप्फुल्लवयणु ता चवइ राउ	महु खेयरत्तु करि विहियछाउ ।	
तुह खेयरत्तु हउं करमि बप्प	परमोवपसु जइ णिव्वियप्प ।	5
भो भो णिवकुलकुवलयमयंक	दुव्वारवइरिवारण असंक ।	
मां णिसुणहि णियपरिवारवयणु	णिस्संकिं लब्भइ गयणगमणु ।	
जइ देवि पुज्ज आगमिण उत्त	जइ जुयलजुयल जीवेहि जुत्त ।	
णहयर थलयर जलयर अणेय	पसुपक्खिमिहुण बहुवण्णभेय ।	
जइ णरमिहुणुलउ अवयं पुण्णु	देवीमंडउ तुहं करहि पुण्णु ।	10
तुह पम करंतहो बलिविद्धानु	हउं तूस मित्तु हं चंडियसमाणु ।	
ता तुज्झ होइ खेयरियसत्ति	विज्जाहर सेवहिं अतुलसत्ति ।	
तुह खग्गि वसइ जयसिरि सछाय	अमरत्तु होइ तह अजर काय ।	

घत्ता—इउं सयलु सुणेवि कउलायरिणं जं भणिउं ॥

खगविज्जालाहु अवंसिं होसइ मइं मुणिउं ॥ ७ ॥

8

तां रायहो चित्ति चमक्कु जाउ	दिदु होपप्पिणुं कज्जाणुराउ ।	
णिच्छउ अणेण जं कहिउ मज्झु	तं करमि जइ वि करणहं असज्झु ।	
आढत्तु तलारहं किंकराहं	वलियहं जमंदूअभयंकराहं ।	
पसुपक्खिमिहुण आणेहु सज्ज	देवीमंडउ पुरेहु अज्ज ।	
अहियारियाहं कहियउ विसेसु	पयहो जोईसहो घणु असेसु ।	5
सुपयच्छहु भत्तिभरेण णवहु	उप्परि आयहो सियछत्तु तडहु ।	
जं किं पि चवइ तं करहु आसु	जिह होइ मज्झु पुण्णाहिलासु ।	
रइसिल्लु राउ हिंसाहिणंदु	उवपसिं कउलहो हुवउ णंदु ।	
अइकूरदुरग्गहगहिउ जेण	कज्जु व अकज्जु वावरइ तेण ।	
जो होइ मिच्छमयगहिउ सहिउ	ण वि मण्णइ सो बुहयणाहिं कहिउ ।	10

२. B मंगहि. ३. B omits मा. ४. B णिस्संके. ५. B जुवलजुयल. ६. B बहुवणि. ७. B अवइपुण्णु.
८. B हं. ९. B इय. १०. B अवसं.

8. १. AB तो. २. B. होपविणु. ३. B. जम इव. ४. B. कवलहो. ५. B. जाणहु.

जह अंधु ण नियइ कुमग्गमग्गु जहँ जलु घोरणिकिउ तँहि विलग्गु ।
 जह करिहि सुंडं चउदिसिहि वलइ तह णरवइमणु पेरियउ चलइ ।
 इम मारिदत्तु परिहरिवि सव्वु जोईसहो वयाणि विलग्गु भव्वु ।
 हिंसाजीवहं संसारसरणि जीवहं अहिंस सुहकम्मधराणि ।
 गंधव्वु भणइ मइं कियउ पउ णिवजोईसहो संजोयमेउ ।

15

घत्ता-अग्गइ कइराउ पुप्फयंतु सरसइणिलउ ॥

देवियहि सरूउ वण्णइ कइयणकुलतिलउ ॥ ८ ॥

9

वेयालकालमगियमिसाहि तंणयरदाहिणुँल्लियदिसाहि ।
 तहो रायहो केरी वइरिमारि कुलदेवय णामिं चंडमारि ।
 उरयँलि विलुलिय णरँडंमाल सिंसुससिसममुह्दाढाकराल ।
 फणिबद्धदीहलंबिरथणाल तइयच्छिविणिग्गयजलणजाल ।
 लललँलियजीह रुहिरोलवोल वसकइमच्चक्रियकवोल ।
 घोणसकडिसुत्तयलिहियपाय पिउवणधूलीधूसरियकाय ।
 णिम्मंस भीम चम्मट्टिसेस सिहिसिहसंणिहर्फरुसुद्धकेस ।
 पेयंतावलिभूसियभुअंग तासियपासियबहुजीववग्ग ।
 णिरसिय दूसिय जइ णिंदमग्ग णग्गी दुच्चार वियारभग्ग ।
 गुंजारुणदारुणचवलणयण पलकवलगिलणपायडियवयण ।
 कंकालकवालतिसूलधारि किं वण्णमि जा पच्चकस्समारि ।
 अण्णाणं कुलिङ्गकुदेवभत्तु मारणसीलउ सो मारिदत्तु ।

5

10

घत्ता—पिच्छवि कंचाइणि रुहिरंचाइणि चक्रसूलअहिसग्गधरि ॥

जयकारियभार्वि विमलसद्धार्वि महु परमेसरि दुरिउ हरि ॥ ९ ॥

६. B. कुमग्गु मग्गु. ७. B. जिह जलिं. ८. B. तहिमि लग्गु. ९. P. सुंड.

9. १. T तं नयरह. २. T दाहिणिल्लिय. ३. T वेरिमारि. ४. AB उरयल. ५. ST सुंड. ६. T लललुलिय
 ७. A चच्चक्रिय. ८. T फुरिसुद्धकेस; S फलरुद्धकेस. ९. A भुवग्ग; PT भुयग. १०. T अण्णाण.
 ११. S कुदेवकुलिङ्गि.

10

छेलमिहुणसूयरा	रोझहरिणकुंजरा ।
वालवसहरासहा	मेसमहिसरोसहा ।
घोडकरहभल्लुया	सीहसरहगंडया ।
वग्घससयचित्तया	एवं बहु चउप्पया ।
कंककुररमोरया	हंसवलयचउरया ।
धूयसरहकाउल्ला	कोडिपूसकोइला ।
कुम्ममयरगो या	गाहँझसयरोहया ।
जीव सयळ जाणिया	तीप पुरउ आणिया ।

5

घत्ता--णियजीविउ वंछइ संति समिच्छइ परु मारेप्पिणु मूढमइ ॥

णाणाविहमिहुणइं रोझइं हरिणइं मारइ तहि अग्गइ णिवइ ॥१०॥ 10

11

विसभोयणेण किं णर जियंति	गोसिंगइं किं दुद्धइं सवन्ति ।
घण्णाइं सिलायलि किं हवन्ति	णीरसंभोजिं कहिं कायकन्ति ।
उवसमविहीणि कहिं होइ खन्ति	परु मारंतहं कहिं होइ संति ।
करकमलुग्गिण्णकिवाणएण	अवियाणएण तें राणएण ।
मेल्लायिय बहु मिहुणल्लयाइं	अवल्लोइवि चिण्णतणुल्लयाइं ।
रत्तत्तणेत्तजुयलिं पउत्तु	भो चंडयम्म तलवर तुरंतु ।
आणहि णरमिहुणल्लउ पसत्थु	तं मइं मारेव्वउ पढमु पत्थु ।
आएसु लैहिवि मउलियकरेण	पेसिय णियकिंकर किंकरेण ।
जोयंति णयरि वहावयासि	ते तं सरितरुवेल्लीणिवासि ।

5

घत्ता--तहिं तेइइ अवसरि हिंसावासरि पत्तु सुदत्तु ससंघु मुणि ॥

पत्थिवणंदणवणि दुमसाहाघणि कीरमोरकुररउल्लुणि ॥ ११ ॥ 10

10. १. ABS एव बहु. २. B सरह. ३. PTS कोइला. ४. AB पुंसकोइला; PS पूसकाउला. ५. ST गोह.
६. S डसय. ७. ST णाणामय; B णाणाविह. ८. S सव्वइं सउणइं.

11. १. B सिलाइलि. २. T भोयणि. ३. T रायएण. ४. S मेसाइयाइं मिहुणल्लयाइं; T मेसाइय बहु.
५. A लइवि. ६. PBT सुसंघ.

जत्थ चूयकुसुममंजरिया
 हा सा मुहरत्तेण व खद्धा
 छप्पयैछित्ता कोमलललिया
 दंसणफंसणहिं रसयारी
 वायंदोयणलीलासारो
 सोहइ घोलिरपिंछसहासो
 जत्थ सरे पोसियकारंडं
 दिण्णं हंसेणं हंसीप
 फुल्लामोयवसेणं भग्गो
 खरकंटयणह्णिभिण्णंगो
 जत्थासण्णवयम्मि णिसण्णो
 ण चरइ हरिणो दूवाँखंडं
 जत्थ गंधविसपणं खविओ
 हत्थी परिअंचइ णग्गोहं
 संकेयत्थो जत्थ सुहइ
 अहमं तीप तीप सामी
 घत्ता—तं वणु जोयंति मयणकयंति भणिउं पत्तंफुलु भिज्जइ ॥

सुयचंचूबणजजरिया ।
 कहिमि विडेण व वेसा लुद्धा ।
 वियैसइ मालेइ मउलियकलिया ।
 मउउ को अ ण वडूमणहारी ।
 तरुसाहाप हल्लइ मोरो ।
 णं वणलच्छीचमरविलासो ।
 सरसं णवभिसकिसलयखंडं ।
 चंचू चंचू चुंबंतीप ।
 केयइकामिणियाप लग्गो ।
 ण चलइ जत्थ खणं पि भुयंगो ।
 णारीवीणारवहियकण्णो ।
 ण गणइ पारद्वियकरकंडं ।
 जकलीतणुपरिमलवेहविओ ।
 फंसइ हत्थेणं पारोहं ।
 सोऊणं मंजीरयसइं ।
 एवं भणिउं णच्चइ कामी ।

5

10

15

समदमजमवंतहं संतहं दंतहं पत्थु णिवासु ण जुज्जइ ॥ १२ ॥

उग्गदित्ततवतावभासुरो
 तं च केरिसं कालगोयरं
 करयरंतकायउलसंकुलं
 रक्खसीमुहामुक्कणीसणं
 पक्खिपक्खलक्खेहि छाइयं

ता गओ मसाणं मुणीसरो ।
 सिवसियालदारियमओयरं ।
 ठंखहक्खसुक्खेहिं णिप्पलं ।
 सुलभिण्णचोरउलभीसणं ।
 किलिकिलंतणिसियराणिणाइयं ।

5

12. १. S जत्थ य. २. S छप्पइ. ३. ST विहसइ. ४. AS मउलियमालइ. ५. ST मउयउ को ण
 ६. T णिविण्णंगो. ७. ST दूवाकंडं. ८. T पत्थ. ९. ST सोऊण य. १०. AB पउं. ११. SBT पत्तु फलु.

13. १. S मसाणे. २. P तत्थ. ३. S सुक्खलक्खेहि. ४. ST पक्खिलक्खपक्खेहि.

भीयरं चियाचिञ्चिजालयं	धित्तवालपूलोलिणीलयं ।	
धूमगंधधवतसाणयं	सव्वदेहिदेहावसाणयं ।	
पवणपेणुल्ललियमप्परं	भग्गभाणविकिञ्चत्तन्नप्परं ।	
इंदचंदणाइंदसंथुओ	चउविहेण संघेण संजुओ ।	
फासुप विसाले धरायले	उज्जले पावित्ते सिलायले ।	10
सुद्धसुकलेसो अदुम्मई	तम्मि संणिसण्णो महाज्जई ।	

घत्ता—पालियजिणदिक्खहिं गच्छहु भिक्खहिं भणिवि णवेवि णियच्छियउ ॥

तहिं गुरु परमेसरु हयवम्मीसरु खुल्लयजुयलिं पुच्छियउ ॥१३॥

14

णाणालक्खणचच्चियगतं	पहसियवत्तं कयकरपत्तं ।	
पंकयणेत्तं पालियवित्तं	जिणपयभत्तं विसयविरत्तं ।	
कल्लिमलचत्तं सुयणविरत्तं	दयसंजुत्तं उत्तमपत्तं ।	
धम्मासत्तं गुरुणामुक्कं	सगुणगुहक्कं जियमयचक्कं ।	
अहिमाणिकं रुहरहियक्कं	पुरवहिदुक्कं कम्मविमुक्कं ।	5
बालयजुयलं दट्ठं विमलं	धुणियं कमलं लवियंसमलं ।	
णरणियरेणं स्रग्गकरेणं	पावपरेणं कडुयसरेणं ।	
एयं मिहुणं परमं गहणं	सुहसंगहणं दुहणिम्महणं ।	
चारुकरगं रूवसमगं	विहिवसभगं मारणजोगं ।	
मयउलविलए णच्चियविलए	महियलतिलए देवीणिलए ।	10

घत्ता—इय तेहिं भणेप्पिणु भिउडि करेप्पिणु सयणु किरणमालाफुरिउ ॥

तं सिसुजुयलुल्लउ तिहुवणि भल्लउ रुसिवि करपल्लवि धरिउ ॥ १४ ॥

५. T महामई. ६. T ता.

14. 1. This line and the two following ones are arranged in Mss in various ways, the wording being the same. २. T भावसमगं. ३. T णिच्छियणिलए.

तं जणभयजणणं सिरिणिहणणं णाऊणं ।
 कयजीवविमहं मारणसहं सोऊणं ॥
 अभयरुहकुमारो णिज्जियमारो थिरु चवइ ।
 सुक्कियहलवेल्ली णियबहिणुल्ली संठवइ ॥
 मा बीहसु कण्णे अज्जु पवण्णे मरणदिणे ।
 हिययं अविक्कं गयस्सयसकं ठवसु जिणे ॥
 छिंदउ तणुचम्मं भिंदउ वम्मं रसवसउ ।
 भक्खउ जंगलयं चंपउ गलयं रक्खसउ ॥
 घुट्टउ कीलालं खंडउ सीलं जइण मुणी ।
 ता होइ पसिद्धो देवो सिद्धो अट्टगुणी ॥
 किं कुणइ रउहो रामो खुहो असुहरणं ।
 अम्हाण अल्लम्मो जिणवरघम्मो सहि सरणं ॥
 ता भणियं तीए चंदमुहीए कयपुलयं ।
 पैइ उत्तं जुत्तं जं जिणसुत्तं णिम्मलयं ॥
 अवरोप्परु खंतइ संतइ दंतइ दमियाइं ।
 दुदमि भवकदमिं जं चिरु णिरंसमि भमियाइं ॥
 मइं हियए धरियं ण हु वीसरियं तं खणु वि ।
 एवहिं अवगण्णमि जीविउ मण्णमि ण उ तणु वि ॥

5

10

15

घत्ता—इय बे वि चवंतइं जिणु सुमरंतइं कउलकुडुंबाणंदिरहो ॥
 पक्कलपाइकहिं जमललुक्कहिं णियइं तिसूलिणिमंदिरहो ॥१५॥

20

जहिं रसियसिगाइं उद्धरियकंडाइं
 लंबंतमाऊरपिच्छोहणिवसणइं

भुअदंडदक्खवियकोअंडेदंडाइं ।
 मसिघातुमंडियइं पित्तलविट्ठसणइं ।

15. १. AB सिरु. २. T. सुक्कय. ३. STB अज्ज. ४. AS चप्पउ. ५. T तइ. ६. ST दइवें होतइं. ७. AB णिस्समि; 8 णिसमे. ८. B हियइ पधरियं. ९. ST तिसूलिणि.

16. १. ST कोअंडचंडाइं. २. T माल्लर.

कडिबद्धचलचीरियाचिंधजालां
 पायडियणियगुरुकमारुदलिगां
 मुदाविसेसेण दूरं णमंतां
 कहकहकहंतां सविचारवेसां
 जहिं विविहभेयां कउलां मिलियां
 जहिं करडपडहां वज्जंति वज्जां
 छिज्जंति सीसां णिवडंति भीसां
 गिज्जंति गेयां चामुंडचंडां
 दुप्पेच्छरत्तच्छविच्छोहदाइणु
 पसुरुहिरजलसित्तपंगणपपसम्मि
 पसुअट्टिकयपिट्ठंरंगावल्लुम्मि
 पसुर्कत्तिउल्लोवयंचियणहंतम्मि

करधरियविप्फुरियकत्तियकवालां ।
 कुलघोसमयचम्मपच्छाइयंगां ।
 पयधघरोलीहिं घवघवघवंतां । 5
 मुकट्टहासां शंपडियकेसां ।
 कीलंति दड्डरं अट्टंगवलियां ।
 इट्टां मिट्टां पिज्जंति मज्जां ।
 रसवसविमीसां खज्जंति मासां ।
 गहिऊण तुंडेणं कंडस्स खंडां । 10
 णच्चंति जोइणु साइणु डाइणु ।
 पसुदीहजीहादलच्चणविसेसम्मि ।
 पसुतेल्लपज्जलियदीवयजुइल्लम्मि ।
 मारीप देवीप देवालप तम्मि ।

घत्ता—सीहु व करितासणु दाढाभीसणु मेहु व विज्जुविराइयु ॥
 दंति व दंतगिं उगंयखगिं सहुं णरणाहु पलोइयु ॥ १६ ॥

15

17

ता भासियं तेहिं भांवि प्फुरंतेहि ।
 भो सुद्धवरवंस सिरिपोम्मिणीहंस
 गुणसेदिठाणेण जोइ व्व णाणेण
 गिरि विव सिलोहेण तरु विव फलोहेण
 हयकूरकम्मेण तं वड्ड धम्मेण
 दट्टूण डिंभाइ भयमयणिसुंभाइं
 लच्छीपियल्लेहिं सरलंगुल्लेहिं
 गूदेहिं गुंफेहिं णं मंतगुंफेहिं

भो रायराएस संगहियजससेस ।
 णेहु व्व दाणेण पाणि व्व पाणेण ।
 ससि विव कलोहेण जलहि व जलोहेण ।
 इय मडुरघोसेण पसमंतरोसेण । 5
 संचितियं तेण पडुमारिदत्तेण ।
 पापहिं रत्तेहिं णक्खेहिं दित्तेहिं ।
 सोहामहग्घाहिं मसिणाहिं जंघाहिं ।

३. Tomits सविचार...मिलियां. ४. B दड्ड. ५. T तुंडा. ६. AP पट्टि ७. S विसेसम्मि. ८. ST कित्ति.
 ९. ST उल्लोयअंचिय. १०. ST उक्खय.

17. १. S भाविच्छुरंतेहि. २. ASTB पोमिणी. ३. ST गुप्पेहिं.

णिविडेहिं जाणूहिं करिकरसमोरूहिं
 गंभीरणाहीहिं वद्वियसमाहीहिं
 अविर्लासवंकेहिं रेहातियंकेहिं
 छणयंदवयणेहिं आयंषणयणेहिं
 बिंबीहलाहेहिं अहरेहिं तंबेहिं
 उडुवइपभालेहिं पत्तलकवोलेहिं

सुविडलकडिलेहिं तुच्छोभारिलेहिं ।
 दयवेल्लिराहाहिं ललियाहिं बाहाहिं । 10
 गलकंदलुलेहिं तिलोकमोलेहिं ।
 संगयपलंबेहिं कण्णेहिं दिव्वेहिं ।
 उज्जुवाहिं णासाहिं कुडिलाहिं भउहाहिं ।
 णिवपट्टभालेहिं अलिणीलवालेहिं ।

घत्ता—कहिं आयहिं बालइं णिरु सोमालइं हा खल विहिं इयसुयणसुह ॥ 15
 एए सामुहिं समउ समुद्धे एयहिं किं ण भुत्त वसुह ॥ १७ ॥

18

अणिंदो खगिंदो दिणिंदो फणिंदो
 सिसूरुवधारी मुरारी पुरारी
 इमो को वि देवो सुअवत्तभावो
 मही धुद्धि सिद्धी सुहाणं व लद्धी
 सुहाणं व जोणी तवाणं व खोणी
 पसण्णा कुमारो इमा चंडमारी
 णिण्णं गहीरं मइं भत्तिभारं
 जिणं दिक्खपत्तं भवानंतपत्तं
 मणे मंतिऊणं इमं चित्तिऊणं
 सवित्तोपउत्तं पसाहेह वत्तं
 सरज्जाय भट्टो पुराओ पणट्टो
 तुमं रायउत्तो ण किं को वि धुत्तो
 इमी कस्स धूया कुलाणंदभूया
 घराओ पउत्थं किमत्थं वउत्थं
 सिसूणं पि दिक्खा गुणेसुं परिकखा

सुरिंदो उविंदो महारुंदचंदो ।
 अणंगो असंगो अभंगो अलिंगो ।
 दिदी कंति किंती सिरी संति सत्ती ।
 जसाणं व सेणी गुणाणं व खाणी ।
 दुहाणं व हाणी कवीणं व वाणी । 5
 समाया समाया घरादिणपाया ।
 किमं भायणेयं मइं कहिमि एयं ।
 पमोत्तूण चोज्जं पपुच्छामि कज्जं ।
 तिणाणं पउत्तं अहो हो णिरुत्तं ।
 मुसावायवत्तं अयं इत्थ पत्तं । 10
 रिऊणं भयाओ पमोत्तुं पयाओ ।
 पुरं मज्झ पत्तो सट्ठो गूढगत्तो ।
 अमाणं णवाणं जुवं माणवाणं ।
 सिसूणं पि सिक्खा सिसूणं पि भिक्खा ।
 महाअब्भुयं भो महाअब्भुयं भो । 15

४. AB जण्णहि; ST जण्हहि. ५. AS समरूहि. ६. ST सुपिट्टल. ७. AB दयवेल्लिसाहाहि. ८. AP अवलास. ९. STB छणइंदु. १०. ST omit उडुवइ...पट्टभालेहि. ११. ASTB. एयहि भुत्त किं ण वसुह.

18. १. S पहारुंद, T महारुद. २. AP सुआवत्तभावो. ३. S सुयाणं. ४. T omits this and the following line. ५. ST जिणे. ६. T पवाहेह. ७. ST omit अयं इत्थ पत्तं.

घत्ता—अम्हारउ पुरवरु लुहपंकियघरु किं आयउ कुमरीए सहं ॥

भणु दुरियसयंकरु सवणसुहंकरु सकहंतरु भो कुमर महं ॥ १८ ॥

19

ता णरवइणो हरिसं जणियं
अंघे णट्टं बहिरे गीयं
संढे लग्गं तरुणिकडक्कं
अण्णाणे तिव्वं तवचरणं
असमाहिल्ले सल्लेहणयं
णिम्मोइल्ले संचियदविणं
अवि य अपत्ते दिणं दाणं
पिसुणे भसणे गुणपडिवणं

उत्तमसावयवइणा भणियं ।
ऊसरल्लेत्ते ववियं बीयं ।
लवणाविहीणं विविहं भक्कं ।
बलसामत्थविहीणे सरणं ।
णिद्धणमणुए णवजोव्वणयं ।
णिण्णेहे वरमाणिणिरमणं ।
मोहरयंघे धम्मक्खाणं ।
रणे रुणं वियलइं सुणं ।

5

घत्ता—जो जिणपडिकूलहो मत्थइ सूलहो गुह परमागमु भासइ ॥

सो वयणइं सुद्धइं णं घयदुद्धइं सप्पहो दोइवि णासइ ॥ १९ ॥

10

20

मुच्छं गइ दिज्जइ सलिलु पवणु
किं सुक्के रुक्खे सिंचिएण
कह राय महारी धम्मविज्ज
तं णिसुणिवि मणि उवसंतु राउ
वामुंडचंड डिंढिमु रसंतु
णिम्मुकु भीमु हिंसाविणोउ
ण चलइं ण चलइं णं लेप्पिं विहिउ
ता पभणइ अभयरुइ सुवाय
विट्ठउ णिसुणउ. अणुहुउ १ जं पि
एत्थस्थि अवंती णाम विसउ

उवसंतहो किज्जइ धम्मसवणु ।
अविणीयं किं संबोहिएण ।
उत्तमपुरिसहं सवणिज्ज पुज्ज ।
वारिउ भंभाभेरीणिणाउ ।
वारिउ किलिकलिकलयलु महंतु
थिउ णिच्चलु णिहुयउ सर्यलु लोउ ।
णं भित्तिहिं चित्तयेरेण लिहिउ ।
देवाणं पिय भो णिसुणि राय ।
आयण्णहि णरवइ कहमि तं पि ।
महिबहु भुंजाविय जेण विसउ ।

5

10

८. AB कुमरीहि.

19. १. S महिवइणो. २. BT चइयं. ३. S अवत्ते; B अवित्ते ४. T वियलियसुहं. ५. S दोयवि.

20. १. ABST सव्बु. २. S चवइ. ३. P णं लेवविहिउ. ४. S किं पि.

घत्ता—णंदंतहिं गामहिं विउलारामहिं सरवरकमलहिं लच्छिसहि ॥
गलकलकेकारहिं हंसहिं मोरहिं मंडिय जेत्थु सुहाइ महि ॥ २० ॥

21

जहिं चुमुचुमंति केयारकीर	वरकलमसालिसुरहियसमीर ।
जहिं गोउलाइं पउं विकिरंति	पुंडुच्छुदंडखंडइं चरंति ।
जहिं वसहमुक्क देकैर धीर	जीहाविलिहियणंदिणिसरीर ।
जहिं मंथरगमणइं माहिसाइं	दहरमण्डुवावियसारसाइं ।
काहलियवंसरवरत्तियाउ	वहुअउ घरकम्मि गुत्तियाउ ।
संकेयकुंडुंगणपत्तियाउ	जहिं शीणउ विरहिं तत्तियाउ ।
जहिं हालिणिरूवाणिवद्धचक्खु	सीमावहु ण मुअइ को वि जक्खु ।
जिम्मइ जहिं एवाहि पवासिपहिं	दहिं कूरु स्त्रीर धिउ देसिपहिं ।
पवपालियाइ जहिं बालियाइ	पाणिउ भिंगारपणालियाइ ।
दिंतिए मोहिउ णिरु पहियविंदु	चंगउ दक्खालिवि वयणचंदु ।
जहिं चउपयाइं तोसियमणाइं	घण्णइं चरंति ण हु पुणु तिणाइं ।
उज्जेणि णाम तहिं णयरि अत्थि	जहिं पाणि पसारइ मत्त हत्थि ।

घत्ता—मरगयकरकलियहिं महियलि घुलियहिं फुरियहिं हरियहिं मूढमइ ॥
विणडिउ वासइं रसविण्णासइं णीणिउ मिट्ठि मंदगइ ॥ २१ ॥

22

जहिं चंदकंति माणिक्कदित्ति	उल्लइ गयणि णं धवलकित्ति ।
जहिं पोमरायराएण लित्त	णउ लायइ कुंकुमु हरिणणेत्त ।
जहिं इंदणीलघरि कसणकंति	वहु णज्जइ सियदंतहिं हसंति ।
सुपहायकालि जोयंतियाहिं	मणिभित्तिहि चिरु पवसियपियाहिं ।
अमलियमंडणु मुहु दिट्ठु जेत्थु	हा पिय विणु मंडणु हुंड णिरत्थु ।
अप्पाणउं जूरिउ तियाहिं जेत्थु	डिंभपडिबिबहो देइ हत्थु ।
जहिं छडयधित्तकुसुमावलीउ	मोत्तियरइयउ रंगावलीउ ।

21. १. S कसिण. २. SP पिउ. ३. T दुक्कार. ४. T कुंडंगण; AS कुंडगुण. ५. T विभावियाइ. ६. T दक्खा-
लिउ. ७. ST दुग्वासणं.

22. १. T कसिण. २. ST गउ. ३. AS डिंभउ. ४. S omits this line.

जहिं णंदइ जणु जणजणियसोक्खु णिच्चोरमारि णिलुत्तदुक्खु ।

जहिं गयमयसित्तउ रायमग्गु हयलालाजलपकेण दुग्गु ।

सुहचुअतंबोलरसेण रत्तु णिवडियभूसणमणियरविच्चित्तु ।

10

कप्पूरधूलिधूसरियचमरु मयणाहिपरिमलुब्भमियभर्मरु ।

घत्ता—जहिं णरवइ णापं मंति उवापं ववहारु वि सच्चं वइइ ॥

कुलु कुलवडुसत्थं पुरिसु वि अत्थं अत्थु वि जहिं दारिणं सहइ ॥ २२ ॥

23

तहिं उज्जेणिहिं मंहिवइ पसिंदु

जसबंधुर णामिं जससमिद्धु ।

तहु कुलमंडणु णंदणु जसोहु

णं खत्तधम्मु थिउ होवि गोहु ।

णं गुणमेलउ णं तवपहाउ

णं पुण्णपुंजु णं कलकलाउ ।

णं कुलभूसणु णं जसणिहाणु

णं णायमग्गु णं भुवणभाणु ।

पावग्गहगहविज्जामणि व्व

दीणाणाहहं चिंतामणि व्व ।

5

रिउसेल्लसिहरसोदामणि व्व

मंडलियमउलचूडामणि व्व ।

णं कामजुत्ति णं कामदित्ति

णं कामकित्ति णं कामसत्ति ।

णं कामहो केरी बाणपंति

णं कामहत्थिवाणाय तंति ।

अजियंगजाय णवणलिणयण

चंदमइदेवितह चंदवयण ।

हउं जणियउं ताइ महासईए

तणुरुहु कव्वत्थु व कइमईए ।

10

घत्ता—बहु वण्णिउ सयणहिं भूसिउ रयणहिं हउं जायउ जणणीइ किइ ॥

णवमयणरसिल्लि जायउ फुल्लि जोव्वणदुमफल्लगुंजु जिइ ॥ २३ ॥

24

सिसुलीलइं कीलइं सुहु रमंतु

गुणि पेरिउ वारिउ दोसि थंतु ।

उज्झापं तापं पढमि खविउ

सुवसिल्लइ भल्लइ विणइ ठविउ ।

मइं लिहियइं गहियइं अक्खराइं

गेयइं सरिगमपधणीसराइं ।

५. S हरचलिय. ६. B भसलु.

23. १. AB भूवइ; T णरवइ. २. ST omit पसिंदु...णंदणु. ३. T reads णं पावग्गहविज्जामणि व्व. ४. S omits दीणाणाहहं...सोदामणि व्व. ५. ABT सिहरि. ६. S मण्णिउ. ७. T मंडिउ. ८. AB गोच्छु; T गुच्छु.

24. १. ST घरि भमंतु. २. T दोसदित्तु. ३. A पढण.

फलकुलपत्तछिजंतराई
 वीयरणई णट्टई णवरसाई
 मायंगतुरंगारोहणाई
 दिव्वई कव्वई उवलक्खियाई
 तारुण्णउं लायण्णउं णिबद्धु
 पोढत्तणि पुट्टिपर्लट्टियंगु

सिललेपकट्टकम्मंतराई ।
 छंदालंकारई जोइसाई ।
 मई मुणियई गुणियई पहरणाई ।
 सव्वई विण्णाणई सिक्खियाई ।
 णउ जाणउं विहिणा किह णिबद्धु ।
 अंगे संहु हउं णावइ अणंगु ।

5

घत्ता—संयलकलासंपुण्णउ विणिहयदुण्णउ जसहर कुमर विसालई ॥

समवयसहिं जुत्तउ णिम्मलचित्तउ कीलइ णयरि सुसालई ॥ २४ ॥

10

25

ता पत्थउ कथकोसाउ णित्तु
 कइवयदिणेहिं गउ रयणधाम
 पडिहारहो सच्छिकरेवि चारु
 जयकारिउ राउ जसोहु तेण
 तंबोलजुत्तु संमाणु विहिउ
 पुच्छिउ रापं भो मंति पत्थु
 ता भणइ मंति महियलि पसिद्धु
 तहिं णरवइ णियकुलकमलभाणु
 तहो भज्जा देवी णाम साम
 सुअ अभयमहापवी सउण्ण
 सा जोव्वणरूढ णिणवि ताउ
 मेलाविय सुयण विसिट्ठ इह
 भो पुत्तिहि कारणि वरु णिणहु
 मंतेप्पिणु कहियउ सज्जणेहि
 जसहर तहिं रायजसोहपुत्तु

देसाउ मंति वाहिवि स पत्तु ।
 तोरणमंडिय उज्जेणि णाम ।
 सहमंडवि पत्तउ विहियचोरु ।
 विणपण विणयभूसियमणेण ।
 कुसलत्तु कुसलु ता तेण कहिउ ।
 पयडेहि कज्जु तुहुं आउ जेत्थु ।
 वइराडणयरु जणघणसमिद्धु ।
 णामेण विमलवाहणु पहाणु ।
 लक्खणलक्खंकिंय मज्झिंखाम ।
 णं अच्छर णावइ णायकण ।
 धूवहि परिणावमि हुवउ भाउ ।
 जे वुह वियक्खण सुइ वरिट्ठ ।
 को वि रायउत्तु गुणमहियदेहु ।
 उज्जेणि णयरि णिम्मलमणेहि ।
 कण्णाकारणे वरु एहु जुत्तु ।

5

10

15

४. ST omit this line. ५. P omits this line. ६. A तुरंगम. ७. T सव्वई. ८. B पल्लिद्वियंगु.

९. ST अंभोरुहु. १०. Portion beginning with this line and ending with कडवक २७, line २३, is omitted in S and T. ११. A विसालमइ. १२. A वइसहिं.

२५. १. B कयवय. २. AB सारु. ३. B मज्झिंखाम.

राएण मज्झु आएसु दिण्णु
पडिह्वा लेवि तुह सह प^५
सीह्वासणत्थु पेक्खेवि राय
संभासणु करि पुच्छियउ क
संभालिवि किज्जइ कज्जु पहु
राएं संतुट्ठि कहिउ सव्वु
को णेच्छइ धय पयमज्झि सारु
रायहो जं पिउ णिसुणेइ जाम
सुपयच्छियकण्णावरहो सज्जु
किज्जइ सुहदिणि सुहजोई लग्गि
ता राएं मणिमुद्दी अणग्घ

चालेवि पत्तु हउं इह पवण्णु ।
जणसंकुलु रायट्ठाणु दिट्ठु ।
सीसेण णमंसिय तुज्झ पाय ।
मइं तुम्हहं कहियउ सामि सज्जु ।
परसप्पर वट्ठइ जेम णेहु । 20
जं कहिउ पइमि तं भव्वु भव्वु ।
सक्करपपैसु वण्णेण चारु ।
हरिसं गउ मंती हुवउ ताम ।
इह आणिवि कण्ण विवाह कज्जु ।
आएसहं एत्थु वट्ठेवि मग्गि । 25
कण्णाकारणं तहो दिण्ण सिग्घ ।

घत्ता—जणवयकयसति ता सो मंति हरिहि चडेविणु णिग्गउ ॥

राएं सम्माणिउ सज्जणु जाणिउ वइराडइ संपत्तउ ॥ २५ ॥

26

तहिं दिट्ठु विमलवाहणु णरिंदु
पयकमलु णविउं मंतीवरेण
अमयमइ कण्ण जसहरहो देव
उज्जेणिहि जाइवि पुण्णलाहु
किउ मंतु सयलसज्जणहं जुत्तु
बंधव सुअ णियपरिवारु लोउ
चल्लिय हय गय रह सुहड जेत्थु
तहिं णंदणवणि णिवसेइ जाम
उच्छाहु जाउ णयरीहि मज्झि
मंडउ विचिन्तु विरइउ तुरंतु
बहुथंभहिं बहुतोरणहिं घडिउ
बहुणरणारिहि सेविउ विचिन्तु

संदमज्झि परिट्ठिउ णाइ इंदु ।
इल लाइवि सिरु भत्तीभरेण ।
दिण्णी जसोहतणयहो सुसेव ।
लिज्जइ किज्जइ कण्णेहे विवाहु ।
उज्जेणिहिं जाइज्जइ णिरुत्तु । 5
अंतेउरु भुंजियदिव्वभोउ ।
जग्गि पयड णयरि उज्जेणि तेत्थु ।
वणवारिं रायहो कहिउ ताम ।
वणि उच्छउ हुंउ वइरियदुसज्झि ।
वरपंचवण्णधयवडफुरंतु । 10
बहुकलसहिं मंडिउ रयणजडिउ ।
वणि मंडउ दीसइ हरियचिन्तु ।

४. AB सिंहासणत्थु. ५. AB पवेसु. ६. B जोगि.

26. १. B नहमज्झि. २. B कण्णाविवाहु. ३. A परिवारलोउ. ४ B किउ.

तहिं वज्रहिं मंदल पडह ताल
 सुललियउ गीउ गायंति के वि
 कलघोसु पवट्टिउ तहिं वणम्मि
 णयरिहिं वज्रहिं वर संख पडह
 मंगलु गाइज्जइ रायगेहि.
 दोहिमि कुलेहिं उच्छाहु जाउ
 दोहिमि कुलेहिं वरपत्तदाणु
 आयउ विवाहदिणु उच्छवेण
 चंदमइमायहि तोसु जाउ
 कंचणमयपट्टि णिवेसियंगु
 आहरणहिं भूसिउ कुमरु तत्थ
 चंदणि चच्चंकिउ सुद्धभाउ
 कप्पूररेणुमयणाहिगंधु

णच्चंति विलासिणि लडह बाल ।
 मंगलु पढंति थुइवयणु के वि ।
 णयरीजणु तुट्टुउ णियमणम्मि । 15
 बहुभेय विलासिणिणडहिं लडह ।
 उच्छवरसु वट्टिउ देहि देहि ।
 दोहिमि कुलेहिं आणंदभाउ ।
 धणु धणु सुवण्णउं अप्पमाणु ।
 हरिसिउ जसोहु णिउणियमणेण । 20
 रहसिं पूरिउ थीयणहं काउ ।
 कलसेहिं ण्हाविउ उत्तमंगु ।
 परिहाविय सियणिम्मलसुवत्थ ।
 सिरि सेहर किउ जणदिणराउ ।
 फुलोहहिं हुउ भमरोहु अंधु । 15

घत्ता—ता कंकणहत्थु रहसपसत्थु अस्सरयणि आरूढउ ॥

भरभेरीसहहिं तूराणिणहहिं जणु जायउ मणमूढउ ॥ २६ ॥

27

समवयस कुमर सहं चलिउ जाम
 णच्चंति विलासिणि गीउ रम्म
 गय णंदणवणि मंडवदुवार
 तहिं किउ जं जोगु पुरोहिण
 सुपइट्टउ मंडवमज्झि जाम
 चउरिइ णिविट्ठु कंदप्पमुत्ति
 अगइ पयक्खु किउ धूमकेउ
 अमयमइ पाणि कुमरेण गहिउ
 तहो दिण्ण कण्ण विरइउ विवाहु
 णवयारि वि मायारि कण्णसहिउ

पारंभिय थुइ णंगुडिहिं ताम ।
 गायण गायंतिहिं सुकियकम्म ।
 वरतोरणमंडिउ रयणफारु ।
 आयारु कुमग्गणिरोहिण ।
 वरु दिट्टउ सज्जनजणिहिं ताम । 5
 पासेहि णिवेसिय ता सुपसि ।
 किउ होमु हुणेप्पिणु तिब्बतेउ ।
 सीयारु पमेल्लिउ ताइ अहिउ ।
 सव्वेहिं उच्चरिय साहु साहु ।
 णिग्गउ वरु एहु विवाहु कहिउ । 10

५. B णहवियउ तहु. ६. B कुंवरु ७. B फुलेहिं हिंडइ.

27. १. B णागुंडिहि. २. B omits this line. ३. A णिबद्ध. ४. P अमयमइकुमरि पाणेण गहिउ.

अण्णहिं वासरि संतुहु राउ
तंबोलवत्थआहारदाणु
जं जासु जोग्गु तं तासु दिण्णु
परसप्पर णेहु करेवि दोण्णि
ण खलेइ चित्तु दोण्णि वि णरिंद
वरु गयउ ताम वहरियदुगेज्झि
णयरीतधंगि थिउ हरिसजुत्तु
सलहइ किं रइ किं मयणु एहु
सीसेण णविय पुत्तेण माय
सुण्हा पेक्खेप्पिणु रुवजुत्त
जसहरु परिणेविणु दिव्वभोउ
चित्तइ जसोहु हउं रायकण
जं वासवसेणि पुव्वि रइउ
परिणाविउ सुललियतणुभुआउ
गयकाले पइहरि तहिं णिवेण

विणयहो पणयहो भरणावियकाउ ।
सव्वहं विरइउ संमाणदाणु ।
सियजसिण दिसामुहु जाइ भिण्णु ।
दित्तहं धणु धण्णु सुवण्णु दोण्णि ।
णं गिल्लगंड दोण्णि वि गइंद ।
उज्जेणिणामणयरीहि मज्झि ।
णारीयणु पेक्खइ एयचित्तु ।
जसहरु संपत्तउ मायैगेहु ।
अमयमइ देवि तहं णवइ पाय ।
चंदमइ तुट्ट इहं चंदवत्त ।
भुंजइ भज्जइ सहं जणियमोउ ।
परिणावेसमि सयपंच अण्ण ।
तं पेक्खि वि गंधवेण कइउ ।
राएण पंच पत्थिवसुआउ ।
दप्पणयलि मुंहु जोवंतिएण ।

15

20

25

घत्ता--ससहरकिरणुज्जलु पिक्खि वि कुंतलु चित्तिउ रइसवत्तिमहणु ॥

दोहगहं रासिए महु जरदासिए हा किं किउ केसगहणु ॥ २७ ॥

28

तारुण्णि रण्णि दट्ठि खलेण
सियकेसभारु णं छारु घुलइ
थेरहो पावि णं पुण्णसिट्ठि
जिह कामिणिगइ तिह मंद दिट्ठि
हत्थहो हौती परिगलिवि जाइ
थेरहो पयाइ ण हु वि क्रमंति
थेरहो करपसरु ण दिट्ठु केम
थेरहो जरसरिहि तरंगपहिं

उग्गि लग्गि कालाणलेण ।
थेरहो बल सत्ति व लाल गलइ ।
वयणाउ पयट्टइ रयणविट्ठि ।
थेरहो लट्ठी वि ण होइ लट्ठी ।
किं अण्णविलासिणि पासि ठाइ ।
जिह कुकइहिं तिह विहडेवि जंति ।
कुत्थियपहु विणिहयगामु जेम ।
घोइउ तणुलोणु अहंगपहि ।

5

५. PB रायगेहु. ६. AB तहो. ७. AB मणि. ८. A कहिउ. ९. PBT अणुहुंजियसिवेण.

28. १. ST अण्णणियंविणि.

घत्ता—सत्त वि रज्जंगइं तणुअट्ठंगइं कासु वि भुवणि ण सासयइं ॥

तउ कैरिवि असंगइं दइ धम्मंगइं पालमि पंचमहव्वयइं ॥ २८ ॥

10

29

इय भाणिवि मज्झु किउ पट्टबंधु

णं दीणहं चामीयरणिबंधु

कंदप्पसप्पदप्पावहारि

मइं मुणिउं करणविज्जुल्लियाइं

चउवण्णु चारु तइयाइ सिट्ठु

मइं वत्तइं वित्तइं संचियाइं

मइं कोहु लोहुं मइं माणु चत्तु

हरिसंगइं णिरु दूरुज्झियाइं

विग्गहु संधाणु सजाणु ठाणु

सव्वइं पच्चक्खइं महु फुरंति

जे महु णमंति ते सुहि जियंति

खल णडिय भिडिय जे महिच्छियाइं

घत्ता—आहवि दुव्वारए असिवरधारए परमंडलवइ तज्जिय ॥

तेएण फुरंति दिसि पसरंति पुप्फयंत मइं णिज्जिय ॥ २९ ॥

णं बंधुसहासें णेहबंधु ।

णं परणरणाहहं बाहुबंधु ।

हुउ जणणु परमाजिणमग्गचारि ।

अप्पउ विज्जाइ पहिल्लियाइं ।

दंढिं दंढिउ उदंढु दुट्ठु ।

सत्त वि वसणइं आउंचियाइं ।

कामु वि सेवियउ विणोयमित्तु ।

मंति परकज्जइं बुज्झियाइं ।

संसउ मणदोहीयरणाणु ।

भिच्चउलइं भइयइं थरहरंति ।

जे णट्ठा ते काणणि वसंति ।

ते सरल तरल तडिसंणिहाइं ।

5

10

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणणकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे

जसहररायपट्टबंधो णाम पढमो संधी परिच्छेउ समत्तो ॥ १ ॥

२. S चरमि; A चरिवि.

29. १. ST विजइल्लियाइ. २. S मोहु. ३. BT वेण्ण. ४. ASB omit संधी.

II

नि*त्यं यो हि पदारविन्दयुगलं भक्त्या नमत्यर्हता-
मर्थं चिन्तयति त्रिवर्गकुशलो जैनश्रुतानां शृशम् ।
साधुभ्यश्च चतुर्विधं चतुरधीर्दानं ददाति त्रिधा
स श्रीमानिह भूतले सह सुतैर्नन्नाभिधो नन्दतात् ॥ १ ॥

1

कामालसु रइलालसु पेम्मपरव्वसु मत्तउ ॥

हउं धरिणिहि वणकरिणिहि वणकरिंदु जिहं रत्तउ ॥ धुवकम् ॥

अमयमईए सच्छमईए

हंसगईए सुद्धसईए ।

पियपत्तीए मज्झं तीए ।

सिदिलँविलासो गरुणपवासो

णयणैणिमेसो विरहकिलेसो ।

5

करउं सयज्जं महिवइपुज्जं

डज्जउ रज्जं णिवडउ वज्जं ।

अवि य द्विरीए रायसिरीए

परए पुत्तं गुणगणजुत्तं ।

जयजसधामं जसवइणामं

णिवसासणए सीहासणए ।

जय भणिऊणं इहं ठविऊणं

भूमी दाउं इहं काउं ।

संपिच्छामो तं गच्छामो

वड्डियणेहं कंतागेहं ।

10

सह णिवसामो सह विलसामो

सह भुंजामो सह कीलामो ।

उज्जलियाए पत्तलियाए

सामलियाए कोमलियाए ।

सुहललियाए पियमहिलाए ।

सह वणवासो वणयरभासो

मह संतोसो लच्छिविलासो ।

तीए रहिओ ण मए महिओ ।

15

जणभारेणं वावारेणं

दुक्खजुएणं सुक्खजुएणं ।

हो पज्जत्तं रमणासत्तं

अमलियं वत्तं तरुणीवत्तं ।

जत्थ ण दिट्ठं णियणयणिट्ठं ।

*This verse is omitted in S and T.

1. १ S धरिणिहि. २. T जिम. ३. ST सिदिलासेसो. ४. T णयणणिवासो. ५. T इय. ६. ST भूमिं

७. T विहसामो; P वियसामो. ८. ST सुह. ९. ST अमलिण.

घत्ता—ता दिणयइ पसरियकरु अत्थहो उत्परि रत्तउ ॥

थिउ दीसइ किं सीसइ अत्थु केण परिचत्तउ ॥ १ ॥

2

अत्थासिउ रत्तउ मित्तु जहिं
रेणवीरु वि सूरु वि किं तवइ
रवि उग्गु अहोगंइणं गमउ
तहिं संझवेळि यणीसरिय
तारावलिकुसुमिहिं परियरिय
णं रत्तगोवि छाइय हरिणा
णं चक्कु तमोहविहंडणउ
णं कित्तिए दाविउ णिययमुहु
णं जसु पुंजिउ परमेसरहो
णं रयणीवहुहि णिलाँडतिलउ

दिसिणारि वि रज्जइ बप्प तहिं ।
बहुपहरिहिं णिहणु जि संभवइ
णं रत्तउ कंदउ णिक्खियउ ।
जगमंडवि सा णिरु वित्थरिय ।
संपुण्णचंदफलभरणेविय । 5
सा खड्दी बहलतिमिरकरिणा ।
णं सुरकरिसियमुँहमंडणउ ।
णं अमयभवणु जर्णदिणसुहु ।
णं पंडुर छत्तु सुरेसरहो ।
उग्गउ ससि णं सहरिणिविलउ । 10

घत्ता—णहयलखले उडुकणर्वले बारह रासिउ पेच्छइ ॥

ससिलग्गउ अच्छइ मउ तेणं ण अत्थं गच्छइ ॥ २ ॥

3

ससिघडगलिपं जोण्हाखीरिं
दीसइ धवलं रुण्णयरइयं
ताम विसंज्जियपरिवारेणं
कणयलयाजुँहपिंगकरेणं
विण्णवियउ सुरहरसंकासं
णरकरदीवयविणिहयतिमिरो
कलरवगायणगाइज्जंतो
जंतो जंतो पत्तो रम्मं

भुवणं ण्हायं पिव गंभीरिं ।
णं तुसारहारावलिछइयं ।
कंठविलंबियमणिहारेणं ।
अहयं णवियउ पडिहारेणं ।
गच्छेसु महएवीए णिवासं । 5
ता हं चलिओ णिवडियच्चमरो ।
कह्वयसेवयसेविज्जंतो ।
मणिमयसिहरं रमणीहम्मं ।

2. १. ST रणधीरु. २. T अहोगयणं. ३. ST णमिय. ४. ST बहुल. ५. A मुहसिय. ६. ST जणु. ७. ST णिडाल; A णिलाडि. ८. A चले. ९. T तेणत्थवणु ण गच्छइ.

3. १. ST विवज्जिय. २. T जुय. ३. AST वच्चसु. ४. ST कयवय.

भित्तिचित्तेरद्वारमणिजं वज्रमाणणाणाविहवजं ।
 पंगणवावीसारससारे कामिनिवीणौरवहंकारे । 10
 लंबियमोत्तियमालासोहे कुसुमदामरंजियभमरोहे ।
 घत्ता—तहिं पेच्छमि किर गच्छमि सुद्धफलहआविद्धी ॥
 पढमुज्जल रयणुज्जल महि णं गयणविसुद्धी ॥ ३ ॥

4

वीर्यभूमि मोत्तियहिं सुखंचिय णं मालइकुसुमोहिं अंचिय ।
 बारि रायसोवाणविसेसिय पउमरायमणि तइय विहसिय ।
 मरगयचाहरयणसंसिद्धी भूमि चउत्थी तेयाविद्धी ।
 णीलरयणजालेहिं पसाहिय पंचम महि बहुसोहासोहिय ।
 विहुमजालसिलायलि घट्टी णं विसयम्मं कय महि छट्टी । 5
 जंबूणयकयकीरविसेसिं जहिं ठिय हंस मोर सविसेसिं ।
 पउमरायमणिणियरिं बँद्धी सत्तम महि कय कम्मविसुद्धी ।
 चंदकंतिसिलरयणिहिं धामं अट्टम महि गहचक्का णामं ।
 घत्ता—तहिं मंदिरे अइसुंदरे सत्त वि भूमिउ दिट्ठउ ॥
 मैहु कंपइ मइ पवहिं मइ णं णरएसु पइट्ठउ ॥ ४ ॥ 10

5

संपत्तउ अट्टमु घरणियलु महु तो वि ण णट्ठउ कम्ममलु ।
 हउं पावयम्मु मयणि णडिउ सव्वंगु घरिणिणेहिं घडिउ ।
 सव्वंगु मज्झु रोमंचियउ सव्वंगु सेयसंसिंचियउ ।
 सव्वंगु बप्प वेवइ वलइ णं सविंससप्पदट्ठउं चलइ ।
 पेच्छिवि तहिं पियघरपंगणउं णं लद्धउ मइं आलिंगणउं । 5
 अद्धदुवारविणिगयए भासाकुसलइ सविणयणयए ।
 चामीयरदंडयधारियए जयकारिउ हउं पडिहारियए ।
 णं फेणिं पिहियउ णव्वकमलु सियचीरिं ढंकिउ पाणियलु ।

५. AST करवीणा.

4. १. T दुविध. २. ST संसुद्धी. ३. ST वसुसोहं. ४. ST विद्धी. ५. AP धामा. ६. AP णामा. ७. T एवहु जंपइ तणु कंपइ णं णरएसु पइट्ठउ.

5. १. P सविसु सप्पु. २. T णवकमलदलु.

हउं तहिं अवलंबमाणु गयउ
मुहसासवासवासिउ सुरहि
अच्छिउडहिं पीयउ रुवरसु
तणुंफंसिं देहहो जाय दिहि
दिह्नी सुंदरि सवडंमुहिय .

णउ जाणमि हयदहविं हयउ ।
आलाउ घाणु सुइसुक्खणिहि । 10
मुहरसु लद्धउ जीहइ सरसु ।
पिययम पंचिदियसुक्खणिहि ।
छणवासररयणीयरमुहिय ।

घत्ता—अल्लोयणु संभासणु दाणु संगु वीसासु वि ॥

पियमेलणु रइकीलणु जं महु तं णउ कासु वि ॥ ५ ॥ 15

6

तं मम्मणु सणिउं सणिउं भणिउं
तं हावभावविम्भमफुरिउं
सो मज्झुं खीणु ते तुंग थण
सो सामवणु तं मुद्धमुहुं
मउलियणयणुल्लउ विंभियंउ
ता महु भुयपंजरणिगमणु
भज्जइ मइं भरिउं सकुंतलिय
एवि चित्तिवि हं करवालकरु
सुपसत्थि णरत्थि अणुज्जयहो
जं पेच्छिवि णिंदइ सव्वु जणु
जो दीहदंतदंतुरवयणु
अइअडुवियडुहडुविसमु
कुप्परसमाणणिम्मंसकडि
उंरु संकडु कडिणट्टियहियंउ
जो विरलकविलकेसुम्भडउ
जो परदिणणउ घाउ वि सहइ

तं गौहिरु महुरु मणहरु मणिउं ।
तं हसिउं रमिउं रइरसभरिउं ।
ते दीह णयण हयमणुयमण ।
सुमरंतहो णावइ णिइं महुं ।
जामच्छमि कामग्गहिं लियउ । 5
किउ पारद्धउ कत्थइ गमणु ।
पयइ वेलइ कहिं संचलिय ।
संजायउ तहिं अणुमग्गयरु ।
गय दुट्ठ पासि सा खुज्जयहो ।
दवरह्वाणुसंकासतणु । 10
कहमबुब्बुअसंणिहणयणु ।
णिरु फुट्टपाय कयणयविरसु ।
जो कट्टु पियामणघरणहडि ।
पल्हत्थियपीडुं व जसु हियउ ।
जो परउच्चिट्ठयलंपडउ । 15
जो परपयउच्चोलिउ वइइ ।

घत्ता—सो देविण सियसेविण चलण मलिवि उट्ठावियउ ॥

घवलच्छिण णं लच्छिण वेयालउं गउरवियउ ॥ ६ ॥

३. S किं. ४. A खलिउ. ५. T तणुफासं. ६. ST अवल्लोयणु.

6. १. T सणियं सणियं. २. A महुरु गहिरु. ३. S मज्झु खामु. ४. AP णिंद. ५. ST विंभइउ. ६. ST हय;
A हउ. ७. AST हउं. ८. T सुपसत्थु णरत्थु. ९. AST पासिदुट्ठ. १०. S उरि ११. S पयउ. १२. ST पिहइ.
१३. ST उच्चोलिय. १४. T वेयालउ जिह गउरविउ.

7

सो रूसिवि भासइ दिण्णदुहु
तुहुं हलि हलि खलि सभभावचुप
इय गरहिवि सालंकारवह
अच्छोडिय चिहुरभारे घरिवि
ता भणइ देवि पणवेवि पय
तुहुं देउ भंडारउ कुसुमसरु
पइं विणु महु छत्तइं चामरइं
हरि करि रहवरं विविहासणइं
पयइं अवरइमि णिवेण सहं
जं विहिणा दुहुं तुह ण कय
जं जिज्जइ पइं विणु दइय विणु

भूमंगुरभीसणु करिवि मुहुं ।
किं णागय तुहुं लहु दासिसुप ।
पिसुणेण व ताडिय सुकइकह ।
हंय पायपहारं हुंकरिवि ।
हउं घरवासेण जि खेयहो गय । 5
तुहुं सामि महारउ हिययहर ।
हे णाह सत्तभेमइं घरइं ।
देवंगइं भूसणणिवसणइं ।
पइं विणु सव्वइं पंजलंति महुं ।
कुलउत्ती तं हउं किं ण मुंय । 10
तं दिज्जइ संखियदुरियरिणु ।

घत्ता—जइ जसहरु जमपुरघरं पावइ तं हउं णच्चमि ॥

चरुगासिं महमासिं सइं कंचाडणि अंचमि ॥ ७ ॥

8

इय जारहो माणु विहंइयउ
पुणु पियवयणेहि संमाणियउं
ता मइं रुसेवि णं विञ्जुलिय
अरिकरिसिरमोत्तियदंतुरिय
पहरंतिं णियमणि चित्तियउ
खग्गेण तेण पुणु परिगणामि
इय चित्तियि खमसलिलिं दमिउं
गउ चारुचित्तकुट्टोअरए
सुमरमि तं पणइणिवावरिउ
णउ कुलु णउ सिरि णउ हउं ण सुउ

पुणु^१ गादु गादु अवहंइयउ ।
अण्णोण्णु तेहिं पुणु माणियउं ।
रणरुद्धिरपवारिं विञ्जुलिय ।
करि असिवरलट्ठि समुद्धरिय ।
मइं आसि जेण परबलु खविउ । 5
तिय मइं काउरिसु वि किइ हणमि ।
णियरोसहुंयासणु उवसमिउं ।
अण्णउ घल्लिउ सयणोअरए ।
हा एकु वि णउ हियवइ घरिउ ।
हा देविहि किइ मइमंसु हुउ । 10

7. १. ST रूसिवि. २. A खयहुगय; T खवह णय. ३. T भराडउ. ४. ST सत्तभेमइं. ५. ST भडड.
६. T पिय जलंति; S वि जलंति. ७. S मय. ८. ST णिज्जइ. ९. A वरु. १०. ST तो. ११. AST अंचमि.
8. १. T अइगादु. २. A हुवासणु. ३. T वागरियं.

घत्ता-साहारहो तँरसाहारहो उवरि चडेविणु लंबइ ॥

कंटयतर अवरु वि खरु वेळिणिहीणु वि चुंबइ ॥ ८ ॥

9

चंदु वि चंडालु वि मणहरिहे
जिह बालु मरालु सलीलगइ
जिह पउमिणि पापं हय रविण
संझाइ व मेल्लइ रंगु लहुं
विससत्ति व मारणसीलणिय
जिह णइ तिह तियमइ णीयरय

तथा चोक्तम् ।

गोवइयइ पडिवहुसिरु लुणिवि
णासंतु सो वि लुरियइ हणिवि
वीरवइए गाढालिंगणउं
णिवूढपोढासिंगारयहो
अहरुल्लउ खंडिउ तिं मरिवि
घरु आइवि कूआरउ करिवि
मारावइ किरं वरइत्तु सइं
ता केण वि पहिपं रक्खियउ
राणउ पुरयणु संबोहियउ
णीसेसु वि साहिणाणु किंयउ

दीसइ पडिबिंबिउ सुरसरिहे ।
तिहं दुमसाहहो कंकु वि रमइ ।
तिह सालूरेण वि णिच्छविण ।
घणुलट्टि व कुडिल गुणेण सहं ।
सिहिधूमोमि व घरमइलणिय । 5
णारीरुवइ किर के ण हंय ।

घित्तउ पइपत्ति आहि भणिवि ।
दारिउ मारिउ वम्मइं लुणिवि ।
दिण्णउं चोरहो मुंहे चुंबणउं । 10
सुलारुढहो अंगारयहो ।
गय गेहि मुहुल्लउ संवरिवि ।
खंडिउ बिबाहरु वज्जरिवि ।
णामेण दत्तु वरवीरवइ ।
णिसिचारु जेण उवलक्खियउ । 15
पुण्णालिहि साहसु साहियउ ।
णियमिच्छहो सगुणु पयासियउ ।

घत्ता-रुहिरावलिछिणंगुलि तरुतलि असिपहरुल्लउ ॥

तकरमुहिं णं जममुहिं दिहु असइअहरुल्लउ ॥ ९ ॥

10

णइसंगमि दुट्ठइ वहरिणिप
उज्झाहिउ देवरइ त्ति मूढु

उवयारविमुक्कइ सहरिणिप ।
पंगुलणिमित्तु रत्ताइ छूढु ।

४. AST फलसाहारहो.

9. १. T साहारेण. २. T कय. ३. AST omit तथा चोक्तम्. ४. AT मुहुचुंबणउं ५. ST णामिं सुदत्तु.

६. ST add after this line जं दिहुउं सयलु वि तहिचरिउ. ७. ST कहिउ. ८. ST omit this line.

हा तियमइ साहसु जं करइ
आवेण्णिण सुपुसियसेयवह
परपुरिसु रमेण्णिण पाणपिय
सा दुहु सविस णं णाइणिय
जह कंङ्कंङ्क भणेण सुहु
तणुसंघट्टणु समु सव्वु जहिं
आहरणभारु देहहो दमणु
लावणु सरीरहो असुइरसु
गेयहो छलेण विरहिउ रडइ
पेच्छंतहं वहइ कामजरु
अणुबंधि तिव्वु पेम्मु तवैइ
तिं कामुउ डज्झइ कलर्यलइ
तिय मारइ पुणु अप्पुणु मरइ

कइवइ वि ण वण्णहं तं तरइ ।
णं मुक्खि माणिय विउससह ।
महु भुयपंजरि पइसरिवि ठिय । 5
महु भडयहु सा णं साइणिय ।
तिह रइरमाणं पुणु जणइ दुहु ।
सोकखहो अवसरु किर कवणु तहिं ।
णच्चणु आहारहो जीरवणु ।
बहुदुक्खहं कारणु णेहवसु । 10
पियसंभासणु वम्मइ खुडइ ।
अवरुडणु पिंडहं पीडकरु ।
पेम्मि ईसासिहि संभवइ ।
उम्भुम्भउ णं जालहि जलइ ।
घोरइ संसारइ संसरइ । 15

घत्ता-जीवहु पर दुक्कियघरु विच्छिण्णउ वाहायैरु ॥

इंदियसुहु गरुयउ दुहु किह सवइ पंडियणरु ॥ १० ॥

II

माणुससरीरु दुहुपोट्टलउ
वासिउ वासिउ णउ सुरहि मलु
तोसिउ तोसिउ णउ अप्पणउ
भूसिउ भूसिउ ण सुहावणउ
वोल्लिउ वोल्लिउ दुक्खावणउं
मंतिउ मंतिउ मरणहो तसइ
सिक्खिउ सिक्खिउ वि ण गुणि रमइ
वारिउ वारिउ वि पाउ करइ
अब्भंगिउ अब्भंगिउ फरिसु
मलियउं मलियउं वापं घुलइ

घोयउ घोयउ अइविट्टलउ ।
पोसिउ पोसिउ णउ घरइ बलु ।
मोसिउ मोसिउ घरभायणउ ।
मंडिउ मंडिउ भीसावणउं ।
चैच्चिउ चच्चिउ चिलिसावणउं ।
दिक्खिउ दिक्खिउ साहुहुं भसइ ।
दुक्खिउ दुक्खिउ वि ण उवसमइ ।
पेरिउ पेरिउ वि ण घम्मि चरइ ।
रुक्खिउ रुक्खिउ आमईसरिसु ।
सिचिउ सिचिउ पिप्पि जलइ । 10

10. १. S गेयच्छलेण. २. T मम्महं. ३. S हवइ; T वहइ. ४. S कलमलइ. ५. T वाहाकरु.

11. १. ST ह्य. २. S णिरु. ३. ST omit this line. ४. ST omit this line. ५. S आमयसरसु

सोसिउ सोसिउ सिंभि गलइ
चम्मै बज्जु वि कार्लि सडइ

पच्छिउ पच्छिउ कुट्टहं मिलइ ।
रक्खिउ रक्खिउ जममुहि पडइ ।

घत्ता-इय माणुसु कयतामसु जाइ मरिवि तंवारहो ॥

तरुणीवसु अंम्हारिसु जहु लग्गउ घरंदारहो ॥ ११ ॥

12

पुरुं परियणु मिळिवि रायसिरि
पय पाडिय णरफणिसुरवरइं
इय महु चिंतंतहो अरुणयरु
उंगामिउ दुमणि जणु रंजियउ
अरुणायवत्तु णं णहसिरिहि
लोहियलुद्धं जगु फाडियउ
कुंकुमपिंडु व दिसिकामिणिहिं
ता जयमंगलतूरहं रवेहिं
कयकायसुद्धि मइं तक्कणेण
तहिं अवसरि मइं चिंतिउ मणेण
जो अंगराउ सो मयणमूलु
अहवा जइ मइं आहरण चत्त
किं अंतेउह अमणोज्जु जाउ
जे महु सण्णा विउस के वि
एउ मणिणवि मइं किउ अंगराउ
जइ कह व देवि इह वत्त सुणइ
जाणियइ सुहासुहु सयलु राय
लाहालाहु वि जं मुट्ठिगहिउ
जाणंति जोइ जे विउलबुद्धि
इय एत्तिउ णारिण मुणंति जे वि

कल्लइं आसंघमि गहण गिरि ।
तउ करमि धरमि मुणिवरवयइं ।
णवपल्लव णं कंकेलितरु ।
सिंदूरपुंजु णं पुंजियउ ।
णं चूडारयणु उदयगिरिहि ।
णं कार्लि चक्कु भमाडियउ ।
रत्तुप्पलु संज्ञापामिणिहिं ।
पडिबुद्धउ फंफावयसरेहिं ।
ढोइयउ पसाहणु परियणेण ।
किं रज्जं किं महु भूसणेण ।
तहो फलु मइं रयणिहिं दिट्ठु सयलु ।
ता जणहं मज्झि वित्थरइ वत्त ।
अइदुम्मणु दीसइ जेण राउ ।
परचित्तुवलक्कहिं सयलु ते वि ।
णं अंगि विलग्गउ दुह्मणिहाउ ।
सइं मरइ मइं वि तक्कणि हणइ ।
जीविय मरणु वि अरिदिण्णघाय ।
णह्मउ पवसिउ विसुहिउ दुहिउ ।
जहुं हत्थगिज्झ ठिय सयल सिद्धि ।
तियचित्तइं णउ जाणंति ते वि ।

5

10

15

20

६. S कोट्टहो. ७. S घरवारहो.

12. ९. S पुरपरियणु. २. T उग्गउ उडुमणि. ३. A संज्ञापामिणिहि.

घत्ता—करि बज्जइ हरि रुज्जइ संगरि परबलु जिप्पइ ॥

कुलत्तहि अण्णासत्तहि चित्तु ण केण वि घिप्पइ ॥ १२ ॥

13

अत्थाणभूमिगउ मणि विसण्णु
दोवासइं चमरइं महु पडंति
सहमंडवि खुज्जयवावणाइं
वीणावंसइं गेयइं झुणंति
एयाइं जइ वि णिरुं सुहयराइं
पोत्थयवायणु आढत्तु सरसु
तहिं अवसरिं पडिहारिं वरेण
पइसारिय भड सामंत मंति
पयजुयलु णविउ महुं णरवरोहिं
अवलोइय णरवइ मइं णवंत
गोविट्ठिणिविट्ठ णरिंद सव्व
तां जणणि महारी दुक्क तहिं
तवचरणउवाउ चित्तिं धरिउ
सीसेण चिहुरणीलिं णविय
हउं अज्जु माइ णिसि पीणभुउ
ता दिट्ठु जोहु दाढाकरालु
दुहरिसणु भीसणु दुण्णिारिक्खु
सो भणइ अग्गि लहु लेहि दिक्ख
णं तो सपरिग्गहु खामि अज्जु
मइं तुंड वि मुंड वि मुंडियउ

कणयमयरयेणविट्ठरि णिसण्णु ।

बहुदुक्खसद्दासइं णं घडंति ।

णच्चंतइं णिरु कोडुवावणाइं ।

वेयालिय फंफावय थुणंति ।

महु पुणु सुविरत्तदो दुहयराइं ।

5

मणसवणइं जं जणि जणइ हरिसु ।

कणयमयदंडमंडियकरेण ।

अणवरय भमइ जगि जाइं कित्ति ।

मउडगगकोडिचुंबियधरेहिं ।

पडियावयाइं णावइ कुमिच्च ।

10

णिविडत्थवंत णं सुकईकव्व ।

सीद्दासणि हउं आसीणु जहिं ।

मइं मिच्छासिक्खिणउ वज्जरिउ ।

मइं माइ महारी विण्णविय ।

सिक्खिणइं सउहयलहो झत्ति चुउ ।

15

दंडयकर णं पच्चक्खकालु ।

रत्तुप्पलदलसारिच्छक्खलु ।

जिणणाहदो केरी परमसिक्ख ।

कहो तणिय पुहवि कहो तणउं रज्जु ।

दूसहु इंदियबलु वंडियउ ।

20

घत्ता—सुउ जसमइ णिच्चलमइ ठविवि रज्जि तं किज्जइ ॥

णिसि दिट्ठउ णिक्किट्ठउ सउंणु माइ मंणिज्जइ ॥ १३ ॥

13. १. ST सीह. २. ST पप्पावय. ३. ST णिवसुहयराइं. ४. S मणिकणय. ५. T बहु. ६. S सुणइ कव्व. T सुकयकव्व. ७. S ता अग्गाएवी पडुक्क तहिं. ८. A माय. ९. T सिक्खिण. १०. ST माणिज्जइ.

14

तं णिसुणिवि भासिउ जणणियप
कुलदेविहि आसाऊरियहे
बहुभेय जीव दिज्जंति बलिं
तुह संति होउ महु णंदणहो
हियउल्लउ करुणि कंपियउ
पाणिवहु भडारिण अण्णवहु
कहिं चुक्कइ माणउ पसु हणिवि
जं चित्तिज्जइ विप्पियउ परहो
मारउ पइ मारिउ पुणु मरइ

अण्णाणइ मुणिगुणहणणियप ।
चित्तवियमणोरहगारियहे ।
पसमिज्जइ दुक्ख किलेस कलि ।
सज्जणमणयणाणंदणहो ।
तं णिसुणिवि मइं पडिजं पियउं ।
किं किज्जइ सो दुक्कियणिवहु ।
पावेण पाउ खज्जइ खणिवि ।
तं पइ खणद्धि णियघरहो ।
कहिं विग्घमहाणइ उत्तरइ ।

5

घत्ता—इहलोयहो परलोयहो जीवहिंस भयगारी ॥

10

दुणिरिक्खए आउक्खए किं किर करइ भडारी ॥ १४ ॥

15

किं णत्थि चरुउ किं मेसउलु
किं णत्थि मल्लु भक्खु वि सरसु
किं चिरणर सयल वि खयहो गय
किं होइ हिंस जगि संतियरि
जं मुणिगणणोहहिं पिसुणियउ
परमत्थु अहिंसाधम्मु जए
तं णिसुणिवि अम्मइ बोल्लियउ
जगि वेउं मूलु धम्मंधिवहो
तं किज्जइ वेणं महिउ

किं णत्थि देउ किं देवउलु ।
किं जणु ण जाउ सिवसत्थवसु ।
किं तेहिं ण जोइणिपुज्ज कय ।
सिलणावइ मूढ तरंति सरि ।
तं कहमि माइ पइं ण सुणियउ ।
मारिज्जइ जीउ ण जीवकए ।
जिणवयणु णिसुंभिवि घल्लियउ ।
वेणण मग्गु भासिउ णिवहो ।
पसुमारणु परमंधम्मु कहिउ ।

5

घत्ता—पसु हम्मइ पलु जिम्मइ सग्गहो मोक्खहो गम्मइ ॥

10

जिइ दियगुरु तिह कुलगुरु चवइ एम पविउलमइ ॥ १५ ॥

16

इय मुणिवि पसु हणिवि
तुह तुट्ठि तुह पुट्ठि

करि संति तुह कंति ।
जयलच्छि धवलच्छि ।

14. १. AST जंपिय. २. ST जिण्णाणइ. ३. ST पूरियहे. ४. T किं. ५. T मारइ; A मारिवि.

15. १. T सरिसु. २. ST णाइहिं. ३. T णिसुणियउ. ४. A वेय. ५. ST परमपुणु. ६. T पविमलमइ.

उरि वसतु रिउ तसउ

कम नमउ जसु भमउ ।

महिबलइ पविउलइ ।

तं सुणिवि सिरु धुणिवि

मणि मुणिउं मइं भणिउं ।

5

अहो जणणि धरिसमणि

पइं उतुउं न वि जुतुउं ।

हिंसाहिवत्तार कत्तार नेयार

मायार सोयार सूणार ते घोर ।

मलहेउ जो वेउ सो खग्गु णिसियग्गु

जे धिठ्ठ णिक्किठ्ठ दप्पिठ्ठ पाविठ्ठ ।

बंधंति रुंधंति हिंसंति धंसंति

भयउलइं मयउलइं भक्खंति चक्खंति ।

जंगलइं महुजलइं

10

धुमंति णच्चंति वायंति गायंति

सरयम्मि नरयम्मि ते हौंति दीसंति ।

घत्ता—रयणप्पहि सक्करप्पहि बालुयप्पहि पंकप्पहि ॥

धूमप्पहि पुणु तमप्पहि हौंति पुणु वि तमतमप्पहि ॥ १६ ॥

17

वाहिल्ल ते भिल्ल ते मूअ ते लल्ल

ते पंगु ते कुंट बहिरंध ते मंड ।

ते काण काणीण धणहीण ते दीण

दुहरीण बलखीण ।

णिक्काम णिक्काम णिच्छाम णिण्णाम

णित्तेय णिप्पाण चंडाल ते पाण ।

ते डोंब कल्लाल मच्छंधिणीवाल

दाढाल ते कोल ते सीदसदूल ।

ते सिंगि वियराल ते नहरपहराल

ते पक्खि पिंछाल ।

5

ते सप्प रत्तच्छ मंसासिणो मच्छ

छिंदणइं रुंधणइं बंधणइं वंचणइं ।

लुंचणइं खंचणइं कुंचणइं लुट्टणइं

कुट्टणइं घट्टणइं वट्टणइं ।

पडलणइं पीलणइं हलणइं चालणइं

तलणइं दणलइं मलणइं गिलणइं ।

तिरिपसु नरपसु मणुपसु रुक्खेसु

दुक्खइं भुजंति सगं कइं जंति ।

घत्ता—पसुणासइ जंहिं हिसइ परमधम्म उप्पजइ ॥

10

ता बहुगुणि मेळिधि मुणि पारद्धिउ पणविज्जइ ॥ १७ ॥

16. 1. PST omit this line.

17. 1. ST arrange the wording of this line and the following in a different way

२. ST जइ.

मंतिं हुणउं खगिं लुणउं दिसिबलि कुणउं हुअवहि हुणउं ।
 पियरहं ठवउं देवहं धिवउं . कासायपहु लइ धरउ जहु ।
 रत्तउ अंवरु चीवरु पवरु पक्कालियउ उद्धूलियउ ।
 वप्पुभइउ चप्पउ जडउ अप्पउ दमउ णग्गउ भमउ ।
 मुंइउ ससिरु आमिसगसिरु लोहियगसिरु गुरुयणभसिरु । 5
 सेवउ वणइं आयावणइं चंदायणइं सुद्धोयणइं फैलभोयणइं अत्तावणइं ।
 उद्धरउ वउ चिरु चरउ तउ हयमरणभय जो जीवदय ।
 ण करइ कुमणु सो देउ धणु मणि आहरणु गोउल भवणु ।
 दुब्भविं भमइ तहु णत्थि गइ ।

घत्ता—इय संतिं भयवंतिं अरहंतिं णउ ईरिउ ॥

10

ण करंतिं मय्यंवंतिं जेण जीउ संघारिउ ॥ १८ ॥

सो जम्मिं जम्मिं बहुरोयहरु सो जम्मिं जम्मिं भूभारु णरु ।
 सो जम्मिं जम्मिं अणुहवइ दुहु सो जम्मिं जम्मिं कहिं लहइ सुहु ।
 महु जीवियवु धुउ अम्मिं जइ मारिज्जइ जीउ ण जीव तइ ।
 ता मइं असि कड्ढिवि णिययसिरि लाइउ वरकुंडलमउडधरि ।
 महु जणणिए हाहाकारु किउ पासत्थिहिं णरवरेहि धरिउ । 5
 ता थेरिए पयवडियइ लविउ मइं पुत्त असच्चउ सच्चविउ ।
 जइ जीउ ण देहिं सचेयणउ ता दिज्जउ अवह अचेयणउ ।
 जो^३ पहरिउ ण मुणइ वेयणउं तो हउं ठिउ मउलियलोयणउ ।
 अम्मापविण गंगिरगिरए जं भासिउ दिट्ठपरंपरए ।
 तं जइ वि अहम्मु तो वि करमि पडिसिविणमिसिं पुणुं वउ धरमि । 10

घत्ता—अम्हारउ लिप्पारउ विहसिवि अम्मइं भाणिउ ॥

तिं कुक्कुहु वण्णुकुहु पिट्ठिं णिममिवि आणिउ ॥ १९ ॥

18. १. ST हणउं. २. T चंपउ. ३. ST omit this line. ४. T महमत्तें.

19. १. T ण जीवकए; ण अणु तए. २. S हाहारउ. ३. S सो. ४. ST पयगयासिरए. ५. A वउ उद्धरिसि.

20

सो सरइ व फुरइ व उडुइ व
सो सज्जीउ व दइवि घडिउ
सो पडहहि संखहि मइलिहि
णाणातरुकुसुमसमाच्चियउ
सो परिवारेइ विणिवेइयउ
मायइ कुकुमजलु घत्तियउ
पिटु वि जंगलु मणिवि गसिउ
जिह वंभणव्वउ महु वज्जरिवि
पवियप्पिउ किं ण होइ सहलु

सो वलइ व चलइ वहुइ व ।
महु तणियहिं दिट्ठिहिं आवडिउ ।
वज्जंतिहिं टिंभिलिहिं काहलिहिं ।
दहिवंदणचंदणचैच्चियउ ।
कुलदेविहि अगइ घाइयउ ।
तं रत्तु गलंतु विचित्तियउ ।
संपुण्णु अपुण्णु समम्भसिउ ।
ढिड्डिसु गिलंति पलु संभरिवि ।
तिह अम्हइ जायउ पावमलु ।

5

घत्ताः—पुणु जोइणि भयदाइणि मइं पणविय सम्भाविं ॥

10

पइं दिट्ठइं संतुट्ठइं जणु मुच्चइ संताविं ॥ २० ॥

21

जंघाबलु दढयंरु बाहुबलु
दुत्तरि कंतारि विहुरि घरहि
इय देविहि हउं पइहु सरणु
धैरु जाइवि सिरिकैलसेहिं ण्हविउ
अप्पुणु किर वणवासहु चलिउ
पियतणयहो रज्जु समप्पियउ
जं मइं जारिं सहं कीलियउ
इयरह कह कंखइ तवयरणु
णिच्छउ मइं एउ परिकिञ्चयउ

महु देहि देवि जीविउ अचलुं ।
परिरक्ख सुरेसरि महु करहि ।
णउं जाणामि आसण्णउं मरणु ।
णियणंदणु रज्जि परिट्ठविउ ।
तउं करहुं णवर दइवें खलिउ ।
कंतइ णियकज्जु वियाप्पियउ ।
तं रयणिहि एण णिहालियउ ।
सामंतमंतिमहिपरिहरणु ।
तणुलिंमिं मणु उवलकिञ्चयउ ।

5

घत्ता—सुदलिहिं जिह फुलिं फलु होही जाणिजइ ॥

10

अविहंमिं तणुलिंमिं तिह परहियउं मुणिजइ ॥ २१ ॥

20. १. T तिविलहिं. २. S अच्चियउ. ३. S reads दोहिं वि भावें परिवारियउ. ४. T पिच्छियउ. ५. S वंभ-
णाघिउ; T वंभणघिय; A वंभणघउ.

21. १. T दियबलु. २. T सबलु. ३. S णवि. ४. T घरि. ५. T हउं कलसिहि. ६. S चरहुं; T करिमि.
७. T कम्मु. ८. AST परि हियउ.

जइ पुण रिसित्तु ण परिग्गहइ
इय चित्तिवि हउं पिम्मि तच्चिउ
मइं तुज्झु सुमंगलु चित्तियउ
भो अज्झु भोज्झु देवायारिउं
सुविहाणइं धम्मं लइयाइं
पइं विणु हउं जीविउ णउ धरमि
जिम कामहो रइ सुरवरहो सइ
सिरि हरिहि सीय रहुवइहि जिह

तो वसुहाहिउ मइं णिग्गहइ ।
पयवडियइ देविण विण्णविउ ।
अंतेउरु पुरु आमंतियउ ।
भुंजिवि जोइणिभुत्तुवरिउ ।
होसहिं बिण्णि वि पव्वइयाइं ।
परमेसर पइं सहं तउ चरमि ।
जिह परममुणिदहो सुद्धमइ ।
हउं अणुगामिणि पिय तुज्झु तिह ।

5

घत्ता—तवचरणु वि जमकरणु वि पइं सहं मरणु वि भावइ ।

पियं पइं विणु महु जोव्वणु जणु अंगुलियइ दावइ ॥ २२ ॥

10

परंपुरिसु रमिवि रइविभलए
तं मइं सिविणयसमाणु गणिउं
उट्ठु देवि अहरहरहिउ
ता उट्ठिय सुंदरि चंद्रमुहि
सोयारवयणविहि णंदियउ
णियकयकम्मेण व पेळियउ
जहिं पंचवण्ण मरुहयधयउ
उवविट्ठउ पडपिहियासणइ
परियलु वित्थारिउ कणयमउ
कच्चोल थाल सोहंति किह
जेवणवेल्हइ महमइहइ सह

जं रयणिहि दुक्किउ किउ खलए ।
मोहंधिं तं कलत्तु भणिउं ।
किं पणयभंगु मइं तुह विहिउ ।
कित्तिमु हसंति रंजंति सुहि ।
ता हउं बंदियणहि वंदियउ ।
जणणिइ समउं तहिं चल्लियउ ।
महएविणिकेयहु तहिं गयउ ।
मणिकिरणजालभाभूसणइ ।
णं उग्गमिउ णवदिणयरउ ।
गयणयलवडिय णक्खत्त जिह ।
बडुरसरसोइ णं सुकइकह ।

5

10

घत्ता—अइकोमलु सरलामलु घवलु कूइ किह सीसइ ॥

तं भोयणु गुणमोयणु पिसुणसमाणउं दीसइ ॥ २३ ॥

22. १. T पव्वडियइ; A पयवडिइ. २. S किम. ३. ST पइं सहं परमेसर. ४. S प्रिय.

23. १. S परपुरिसरइपरइ; T परपुरिसरायरइ. २. ST अहरहरहिउ. ३. S सूयार. ४. S णउ. ५. T जेमण.

24

दोफालियाइ हउं फालियउ
दालिइ णवकंचणवणिणयइ
डहुँउ चोप्पडु पुणु मइं डहइ
पुणु मंडय ढोइय मंडलिय
पुणु दिण्णइं तिक्खइं तिम्मणइं
पुणु लङ्कुय सविस विइण्ण किह
पडिसवणु ण कासु वि दिंतियप
मोयय महु मायइ पट्टविय
णउ कंतहि वयणु अइकमिउं
तं सविस्सु भोज्जु दोहिं मि जिमिउं
णिवडंतहिं विज्जु विज्जु चविउ

णं वट्टमि जमपुरचालियउ ।
ताडिउ णं विरइयकणिणयइ ।
णं दुट्ठघरिणिसंगमु वहइ ।
मारंति वै मइं परमंडलिय ।
णावइ मुक्कइं रिउपहरणइं ।
महु णिहण्णसीलउ भिच्च जिह ।
बोल्लिउ देविइ विहसंतियप ।
मइं तुम्हइं णिह विण्णं ठविय ।
अम्हइं मायासुणहिं समिउं ।
अंगउं विसवेषं परिभमिउं ।
भज्जए हा णाह णाह लविउ ।

5

10

घत्ता—घरपडियए उँरि चडियए केसभारु वित्थारिउ ॥

हउं कोमले गलकंदले दंतिहिं पीळिवि मारिउ ॥ २४ ॥

25

जो सहरिणिवयणहिं पत्तियइ
सुय झत्ति वत्त महु णंदणिण
णिवडिउ महिमंडलि थरहरंतु
उम्मुच्छिउ घाहावंतु राउ
सोयणइं लग्गु हा ताय ताय
पइं विणु सुण्णउं धरवीदु जाउ
विणु तापं रज्जहो पडउ वज्जु
बलि किउ महु रज्जु दुहोहआणि

सो माणउ मइं जिह किह जियइ ।
सज्जणमणणयणाणंदणिण ।
णं वज्जणिहापं गिरि महंतु ।
हा पइं विणु जंगु अंधारु जाउ ।
पइं विणु महु भग्गी छत्तंछाय ।
एवहिं को सामि अवंतिराउ ।
विणु तापं महु ण सुहाइ रज्जु ।
जं झत्ति परत्तहो करइ हाणि ।

5

24. १. ST read this line after the next. २. AS दड्डउ. ३. T वम्मइं. ४. AS सविस य दिण्ण.

५. AST पणए. ६. S वरि; T परि. ७. S उप्परिचडियए; T उप्परिपडियए. ८. S पीळिवि; T चंपिवि.

25. १. ST जगि. २. T विलवणह. ३. A भग्गी महुं. ४. T बप्प छाय. ५. ST धरवइ; A धरपीदु.

मंतिहिं पडिबोहिउ धरणिणाहु
 संसारि असारइ जेत्तियाइं
 णल णहुस वेणुं मंधायँ होंत
 इह णरवइ होंतउ जगि पसिंझु
 आलेहिवि जो मारंतु वेणु
 हरि हलहर कुलयर चक्रणाह
 इय जाणिवि किज्जइ सोउ केव
 तं णिसुणिवि उच्छाइयइं बे वि
 उम्भियचंदो वा केलिंदड

मेलंतु सदुक्खउ अंसुवाहु ।
 बोलीणइं अक्खमि केत्तियाइं । 10
 ते वि मइयले कालवसि समत्त ।
 अइबलु वि महाबलु कालि खड्डु ।
 कालाणालि दहउ जेम वेणु ।
 ते कालि कवलिय बलसणाह ।
 संसारहो पहावत्थ देव । 15
 पडुपडइसंखकाहलइं देवि ।
 विच्छाय जाय बंधवइ तुंड ।

घत्ता—विवणंम्मणु पडु दुम्मणु बारवार मुंछिज्जइ ॥

मणि तप्पइ पुणु जंपइ ताएं विणु किहँ जिज्जइ ॥ २५ ॥

26

उट्ठंतपडंतइं णिगयाइं
 रायहो पच्छइ गच्छंति केम
 रत्तंबरधारिणि जुवइ काइ
 बहुयाउ मुयउ सहं राणएण
 काहिं मि लइयउ तवचरणु घोरे
 अमयमइ ण णिगय कलुसभाव
 कयउद्धहत्थणारीणरेहिं
 अण्णत्तहिं वेळपडिच्छिपहिं
 केण वि णवखंडइं कियउ देहु
 कु वि विच्छिं विलगउ गुणमहंतु
 कि वि कुंतहिं हिंदोलंति वीर
 मइयालहो दाहिण मुत्ति णेवि

अंतेउराइं दुहवसगयाइं ।
 छुणयंदहो ताराणियरु जेम ।
 णं सूरहो पच्छइ संझ जाइ ।
 पयपालणधम्मवियाणएण ।
 परिसेसिवि कंकणु हारु डोरु । 5
 खुज्जय आसत्ती दुट्ठ पाव ।
 धाहाविउ बहुदुक्खाउरेहिं ।
 छिण्णइं सीसइं कयणिच्छपहिं ।
 सुमरेप्पिणु सांमिहि तणउं णेहु ।
 असिधेणुयाइ उरयंइं हणंतु । 10
 कि वि अप्पउ इयवहि हुणहिं धीर ।
 संकारावियइं सुएण बे वि ।

१. ST सयर. ७. A जेवि महि मुंजिवि अवरइं गयइं तेवि. ८. ST पयापाल. ९. S विमणम्मणु. १०. ST मोहिज्जइ

११. ST किं किज्जइ.

26. १. ST बीयंदहो; A छणइंद. २. ST read this line before रायहो...जेम. ३. T सामियतणउं

४. ST चिच्छि (note: चित्तायां) ५ A उरयलु. ६. A कुणइ धार.

कयसंसयारसेसाइं लेवि	स्त्रित्तइं सुरसरि अट्टियइं नेवि ।	
महु णामिं दिण्णइं गोहणाइं	महुं तणपं अइणि वसोहणाइं ।	
दिण्णइं अंगहारइं कंचणाइं	वरचेलइं लण्डइं अइघणाइं ।	15
दिण्णइं धयिंछत्तइं भूसणाइं	दियवरइं लिहाइवि सासणाइं ।	
रोरत्तणु रोरइं हरहिं जाइं	महु णामिं दिण्ण सुयिं ताइं ।	
जच्चंधइं अंधइं भुक्खियाइं	धणघण्णइं दिण्णइं दुक्खियाइं ।	
गोसुयइं विवाहइं कयइं तेण	णरवइं महु णामिं महु सुयण ।	
तो वि लद्धु ण उत्तमु मणुयजम्मु	बलवंतउं जीवइं राथ कम्मु ।	20

घत्ता—संसारप अइघोरप हिंइहिं विसयासत्तइं ॥

जीवइं णउ पावहिं जाम ण भावहिं दंसणणाणचरित्तइं ॥ २६ ॥

27

सीर्यल्लुवेल्लितरुवरगहणि	हिमवंतहो दाहिणि गिरिगहणि ।	
जहिं वग्घसीहगयगंडयाइं	मयिंदुग्गहकरिभल्लूसयाइं ।	
संवरवेउल्लइं रोहियाइं	पणइं जहिं पुल्लिहिं छोहियाइं ।	
जहिं संचरंति बहुमुग्गसाइं	गत्ताइं जाइं णिरु घुग्घुसाइं ।	
जहिं परंढा कोकंता भमंति	झिल्लिरि खच्चेलइं गुमुगुमंति ।	5
जहिं भिल्लपुल्लिंदइं णाहलाइं	वीणंतइं तरुवेल्लीहलाइं ।	
जहिं फुक्कंरंति साहामयाइं	झुल्लंतइं तरुसाहागयाइं ।	
उड्डुणसीला तंबोललग्ग	जहिं हरि खज्जंता कहिं मि भग्ग ।	
जहिं घुरुहुरंत दाढाकराल	सूलच्छहिं सहं जुज्झंति कोल ।	
कंदुल्लगहर गहम्भु जेत्थु	हरिहुल्लिहिं जहिं दूंसियउ पंथु ।	10

७. ST घित्तइं ८. S हे णरवइ. ९. S अंगहारइं T अंगहारइं. १०. P adds before this line in second hand: सीयलवल्लीतरुवरघणाइं दिण्णइं विउल्लइं णंदणवणाइं. ११. S छत्तइं हरिभूसणाइं. १२. S कणघणाइं.

27. ST read this line as हिमवंतहो दाहिणि गिरिगहणे (T दाहिणिगिरिसिहरे गहणे) अवइण्णु मऊ-रिहि गग्भि खणे. २. S omits मयिंदुग्गह...रोहियाइं. ३. S छेप्पाइं; T छित्ताइं. ४. S मुग्गससरदा परिभमंति; T महिसा सरदा. ५. T फुक्कंरंति. ६. S adds before this line: जहिं आरइं घोरइं वुक्कंरंति घोरप्पड दीवड संचरंति । उड्डुणमयिंदुग्गइं णिरु भल्लयसयाइं संवरवेउल्लइं रोहियाइं. ७. S कंदुल्लगहिरु; A कंदुल्लगुहिर.

८. T वासियउ.

पंखासहिं थूणइं दारियाइं जहिं भिल्लिं हरिणइं मारियाइं ।
जहिं गहिरइं घारइं परिभमंति णिरु वायडउल चुमुचुमंति ।
जहिं वेल्लिहिं वेढिय तरुवराइं णं कीलहिं अवहंढणपराइं ।

घत्ता—तहिं काणणिं तरुवरघणि असुहकम्मपरियमिं ॥

बरिहणकुलि दुहसंकुलि आणिवि घित्तु कुकमिं ॥ २७ ॥

15

28

अइदारुणभीसणवणगहणि अवइण्णु मऊरिहि गम्भि खणि ।
डैयरगिं दहुउ बप्प किह खलवयणिहिं सज्जणु पुरिसु जिह ।
तहिं दुक्खहिं पत्तउ कहमि केम तत्तइ कडाहि णारइउ जेम ।
छुहु उर्यरहो हुंतउ णीसरिउ छुहु पक्खिणिपक्खवाउ धरिउ ।
कंटयतरुखरसकैरुखरहे छुहु पाउ ण देमि देमि धरहे ।
काणणि विसदंसहं इउं डरमि छुहु मायइ परिरक्खिउ चरमि ।
छुहु किमिउलु चंचुइ चूरियउ पोहुल्लउ छुहु मइं पूरियउ ।
कीलंती विणिह्य वणभमिणि ता वाहिं मारिय महु जणणि ।
सा लइय णिबंघिवि चेलियहिं हउं पुणु घल्लियउ उच्चेलियहिं ।
लइ रडइ मोरु पारद्वियहो किं पूसइ मासालुद्वियहो ।

5

10

घत्ता—तहिं गिम्हइ वेहुण्हइं इउं संताविउ जेहउ ॥

वापसरि परमेसरि वण्णहुं तरइ ण तेहउ ॥ २८ ॥

29

आणिय गामहो छुहु णिट्ठविय मायरितलवरहो परिहुंविय ।
विणिवारियमंदिरमंजरप हउं आणिवि घित्तउ पंजरप ।
द्वियउल्लउ दुक्खे सल्लियउ ता वणयरघरिणि बोल्लियउ ।

१. A बरहिणकुलि.

28. १ S इय. २. S वणगहणि. ३. T omits this line. ४ S जहरहं. ५ A ककर. ६ S पेदलउ; T पेदुल्लउ; A पुहुल्लउ ७. ST विणिह्य; A बरहिणि. ८. T वेल्लियण. ९. ST उच्चेलियहे. १०. ST वेहुम्हइ. ११. S केहउ.

१२. S जेहउ.

29. १. S अवहुविय; T पट्टविय.

महुं लुहइ कलेवर थरहरइ	सिसुमोरि कबलु वि णउ भरइ ।	
झिभाइं काइं झाहिंति तणु	तुहुं किं खाएसहि भिल्ल भणु ।	5
पइं गरुय मोरि दिण्णी परहो	हो जाहि समैर मावहि घरहो ।	
णिसुणिवि णियकंतहि वयणगइ	सहसत्ति चिलायहो जाय मइ ।	
णिउ हउं वग्गुरियइ विक्किणिउं	सत्तु व पत्थे तेण जि किणिउं ।	
आरिक्खिण णउ भक्खियउ	घोरहं मज्जारहं रक्खियउ ।	

घत्ता--तलवरघरि हंसु व सरि हउं सुच्छायउ जायउ ॥ 10

कणु भुंजमि जणु रंजमि सुमहुरमुक्कणिणायउ ॥ २९ ॥

30

जीवाहारै परिवहियउ	पावें सहुं देहु वि वहियउ ।	
महु जायउ पिच्छकलाउ किह	वरपंचवण मणिमाल जिह ।	
अवल्लोहवि मेरी रुवसिरि	तलवर पभणइ उज्जेणिपुरि ।	
जायवि इहु दायमि जसवइहि	जसहरतणयहो कीलारइहि ।	
ता एत्तहिं महु पियपात्तियहे	महुमहपयपंकयभत्तियहे ।	5
दियज्जसेसमासासाणिहे	मुक्कगहारदियसासणहे ।	
अणवरयइं पुज्जियदेवयहे	बलिदिण्णल्लिणमिदयसयहे ।	
गंगासरिसलिलपवित्तियहि	सीसेण णवियगहसोत्तियहि ।	
अयहरिणधवियपियरुल्लियहिं	णिदियमुणिवरचरणुल्लियहि ।	

घत्ता—उज्जेणिहिं सुहजोणिहिं विसरसमुच्छियकायहि ॥ 10

मंदमइहे चंदमइहे गयउ जीउ महु मायहि ॥ ३० ॥

31

बलवंतहि पवणजउद्धरिहि	सा केण वि कम्मं कुक्कुरिहि ।
चलकुडिलकुलिसककसणहरु	हरिणयणुगामियकरपसंरु ।

२ ST सवर. ३ T आरणिणपण. ४. T हंसच्छायउ (हं सच्छायउ); S हउं सच्छायउ.

30. १. ST इह. २ AST कीलणरइहि. ३. A एत्तहु. ४ S omits मुक्कगहार...देवयहे. ५ A छेल.

६. ST समुहे. ७ T omits सीसेण णविय...पियरुल्लियहे.

31. १. ST पहरु.

सिर वलइ य चलवालहि चवलु	दीहररोमावलिजडिलगलु ।	
उरि गरुयउ पच्छइ बित्थरिउ	णं विहिणा मैजिह मुट्ठि धरिउ ।	
पिंगलविलोलभासुरणयणु .	बहुसूअरकुलघंघलवयणु ।	5
जमपुरकरवत्तदंतडसणु	हुई करहाडणयरि भसणु ।	
राणी वि पवण्णी सुणहं भउ	पर किं पि ण मण्णइ लच्छिलउ ।	
सो आणिउ पाहुहु जसवइहे	जिह तिह हउं मि पावमइहे ।	
बिण्णि वि एकहि दिणि दरिसियइं	महु सुयहु सुअंगइं हरिसियइं ।	
हत्थे परमत्थे जोइयइं	पुणु दो वि तेण पोमाइयइं ।	10

घत्ता—णिउणउ विहि एहउ सिहि किह विरइउ मणरावउ ॥

कमलच्छिहि वणलच्छिहि णावइ केसकलावउ ॥ ३१ ॥

32

भल्लु वि भल्लउ महु आवडइ	कंचाइणिसीइहु अम्भिडइ ।	
एहु घाउवेउ हरिणु वि छिवइ	वेणं धावेण्णिणु मुहुं घिवइ ।	
एयहो हरिकिडि वि ण उव्वरइ	किं अण्णु को वि अगगइ सरइ ।	
हउं घरमंडणु पवियण्णियउ	सोणइयहो सो वि समण्णियउ ।	
तिं सो अकंडमच्चुं गलए	बद्धउ चामीयरसंखलए ।	5
हउं पुणु हिंढेमि घरपंगणइ	खेल्लमि उट्ठमि गयणंगणइ ।	
ता एकहि दिणि उहं गएण	सउहयलसिगि रंगंतएण ।	
दिट्ठउ जलहर गज्जंतु किह	गिभारिहि रुट्ठउ सुहट्ठु जिह ।	
दिट्ठउ सुरचाउ पीउं हरिउ	णं णहमंदिरि तोरणु धरिउ ।	

घत्ता—विज्जुलियए कंचुलियए भूसियदेहए सुरघणु ॥

10

घणमालए णं बालए किउ विचिनु उप्परियणु ॥ ३२ ॥

२. S मुट्ठिमज्झि; T मज्झु मुट्ठिधरिउ. ३. ST जिह तिह णिव हउं वि; A जिह सो तिह हउं मि.
४ ST परिमइइं.

32. १. ST महु भल्लउ. २ ST वाउदेव. ३ ST घरसिहरइ पंगणइ. ४. S सियसउहसिगि; T सियसउ.
इयलसिरि; A सउहयलसिहरि. ५. T पीयहरिउ. ६. S भरिउ.

33

पाउसु णिपवि रोमंचियउ	हउं परमाणंदिं णच्चियउ ।
पुणु रुणउं मइं थोरंसुयहिं	णं जम्मासुहसुमरणचुयहिं ।
पुणु दिट्ठउ खुज्जउ खोणियहिं	आसत्तउ पिययमराणियहिं ।
ईसावसेण विसमिं णडिउ	रूसिवि दोहि मि उप्परि पडिउ ।
चलपक्खणक्खचंचूहयइं	पेहुंणयसडप्पणमहिगयइं ।
णीसारइ जारइ हासरइं	बिण्णि वि णिहयइं उड्डियकरइं ।
रुहिरुल्लउ धारहि परियल्लिउ	मिहुणुल्लउ विहल्लंघलु घुलिउ ।
मणिरसणादामिं ताडियउ	कंताइ चरणु महु मोडियउ ।

5

घत्ता—जइयहुं पहु तइयहुं सहु असमाणउ णउ घायमि ॥
एवहिं रुहु मोरउ लहु तेण तीइ कर लायमि ॥ ३३ ॥

10

34

उट्ठंतु पडंतु पघाइयउ	पच्छइ परिवारु पराइयउ ।
तहिं एक्कइ कोवाऊरियए	पाउंय महुं मुक्की दारियए ।
अण्णेक्कइ चामरदंडएण	आहुउ कप्पूरकरंडएण ।
अण्णेक्कइ तट्ठउ पंतियए	चट्ठुंयफलेण पहरंतियए ।
अण्णेक्कइ हउ दारावल्लिए	अण्णेक्कएक्ककुसुमंजल्लिए ।
अवरइ वीणादंडेण हउ	हउं कह व कह व रंगंतु गउ ।
घे घे पभणंतितु खुज्जियउ	पच्छइ लगगउ घरलंजियउ ।

5

घत्ता—सुरउदहो तहु सदहो ओंएं जणणीसारिणि ॥
गलि धरियउ थरहरियउ हउं णिम्मुक्कउ पारिणि ॥ ३४ ॥

35

जसवहरापं पीडिय गलउ	आबद्धदीहदंढसंखलउ ।
मेल्लविउ ण मेल्लइ णिहुउ	पासयफलहो हउ कुकुरउ ।

33. १. ST पियरायाणियहि. २ ST रोसें. ३. AT मेहुणय.

34. १. A पाडव. २. ST णहुउ. ३. S चट्ठुयफणेण. ४. S धाविवि.

35. १. A दिढ.

सिरु दोहाविउ गउ सो वि मुउ	विहिकम्मावियारुं विचित्तु कउ ।	
मइं सोअइ पहु चिरजम्मसुउ	हा सिहि घरसिरि भूसणउं चुउ ।	
हा मोर मज्झु घरपुत्तलिय .	पइं चडियइ होइ सकुंतलिय ।	5
तुहुं जाम सिहरि थिउ पायडउ	घरि ताम ण सोहइ धयवडउ ।	
हा पइं विणु को हियवउं हरइ	घरवावीहंसि सहं चरइ ।	
पइं विणु एवहिं रंगावलिय	छज्जइ विचित्तकुसुमावलिय ।	
कामिणिपयणेउरसर सुणिवि	पइं विणु को णच्चइ तणुं धुणिवि ।	
हा जसहर राणउ अज्जु मुउ	हा दइव काइं मइं सुणहु हउ ।	10
हा सूअर अज्जु कसेरदलु	भक्खंतु पिअंतु सुसच्छ जलु ।	
करवंदजालवणि वसियमए	सुहु अणुहवंतु सरकहमए ।	

घत्ता—कयदुग्गइं सारंगइं रणिण भवंतु सइच्छइं ॥

को सारउ मिगमारउ एयहो कविलहो पच्छइ ॥ ३५ ॥

36

इय सोइवि दिण्णउ तेण सिहि	किउ विहिमि मरणसंकारविहि ।	
जिह पिउपिउजणणिए चिरु णिहिउ	तिह पाणिउं पिंडदानु विहिउ ।	
जणुं पियरहं जलु भोयणु ठवइ	पियरल्लउं किं पि ण अणुहवइ ।	
णिकखज्जहक्खपत्थरपउरे	उगयसामरि वंबुलखयरे ।	
णिज्जले मरुहयगयधूलिरए	काणणि सुवेलगिरिपच्छिमए ।	5
काणिहिं पसविहिं दइवें वणिउ	हउं कुंठिं पसविण जणिउ ।	
मिगि भुक्खिय दुक्खिय सुक्खथणि	थणु जीहइ लिहमि ण लहमि घणि ।	
दुद्धिं विणु जढराणलु जलिउ	मइं एक सणु कत्थइ गिलिउ ।	
लहिं साउ अणेयणायसयइं	णं धम्महो मूलइं उक्खयइं ।	
खइइं विवरहो कहेवि किह	अइभुक्खिएण गरुडेण जिह ।	10
सो सुणहु मरिवि तहिं हुउ उरउ	दुद्धरसरदुद्धरभक्खिरउ ।	

२. A विवाउ. ३. S सोइय; A सोवइ. ४. ST सिरु. ५. ST चरंतु.

36. १. ST पुणु किउ. २. AST वब्बुल. ३. ST साउ लहिवि. ४. S दुंदुर; T डिंदुर.

घत्ता—वाणि विलसइ बिलि पविसइ जाम ताम मइं लखउ ॥
मुहलगण पुच्छगण धरिवि खाहुं पारखउ ॥ ३६ ॥

37

पल्लट्टेवि मुह विससिद्धि मुयइ
सो हउं भक्खमि सो मइं डसइ
तोडइ तडत्ति तणुबंधणइं
फाडइ चडत्ति चम्मइं चलइं
हउं एम तरच्छि खयहो णिउ
को लंघइ महियलि कम्मवसु
बहु थावर जंगम जीवउलु
वियलिदिय बहु पंविदिय वि
हउं कूरतरच्छे मारियउ
भो मारिदत्त णिव दिट्ठु सइं

दढवियडफडंफडु फुफ्फुवइ ।
महु पलु तरच्छे पच्छइ गसइ ।
मोडइ कडात्ति हड्डइं घणइं ।
घुट्टइ घडत्ति सोणियजलइं ।
मइं मायाविसहरु कवलु किउ ।
अण्णोण्णाहार मरंति पसु ।
णर तिरिय गिलंति णिचु सयलु ।
अवरोप्परु खंति ण भंति क वि ।
मइं कालसप्पु संघारियउ ।
दूसहु अणुहवियउ दुक्खु मइं ।

10

घत्ता-- इय पिसुणिउ पइं णिसुणिउ जइ तो हिंस विवज्जहि ॥
हयदप्पउ परमप्पउ पुप्फयंतु पडिवज्जहि ॥ ३७ ॥

इय जसहरमहारायचरिण महामहल्लण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइण महाकच्चे
जसहरचंदमइभवंतरवण्णणो णाम बीओ संधी परिच्छेओ समत्तो ॥ २ ॥

* नक्षत्राधीशरोचिःप्रचयशुचितरोहामकीर्त्या निकेतो
निर्णीताशेषशास्त्रस्त्रिदशपतिनुताशेषवित्पादभक्तः ।
भ्राता भव्यप्रजानां सततमिह भवाम्भोधिसंसारभीरु-
नीतिज्ञो निर्जिताक्षः प्रणयविनयवान्नन्दतां नञ्जनामा ॥ १ ॥

I

पुणु रायहो भासइ अभयइ गियभवभवणकिलेसकह ॥
उज्जेणिहि सिप्पा णाम णई अत्थि सच्छ गंभीरदह ॥ ध्रुवकम् ॥
दुवई—तडंतरुण्डियकुसुमपुंजुजल पवणवसा चलंतिया ।
दीसइ पंचवण णं साडी महिमहिलहि घुलंतिया ॥
जलकीलंततरुणिघणथणजुयवियलियधुंसिणपिंजरा । 5
वैयाहयधिसालकलोलगलच्छियमत्तकुंजरा ॥
कच्छवमच्छपुच्छसंघट्टविहंठियसिण्णिसंपुडा ।
कूलपडंतधवलमुत्ताहलजललवसित्तफणिफडा ॥
णहंतणरिंदणारितणुभूसणकिरणारुणियपाणिया ।
सारसचांसभासकारंडविहंठिरहंसमाणिया ॥ 10
परिघोलिरतरंगरंगंतरमंततरंतणरवरा ।
पविमलकमलपरिमलासायणरंजिर्यभमिरमहुयरा ॥
मंदुवयंडपसतवसंठियतावसवासमणहरा ।
सीयलजलसमीरणासासियणियरकुंरंगवणयरा ॥
जुज्झिरमयरकरिकरुण्णालणतसियतडत्थवाणरा । 15
पंडियफुलिंगवारिपुण्णाणणचाययणियरदिहियरा ॥
अयचिक्खिल्लखोल्लखणिखोलिरंलोलिरंकोलसंकुला ।
असइसत्थणिअसंसेवियबहलतमालमहुयला ॥

* This verse is omitted in S and T.

1. १. T तडितरु. २. T कुसुमं. ३. S पवणाहय. ४. T विसद्विय. ५. S भासचास. ६. T गुंजिय. ७. S सीय-
लवायवीयणासासियणियडकुंडंगवणयरा. ८. T तडियपुडिंग; S पडियपुडिंग. ९. ST खेलिर. १०. A लोलिय.
११ AT महुयरा; S महुलया.

घत्ता—हउं तासु तरच्छहु णिदुरहो दाढाघायहिं णिट्ठियउ ॥

आवेप्पिणु तासु तरंगिणिहि मीणिहि गम्भि परिट्ठियउ ॥ १ ॥

20

2

दुवई—हउं संजाउ पोढपाढीणसरौरवियारणक्खमो ॥

गयणुल्लणवलणपरियत्तणलंघियवारिविम्भमो ॥ १ ॥

उज्जलम्मि कोमलम्मि तत्थ सच्छविच्छुलम्मि	संचरंतु हं तरंतु मीणमंडलं गिलंतु ।	
ताउं माउपण्णण दंतपंतिभिण्णण	पुव्वयालि मे हण तम्मि रण्ण मण्ण ।	
बद्धघोरकम्मण लद्धवारिजम्मण	सुंसुवारहूयण सुंसुवारियासुण ।	5
दंतएहिं पीलिऊण णक्खएहिं फालिऊण	जौव हं णियच्छिमो मि खाइउं समिच्छिमो मि ।	
ता णईसमागयाइं सोमउंजुअंगयाइं	घग्घरावलीरवाइं णीरकीलणुच्छवाइं ।	
चाहचीरसोहियाइं संपयाविलोहियाइं	दिव्वगंधवासियाइं हारदोरभूसियाइं ।	
साविणोयभूसियाइं खुज्जयाइं वावणाइं	तोयमज्झए तरंति णिबुद्धेवि उच्छलंति ।	
जा रमंति ण्हंति थंति एंति जंति संभवंति	एक्कमेक्क सिंचयंति पंजलीहिं कं धिवंति ।	10

घत्ता—ता तेत्थु तरंतु तरंतु जले एक्कं एक्कु णिसुंभियउ ॥

खुज्जुल्लिय अम्ह उवरि पडिय दिट्ठउ दइयवियंभियउ ॥ २ ॥

3

दुवई—सा धरिया गेलेण जलवईणा हउं मुक्कउ पण्हउ ॥

जममुहरकुहरणित्तुं भयवेविरु सरिविवरं पइट्ठउ ॥ २ ॥

गोमिणीसामिणीमाणिणीमाणउ	धाविया किंकरा बोल्लिओ राणउ ।	
मज्जमाणा समाणा तए पुज्जिया	देवकीलाविलासुज्जिया खुज्जिया ।	
घित्त गाहेण गाहेण णिव्वट्ठिया	आमिसालुद्धरणं मुहावट्ठिया ।	5
ता रुसा कंपियं राइणा जंपियं	परिसं विप्पियं कस्स होही पियं ।	

१२. ST ताहि.

2. १. ST ताव. २. A सुंसुमारओ दुण्ण; ST सुंसुमारहूयण ३. T सिंसुमारिया. ४. A जाम हं णिय-
च्छिऊण...समिच्छिऊण. ५ ST भाइणाइं. ६ PST omit तोय...उच्छलंति. ७ PST omit एक्कमेक्क सिंचयंति
८. T खुज्जल्लिय.

3. १ AST बलेण. २. S जलबलिणा with note जले बलं यस्य. ४ T णियंतु. ५. AT विलासुज्जया,

सूअरा संवरा मुकदोसा वणे
 रुद्धसिप्पासरो खड्गनारीणरो
 दंडिणो मंदिरं लोयणासुंदरं
 बुत्तुमेयं सकोहो सजोहो सरिं
 तेण केवट्टविंदं समानत्तयं
 तं दहतं महंतं पि संखोहियं
 देहसंदोहसमदणुप्पेल्लियं
 उट्टिए रुद्धमच्छंधिकोलाहले
 उच्छलंतो चलंतो चलंतो गले
 राहणो दाविओ चिच्चिणा ताविओ

भेसया मारिया भूयं भीसावेण ।
 एस दोसायरो नेमि वारीयरो ।
 अग्गिजालाघरं भासुरं भीयरं ।
 झत्ति पत्तो णिवो वाहिऊणं हरिं । 10
 तस्स सदेण फुट्टं व लोयत्तयं ।
 बाहुदंडेहि चंडेहि कंडोहियं ।
 तेण जंतेण रुहत्यलं रेल्लियं ।
 भंगुरेणं गलेणं विभिण्णो गले ।
 कहिओ सुसुवारो णिहित्तो थले । 15
 चंडदंडेण सो णिग्गहं पाविओ ।

घत्ता—हउं विवरहो होंतउ णीसरिउ जावच्छमि माणंतु सरु ॥

ता कयमारणकल्यलचवलु आयउ पुरधीवरणियरु ॥ ३ ॥

4

दुवई—जालं तैत्थ तेहिं मज्झोवरि घित्तुं महाघणसुत्तसंकडं ॥

हत्यपहत्यपहिं धरिऊण णिओ महानईतडं ॥ ६ ॥

णं रणि सुहहु रइयरिउवूहिं
 णं घरत्थु दुग्घरवावारिं
 जेम जीउ मोहेण विसालिं
 पायपहारहिं हउं अवियद्धहिं
 ता कंचुइ मच्छंधिउ घोसइ
 पुंजियबहुसिप्पिउडकवाडइं
 ता हउं तेहिं धम्म णिद्धाडइ
 जलयरु होइवि थलयरुदुक्खइं

णं कोसियकिमि तंतुसमूहिं ।
 पुत्तकलत्तमोहवित्थारिं ।
 तेम राय हउं वेढिउं जालिं । 5
 जा समरद्वथोद्वेवट्टहिं ।
 मह णैहं मुए दुग्गंधु पहासइ ।
 कच्छवससकुलीरहेड्डालइं ।
 णेवाँविउ मच्छंधियवाडइ ।
 संपत्तउ विणिवारियसोक्खइं । 10

५. A भूरि. ६. S खड्गनारीणरो रुद्धसिप्पासरो. ७. S अग्गिजालाहरं; A अग्गिजालाउलं. ८. S सुट्ट.
 ९. ST कलयलु चवलु.

4. १. ST तेहि तत्थ. २. ST चित्तमहां. ३. ST णिउम्मि; A णिऊवि. ४. ST वेढिय. ५. S णहोमुउ; T
 णहोयलहु; A णहमुए. ६. ST कवालइं. ७. ST णेवि ठविउ.

गय महुं तहिं कह कह व विहावरि उगगउ सूरु तिमिरकरिकेसरि ।
 दाविउ मीणधरोहिं णरिदहु चिरभवतणयहु कुवलयचंदहु ।
 ता भट्टे महु लक्खणु उत्तउ जं विप्पागमि कहिउ णिरुत्तउ ।
 घत्ता--एहु मच्छउ पंडुह रोहियउ णइवाहहो संमुहु तरइ ॥
 बहुहव्वकव्वजोगउ भणिवि वेउ भडारउ वज्जरइ ॥ ४ ॥

15

5

दुवई--कहिय सायराउ मुररिउणा रोहियमच्छरूविणा ॥
 चत्तारि वि सडंगवरवेय जगुभवभावभाविणा ॥ ६ ॥
 ता हउं तेहिं पविचु विहाविउ अमयमईहि भवणि णेवाविउ ।
 सा विण्णविय कयंजलिहत्थे माइ माइ णिसुणहि परमत्थे ।
 रोहियंमच्छु एहु जाणिज्जइ एएं पियरवग्गु पीणिज्जइ ।
 बप्पहो णामिं विप्पइं दिज्जइ एयहो पुंछु लुणेवि पइज्जइ ।
 ता कंतइ महु पुंछु लुणाविउ सिहिणा संभारेण पयाविउ ।
 भट्टभडारएहिं तं खज्जउ मइं तहिं देहदुक्खु आलज्जउ ।
 अण्णु खाइ अण्णुहु किं पावइ वेयमूदु जणु किं पि ण भावइ ।
 पुणु हउं जलणजालसंतत्तइ उक्कलियहिं वलियहिं परियत्तइ । 10
 तेल्लकडाहि कटंति णिहित्तउ तियडुयतोयसल्लकिं सित्तउ ।
 णियघूरु पुरु परियणु परियाणित्त माणसदुक्खु भीमु मइं माणित्तउ ।
 देहदुक्खु पुणु केहउ सीसइ जो वण्णहुं सकइ ण सैरासइ ।

घत्ता-सिज्जंनहो महु वउ सिमिसिमइ चालुय चट्टुय चूरियउ ॥
 बहुजीरमरियलव्वणहो जलिण णिव्वाइउ मुहु पूरियउ ॥ ५ ॥

15

6

दुवई--तं गिलिऊण झत्ति गैलणालिवहेण डेहेइ अंगयं ॥
 तमतमणारयस्स सारिच्छमहो मह दुइ पसंगयं ॥ १ ॥

८. S णरचदंहो. ९. T. भराडउ.

5. १. S जुय. २. S रोहिउ एहु मच्छु. ३. S reads एयहो पुंछु लुणेवि पइज्जइ बप्पहो णामे तिणहे दिज्जइ; T reads बप्पहो कारणि विप्पह विज्जइ. ४. ST णियपुरु घरु. ५ T जाणिउं. ६ T. सरस्सइ. ७ ST लवणजलेण; A लवणसहिउ.

6. १. A गलिऊण. २. A गलणालिवहेइ; T गलणालिवहेण. ३. S डेहेय. ४. T दुक्ख संगयं.

उच्छल्लिवि उच्छल्लिवि तलियउ	एम बण्ण दुक्खें णिहलियउ ।
लुणिवि लुणिवि तणुक्कंठय वीणिवि	भाक्खिउ बंभणेहिं पुत्तेण वि ।
भाक्खिउ पणइणीइ जारेण वि	भाक्खिउ सयल्लि परिवारेण वि । 5
महु णामेण हउं जि संपासिउं	एम लोउ अण्णाणिं दूसिउ ।
हिंसाकम्मु धम्मु पडिवज्जइ	णिग्घिणु सोत्तियवाएं भिज्जइ ।
जा चंदमइ सुणहं फणिभवचुअ	सुंसुयाह होइवि पुणरवि मुअ ।
माय महारी विह्वविह्वइ	छाली पासंगामि सीं ह्वइ ।
मरिवि मीणु संजायउ छेलउ	ताहि गम्भि लंबिरकणालउ । 10
बोक्कडएण जूहपरिपालिं	हउं जुवाणु हूवउ गयकालिं ।

घत्ता—णियजणणिहि मेहुणसण्णसुहुं अणुहवंतु सिंगिं हयउ ॥

जूहेसिं ताएं अइयएण वम्मूल्लरिउ हउं मुअउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—सत्तमधाउ जीउ विणिण वि सह थक्कइं माउपोट्टए ॥

अण्णउं अण्णएण मइं जणियउं दुविहभवे पयट्टए ॥ १ ॥

णउ तहिं लज्ज ण णिवसणेचली	पसुयहं जणणि वि होइ महेली ।
तइयहं हउं काइं मि ण बुज्झमि	एवहिं अंतो अंतो ढज्झमि ।
गम्भि णिसण्णउं हउं संपुण्णउ	अच्छमि जाम कुजम्मि पवण्णउ । 5
आसि जेण जायउ जा मायरि	जा मइं रामिय अएण मणोहरि ।
जाहि वि पुणु हउं गम्भि णिलीणउ	अच्छमि णिग्गमकंखिर रीणउ ।
कामाउरु मायापियरुल्लउ	तं कीलंतउ अयमिहुणुल्लउ ।
पारद्धिउं जाइवि मल्लु संचिवि	काणणु णिरवसेसु परियंचिवि ।
मिगुं ण लंहतिं पडिआवंति	तं जोइवि कुसुमावलिकंति । 10
तिक्खखुरुप्पि खणि दोहाविउ	छावउ जीवमाणु अवलोइउ ।

घत्ता—दोणिवि दोखंडी हूयाइं ताइं मयाइं खवंताइं ॥

गम्भासइ महुं अवलोइयहं अट्टंगइं कंपंताइं ॥ ७ ॥

५. AST विहयविह्वइ. ६. T छालिय. ७. A पासिगामि. ८. T संभूई. ९. A अयवइणा.

7. १. A मायपोट्टए. २. A पारद्धिहिं. ३. S मउ; T मृगु. ४. AST पुणु णियडीहूए.

8

दुर्वर्—उअरं फालिऊण विभइएं हउं राएण कड्डिउ ॥

अण्णिउ अयवइस्स सुणु ससिमुह कालेण वड्डिउ ॥ १ ॥

तहिं सेवमि अण्णाणपवित्तिउ	मायासससुआउ णियणत्तिउ ।	
पडु झडवि हडाविय जूहाहिउ	हउं जावच्छमि ता वसुहाहिउ ।	
देविहि अगगइ भणइ भडारिए	महिसासुरवरदेहवियारिए ।	5
करि पारज्जिलाहु महु भयवइ	तुह बलि महिस देमि हरिवरगइ ।	
ता तहु वणि संपण्णउ मयवहु	घरि आयउ पुणु पुण्णमणोरहु ।	
तहिं थिर थोर महिस मारेण्णिणु	पुज्जिय मासरसोइ करेण्णिणु ।	
ता हउं आणाविउ सूआरिं	मासखंडु जं सुणहिं घोरिं ।	
उंछिहउं जं तं मइं सुंघिउ	सुज्झइ णासापवणिं लंघिउ ।	10
अच्छमि बड्डउ दीहें डेरें	णं भवभयकयकम्मं घोरें ।	
बंभण भुंजाविय महिणाहिं	मासरसयघयस्त्रीरपवाहिं ।	

घत्ता—परमेसरि सूलकवालधरि महिसामिसवसखरिपिय ॥

कंचाइणि पीणिज्जउ भाणिवि रापं परिवोपवि दिय ॥ ८ ॥

9

दुर्वर्—अण्णेकहिं हयारिपलकवलपथिपिरतुप्पधारयं ॥

दाउं भोज्ज मज्ज सुअ बहुरस विणिहयल्लुहवियारयं ॥ १ ॥

कंकणाइं णाणापरिहाणइं	दिण्णइं गोदाणइं भूदाणइं ।	
पुणु भासिउ राएण पसत्थहु	पावउ महु बप्पहो सगत्थहु ।	
ददरज्जुअपरिवेढियगत्तिं	भुक्खातण्हासिहिंपरितत्तिं ।	5
मइं संचित्तिउ णिरलंकारिं	विहवत्तणवाज्जियसिंगारिं ।	
अंतेउरणारियणें सव्वें	दिण्णु पिंढु पुत्तेण विगव्वें ।	
पासत्थहु जं किं पि वि णावइ	सगत्थहु तं किरं कहिं पावइ ।	

8. १. A विभइयं; T चित्तइयं. २. T पुणु; S मुणि. ३. T omits this line; P gives this line and the following in second hand. ४. S भवभवकयकम्मं. ५. T. परिवारं वंदिय.

9. १. S संतत्ते. २. S कहिं किर.

सहुं माउच्छियाहिं तहिं भुंजइ पुत्तु महारउ सयणइं रंजइ ।
 हउं अंतेउरु सयलु गियच्छमि अमयमई पियघरिणि ण पेच्छमि । 10
 गियणासउडि करगु णित्तउ ता पक्कइ लंजियइ पउत्तउ ।
 अज्जु जि मारिय महिसयजंगलु बाइ दुगंधउ सुट्टु अमंगलु ।
 भणइ अवर झसभोजि णट्टउ अंगुवाइ देविहि णिकिट्टउ ।
 अण्णेक जि भासइ णउ पइउ हउं आहासमि दिट्टउ जेहउ ।
 मायइ सहुं गरलुल्लउ चारिउ खुज्जयकारणि गियपइ मारिउ । 15
 पावें तेण सडियणासोडइं पूइवाइ राणी हय कुट्टइं ।
 घत्ता—हउं जाणामि आमिस पुंजियउ भोयणवेलइ ढोइयउ ॥
 आयणिवि कामिणिजंपियउ देविहिं वयणु पलोइयउ ॥ ९ ॥

10

दुवई—सव्वावयवरूवफुडवत्तिविवज्जियअइअलक्खणं ॥

सुइरु वि पिच्छमाणु णउ लक्खमि तिमहमहु पडिक्खणं ॥ १ ॥

विहि परयरहो अवसिं रुसइ कोटिं लुणियउ णक्कु ण दीसइ ।
 जो जारहो दिट्ठिइ आवडियउ विंबाहरु सो सडियउ पडियउ ।
 जाइं जारवच्छयलि पईट्टइं णक्खइं ताइं पइट्टइं णट्टइं । 5
 तारइं तरलइं जारासत्तइं वणसंकासइं जायइं णेत्तइं ।
 जे थण जारकरगें भूसिय गंडसरिस ते पूपं दूसिय ।
 जो जारिं करेण अच्छोडिउ केसभारु सो विहिणा तोडिउ ।
 पाणिहिं जेहिं जारु परिमट्टउ ठाउ वि ताइं ण केण वि दिट्टउ ।
 जारणिवेईयाइं संघायहं सयलंगुलियउ सडियउ पायहं । 10
 इय तणुणिगह दुण्णयगारी पार्वि पाविय भज्ज महारी ।
 मइं सकलत्तु दुचित्तु विर्यण्णियउ तहिं अवसरि ता तेण जि जंपियउ ।

घत्ता—लइ अच्छउ देवहं वंभणहं परिचाइउ धरि पुंजियउ ॥

ण सुहाइ मज्झु चिलिसावणउं महिसयमांसु णिउंजियउ ॥ १० ॥

३. T सहिमाउलियाइं; A सहुं माउच्छयाहिं. ४. S अण्ण का वि. ५. A सरिय. ६. A कामिणिवयणगइ. ७. S रूवु.

10. १. A पडिवत्ति; S फुडवत्ति. २. A अइअइअलक्खणं; ST विलक्खणं. ३. ST पडिट्टइं. ४. T णिवेसियाइं. ५. ST अंगुलि एक्क वि दिट्ट ण पायहं. ६. S वियाक्किउ. ७. S परिपुंजियउ. ८. T मंसु.

11

दुवई—हरिणं स्यरं पि स्यारय सज्जो मारिअल्लयं ॥

आणहि गंपि कहिं मि अवलोइवि जीहिंदियरसिल्लयं ॥ १ ॥

तं णिसुणिवि जसवइणरणाहिं	भाणिउं होउ हरिणेण वराहिं ।	
मिट्टु पवित्तु वि भट्टहिं गिज्जइ	बोक्कहुं अम्मि वियारिवि सज्जइ ।	
अच्छइ वद्धउ मेममायंतउ	महिसयमासु समुग्घायंतउ ।	5
एयहो पच्छिमु पाउ लुणेविणु	अम्महिं ताम देहि पउ लेप्पिणु ।	
ता तं णिसुणिवि तेण दइच्चिं	आणालंघणभीपं भिच्चिं ।	
लहु महुं पच्छिउ सत्थि छिण्णउ	करिवि भडित्तउ कंतहि दिण्णउ ।	
कोढिणित्तु वणपूणं लिच्ची	तो वि ण मासहो उवरि विरत्ती ।	
वेयंघम्मवेहावियमाणसु	तमतमपहमहि जाइ सतामसु ।	10
तिव्वइ वेयणाइ हउं कंपमि	जाणंतु वि पसु काइं पयंपमि ।	
तिहिं पायहिं उब्भुब्भउ अच्छमि	मेक्कंरंतु दस दिसउ णियच्छमि ।	
को आसंघमि किह किर गच्छमि	सरणु ण को वि वप्प तहिं पेच्छमि ।	
एत्थंतरि अण्णेक्कु कहाणउं	आयउ णिसुणहुं दुक्खणिहाणउं ।	

घत्ता—जा छाली होइवि तत्थं मुय भुंजिवि मायरि पावफलु ॥ 15

सा सिंधुविसइ महिसिहि उअरि हूई महिसउ भीमवल्लु ॥ ११ ॥

12

दुवई—सो वणि भंडभारु पवहंतु पुरं पुणरवि समागउ ॥

सिप्पासरिसरम्मि जा मज्जइ दीहरपहसमाहउ ॥ १ ॥

असिधररायपुरिसपरिरक्खिउ	सीयलु सलिलु पियंतु णिरिक्खिउ ।	
खुरिहिं हणंतु चारि परिओसिं	जाइसहावसमुब्भवरोसिं ।	
उट्ठिवि सिंगगेण वियारिउ	रायतुरंगु तेण तहिं मारिउ ।	5

11. १. S हरिणं. २. AP अवि. ३. S मेमावंतउ. ४. A पच्छिमु. ५. ST वेयधम्मवेहाविउ माणुसु. ६. ST बेकरंतु. ७. ST पुणु वि मुय. ८. ST महिसउ हूयउ.

12. १. T समागउ. २. ST read असिधर...रक्खिउ after सीयलु...णिरिक्खिउ.

सो किंकरेहिं धरिवि णिउ तेत्तहिं
 सविसाणेहिं देव णिहारिउ
 एहु सदीसउ पैहु मारिज्जइ
 जेम ण जाइ जीउ लहु एयहु
 तेम जियंतु जियंतु अमित्तउ
 तं णिसुणेवि सवारिं घोरिं
 पुहुंतउ बद्धउ मुहुं कडिवि
 संखलाहिं चउपासहिं तालिउ
 चलसिहिजालाचलिहि जलंतहु
 खारउं तिकखउं कहुयउं आणिउं

अच्छइ णैरवइ जसवइ जेत्तहिं ।
 एण तुहारउ हरि संघारिउ ।
 राएं भणिउं सणिउं मारिज्जइ ।
 तुरयणिहणयारिहि कुविवेयहु ।
 पयसु पयसु सवारु पउत्तउ । 10
 णासारंघि विणिगयदोरिं ।
 पच्छाहंतउ पुंहु संमोडिवि ।
 पेडुहु हेडि हुआसणु जालिउ ।
 णीणियजीहहु विरसु रसंतहु ।
 अग्गइ ठवियंउ तियडुयपाणिउं । 15

घत्ता—तं पीयउं तण्हासोसिएण विरसंतइ चम्मइं हयइं ॥

तेणंतइ बहुमलपूरियइं पच्छिमहारिं णिग्गयइं ॥ १२ ॥

13

दुवई—जहिं जहिं सिज्जमाणु सोसिज्जइ तहिं तहिं वप्प छिज्जए ॥

णामेणज्जियाहि सपउत्तै वरसोत्तियइं दिज्जए ॥ १ ॥

कंदंतु वेयणइ णिमुक्कताणाइ
 अहमवि णिहित्तो वि पाणे हरंतमि
 दम्भंकहत्थेण घित्तूण घित्तूण
 भत्तेण पुत्तेण सिहिणा विसणो मि
 अम्हे हया पीणिया वंभणा जाम
 अण्णमि जिमियमि अण्णो कइं धाइ
 अण्णमि खलियमि अण्णस्स णक्खाइं
 माहिंदतिरियस्य मज्झमि अइयस्स
 दोणहं पि सह चैव जीवो गओ ताम
 गोमुंडवहुहुविच्छिडुवंतमि

दासेण गहिऊण भूमीसराणाइ ।
 इंगालपुंजमि धगधगधगंतमि ।
 तिकखेण सत्थेण छित्तूण छित्तूण । 5
 भो मज्झ णामेण इं चैव दिण्णे मि ।
 धुत्तेहि लोएहि जड वंचिया ताम ।
 अण्णस्स णामेण विण्णो पलं खाइ ।
 भज्जंति किं भइ दिण्णंगदुक्खाइं ।
 लग्गगिजालाकलावेण लइयस्स । 10
 उज्जेणिमायंगणरवाडओ जाम ।
 पसुपेयपरियलियकिमिसिमिसिमंतमि ।

३. S जसवइ णरवइ. ४. ST संहारिउ. ५. AST भणु किं किज्जइ. ६. A तुरयारिहि एयहि. ७. T विणिगयदोरिं. ८. A उरुहंतउ. ९. ST मुसट्टिवि. १०. ST ढोइउ. ११. ST विरसंतहो.

13. १. A दम्भंकहत्थेण २. ST दिण्णुग्गदुक्खाइं. ३. S परिगलिय; T परिचलिय

सिपंतपवहंतलोहियरसिल्लमि विच्छिणघणचम्मलाइयकुडिल्लमि ।
 मयमहिससिगावलीसंकडिल्लमि फहसुद्धकेसमि धूसरंकीडिल्लमि ।
 कियवाउपयपहयधूलारयालमि विक्खित्तकंकालमालाकवालमि । 15
 सिहिसिण्हमंडलरसासायकायमि आमिसवसामीसउट्टंतधूममि ।
 घत्ता—कुंकुडियहि जायइं गग्भि तहिं अम्हइं बिण्णि वि पिल्लइं ॥
 छुड छुडु तत्तियहि विणिग्गयइं उक्कहडमि णवल्लइं ॥ १३ ॥

14

दुवई—ता गहिया गलमि मज्जारि जणणी कंपमाणिया ॥
 खद्धा कसमसत्ति मुडियट्ठिरवेण जमाणणं णिया ॥ १ ॥
 ता चंडालिइ रइयउ भल्लउ धित्तउ घरकयारपिडउल्लउ ।
 णाणाहडुखडंततुडियउं णं दुक्किउ अम्हइं सिरि पडियउं ।
 दोहिं मि कुक्कत्तिण आरडियउ ताहिं मि तहिं हियउल्लउ घुलियउ । 5
 मं छुडु अट्ठिणहिं संवलियउ तंबचूलसिसुजुयलउ घल्लिउ ।
 णं णियसत्तिसमूहिं पेल्लिउ समउं कयारें इह मइं घल्लिउं ।
 अम्हइं सहु ताइ अवहारिउ पुणु कयारु चरणि ओसारिउ ।
 लग्गइं पायग्गइं महु अंगइं हत्थे लेवि णियाइं विहंगइं ।
 कुहियकलेवरि ठवियइं णियघरि विलसियकम्मविवायसुदुद्धरि । 10
 हउं जो णिवै णिववंदिउ हौतउ सो चंडालिइ पायणं लिउत्तउ ।

घत्ता—सीउण्हें वापं पीडियइं छुहंतण्हासंतत्ताइं ॥
 चंडालणिलइ णिवसंताइं दुक्खपरंपर पत्ताइं ॥ १४ ॥

15

दुवई—दूसहविहुरवडणसुडियंगइं धरणियले पलोट्टइं ॥
 तहिं पाणहरि खद्धपरपाणइं पाणिवहे पयट्टइं ॥ १ ॥

४. T कुडिल्लमि. ५ AT कुंकुडियहि. ६. ST उक्कहडमि.

14. १. S घल्लिउ. २. S adds after this : पुव्वजमि (T जम्म) किउं णावह घडियउं. ३. S omits णं
 णियसत्तिसमूहिं पेल्लिउ. ४. S मउयंगइं. ५. S णिउ णिववंदिउ; T जो णिवपइवंदिउ. ६. P छुहंतण्हासिहि-
 संतत्ताइं.

चित्तपिच्छचित्तलाई चंचुचाहचंचलाई
जीवरासिखंडिराई एत्थ तत्थ हिंडिराई
दूरमुक्कसंमरण दो वि चंडयम्मण
ढोइयाई पत्थिवस्स पुब्बजम्मणंरणस्स
वारवार जोइयाई तेण तं णिरूवियाई
तंबचूलंडिभयाई पीययंगणभयाई
एयएहिं जायएहिं दिण्णणक्खघायएहिं
वाहियंघियारएहिं भूधुलंतगतएहिं
उड्डिरेहिं रंगिरेहिं विब्भमं पयासिरेहिं
भूरिपावभारयाई उक्खयावणीरयाई ।
चोरमारए रएण राइणो तलारएण ।
दिट्ठयाई आणियाई हत्थफंसमाणियाई । 5
रूवरिद्धिभायणेहिं णेहणिद्धलोयणेहिं ।
उत्तिमाई लक्खियाई मेमणे परिकिखियाई ।
ताम तुज्झ मंदिरम्मि संवसंतु सुंदरम्मि ।
रोसिरेहिं पत्तिरहिं पुत्तरहिं णत्तिरहिं ।
उद्धकंठकेसरेहिं रत्तणेत्तभासुरेहिं । 10
जुज्झिरेहि कीलिहीमि जुज्झयाई पिच्छिहीमि ।

घत्ता—ता णिसुणिवि णरवइणियमविहिं भिच्चं ठवियइं णियभयणे ॥

गय रयणि तित्थु पंजरि ठियइं सुण्णहाइ जहिं राउ वणे ॥ १५ ॥

16

दुवइ—तत्थ णियाई दो वि दाहिणमंदाणिलचलियदुमदलं ॥

दिट्ठं वणमणयस्सयरावलिकलरवजणियकलयलं ॥ १ ॥

झरंतसच्छविचलुंभणिज्झरं
ललंतवेल्लिपल्लवोहकोमलं
सिणिद्धहक्खपुण्णरेणुपिजरं
दिसाचरंतजक्खकिंकिणीसरं
वहूपलित्तगेयमोहिणयं
सिलायलासणत्थसिद्धखेयरं
णरिंददंतित्तंभिण्णचंदणं
पढंतकीरिच्छसद्वपेसलं
तुसारफारफेणरासिसेयओ
भरंतसंदकुंडकूवकंदरं ।
मिलंतपक्खिपक्खलक्खचित्तलं ।
फलोवडंतवुक्करंतवालवाणरं । 5
लयाहरत्थकीलमाणकिंणरं ।
णहोयरंतदेवयाविमाणयं ।
गहीरपंकलोलमाणसुअरं ।
पुरंधिचित्तहारदित्तवंदणं ।
मरालियाणुगामिवालपाडलं । 10
वणम्मि तम्मि राइणो णिकेयओ ।

घत्ता—तद्दो पंगणि मंडउ पडरइउ पंचवण्णु किंकिणिमुहलु ॥

तहिं अम्हइं पंजरएण सहुं ठवियइं णं जममुहकवलु ॥ १६ ॥

15. १. T सण्णएण. २. मम्मणे. ३. AT पीइणं गणं भयाई. ४. AP एययाण. ५. AST add: णित्त (T णेत्त) रत्तधारएहिं (A adds after it णिट्ठरापहारएहिं) चंचुघायधुम्मिरेहिं सेयतोयतिम्मिरेहिं, but P erased this by means of हरिताल. ६. T णिच्चं.

16. १. ST दोहिं वि. २. ST लक्खपक्ख. ३. ST जममुहि कवलु.

17

दुवई—तणियडम्मि रत्तपत्तंचिउ हयपरतावदुक्खउ ॥

सीयलु सोमु रम्मु णं णरवइ सुहइ असोयहक्खउ ॥ १ ॥

दौरियघोरचोरपरयारिं	हिंसायारिं तेण तलारिं ।	
तहो तलि पविमलसिलहिं णिविट्ठउ	झाणारूढउ मुणिवरु दिट्ठउ ।	
दोआसाबंधणपरिचुक्कउ	रायदोस दोदोसहिं मुक्कउ ।	5
धरियतिमुंड तिदंडविहंडणु	छिण्णतिसल्ल तिलोयहु मंडणु ।	
हयगारवतिउ तिरयणभूसणु	चउकसायसिप्पीरहुआसणु ।	
चउसण्णाविसेसणिण्णासणु	पंचसम्मिदिसम्भावपयारुणु ।	
पंचासवदारहं कयसंवह	पंचमहव्वयभारधुरंधर ।	
पंचमीसु पंचमगइसामिउ	पंचाचारमहापहगामिउ ।	10
थिरु छज्जीवणिकायदयावरु	सत्तमेयभयतिमिरदिवायरु ।	
अट्ठदुट्ठमयणिट्ठवणायरु	अट्ठमपुहविवासज्जाणायरु ।	
अट्ठसिद्धगुणसंजोइयमणु	णवविहवंबभेरेरं जो वंभणु ।	
दहविहु धम्मलहु जिं लद्धउ	दहपाणक्खउ जेण णिसिद्धउ ।	

घत्ता—एयारहपंडिमउ सावयहं जेण वियारिवि उत्तियउ ॥ 15

उद्धरिय जेण बारह वि तव तेरह चरिय विहत्तियउ ॥ १७ ॥

18

दुवई—जो मयमोहलोहकोहाइरिऊण रणम्मि दुम्महो ॥

जो तवचरणकरणजालावलिदद्धधगत्तिवम्महो ॥ १ ॥

तं पिच्छिवि सो तलवरु रुट्ठउ	चित्तिइ दुट्ठु धिहु पांविट्ठउ ।	
विट्ठलु णग्गउ दुक्खे छित्तउ	थत्ति महारी दूसिवि थक्कउ ।	
दीसइ ताम जाम अवंसउणउं	णिववणाइ णिद्धाडमि सवणउं ।	5
कित्तिउ णियमणि दूमिउ अच्छमि	कवडिं किं पि अपुच्छिउ पुच्छमि ।	
जं जिह भासइ तं तिह दूसमि	कैरिवि णिरुत्तरु पच्छइ रूसमि ।	

17. S वारिय. २. ST णिच्चल. ३. ST परिचुक्कउ. ४. ST चुक्कउ. ५. P कय. ६. A समिह. ७. ST जायण-परु. ८. S वंभचेरि. ९. T पडिमा.

18. १. ST दप्पिट्ठउ. २. AP अवसवणउ. ३. A खवणउ. ४. ST करमि.

किं पि अजुँत्तु दुरुत्तु पवोल्लमि	अर्वसवणउ णीसारिवि घल्लमि ।	
इय सुमरंति मायावंति	वंदिउ साहु णिरिक्कयंति ।	
तहिं अवसरि तहु जोउ समत्तउ	जाणंतेण वि पिसुणु अभत्तउ ।	10
आसीवाउ दिण्णु भयवंति	धम्मवुद्धि तुह होउ भणंति ।	
णियँगुणु मोक्खु पयहु संपज्जउ	सुहु संभवउ भंति तुह भज्जउ ।	

घत्ता—णउ णिदह मच्छरु विच्छरइ ण पत्तंसइ वड्ढइ हरिसु ॥

समतणकंचणहं महारिसिहिं सत्तु वि मित्तु वि समसरिसु ॥ १८ ॥

19

दुवई—भणियं तलवरेण धणु धम्मु भणिज्जइ जोहसासणे ॥

गुणु तहो कोडिलग्ग मोक्खु वि रणे वाणहो रिउविणासणे ॥ १ ॥

अण्णु धम्मु गुणु मोक्खु ण याणमि	हउं पंचिदियसोक्खइ माणमि ।	
तुहुं पुणु काइं मि दीसहि दुब्बलु	णत्थि चीरु पंगुरुणु ण कंवलु ।	
अट्ट वि अंगइ रीणइ झीणइ	णयणइ गंपि कवोलि णिलीणइ ।	5
गत्तु मलावलित्तु कि ण घोअहि	रत्तिदिवसु णिमिसु वि कि ण सोवहि ।	
मउलियणेत्तवत्तु किं झायहि	अम्हारिसइ भंति उप्पायहि ।	
ता मुणि भणइ सझाणु णिउंजिवि	जीउ बि कम्मु वि दो वि विहंजिवि ।	
जाहु समीहमि सासयठाणहो	अजरामरहो परमणिव्वाणहो ।	
पुरिसु महेली संदु वि हूवउ	सौमु चंडु पुणु णं जमदूअउ ।	10
राउ पुणु वि पाइकु सुदीणउ	रूववंतु पुणु रूवविहीणउ ।	
मइलगोत्तु पुणु गोत्तसमुज्जलु	बलविहीणु पुणु अतुलमहावलु ।	

घत्ता—हुउ अल्लु मेच्छु णरभवभवणे दालिहिउ पुणु दविणवइ ॥

सोत्तिउ होइवि चंडालु हुउ विसमी भवैसंसारगइ ॥ १९ ॥

५. ST दुरुत्तु अजुत्तु. ६. ST अवसणु णीसारेप्पिणु. ७. ST omit this line and P gives it in second hand.

19. १. S कवालि. २. ST समीहपि. ३. A भड.

20

दुवई—मासाहार कूरु मिगुं काणणि पुणु तणयरु वि जायउ ॥

पुणु रयणण्णहाइ णरएसु वि विसहियगरुयघायउ ॥ १ ॥

णारउ पुणु हुउ जलयरु थलयरु	णहरु पुणु तिरिक्खु बहुअहरु ।	
पुणु कुच्छिय सुरजम्मावत्तइ	णिवाडिउ परिचत्तइ रयणत्तइ ।	
अण्णण्णइ अंगाई धरंतहो	अण्णण्णइ ताई मेळंतहो ।	5
एम बप्प जीवंतमरंतहो	गयउ कालु दुक्खाई सहंतहो ।	
दुक्खु पावफलु हउं मणि मण्णमि	तेणिंदियसुहाई अवगण्णमि ।	
भिक्षु चरमि अण्णउ आयासमि	थोवउं भुंजमि णिज्जणि णिवसमि ।	
धम्म पयंपमि मोणि अच्छमि	मोहु ण इच्छमि णिंदं ण गच्छमि ।	
कोहु ण संचमि कवडु विलुंचमि	माणु वि खंचमि लोहु विवंचमि ।	10
जायइ देहदुक्खि उव्वेवउ	कहिं मि करमि णउ मयणुम्मायउ ।	
ण भयाउरु णउ सोपं भिज्जमि	हिंसारंभु डंभु णावज्जमि ।	

घत्ता—हउं अंधउ णारिणिहालणए वहिरउ गेयायण्णणइ ॥

पंगुलउ कुत्तिथपंथगमणि मूअउ विकहावण्णणइ ॥ २० ॥

21

दुवई—जो आहार देहु सो अण्णु जि मइं गहिओ अचेयणो ॥

सो सच्चेयणु व्व परिधावइ धवलणियद्धिओ अणो ॥ १ ॥

विणु धवलेण सयडु किं हल्लइ	विणु जीवेण देहु किं चल्लइ ।	
अण्णु जीउ महु अण्णु कलेवरु	तेण भइ हउं हुवउ दियंवरु ।	
परु ण दुगुंछमि मोक्खु समिच्छमि	ज्ञाणालीणु णिरुत्तरु अच्छमि ।	5
अट्ट रउइ ज्ञाण णउ इच्छमि	धम्मसुक्कज्ञाणि परु पेच्छमि ।	
आहाकम्मुहेसहिं चत्तउ	पिंडु लेमि जिह केवलिवुत्तउ ।	
पंचासवदारइं परिवज्जमि	एम बप्प इंदियबलु णिज्जमि ।	
भण्णइ सुहडु गोसिगु ण दुब्भइ	विणु छत्तेणं छाहि किं लब्भइ ।	

20. १. ST मृगु. २. ST णिह ण गच्छमि. ३. ST read this line: कोहु ण संचमि माणु विवंचमि कवडु विलुंचमि (T विलुंचमि) लोहु वि खंचमि. ४. ST ण हसमि ण रममि णउ उव्वेयउ. ५. A विकहाकण्णणइ.

21. १. T हल्लइ. २. ST ज्ञाणारुडु. ३. S पावासवदारइं. ४. ST चवइ.

विणु जीवेण मोक्खु को पावइ	तुम्हारिसु किं अप्पउ तावइ ।	10
छंडहि तउ करि मेरउं वुत्तउ	जीउ वि देहु वि एक्कु णिरुत्तउ ।	
जिह तरुक्कुसुमहो गंधु ण भिण्णउ	तिह जीउ वि देहाउ ण छिण्णउ ।	
फुल्लविणारिं गंधु जिह णासइ	तिह तणुणारिं जीउ वि णासइ ।	
तं णिसुणेवि मुणिवरु आंघोसइ	परमप्ययहो वयणु परिपोसइ ।	
चंपयवासु वि लग्गउ तेल्लहो	एम गंधु जिह छिण्णउ फुल्लहो ।	15
तिह देहहो जीवहो भिण्णत्तणु	दिट्ठउ किंकर चवहि जडत्तणु ।	
भणइ वीरु दिण्णइ पच्चुत्तरि	इंतु ण दीसइ जीउ पइंतरि ।	

घत्ता—पर दीसइ सोणियसुक्कधरु गम्भम्भंतरि वुड्ढिगउ ॥

तं णिसुणिवि संजमणियमणिहि कहइ भडारउ समियमउ ॥ २१ ॥

22

दुवई—दूरा पंतु सहु णउ दीसइ परक्कणम्मि लग्गओ ॥

णज्जइ जेम तेम जगि जीउ वि बहुजोणीकुलं गओ ॥ १ ॥

णक्किं को वि ण रूवइं पेक्खइ	कर्णिं को वि ण भक्खइं चक्खइ ।	
अण्णगेज्जु अण्णे ण लइज्जइ	रूवे रूववत्थु जाणिज्जइ ।	
तं पि सविसयवग्गपडिवद्धउ	अण्णु होइ अण्णुमारिं सिद्धउ ।	
सुहुमु ण थूलिं णारिं छिप्पइ	करिकरेण किं राई घिप्पइ ।	
सुहुमु जीउ सुहुमेणं जि णारिं	दीसइ जगि केवलअहिणारिं ।	
ता सुंडीरु भणइ किं णिज्जइ	जोणिहिं केण जीउ आणिज्जइ ।	
तं आयणिणवि णवजलहरमुणि	संसयहरु आहासइ तहो मुणि ।	
अयसिह छिदिवि एक्कु महव्वइ	जायउ अवह वि तवभट्ठउ जइ ।	10
संभु वि वंभु वि कम्मायत्तउ	कम्मविवाउ लोइ बलवंतउ ।	
लोहु व कहण कहिज्जइ	जीउ सकम्मिं चउगइ णिज्जइ ।	

घत्ता—वित्थारु वि संघारु वि करइ अट्ठकम्मपयडिहिं गहिउ ॥

जगि कुंथु हवेप्पिणु करि हवइ जीउ सरीरमाणु कहिउ ॥ २२ ॥

५. T फुल्लविणारिं गंधु ण पावइ. ६. T परिघोसइ. ७. ST भिण्णउ. ८. A णियमविहि.

22. १. ST थूलणाणेण ण. २. ST संहारु.

23

दुवई—जइ धुउ लोयमाणु णिह णिच्चलु किरियागुणविवज्जिओ ॥

तो तहो कम्मबंधु कह होसइ भीसणभवसमज्जिओ ॥ १ ॥

बंधि विणु कहिं गुरुसीसत्तणु	घडइ वण्ण अवरु वि तवसित्तणु ।	
सुद्धहो रइ तमु अंगि ण लग्गइ	सग्गु मोक्खु किं कारणु मग्गइ ।	
विणु जीवेण फासु किं सयणइ	परियाणइ उक्कोइयमयणइ ।	5
विणु जीवेण जीह किं लक्खइ	रसविसेस णाणाविह चक्खइ ।	
विणु जीविं पेच्छंति ण णेत्तइ	अग्गइ थक्कइ वइरइं मित्तइ ।	
विणु जीविं घुसिणाइं ण माणिउ	घ्राणिं कत्थ वि गंधु ण याणिउं ।	
विणु जीवेण कण्ण णायण्णइ	सहु सुद्धासुहु किं पि ण मण्णइ ।	
विणु जीवेण सुहु णिच्चिट्ठइ	पंच ताइं कुलगुरुणा सिट्ठइ ।	10
अयहरिहरईसरसिवणामइं	फासाइयइं गुणगैहधामइं ।	
घत्ता—णउ फासु ण रसु णउ रूउ तहो गंधु ण सहु वि वज्जियउं ॥		
पर करणहिं पंचहिं पंचगुण जाणइ मइं आयणियउं ॥ २३ ॥		

24

दुवई—सुरगुरु लोयणेहिं जं पिच्छइ इच्छइ तं समक्खयं ॥

जो ण णियइ घरम्मि चिरपुरिसणिहाणघडं पि णिक्खयं ॥ १ ॥

वायाकुंटु वंटु वण्णुभट्टु	विसयकसायरायरसलंगडु ।	
सो किं जाणइ दव्वइं फुरियइं	वायरसुद्धमइं दूरंतरियइं ।	
गायइ वायइ णच्चइ खेल्लइ	कामिणिघणथण हत्थि पेळ्ळइ ।	5
अरिबल हूल्लइं सूलइं फालइ	खेत्तइं गामइं णयरइं जालइ ।	
पावकैम्मु किं सच्चउ पेक्खइ	किं कारुणिं कासु वि अक्खइ ।	
जइ सिद्धंतु अदेहिं कहियउ	लइ तो मइं एउ जि सद्धियउ ।	
कुम्मरोमकंबलपंगुत्तिं	णहकुसुमंचिउ वंक्षहिं पुत्तिं ।	
घत्ता—णिक्कलुणइ जायइ णउ मरइ ण करइ ण घरइ णउ हरइ ॥		10
णिक्कलु अरूउ परमेहिं पडु भवसंसारि ण संसरइ ॥ २४ ॥		

23. १. ST सिद्धहो. २. A भक्खइ. ३. ST गुणगणधामइं.

24. १. T णिक्खयं. २. S वायइ गायइ. ३. T लायइ. ४. T सूलइ. ५. T पावधम्म. ६. T वंक्षापुत्तिं.

दुवई—इंदपडिंदचंदविसहरणरखेयरविरइयच्चणो ॥

अट्टोत्तरसहासलक्खणधरु केवलणाणलोयणो ॥ १ ॥

अट्टपाडिहेरामललंछणु	णं उदयायलि थिउ मयलंछणु ।	
धम्मचक्किअयमणमलणिग्गमु	वीयरउ मुणि मुणिवरपुंगमु ।	
एहउ होइ सयल परमप्पउ	तिं भासिउ हउं जाणमि अण्णउ ।	5
सो ण णिच्च पज्जापं वुच्चइ	दव्वत्थे पुणु णिच्च जि सुव्वइ ।	
णिच्च भणंतहं ण मरइ ण हवइ	णिच्च भणंतहं णं रमइ ण चवइ ।	
णिच्च भणंतहं गयणसमाणउ	ठाइ जीउ गयकिरियाठाणउ ।	
णाणाभेय जीव जिणु भासइ	एकु जि जीउ भट्टु किं विरसइ ।	
एकु हसइ अणेकु वि रोअइ	एकु चेइ अणेकु वि सोअइ ।	10
एकु जाइ अणेकु वि थक्कइ	भिडइ एकु अणेकु वि संकइ ।	
एकु सीसु अणेकु वि गुरु णरु	एकु राउ अणेकु जि किंकरु ।	
मणिजासवणहेउ किं दिज्जइ	रुवि किं अरुवि परु हिज्जइ ।	
असिवरेण गयणयलु ण छिज्जइ	एण णाइं महु हासउ दिज्जइ ।	
णिम्मलु किं रैम्मइ पररापं	भयवं भयवहो होउ विवापं ।	15

घत्ता—जगि णत्थि अणुट्टइ तवचरणु पत्तवडियपलरसरसिउ ॥

विण्णाणखंभु पुरिसु वि भणइ बुद्धु भडारउ साहसिउ ॥ २५ ॥

दुवई—जइ तिल्लोक्खंभु विण्णाणु वि ता सुगयंतरंगए ॥

भंतिए भंति केम जाणिज्जइ साहिज्जइ जणग्गए ॥ १ ॥

खणि खणि अण्ण होइ जइ चेयण	ता को मुणइ लुमासीवेयण ।	
वासणाइ जइ णाणु पयासइ	तो वासण खणि किं णउ णासइ ।	
किं सा पंचहं खंचहं भिण्णी	जीवसिद्धि एमइ पडिवण्णी ।	5

25. १. T फणिंद. २. ST ण धरइ ण करइ; A णरवइ ण चवइ. ३. A णाणाजीवभेय. ४. ST भिज्जइ

५. ST रप्पइ.

26. १. S तयलोकु भंतु; T तेल्लोक्कभंति. २. T मुयइ. ३. ST लइ मइ.

तो सिरसिहरि चडावियहत्थै	मुणि वंदिउ भडेण परमत्थै ।	
विसरिसकुसुमबाणविणिवारा	भणु किं पेसणु करमि भडारा ।	
भणइ भडारउ धम्मु लईज्जइ	धम्मिं सग्गु मोक्खु पाविज्जइ ।	
धम्मिं होति मणुय हरि हलहर	चारणचक्रवट्टि विज्जाहर ।	
पायपोमपरिघुलिय पुरंदर	णहाणसलिलपक्खालियमंदर ।	10
धम्मिं होति जिणिंद णरिंद वि	धम्मं होति सुरिंद फणिंद वि ।	
ससहरवयणउ कुवलयणयणउ	माणियमयणउ उज्जलरयणउ ।	
सुहमुहपवणउ भूसियभवणउ	लीलागमणउ मुणिमणदमणउ ।	
मम्मणभणियउ कोट्टावणियउ	घणघणथणियउ णं सुरगणियउ ।	
धम्मं महिलउ होति घरत्थहं	परिहियविविहविहसणवत्थहं ।	15

घत्ता—धम्मिं रयणंसुजालंधरइं जालगवक्खमणोहरइं ॥

सुविचित्तचित्तभाभासुरइं सत्तपंचभोमइं घरइं ॥ २६ ॥

27

दुवई—धम्मिं होति जाणजंपाणइं धयधवलायवत्तयं ॥

चामर रह तुरंग मायंग महाभड बलाइं भत्तयं ॥ १ ॥

पावेण महिलाउ जायंति मइलाउ	जाराणुकूलाउ धणहरणलोलाउ ।	
पिंगुद्धवालाउ लंबिरकवोलाउ	दुट्ठोदुट्ठुलाउ दूहवउ दुट्ठाउ ।	
कुलमग्गभट्टाउ कट्टाउ धिट्टाउ	सुहणिट्ठणट्टाउ णोलग्गकंठाउ ।	5
णिम्मुक्कणेहाउ दुग्गंधेदेहाउ	खयकाललीलाउ कलहेक्कसीलाउ ।	
सोहाविहीणाउ दारिद्वरीणाउ	खरफरुसभासिणिउ गेहम्मि गेहिणिउ ।	
णिवसंति दुरिण चिरजम्मवरिण	तिलपिंडखंडेसु तुसविरसपिंडेसु ।	
डिंभाइं लग्गंति रोअंति मग्गंति	सीएण कंपंति उण्हेण तप्पंति ।	
वाएण भिज्जंति भुक्खाइ छिज्जंति	फट्टाइं णिवसणइं फुट्टाइं भायणइं ।	10

४. A रहज्जइ. ५. T पायपोम्म. ६. ST पाडिंद. ७. ST सत्तपंचभउमइं.

27. १. T दुट्ठोदु २. P omits सुहणिट्ठणट्टाउ णोलग्गकंठाउ; ST read पावेक्कणिट्टाउ for सुहणिट्ठणट्टाउ.

३. ST तुसरइय. ४. AST adds after this दुग्गय (A दोहग्ग) कुडुंबियइं णियकयविडंबियइं (A मयमह. बिडंबियइं); but A adds this in second hand.

णीरसइं भोयणइं णिब्बंभुपरियणइं बहुछिद्दजजरइं कुहियाइं कुडिहरइं ।
 संजणियतावेण जीवस्स पावेण दुक्खाइं पसरंति सुक्खाइं ण ह्वंति ।
 घत्ता—इय जाणिवि तुहुं करि धम्म तिह जिह जीववहणु ण वि संभवइ ॥
 तं णिसुणिवि मुणिवरिंदवयणु विहसिवि तल्लवरु पडिलवइ ॥ २७ ॥

28

दुवई—जिम्मइ मासखंडु पसु हम्मइ गम्मइ सग्गवासहो ॥
 एम भणंति देवगुरुवंभण णाणु ण जिणवरेसहो ॥ १ ॥
 तं णिसुणिवि मुणिणाहिं वुत्तउं इंदियवज्जिउ णाणु णिरुत्तउ ।
 जीवसहाउ ण अण्णायत्तउ साहणकमपडिस्सलणिं चत्तउ ।
 इंदियवुद्धिए काइं मि पिकखइ काइं मि पुणु जम्मि वि णो लक्खइ । 5
 सुत्तहो मत्तहो मुच्छावण्हो सुणहुल्लउ मुहि सवइ विसण्हो ।
 तिं तिहुवणु तियालु संगायउ भणु भणु वप्प केण विण्णायउ ।
 वासिं भारहु सयलु वि दिट्ठउ अण्होतु जिं किह लोयहं सिट्ठउ ।
 ठविय केम महिं संख पयासहि परमाणुअउं गणिउं परिहासहि ।
 गहगहणुल्लउ केम पमाणिउ गहणु केम गयणंगणि जाणिउ । 10
 घत्ता—सव्वण्हु अणिदिउ णाणमउ जो मयमूढु ण पत्तियइ ॥
 सो णिदिउ पंचिदियणिरउ वइतरणिहि पाणिउं पियइ ॥ २८ ॥

29

दुवई—किं केण वि जयम्मि ण कयाउ रियाउ भणंति णिहया ॥
 ण हि सयमेव थंति पंतिए णहे मिलिऊण सहया ॥ १ ॥
 अणुसंघट्टणि सहु विहावइ उट्ठिउ खणि णहयलि परिधावइ ।
 पसुहुं वि णिज्जीवहं वि अणक्खरु सो संभवइ महुर अवह वि खर ।
 णरसुहवण्णठाणसंकेयहो बुद्धिए णिज्जइ भासाभेयहो । 5
 वेउ सयंभु भणंतु ण लज्जइ दियवरवरकइकिंत्तणि पुज्जइ ।
 विग्गहवंतु देउ णउ अक्खइ पंडव सुरसुअ मुहियइ झंखइ ।

५. ST add after this पावेण दंडियइं धम्मेण छंडियइं ६. A लहति. ७. AP णरवरु.

28. १. T रिसिणाहें. २. A वि. ३. ST महमूढु.

29. १. AST कियाउ. २. ST कित्तिण; A कित्तणु.

अंसु ण लब्भइ णिच्चणिरंसहो वासुएउ किह किउ रिउ कंसहो ।
 हिंसइ सग्गु मोक्खु सुयसंगमु अण्णु पुराणु अण्णु वेयागमु ।
 अण्णु देउ अण्णु जि पुज्जिज्जइ किं वोलिज्जइ हो हो पुज्जइ । 10
 वयणु कुमारिलभट्टहो केरउ अइअसुद्धधम्महो विवरेरउ ।

घत्ता—गेयइं वेयइं मइं जाणियइं हरिणहो मरणु पयासियउ ॥

एकिं णिरु णिक्किउ समरउलु अवोरं दियँउलु पोसियउ ॥ २९ ॥

30

दुवई—मीण गिलंतु ण्हंतु जइ सुज्जइ ता कंको महामुणी ॥

वंदिज्जइ चरंतु णइतीरिं किं किज्जइ परो मुणी ॥ १ ॥

मिढी हरिणी वि गाइ वि तणयरि पाविं हई सुअरि वणयरि ।
 जिणवरदिट्ठिहिं सव्व समानी देवि भणिवि सुरवसहिसमानी ।
 वंदइ गाइ पुणु वि जो मारइ अण्णउ भवसंसारहो तारइ । 5
 गोसुअ जणिण धम्मि रइ माणइ सोयामाणिहिं मज्जु वक्खाणइ ।
 हो तहो विप्पहो तत्ति ण किज्जइ रिसहिं दिट्ठउ धम्मु लइज्जइ ।
 दुद्धरु होइ धम्मु अणगारउ लइ परिपालहि तुहुं सागारउ ।
 अणालियगिर जीवइ दय किज्जइ परधणु परकलत्तु वंचिज्जइ ।
 अणिसाभोयणु पमियपरिग्गहु मणि ण णिहिप्पइ लोहमहाग्गहु । 10
 महमइरामिसु पंचुवरिफलु णउ चक्खिज्जइ कयदुक्खियमलु ।
 किज्जइ दसदिसपच्चक्खाणु वि भोउवभोयभुत्तिसंखाणु वि ।
 मइरक्खणु अवरु वि सुदसवणु वि पाउंसकालि गमणवेरमणु वि ।
 जीवाहारु जीउ ण धरिज्जइ णियपहरणु ण वि कासु वि दिज्जइ ।

घत्ता—अट्ठमिदिणि अवरु चउदसिहिं छिर्वइ पुरंधि ण थण दुहाडि ॥ 15

उववासु एकठाणु वि करहि एकभत्तु जिम णिव्वियडि ॥ ३० ॥

31

दुवई—जिम पुण कंजिएण भुंजेज्जसु झाइयधम्मज्ञाणओ ॥

णिवसिज्जसु कहिं पि जिणमंदिरि जणियमलावसाणओ ॥ १ ॥

३. ST गेणुं वेणुं. ४. A दियबलु.

30. १. ST वंदइ पुणु वि गाय जो मारइ. २. AST गोसव. ३. ST लोहमहग्गहु. ४. A मयरक्खणु
 ५. ST पाउसि किं पि. ६. ST म छिर्व पुरंधिहिं थणदुहाडि.

पविव पविव तुहुं एम करिजसु	सैयलु वि कम्म सहिंसु चएजसु ।	
अहसु पत्तु दंसणि जाणेजसु	जीवेदयावरेण होएजसु ।	
मज्झिमु घरवइ उत्तमु संजमि	संठिउ समदमवयणियमुज्जमि ।	5
अभयाहारोसहसुअदाणइं *	तिविहपत्तविरइयसंमाणइं ।	
दिण्णइं गरुयपुण्णसंताणइं	पुरिसहं दिंति पंचकल्लणइं ।	
दंसणु णाणु चरिउ चित्तिजइ	किरियापुड्वि जिणु वंदिजइं ।	
रोसु तोसु हासु वि वंचिजइ	समभावण भाविं भाविजइ ।	
इय सौमोइउ भणिउ तियालइ	घरपडिमग्गइ अहव जिणालइ ।	10
अह पुणु उत्तरदिसि सवडंमुहु	ठाइवि होइवि सुरवइदिसिमुहु ।	
मणिण णियच्छिउ जिणवरसिरिमुहुं	कुगुरुकुदेवहं होवि परंमुहु ।	
अंतर्कालि सल्लेहणमरणि	अवसु मरेव्वउं णिज्जियकरणि ।	

घत्ता—तं णिसुणिवि पभणइ पवरभडु अम्हं कुलि मारणु पढमु ॥

तं वज्जिवि सैयलु परिग्गहिउ धम्महो केरउ कहिउ कमु ॥ ३१ ॥ 15

32

दुवई—इउं पुरवरतलारु पढ मारमि दारमि भारभंडणे ॥

महु वउ णत्थि देवमुणिपुंगवदुद्धरचोरमारणे ॥ १ ॥

पियरपियामहकमसंचारि	महु कुलधम्मु बद्धु णरमारि ।	
तं णउ मुअमि इयरु वउ लइयउ	तं णिसुणिवि रिसिणा पुणु कैहियउ ।	
एउ णियच्छहि अच्छइ णियडउ	जिह भवि भमियउ कुकुडजुयलउ ।	5
तिह भमिहीसि तुहुं मि संसारइ	लग्गउ कउलधम्मवित्थारइ ।	
भासइ णरवरु कहहि चिराणउं	तं चचूलजुयलस्स कहाणउं ।	
कहइ मुणीसरु मायापुत्तइं	इह होंताइं लच्छिसंजुत्तइं ।	

घत्ता—अच्चंतकुसंगिं जायएण जायउ भाउ सकक्खडउ ॥

मारिवि कुलदेविहि दिण्ण बलि एयहिं कित्तिमु कुकुडउ ॥ ३२ ॥ 10

31. १. S omits this line; T reads सैयलु वि धम्म सहिंस वरेजसु. २. ST omit this line.

३. A चरण. ४. AS अंतयालि.

32. १. ST खंडणे. २. ST लवियउं. ३. T तुहुं जि.

33

दुवई--णियतणु धणु विणासिवि भयतुंगइं मरिवि लुहावसं गइं ॥

संजायाइं बे वि सिहिसाणइं पुणु पसवइं भुयंगइं ॥ १ ॥

पुणु झससुंसुमारभवयत्तणु

पुणु अय आयय अयमहिसत्तणु ।

संपइ जायउ पुणु वि णवल्लउ

पेच्छसि रत्तसिहरमिहुणल्लउ ।

ता णरेण कुलधम्मु सुपप्पिणु

लइयउ सावयवउ पणवेप्पिणु ।

अम्हइं बिण्णि वि णिसुणियजम्मइं

मणि संगहियजीवदयधम्मइं ।

अइअउव्वलार्हि संतुट्ठइं

लवियइं सुमहुरु कयउकंठइं ।

णवरम्हारउ सहु सुणंति

धणुगुण मग्गणि झत्ति कुणंति ।

भाणिय देवि जसवइणरणार्हि

मेहुणसण्णाहणुच्छार्हि ।

पेच्छि देवि धणुवेउ अभग्गउ

सहवेहु दक्खालभि लग्गउ ।

घत्ता--इय भासिवि राएं मुक्कु सरु वम्मइं तेण विलुक्काइं ॥

अम्हइं बिण्णि वि पंजरि ठियइं दहविहपाणिं मुक्काइं ॥ ३३ ॥

34

दुवई--बे वि मुयाइं कंडणिब्भिण्णइं सोणियकिमिणिहेलणे ॥

सुयपणइणिहि गग्भि संकमियइं कुसुमावलिहिं तक्खणे ॥ १ ॥

पावपरंपराइ णिरु वणियउ

हउं सुण्दहे णियपुत्ति जणियउ ।

जा चिरु होंती माय महारी

परमेसरि चंदमइ भडारी ।

सा णियकर्मि भवबलि दिण्णी

णत्तिहे णत्तिण उप्पणी ।

गग्भट्टिउ जुयलुल्लउ जइयहु

मासाहारु ण रुच्चइ तइयहु ।

णवमासहि सुव कुमारहं जुवलउं

संजणियउं सुहजोइं विमलउं ।

जणणिण हउं जणणेण वियक्किउ

अभयरुइ त्ति कुमार पकोक्किउ ।

अभयमइ त्ति सत्ति णं कामहो

सस परिवहइ कंति व सोमहो ।

बिण्णि वि सयलकलाणिउणियरइं

जावइं णययाणंदियपियरइं ।

महु जुयरायपट्ट वज्जेसइ

लोउ सभोउ भवणि भुंजेसइ ।

कज्जइं तेण मयामिसासिद्धिहिं

जसवइपहु पत्थिउ पारद्धिहिं ।

33. १. T कयउक्किहहि.

34. १. ST अइ. २. ST omit this line; AP add this in second hand. ३. ST धम्महो; A वम्महो

अग्गइ काहलसदहो मिलियइं पंचसयइं सोणइयहुं चलियइं ।
 उववणि तरुवरतलि आसीणउ उग्गतत्तवतावै खीणउ ।
 ता दिट्ठउ कुसुमसरवियारउ झाणारुहु सुदत्तु भडारउ । 15

घत्ता—पहु चितइ सिद्धिविणासयरु अवसवणउ कहिं आइयउ ॥
 खलु खवणउ तइयइ बाहिरउ कहिं महु जाइ अघाइयउ ॥ ३४ ॥

35

दुवई—इय संचितिऊण मणि पिसुणि णियसुणहउ विसुक्कओ ॥
 णं चलु विज्जुपुंजु मणपवणजवालउ णं पिसक्कओ ॥ १ ॥
 अणुमग्गे तहो पविणहरंकुर सोणइएहिं मुक्क णियकुक्कुर ।
 भसणहं ताहं सुतिकखइं डसणइं णं रायहो मयमारणवसणइं ।
 वंकइं उज्जुयत्तु णइ पत्तइं पुंछइं णं पाविट्ठहो चित्तइं ।
 जीहइं णं हिंसातरुपल्लव णक्खइं णं तहो अंकुर णव णव ।
 सुणहा पावपुंजइं व दिट्ठा पारद्धिय ताइं वि णिकिट्ठा ।
 मयउलु दंति डसिउ वणि दिट्ठउ खद्धउ जेहिं सुणहं उच्चिट्ठउ ।
 ते जि सुणहं दारियसारंगइं अण्णु किं सुणहहं मत्थइं सिंगइं ।
 ते गुणवंत हसंति भसंति व आक्कोसंति खंति मारंति व । 10
 मुणिवरतवसामरिथ णिरत्था संयल वि थियै ओणावियमत्था ।
 सुणहं णिएवि लेवि सइं असिवरु राउ पधायउ मारहुं मुणिवरु ।
 तां तहिं केण वणिदिं बोह्लिउ वणि कल्लाणमित्तु अंतरि ठिउ ।

घत्ता—विरएण्णिणु अंजलि वणिवरेण बोह्लिउ राउ जणत्तिहरु ॥
 जइ मारहि जइवर वयसहिय तो किं करइ विंझि समरु ॥ ३५ ॥ 15

36

दुवई—पणवसु पबणवरुणवइसवणथुयं विसए विरत्तयं ॥
 ता पडिच्चवइ णिवइ कोवारुणु पइं किं हो पउत्तयं ॥ १ ॥

35. १. T हरिणमंसु दंतावालिदिट्ठउ. २. ST सयल वि संठिय पणवियमत्था. ३. A ठिय. ४. ST ता तहिं अवसरि णं दइवै णिउ.

णग्गु अमंगलु कैज्जविणासणु
तहो पयजुइ पडंतु किं वुच्चमि
ता पभणइ वणि गंजोल्लियमणु
णग्गउ खेत्तवालु कत्तियकरु
लोहवलयकयकमखरवाहणि
भीमइं भक्खियमाणुसमासइं
हत्थगहियकंकालकवालइं
संतु जीवदयवंतु सुणिम्मलु
णग्गउ परमहंसु परु झायइ
तिरय्येणभूसणु णग्गउ भावइ
अण्णु वि पइं अण्हाणु किं दूसिउ
जणि अण्हाणु पउत्तु कुणंतइं
अयमलसलिलिं सुज्झइ कप्पडु
माणुसु पुणु थिप्पइ वसचोप्पडु
धुप्पइ धुप्पइ पुणु वि अचोक्खउ
फुल्लमालचंदणधोयंबरु

जो मइं पावेव्वउ जमसासणु ।
वेयवंत दियवरहं ण रुच्चमि ।
णग्गउ रुहु धूलिधूसरतणु ।
रण्णणंतपयगयणेउरसरु ।
णग्गी जोइणि मुंडपसाहणि ।
एयइं सव्वइं पिउवणवासइं ।
मंगलाइं किह भणु हिंसालइं ।
साहु भडारउ केम अमंगलु ।
णग्गउ णग्गएहिं जणु जायइ ।
तो वि मुणिंदह दोल्ले जणु लावइ ।
णिंदावयणु मुणिंदहो भासिउ ।
किं पुणु रिसिहिं महातववंतइं ।
देहुं किं सुज्झइ दुक्कियलंपडु ।
लोहमोहमायामयसुक्कडु ।
णयरोप्पसरपसरसारिक्खउ ।
तांम सुद्धु जा दूरि कलेवरु ।

5

10

15

घत्ता—सव्वंगु पवित्तु महारिसिहिं पत्थिव दुद्धरतवधरहं ॥

लालारसु लग्गउ तणुमलु वि हरइ रोउ रोयाउरहं ॥ ३६ ॥

20

37

दुवई—जाणंउं पायधूलिलेवेण वि णासइ पावपंकओ ॥

ताणमिसीणमीसं पणविज्जसु छडुइ मच्छरोकओ ॥ १ ॥

आमोसहि पविउल्लखेलोसहि
अहयमहाणसद्धि सव्वोसहि
एयहो हरि करि पुणु वि ण लग्गहिं

जल्लोसहि विप्पोसहि णंसहि ।
एयहो णउ डसंति अंगइं अहि ।
भिल्लपुलिंदइं णहलवलग्गहिं ।

5

36. १. ST कज्जपणासणु. २. A णग्गउ. ३. ST सव्व. ४. ST तिणयणु णियतणु णग्गउ भावइ. ५. ST दोसइं लावइ. ६. AP अयमयसलिलिं. ७. ST omit this line. ८. ST omit this line. ९. ST ता सुधुंय

37. १. ST जाणं; A ज्जिणम. २. सीसु. ३. AST पविमल. ४. ST omit this line.

जइ रूसइ तो पाडइ सकु वि	मेरैमहीहर सउं तिल्लोक्कु वि ।	
तेयरिद्धिपज्जलियसिद्धिहि	को किर थक्कइ एयहो दिद्धिहि ।	
पर किं बलि वि खलाहं ण रूसइ	पणवंतहं सज्जणहं ण तूसइ ।	
अइमज्झत्थु महत्थु महाजसुं	जीवियमरणि मुणिदु समंजसु ।	
एयहो अरिणरसत्थाहिं धित्तइं	लैइ ताइं जि हवंति सयवत्तइं ।	10
इय एवडुहो कित्तिणिहाणहो	करु पसरिज्जइ केम किवाणहो ।	
सीहहं सहूलह वि अणुगगहु	जेण कियउ जिणधम्मपरिग्गहु ।	
अहवा हउं किर बोल्लमि सावउ	पेक्खु पेक्खु मुणिवरहं पहावउ ।	
परमारणसीलइं लल्लक्कइं	सुणहइं पंचसयइं पइं मुक्कइं ।	
मुणिवरपायमूलि लोलंतइं	चललंगूलदंडचालंतइं ।	15
पेक्खु पेक्खु मा मुज्झहि मोहिं	वंदहि साहु म डज्झहि कोहिं ।	

घत्ता—णामेण सुदत्तु गुणोहणिहि होंतउ राउ कलिंगवइ ॥

कुसुमालघरहु बंधहुं वदहु णिविण्णउ इहु हुवउ जइ ॥ ३७ ॥

38

दुवई—णियणायाहियारिथियदियवरणियरेण विणिउत्तओ ॥

तक्करपाणिपायसिरस्त्रंडणदंडणविहिविरत्तओ ॥ १ ॥

जीवधणासपास छंडेविणुं	जुण्णउ तणु व सरज्जु मुशविणु ।	
थिउ गिरिगहणे महरिसि होइवि	भो भो जसवइ रोसु पमाइवि ।	
पणवहि चरणजुयलु एयहो तुहुं	कर मउलेवि अवलोहि रिसिमुहुं ।	5
इय कल्लाणमित्तवयणुलउं	लग्गउ कण्णि णरिंदहो भल्लउं ।	
वंदिउ गुरु गुरुआरप भत्तिप	तेण वि सव्वजीवकयमित्तिप ।	
धम्मलाहु होउ त्ति पघोसिउ	वच्छल्लें महरक्ककर भासिउ ।	
चित्तइ णियहियवइ णिवसुंदरु	अचलत्तेण धीरु गिरि मंदरु ।	
गंभीरत्तणेण रयणायरु	तेणं सइं पुणु चंदु दिवायरु ।	10
णं पुंजेप्पिणु ठवियउ संजसु	मुणिवेसिं णं संठिउ उवसमु ।	
णं माहप्पसारु तवसत्तिहि	आवासउ णं जिणवरभत्तिहि ।	

५. ST चंदक्कु वि सकु वि तेलुक्कु वि. ६. ST लग्गइं ताहुं. ७. ST पक्कखु. ८. ST लोलंतइं. ९. ST बंधणवहेण.

38. १. A पउत्तउ. २. ST छिंदेप्पिणु.

णं दयवेल्लिहि कीलागिरिवह खंतिपवैरपोमिणियहि सरवर ।
एहउ साहु साहु सुइ संतउ मइ पावि मारण आढत्तउ ।

घत्ता—पच्छित्तु करमि दुव्विलसियहो सीसु लुणेप्पिणु अप्पणउ ॥ 15
णिवचित्तु मुणिवि मुणीसरिण जंपिउ सवणसुहावणउ ॥ ३८ ॥

39

दुवई—हो हो हो णरिं किं चित्तु अलिउलणीलकेसयं ॥

णिंदणगरुहणाइ तमु णासइ मा खंडहि ससीसयं ॥ १ ॥

ता पहु चवइ गुञ्जु किह लक्खिउ	मणु वि महारउ मुणिणा अक्खिउ ।	
हियउ मुणेवउं किं किर साहसु	भणइ सेट्ठि परमेट्ठि समंजसु ।	
लोयालोयउ जं जि समिच्छहि	तं जि कहइ जइवर परिपुच्छहि ।	5
पुणरवि जगरवि रिसिहि णवेप्पिणु	भणइ राउ महु ताउ मरेप्पिणु ।	
जसहरु सहं जणणिण कहिं जायउ	कहिं जसोहु जसपसरियछायउ ।	
कहइ सूरि सियपलिउ णियच्छिवि	तुह जणणहो कुललच्छि पर्यच्छिवि ।	
दुद्धरु तउ चरेवि भयमयवहु	गउ सुरहरहो जसोहु पियामहु ।	
परियणसयणाणंदजणेरइ	पट्टबंभि णरणाह तुहारइ ।	10
कुलदेवयहि पुरउ परिवायवि	पिट्ठि विरइउ कुक्कुडु घाईवि ।	
पैत्थु जि णिहयइं मायापुत्तइं	गरलवसेण पत्त पंचत्तइं ।	
णरैवइ संजायइं सिहिसाणइं	एम जीउ पावहं फलु माणइ ।	
सुणहिं मारिउ जो मोरुल्लउ	सो परियाणसु तुहं जणणुल्लउ ।	
पइं फलहै हउ फोडियमच्छउ	सारमेउ जो महिपल्लहत्थउ ।	15
सो अज्जियहि जीउ जाणेज्जसु	एवहिं जीवहं जीविउ दिज्जसु ।	

घत्ता—पुणु विसहरारि तुह पिउ हुवउ तहो मायारि भीयरु उरउ ॥

सो सद्धउ तेण भयंकरिण सइं पुणु मरिवि तरच्छहउ ॥ ३९ ॥

३. Sदयदेविहि. ४. ST परम. ५. ST सत्तउ.

39. १. ST जइ तुहुं. २. A समप्पिवि. ३. A तवेवि. ४. T णयणाणंद. ५. S मारिवि. ६. ST पुत्थुज्जेणिहिं मायापुत्तइं. ७. ST भवसायरि जायइं. ८. ST भीसणु.

दुवई—मुउ सिण्पाणईहि उप्पणउ खुज्जयणारिमारओ ॥

पई मारियउ जणणजणणी चिरु दुद्धरु सुंसुमारओ ॥ १ ॥

वेणं भासिउ भट्टमरट्टह	रोहियमच्छु दिण्णु जो भट्टह ।	
तेरउ बप्पु पई जि संताविउ	सो कयपहरइं विहरइं पाविउ ।	
तहिं जणणीयहि अइयहि अइयउ	हवउ पावपडलसंछइयउ ।	5
जूहिदे सिंगगे भिण्णउ	मायारूढउ तहिं जि विवण्णउ ।	
जीविउ बीयबिंदुसंमाइउ	अप्पउ अप्पण मई जाइउ ।	
थिउ पुणु गम्भंतरि णियमायहि	भंगुरअंगो णामियकायहिं ।	
मयमारणि पारद्धिण सिद्धी	सा छाली पत्थिव पई विद्धी ।	
पियमायरिहि पोट्टु दोहाविउ	छावउ जीवमाणु अवलोइउ ।	10
अप्पिउ घणियहिं तेण जि रक्खिउ	घरु आणिउं ता आमिसु भक्खिउ ।	
पाउ लुणेवि दिण्णु णियमायहि	पुब्बजम्मि तहु तणियहि जायहि ।	
अयहयमय णिव तुह बाणगिं	कय पुणरवि सयत्त कयमगिं ।	
हई सिंधुमहिसु खयरूवउ	जाणसि किण तुरयजमदूअउ ।	
उअरहो हेट्ठि अगिं जालाविउ	जो पई विरसमाणु पउलाविउ ।	15
सो सेरिहु अजी य तुहारी	अवसु ण चुक्कइ वाय महारी ।	
घत्ता—सो छेलउ महिसु वि संभरहि अवरपक्खि जहिं जइयहुं ॥		
पई खंडिवि खंडिवि वंभणइं छाउ दिण्णु तहिं तइयहुं ॥ ४० ॥		

दुवई—वे वि सुयाईं ताईं पुण कुक्कुडपक्खिभवे पवण्णइं ॥

तित्थु सुणेवि सहु णंदणवणि पई बाणेण भिण्णइं ॥ १ ॥

तहिं मरेवि णिरुवमलायणइं	कुसुमावलिहिं गग्गि उप्पण्णइं ।	
एम बप्प विसहियसंसारइं	अभयमईअभयरुइकुमारइं ।	
एवहिं पुण्णबंधपारंभइं	घरि अच्छंति तुज्झ पियडिंभइं	5

40. १. ST जूहेलें.

41. १. AST मयाइं. २. ST बद्धपुण्णपारंभइं.

अमयमइ त्ति देवि तुह मायारि	मंसासिणि णं भीमणिसायरि ।
गुणगणवंत महारिसि णिंदिवि	कुगुरुकुदेवहं चरणइ वंदिवि ।
मीण जियंत जियंत तलेप्पिणु	भोयणवेलइ विप्पहं देप्पिणु ।
सइ भक्खेप्पिणु मज्झु पिप्पिणु	जारहो कारणि पइ मारेप्पिणु ।
णिट्ठियट्ठि कुट्ठेण कुट्ठेप्पिणु	अइरउद्वस्साणेण मरेप्पिणु ।
पंचमणरयहो गय सा पाविणि	जंसहररायहो केरी भाविणि ।

IC

यत्ता—दुक्कर्मि णिवडइ णरयविले सुदिउ कहिउ अवगणइ ॥
सिरिपुष्पयंतजिणवरवयणु मूढु लोउ णायणइ ॥ ४१ ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणणकणाहरणे महाकइपुष्पयंतविरहए महाकव्वे
जसहरमणुयजम्मलाहो णाम तइउ परिच्छेउ समत्तो ॥ ३ ॥

IV

*अश्रान्तदानपरितोषितबन्दिवृन्दो
दारिद्र्यैर्द्रक्करिकुंभविभेददक्षः ।
श्रीपुष्पदन्तकविकाव्यरसाभित्सः
श्रीमान्सदा जगति नन्दतु नन्ननामा ॥ १ ॥

I

णिसुणिवि दुहभरियइं महु भवचरियइं जसवइणिवहियउं चलिउ ॥
सोयरसु पधाइउ अंगि ण माइउ णयणंसुय धारहिं गलिउ ॥ ध्रुवकम् ॥

दुवई—मुणिकमकमलजुयले लोलंतु पघोसइ एमं पत्थिओ ॥

हा हा मज्झु जणणु जिं मारिउ सो भुवणयलि णिक्किओ ॥ १ ॥

अज्जु जि संघारमि पाववेरि	लइ ण करमि केण वि समउ खेरि ।	5
पिट्ठमपं कुक्कुडपं हएण	मणि मणिणएण दुरिपं कएण ।	
गुरुयणु पत्तउ एवहु दुक्खु	डज्झउ माणुसु जं चम्मचक्खु ।	
बण्णु वि णो लक्खिउ जम्मि जम्मि	मइं माराविउ णिद्धम्मि धम्मि ।	
जहिं रिसि गुरु जिणवरु णत्थि देउ	तहिं कुलि कहिं जीवइ दयविवेउ ।	
वाहिज्जइ जहिं वणयरहं सत्थु	तहिं वंधु वि हम्मइ परभवत्थु ।	10
जीवउलइं मइं णिहयाइं जाइं	को लक्खिअवि सक्कइ ताइं ताइं ।	
जइचरणकमलसंणिहियचित्त	भो भो वणिवर कल्लाणमित्त ।	

घत्ता—सीद्दासणलत्तइं वरवाइत्तइं विविहइं चिंधइं चामरइं ॥

रहवर मायंगइं पवैरतुरंगइं भडसेणणइं पंजलियरइं ॥ १ ॥

2

दुवई—लइ पत्थिवसुहाइं अणुहुंजउ अभयरई कुमारओ ॥

महु दिक्खइ पसाउ पडिवज्जउ भणु भणु तुहुं भडारओ ॥ १ ॥

*This verse is omitted in S and T.

1. १. ST णिवहियवउं; A णिवहु हियउं. २. ST एव. ३. A चम्मरुक्खु. ४. ST एत्थु ताइं. ५. S चवल.

६. S सिद्दासण.

कयलीकंदलसोमालगत	अभयमइ कुमरि सिसुहरिणेत ।	
दिज्जउ कुमरहो रिउमहणासु	अहिछत्ताहिवणिवणंदणासु ।	
तहिं अवसरि पुरवरि वत्त पत्त	लइ चारुसिद्धपारद्विजत्त ।	5
संजायउ रायहो घम्मलाहु	तवचरणहो उवरि णिबद्ध गाहु ।	
ता तहिं चवंति रायाणियाउ	घणरम्मपेम्मसवियाणियाउ ।	
क वि भणइ हुवउ पियतिलयछेउ	हो हो किं किज्जइ पत्तछेउ ।	
वहु का वि भणइ किं लिहहि चित्तु	पहु वट्टइ कामविरत्तचित्तु ।	
क वि पभणइ किं मुहंमंडणेण	राणउ रंजित तवमंडणेण ।	10
वहु क वि पमेल्लइ पडहु पवह	विहिवायंइ लगउ किं पि अवरु ।	
क वि कुरुल करंति करंति थक्क	लइ केसुप्पाडणविहिपदुक्क ।	
पिय का वि लिहंति कवोलवत्तु	हां दइव काइं विवरीउ पत्तु ।	
उट्ठिय क वि मुत्तियगुणि ण दिंति	मुणिगुणणिच्चलु णियमणु ठवंति ।	
क वि पभणइ म करहि तिकख णक्ख	वरइत्तु लएसइ परमदिकख ।	15
क वि णिसुणिवि पियवत्ताइं खीण	देहइ कंचुलिय ण थाइ लीण ।	
इय णाणाविह जंपंतियाउ	पियविरहभएं कंणंतियाउ ।	
पासेयबिंदुधिप्पंतियाउ	कंचीकलाव गुप्पंतियाउ ।	
णयणंजणंसुमलमइलियाउ	मणिरसणाकिंकिणिमुहलियाउ ।	
णेउरझंकारमणोहराउ	उणयघणपीणपयोहराउ ।	20
संयल वि अंतेउरराणियाउ	जहिं राउ तहिं जि संपत्तियाउ ।	

घत्ता—णहपहजियसुमणिहिं चलहारमाणिहिं पत्थिउ रमाणिहिं पत्थियउ ॥
विणडिउ तवचरणिं सिरिसुहहराणिं तुहुं दइवेण गलच्छियउ ॥ २ ॥

3

दुवई—अम्हइं अच्छराउ तुहुं सुरवइ सउहलयं विमाणयं ॥

पियसंजोग्गु सग्गु किं सग्गासिरे कुडिलं विसाणयं ॥ ६ ॥

2. १. ST पत्त वत्त. २. ST पभणइ हुउ. ३. ST मुहुं मंडणेण. ४. A विहिवायणलगउ. ५. ST हा दइ-
यउ किं पि विवरीउ पत्तु. ६. ST झीण. ७. ST णयणंजण मुहुं मइलितियाउ. ८. S and T omit this line
and A and P give it in second hand.

3. १. S सउहयलं.

रइकरणांलिगणधुत्तियाउ	पणयंगणाउ कुलउत्तियाउ ।	
इय पलवंतियउ ण इच्छियाउ	सयलउ रापं णिळमच्छियाउ ।	
ढक्कारवच्चैल्लियगयवरेहिं	हिलिहिलिसरेहिं सियहयवरेहिं ।	5
णग्गुगल्लगकरकिंकरेहिं	मणचडुलतुरयणियरहवरेहिं ।	
परिवाइयाइं सहयरणेहिं	विज्जिजंतइं चलचामरेहिं ।	
सिगिरिणंदणवणसइलाइं	छत्तावल्लिछाइयणहयलाइं ।	
मरुवल्लियघुल्लियणाणाधयाइं	सिवियाज्जाणिं बिण्णि वि गयाइं ।	
घत्ता—परिसेसियपरियरु सधेउ सचामरु चरियरयणउड्डियसयरु ॥		10
खोणियलि णिविट्ठउ दोहिं मि विट्ठउ णरवइ णं सामण्णु णइ ॥ ३ ॥		

4

दुवई—ता मुणिवयणकमलणिगंतमुणीकहियं कहंतरं ॥

अमहइं तंमि बिहिं मि तं चिय पुणुं संभरियं भवंतरं ॥ १ ॥

भउ सुमरिवि बिण्णि वि मुच्छियाइं	लंजियहिं करेण पडिच्छियाइं ।	
अहिसिचियाइं सीयलजलेण	आसासियाइं चमराणिलेण ।	
परियाणियचिरभववेयणाइं	कह कह व समागयचेयणाइं ।	5
मलिणाणणाइं पुणु उट्ठियाइं	मुणिचरणजुयलि णिवडिवि ठियाइं ।	
अमहइं मुच्छइं मुच्छिय मयच्छि	कुसुमावलि णिवकुलकमललच्छि ।	
कोमलकरयलताडियउरेण	सोइय सयलि अंतेउरेण ।	
वहु का वि भणइ सोहगयत्ति	उट्ठु माइ मणहरणसत्ति ।	
कं वि भणइ ण तुंडु वि महु णिपइ	पइं भणिउ णाहु तंबोलु लेइ ।	10
उट्ठु देवि करि साहिलासु	देबाविउ पइं महु पढाणवासु ।	
दूहवियहि पइं महु किउ विलासु	भूसिवि पेसिय णियपइणवासु ।	
वहु का वि भणइ तुहुं ण वि सवात्ति	महु माय वहिणि अविहिण्णामिस्ति ।	
उट्ठु भइ कारुण्णु करहि	वउ लितु जंतु णियकंतु धरहि ।	

२. T पणियंगणाउ. ३. ST चल्लियसुगयवरेहिं. ४. ST अमहइं विल्लियणाणाधयाइं. ५. ST अणउध अचामरु.

४. १. ST पुणो भरियं, २. ST उट्ठु देवि लहु बोलु देइ. ३. ST हउं पियहु पासु.

घत्ता—ता मुच्छ पमाइवि अम्हइं जोइवि पयलियवाहजलोछियइं ॥ 15
महएविहि नेत्तइं ओसासित्तइं णं सयवत्तइं डोल्लियइं ॥ ४ ॥

5

दुवई—चितइ रायघरिणि मुणिवरवाणीरवदिण्णकण्णइं ॥
एयइं डिंभयाइं किं बिणिण वि मुच्छावंसणिं सण्णइं ॥ १ ॥

इय चितिवि करसंजोइयाइं	आलिगिवि अंऊइं ढोइयाइं ।	
मुणिणा णाणेण णियच्छियाइं	तुम्हइं किं जाणह पुच्छियाइं ।	
अम्हइं संभरहं पउत्तु सव्वु	किं रिसि भासंति असच्चु कव्वु ।	5
अम्हइं चंदमइजसोहराइं	अम्हइं सिहिसाणइं थलयराइं ।	
अम्हइं पणयरिउउरयराइं	अम्हइं सिप्पाणइजलयराइं ।	
अम्हइं अयअयमहिसय हुआइं	अम्हइं खगाइं पुणु तुह सुआइं ।	
जाणहि णियणंदणणेहतण्हि	इहजम्ममाइ चिरजम्मसुणिह ।	
ता मुणिपयपोमइं पुंजियाइं	अम्हइं राएण विसाजियाइं ।	10
णियणयरि गंपि मंदिरि ठियाइं	कल्लाणमित्तु जंपइ पियाइं ।	
तुह पिउ पावैज्जइ चलिउ अज्जु	तुहं परिपालहि सत्तंगु रज्जु ।	
तं णिसुणिवि मइं पइसंतएण	बोल्लिउ भवभयसमसंतएण ।	
घत्ता—सो महु पियणंदणु णयणाणंदणु इह मइं रज्जि परिट्ठविउ ॥		
एवहिं तहो तणुहु इउं ससइरमुहु दइवि चंगउ सिक्खविउ ॥ १५ ॥		

6

दुवई—एवहिं दिण्णलइयपरिवाडि वि लंघिवि जामि गिरिगुहं ॥
फेडमि मोहजालघणमुहवहु पेच्छमि तवसिरीमुहं ॥ ६ ॥

ता भणइ सेट्ठि गुणगणविसालु	तवचरणहो अज्ज वि कवणु कालु ।	
पहिलारीपहुणा अज्जणिज्ज	जाणेव्वी सयल वियारविज्ज ।	
जिणंघम्माहम्माविही तइ त्ति	वत्तवि अत्थाणत्थइं पवित्ति ।	5

5. १. S पसंगयं. २. S अंके पढोइयाइं. ३. ST अम्हहिं पउत्त संभरहु सव्वु. ४. S अम्हइं अयमहिसय भवि हुआइं. ५. AST पव्वज्जहे. ६. S भवभवसमसंतएण.

6. १. S जाणेवि. २. AST जण.

जहिं भुवणि नयाणय ववहरंति सा दंडणीइ णिच्छउ कहंति ।
 एयहिं वट्टइ जगि जोउं खेमु संपजइ सुहुं धम्मत्थकामु ।
 अणवरयभुत्तसंपुण्णभोउ पयासु परिट्ठिउ जियई लोउ ।
 राणउ परिरक्खइ दंडधारिं विज्जउ चत्तारि वि दोसहारि ।
 विणु रापं जगि को करइ दंडु विणु दंडिं जणवउ कम्मचंडु । 10
 परधणपररमणीहरणकामु लइ ण सहइ धम्महो तणउं णामु ।
 घत्ता—खमदमसमसच्चिं विउलसउच्चिं जीवदयाइ पवाणियउ ॥
 सामण्णपवण्णहं लिंगिहिं वण्णहं एहु धम्भु मइं मणियउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—इंदफणिदचंदविज्जाहरणरवरणियरपुज्जिओ ॥

णासइ एहु धम्भु जिणभासिउ णिवसासणविवज्जिओ ॥ १ ॥

ता मइं मायाभावेण रज्जु इच्छिउ पिउणा दिण्णउ अवज्जु ।
 अहिसेयकलसजलखलहलंतु णाणारयणावलिपज्जलंतु ।
 देवंगवत्थपल्लवललंतु कामिणिकरचामरचलवलंतु । 5
 पारद्धिय उप्परि परिघुलंतु उत्तुंग मत्त गय गुलुगुलंतु ।
 मणंगमण तुरंगम हिलिहिलंतु मयणाहिगंध मंहमहमहंतु ।
 कप्पूरफार महुयर मिलंतु भूवालविंदसेविउं महंतु ।
 महु रज्जु देवि जसवइणरिंदु गउ मइं पुच्छिवि वंदिवि मुणिंदु ।
 लइयउ तंतु सहुं अंतउरेण उत्तारियकंकणणेउरेण । 10
 णं किण्हणीललेसाविसेस उप्पाडिवि घल्लिय कुडिलकेस ।
 णिवसणु वसणु वि परिहरिउ तुरिउ रिसिंउ संखेवि तेण घरिउ ।
 आढत्तु घोह तवचरणु तेण जम्माहिउ वाहिउ जंति जेण ।
 मिल्लेवणु विणिण वि रायदोस^{१३} माणावमाण हयकम्मपास ।
 णिवसइ णिज्जणि काणणि मसाणि आहार लेइ मासावसाणि । 15

३. ST नयाणयवह वहति. ४. ST जोयखेमु. ५. A सहं धम्मत्थु कामु ST सुहुं धम्मत्थु केमु. ६. S जियउ.

७. AP पसण्णहं. ८. T माणियउ.

7. १. ST खलहलंतु. २. ST चलचलंतु. ३. ST पालद्धिय. ४. ST अंबर. ५. ST करि. ६. ST ललियंग.

७. ST निरु. ८. AP omit कप्पूरफारमहुयरमिलंतु. ९. ST वंदिउ. १०. A वउ. ११. ST जं परिहरिउ. १२. ST पडिवण्णउ तेण रिसिंदचरिउ. १३. ST जम्माइउ. १४. AT रोस.

घत्ता—घरमोहु णिसुंभिवि णियमणु हंभिवि तिण्णि वि सल्लइं खंडियं ॥
गुणमणिचिंचइयइं पिउपावइयइं पंच वि करणइं दंडियं ॥ ७ ॥

8

दुवई—ताम मए सवत्तितणयस्स णयस्स तणु व्व छड्डियं ॥
दिण्णं जसहरस्स मणिभवणधणं कुललंछिमंडियं ॥ १ ॥

उर्वसमहरि णं परलोयकुहिणि	हउं एह अवर महु लहुयवहिणि ।	
विण्णि वि तं चिय उववणु गयाइं	णवियाइं साहुणाहो पयाइं ।	
संसारमहाभरभगणहिं	दोहिं मि गुरुचरणालगणहिं ।	5
भासिउ मुणि दिक्खइ करि पसाउ	ता भणइ भडारउ वीयराउ ।	
तुम्हइं बालइं अइपत्तलाइं	अज्ज वि कुवलयदलकोमलाइं ।	
तवचरणकरण परिणइदुसज्झ	पुत्तय डिंभहं णउ होइ गिज्झ ।	
होएप्पिणु उत्तमसावयाइं	गुरुसेवए सिक्खइं सुयपयाइं ।	
परसमयारूढसदत्तणाइं	लोइयवेइयमूढत्तणाइं ।	10
आसंक कंख वि दिगिंछ हणहं	मा कहिं मि कुलिंगिचरित्तु थुणहं ।	
मा कुणहं दिहीहर दर्पसंगु	रक्खहं सुविसुद्धउ अंतरंगु ।	
सासणहं पहावण करिवि णवहं	पहभट्टु वि पुणु जिणमग्गि ठवहं ।	
आउंचहं उट्ठिउ हरिसु रोसु	मा गिणहं सभ्माइट्ठिदोसु ।	
चउभेयहु संघहो करहु पणउ	वच्छल्लु सुंविज्जावच्चु विणउ ।	15
सुविसुद्धउ दंसणु एम होइ	इयरहो पुणु सहसा खयहु जाइ ।	

घत्ता—परणयविज्जंसणु सम्मइंसणु पहिलारउ थिर्ह मणि धरहं ॥
पुणु बज्झम्भंतरु भवसयमलहरु पच्छइ दुद्धरु तउ धरहं ॥ ८ ॥

9

दुवई—सेणिण विणु णिवेण सुरहुब्भियधयवडपंडुरारुणं ॥
विणु सहंसणेण किं कीरइ तवचरणं पि दारुणं ॥ १ ॥

8. १. AP जसहणस्स. २. उवसमसुहरिणि. ३. ST उववणु पुणु गयाइं. ४. S अइबालइं पत्तलाइं. ५. S सुयवयाइं. ६. ST तप्पसंगु. ७. AT सुवेयावच्चु. ८. ST णियमणि. ९. भवकलिलम.

मा जंपह कासु वि कण्णसल्लु	वउ धरह अहिंसा सच्चमूलु ।	
सामाइउ पालह जीवमिति	गुरुदेवमत्ति उज्झायमत्ति ।	
सिद्धहं साहुहु वंदणविहत्ति	पोसहु सभेरभत्तहो णिवित्ति ।	5
सच्चित्तु म धंसह आउ वाउ	महि जलणु वि अवरु वि हरियकाउ ।	
वज्जह णिसिभोयणु जइ वि मिट्ठु	मा जोयह थी पुरिसु वि सुइट्ठु ।	
दिट्ठु धरह विसुद्धउ वंभचेरु	आरंभु चयहं कयलोयवेरु ।	
अब्भसह पयत्ति अंगंचाउ	मिच्छह अणु मणु मण्णेवि पाउ ।	
णिदिट्ठु मुणवि भिक्खाइ अडह	पयारहमइ गुणठाणि चडइ ।	10
बंधणु ताडणु मारणु वि गणिउं	पहरणधारणु वि रउहु भणिउं ।	
तणुकट्ठाणिट्ठहं जायएण	उप्पज्जइ इट्ठविओयणेण ।	
रुइट्ठु मुणविणु दुरियठाणु	णिच्चं चिय ज्ञायह धम्मज्ञाणु ।	
घत्ता—हयवम्महतावउ कयसमभावउ दुग्गइगमणिवारणिउ ॥		

चित्तह अणुवेक्खउ जगगुरुसिक्खउ धम्मरुक्खजलसारणिउ ॥ ९ ॥ 15

10

दुवई—तणुलायणु वण्णु णवजोव्वणु रूवविलाससंपया ॥

सुरधणुमेहजालजलवुब्बुयसारिसा कस्स सासया ॥ १ ॥

सिसुंतणु णासइ णवजोव्वणेण	जोव्वणु णासइ बुद्धत्तणेण ।	
बुद्धत्तणु पाणिं चलियएण	पाणुं वि खंधोहिं गलियएण ।	
खंध वि सगुणोहिं परिणमंति	बहुविह पज्जायहं परिणवन्ति ।	5
परिगलइ राउ वइरायएण	णीरोयत्तणु रोयत्तणेण ।	
जीविउ पावइ पाणावसाणु	सिरिवंतु होइ दालिदट्ठाणु ।	
गच्छंतु भाणु जीवंतु जीउ	कालिं अत्थवणहं को ण णीउ ।	
जइ वज्जइ रायहो आउगंठि	ता किं किउ सोहणु जणियतुट्ठि ।	
वरिसहं वरिसहं वरिसोणु ठाइ	भववद्धउ आउपमाणु जाइ ।	10
बलियइं कुडिलत्तणउज्जयाइं	अइवीदइं तिट्ठइं रज्जुयाइं ।	
णारीखुंटइ पसु पुरिसु बद्धु	कालिं सहूलें क्षत्ति खद्धु ।	

9. १. S उज्झायवत्ति. २. S सारंभु. ३. S संगचाउ.

10. १. ST सइसवु. २. ST स चिय. ३. ST परिभमंति. ४. ST अइबलियए कुडिलाणुज्जयाइ. ५. ST णारीखाणुए.

घत्ता—णरु सुक्खु समीहइ मरणहु बीहइ देवहं सरणु पईसरइ ॥

विज्जहो घरु गच्छइ मंतु पपुच्छइ खयकालहो णउ उव्वरइ ॥ १० ॥

11

दुवई—परिवारेण लच्छि भुंजिज्जइ रक्खिज्जइ महारणे ॥

धावइ सव्वु को वि णरणाहहो तंदुलपसइकारणे ॥ १ ॥

परियणु भुंजइ माहि विदउ रम्म

चउंदससु भूयगामंतरेसु

णियपुण्णपावसंवैलइ लेवि

एकु जि जैगि जीउ सुदुण्णिरिक्खु

णयणइ अण्णणइ घाणु अण्ण

अण्णण कण्ण भवि भवि हवन्ति

अण्णणइ कम्मइ संगिलन्ति

जीवहं सयरायरु सव्वु अण्ण

णारयतिरिक्खसुरणरभवेसु

सयलामलकेवलणाणसयणि

एकु जि णरवइ अणुहवइ कम्म ।

जिउ णिंयसइ सयलकलेवरेसु ।

पुणु अण्णभवहो प'हुणउ जाइ ।

हिंडइ चउरासीजोणिलक्खु ।

जीवहो संफासणु को^१ विभिण्णु ।

अण्णणउ जीहउ मुहि ललन्ति ।

अण्णणइ विविहंगइ मिलन्ति ।

जहु मोहंमहादहि किं णिविण्णु ।

परिभमइ भावतमविब्भमेसु ।

वित्थिण्णि अणंतानंतगयणि ।

घत्ता—जगु ठियउ पडिलउ णावइ मल्लउ पल्लहियवि केण वि ठविउ ॥

मज्झिमु पविमज्झु व उवरिलउ णिव मुणसु मुयंगु व मुणि चविउ ॥ ११ ॥

12

दुवई—ण किउ ण धरिउ बंभरुहाइहिं ण य कालिं विलीणउ ॥

ण हि ठिउ^१ एक्खंभु तिल्लोक्कु वि चउदहरज्जुमाणउ ॥ १ ॥

जं तिहुयणु भासइ वड्डमाणु

तं फासवंतु तं वण्णवंतु

तं सद्वंतु भासइ अणंतु

तं चउदहरज्जुपरिप्पमाणु ।

तं गंधवंतु तं रूववंतु ।

तं रसविसेससम्भाववंतु ।

11. १. A णरणाहु वि. २. ST चोदहसु. ३. ST हिंडइ. ४. A संवलउ. ५. S जणि. ६. S अण्ण. ७. S^f महइहि. ८. S मइंगु.

12. १. ST एक्खंभु.

सो खंधु भणिज्जइ गिरवसेसु	तस्सद्धउ जिण पभणंति देसु ।	
अद्धस्स वि अद्धउ पुणु पपसु	परमाणू अविहायउ असेसु ।	
तं पुग्गलु पेक्खिवि परिणवंतु	सच्चेयणभार्थे सच्चवंतु ।	
अवयासु लहंतु अलद्धठाणु	तं पिच्छिवि णहथलि गच्छमाणु ।	
भणु कारणं तं मइं दिट्ठु कज्जु	तं भणइ मद्दामणि महु मणोज्जु ।	10
णिसुणहि सुअवट्ठणलक्खणालु	परिणामहो कारणु होइ कालु ।	
चेयण जीवहं कारणु कहंति	अवयासहो आयासु जि भणंति ।	
ठाणहो अहम्मसु गमणहो वि धम्म	गुरु भणइ मज्झु परिगलियच्छम्म ।	
भार्थहं सव्वहं संघाउ लोउ	एएहिं विवज्जिउ धुउ अलोउ ।	
घत्ता—जगि छाहहि कारणु उण्हणिवारणु आयवत्तु अहिणाणियउं ॥		15
इय पणउ सीसइ जं णउ दीसइ तिं कज्जिं परियाणियउं ॥ १२ ॥		

13

दुवई—पुग्गलु सावयासु परिणामिउं अवह वि चेयणालउ ॥

आलोयंतु जाइ णहिं ठाइवि दीसइ कज्जमेलउ ॥ १ ॥

इह कारणेग विणु कज्जु णत्थि	करिमिहुणिं विणु कहिं हवइ हत्थि ।	
विणु पुग्गलेण कहिं गुणरसाइं	विणु जीविं कहिं चेयण विहाइ ।	
आयासिं विणु अवयासु लहहिं	कहिं पुग्गल जीव मुणिंद कहहिं ।	5
विणु काले कहिं परिणवइ वत्थु	विणु धम्माहम्मं कहिं पयत्थु ।	
गइठाणु वि लहइ मद्दामुभाव	एए लोयहं किर छह सहाव ।	
परिणवइ खंधु कालाउ भिणु	सज्जिउ होइ जीवाउ छिणु ।	
लइ धम्माहम्मसु ण दोइ जइ वि	गच्छइ अच्छइ सो वण तइ वि ।	
अणु वि णहिं वार्ड लहंतु कमइं	तिजगम्भंतरि भुवणयलि भमइं ।	10
तहिं ठाइ ण जाइ अलोययत्ति	जा तिल्लोक्कहो आधारसत्ति ।	
चलथिरलक्खणलक्खियविमुत्ति	सा जानसु धम्माहम्मजुत्ति ।	

२. ST णिबद्धठाउ; P notes णिबद्धठाणु इति वा पाठः and this reading is given in A. ३. ST चेयणहे जीउ. ४. AP भावहं छभाव.

13. १. S अणु वि. २. S णहे; P णहु. ३. ST वि आइ. ४. S and T omit this line; P gives it in second hand. ५. S णच्छइ. ६. S वयासु. ७. S तयलोक्कहो.

परमेष्टि पियामहु सच्चसंधु
भावहं छह व्व सव्वायरेण

पणवह जिणवरु भव्वयणबंधु ।
मा खज्जह मोहणिसायरेण ।

घत्ता—हड्डावलिविहियउ चर्मि पिहियउ पूयगंधभीसावणउं ॥ 15
माणुसहो कलेवरु चंडालहु घरु जिह तिह णिरु चिलिसावणउं ॥ १३ ॥

14

दुवई—वोक्कथरत्तपित्तमत्थिकंतावलिसुक्कसंगमं ॥
रयईणीरखीरसंमदसमुम्भवकदमोवमं ॥ १ ॥

इय सत्तधाउविट्टलु णरंगु
मणि वसइ कामु मज्जायमुक्कु
दण्णुम्भहु माणु अतुट्ठि लोहु
परवंचणयरु मायाकसाउ
कुलवललच्छीमयफुट्ठणेत्तु
णेहेण णिबहु सलज्जभाउ
जहुं णिंद ण याणइ सहियहेउ
णिडुहिवि लेइ णीसेस देहु
रमणीरूवेसु रमंति चक्खु
घाणु वि सुहगंधहो जाइ झत्ति
लहु धावइ गेयहो कण्णजुयलु
अणुदिणु मुहि पइसइ अलियधाणि
पयजुयलु वि पावपद्दाणुकूलु
पंडित्तु कुतक्कपलावभासि

कामिं दुदंति अंतरंगु ।
कोहु वि परबंधणहणहुक्कु ।
मइरा इव मोहणसीलु मोहु । 5
सोउ वि कयहाहारवणिणाउ ।
ण वि पेक्खइ विणु मज्जेण मत्तु ।
णेहु वि अणत्थपत्थराणिहाउ ।
तण्हइ मग्गइ पाणिउ अपेउ ।
लुह पइसारइ चंडालगेहु । 10
जीहा वि समीहइ मिट्ठु भक्खु ।
फासु वि मिउसयणहो करइ थत्ति ।
मणु पुणु वणमक्कड जेम चवलु ।
हिंसाकम्महो उवगारणु पाणि ।
कइ करइ कइत्तणु रायमूलु । 15
सुहडत्तणु जाणहं दुरियरासि ।

घत्ता—अण्णाणु सिसुत्तणु णवजोव्वणु पुणु हिंडइ पियविरहिं सुसिउ ॥
वुड्ढत्तु करालहो णियडउ कालहो मरणव्वसणसमूससिउ ॥ १४ ॥

८. A लदं व्व.

14. १. A विरहय. २. A वंचण. ३. ST जड णिइ. ४. ST तत्ति.

दुवई—कंचुइ कामभोयमणिभूसणणिवसणमईविहइया ॥

रोयकयंतभिच्च मउलियमुह मुच्छामरणदूइया ॥ १ ॥

मिच्छत्तकसायासंजमेण	आसवइ कम्मु करणुब्भवेण ।	
सम्मार्त्ति जीवदयागमेण	इंदियरइसंगविणिग्गमेण ।	
किज्जइ संवरु मुणिपुंगवेहिं	दढवयभावणविरइयसमेहिं ।	5
णिज्जर पुणु बारहविहतवेण	जापं णिव्वेपं णवणवेण ।	
अइखमवहेण अइदुसहेण	अइमद्वेण अइअज्जवेण ।	
अइसच्चरण सुसउच्चपण	परिचत्तपरिग्गहसंगहेण ।	
संभवइ धम्मु वंभव्वपण	अज्जेव्वउ भावें भव्वपण ।	
मग्गिज्जइ हयजरमरणवाहि	जिणगुणसंपत्ति समादि वोहि ।	10
मा गिण्हह लहुं मुणिदिक्ख ताम	अंगाइं समत्थइं हौंति जाम ।	
ता अमद्वहिं लइयउ खुल्लयत्तु	चत्तउ परिदणु आहरणु वित्तु ।	
पंगुत्तउ पंडुरचीरखंडु	मणु मुंडिवि पुणु मुंडियउ मुंडु ।	
कोवीणु कमंडलु भिक्खपत्तु	लइयउ वउ भवजलजाणवत्तु ।	

घत्ता—जायउ संजइयउ णिज्जियमइयउ राणियाउ जसवइपियउ ॥ 15

कयसुरणरसेविं गुरुणा देविं पुरकंतियहे समप्पियउ ॥ १५ ॥

दुवई—जिणतवचरणकरणपरिणयमणविणिहयमारमारिहिं ॥

तणुघुलियाहिरायजहादलविलिहियधम्मवारिहिं ॥ १ ॥

परिदुस्सहणिट्ठाणिट्ठिपहि	कडयडियसंधिवंधट्ठिपहिं ।	
उरपुट्ठिवंसहड्डुब्भडेहिं	सुविसमपासुलियापायडेहिं ।	
कयघोरवीरतवतत्तपहिं	जगजीवभयंकररूवपहिं ।	5

15. १. ST मय. २. ST संचण्ण. ३. ST लहु. ४. A पुरु कंतियहे.

16. १. ST उवरट्ठि; A उरपिट्ठि.

हेमंतणिसाँहयणेहएहिं
विसहियपाँउसजलझल्लिरेहिं
अट्टविहफाससमभाविरेहिं
हयसल्लिहिं णिज्जियवम्महेहिं
माणावमाणसमभावएहिं
धणुदंडमडयसिज्जासिपहिं
गोसुँडयगोदुहआसणेहिं
दीहररोमावलिभासुरेहिं
जल्लमलविलित्तसरीरणहिं
रुद्धट्टाणणिगयमईहिं
इत्थाइउ जइवइ अप्पमत्तु
अवहत्थियपत्थिवसंपयाइं
वंदेप्पिणु गुरुपयपंकयाइं

हिमपडलपैडावियदेहएहिं ।
गिंभम्मि सँहियरवियरझलेहिं ।
सग्गापवग्गपहदाविरेहिं ।
तासियविद्धंसियमयगदेहिं ।
झाणासिपहिं तणुतावएहिं ।
कंदरमसाणगुहवासिपहिं ।
दिणपक्खमासकयपारणेहिं ।
सुतिमुंडघरेहिं जडाधरेहिं ।
मेइणिमंदरगिरिधीरएहिं ।
सहुं महि भमंतु णिम्मलजईहिं ।
अम्हारउ गुरु णामि सुदत्तु ।
तिं सत्थि अम्हि समागयाइं ।
भिक्षाणिमित्तु लुडु णिग्गयाइं ।

10

15

यत्ता—ता पंथि चरंतइं जिणु सुमरंतइं किंकरेहिं संदाणियइं ॥

बिणिण वि सुहचरियइं करयलि घरियइं एउ देविघरु आणियइं ॥ १६ ॥ 20

17

दुवई—आणिवि दंसियाइं तुह मँहिवइ पइं वइयरु पपुच्छिउ ॥

मइं तुह कहिउ एवे भवकदमि हउं हिंडंतु आच्छिउ ॥ १ ॥

इमं सव्वमायण्णिउं चंडमारी
विसण्णाइं चित्ते विरत्ताइं पावे
पबुद्धाइं दूरं वरं दोवि णाणं
सिसूणं जुयं णिम्मलं पुज्जणिज्जं
इमं चित्तिरुणं वसातुप्पगिल्लं

पहू मारिदत्तो वि जीवावहारी ।
विलग्गाइं धम्मे पराइण्णतावे ।
विचित्तं तिलोए पवित्तं पहाणं ।
ससीसच्छचूडामणीवंदणिज्जं ।
रसोल्लं दिसाजंतकीलालरेल्लं ।

5

२. ST हेमंतणिसासु अणेहएहिं. ३. ST पछाइय. ४. ST पाउसजलझल झलेहिं; A पाउसझलझलेहिं.

१. ST गहिय. ६. ST गयसुंडा; A गयमुंड. ७. ST णिम्ममजईहिं.

17. १. A णरवइ. २. A एउ. ३. ST कीलालरेजं.

सहडुं समुंडं सतुंडं सखंडं
 घरं णिमियं णीलमाणिक्यद्वं
 वणं विलिक्कंकेल्लिफुल्लुच्छलंतं
 णहालग्गहिंतालतालीतमालं
 लयामंडवोइण्णजक्खिदंभदं
 सरुफुल्लकंदोदुहंतंताभिगं
 णहुब्भंतपुंकोइलारावरम्मं
 ससत्तीइ भत्तीइ णाणागुणाए
 ठवेऊण णाऊण णेउं महंतं
 पणहुग्गवेसं जणाणंदभूअं
 महावच्छवणं पसणं रवणं
 घरा णिग्गया देवया सोमभावा
 असामण्णलायण्णसोहग्गसारा
 सयारूढणिव्वूढसिगारभारा
 घणापीणतुंगत्थणी मज्झखीणा
 दयालोइयासेसबंदीमयाए

णिहित्तूण भूमीयले मज्जखंडं ।
 पखित्तं व मुत्ताहलोलीसणिद्वं ।
 दलारत्तसाहारसाहाललंतं ।
 इलाजंतलीलामरालीमरालं ।
 सिलासीणसीमंतिणीगीयसदं ।
 भरुद्धयतिंगिच्छविच्छिड्डुपिंगं ।
 छुहापंडुरुब्भयदीसंतदम्मं ।
 सउज्जाणमज्झे सवेउव्वणाए ।
 मइंदासणे खुल्लयाणं जुयं तं ।
 पुणो चक्खुग्गम्मं पघेत्तूण रूवं ।
 सुवण्णग्गवतं सपुप्फभपुण्णं ।
 सपायंतघोलंतकंचीकलावा ।
 विलंबंतद्वारावलीतेयतारा ।
 तुलाकोडिद्वंकारणच्चंतमोरा ।
 जिणुत्तस्स गंथस्स पंथम्मि लीणा ।
 समेऊण सामीवयं देवयाए ।

10

15

20

घत्ता—खुड्डयगुरुपायद णहसुच्छायह णियसीसत्तु समिच्छियउ ॥

जलकमलकरंबिउ महुअरचुंबिउ अग्गवत्तु पल्लहत्थियउ ॥ १७ ॥

25

18

दुवई—कारिमकुक्खेण णिहण्ण वि तुहुं भमिओ सि दुब्भवे ॥

कउलइ जीवरासि भक्खंति वि ण्हंति वि लोहियणवे ॥ १ ॥

अणुकंपइ भासइ सुरपुरंधि
 हउं पावयम्म पावेण जाम
 दे देहि देव तउ तिव्वु चरामि

अयमेसमहिसहयकंठसंधि ।
 ण वि खज्जमि तुहं परिताहि ताम ।
 हिंसादुक्खिउ णीसेसु हरामि ।

5

४. ST मुत्ताहलली. ५. ST लयामंडवाइण्ण. ६. AP हंदं, ७. AP णहुब्भंतयं कोइलारावरम्मं. ८. ST सभत्तीइ सत्तीइ. ९. ST घणुत्तुंगपीणत्थणी; A घणातुंगपीणत्थणी.

ता भणइ अभयरुइ पिहुलरमाणि	पाडलपेल्लय गयमंदगमणि ।	
सुरकामिणि सुणु उववायएसु	कमवड्डियकम्मविवायएसु ।	
णिम्मंसचम्मरोमट्टिएसु	णिप्पइयधाउतणु ढइरएसु ।	
सहजायमउडकुंडलधरेसु	मंदारकुसुमरयपरिमलेसु ।	
वउ फासरूवरवकयरएसु	मणपडियारप्पडियारएसु ।	10
बहुधणकरिक्कणरमाणएसु	उवरुवरिपवड्डियमारएसु ।	
दससहसवरिसपल्लाउएसु	सायरसमेसु चिरैजीविएसु ।	
तुह एकहि णउ तउ णत्थि एसु	वासट्ठिविडेसु वि सुरवरेसु ।	

घत्ता—इलजलसिहिवायहं तणतरुकायहं संसारइ आहिंडियहं ॥

संठियचउपाणहं णिरु णिण्णाणहं णत्थि दिक्ख पइंदियहं ॥ १८ ॥ 15

19

दुवई—खुब्भयसंखगोहंभमराइसु विमलेसु वि महाबले ॥

णत्थि तओ असणिसण्णीण तिरिक्खेसु वि सुकुंतले ॥ १ ॥

णरजम्मइ परवंचणपरेसु	तुलकूडमाणकूडायरेसु ।	
ववहारकूडसक्खीयरेसु	पसुमारणेसु मायामएसु ।	
जाएसु अम्मि बहुविहमएसु	परियंचियरयणप्पहथलेसु ।	5
उरचूरएसु माणियविलेसु	आहिअजयरविसममहोरएसु ।	
सरहुंदुरसेट्ठाणउलएसु	एक्कसुरबेक्खुरकुंजरेसु ।	
मंडलचरणेसु चउप्पएसु	ओल्लंघियणइजलणिहिजलेसु ।	
कच्छवमच्छाइसु चंचलेसु	तउ णत्थि संखदीवाइएसु ।	
णाणाविहवंचूजीविएसु	थीबालवुड्डरिसिमारएसु ।	10
परललणालालसजारएसु	महुमज्जमंसरसलंपडेसु ।	
अणवरयकोवविहडप्पडेसु	माणवभवि णिंदियजिणवरेसु ।	

18. १. AST पुण्ण. २. S णाणएसु; A माणएसु. ३. ST थिर.

५ 19. १. A गोमि. २. AST असणिपंचक्खतिरिक्खेसु. ३. ST उरभुययरेसु. ४. ST अजयरविसविसम

५. S मणमहियलतणुअसुरासुहेसु.

माणियघम्माइवसुंघरेसु
अण्णुण्णघायसयजजरेसु
पुणु दूणदूणदेहुणपसु ।

मणैतणयसुहासुहआयरेसु ।
भयघणुतिरयणे छंगुलमिपसु ।

15

घत्ता—संगहियाहारइ धरणिविहारइ पसरहो हौतु अणंतु दुहु ॥
परमाणुयमेलणु णयणणिमीलणु कालु वि जेत्यु ण अत्थि सुहु ॥ १९ ॥

20

दुवई—गत्तं खंडिऊण घित्तं पि हु लगाइ पहरवेवियं ॥
असिछिण्णेसु सुलभिण्णेसु वि णिवसइ जासु जीवियं ॥ १ ॥

सत्ताहोभूमिकयायरेसु
परजम्मवईरवलबुज्झरेसु
णिच्चक्कमेक्कसंघारपसु
चिरभवकयसंजयभोयणेसु
जाणियसुरतरुफलसाइपसु
तउ णत्थि भदि कीलाविसेसु
उच्छलियपुण्णंदवीकपसु
अण्णेसु वि मुणि मिच्छामपसु
विरइयकुपत्तदानुब्भवेसु
छण्णवइकुभोयधराणरेसु
तउ णत्थि मेच्छखंडंतरेसु ।

च उरासीलक्खविलोयरेसु ।
अंगहहमहाउहजुज्झरेसु ।
तउ णत्थि सत्तविहणारपसु ।
ससहरमुहि मुहआलायणेसु ।
दुतिपल्लपक्कवद्धाउसेसु ।
वरतीसभोयभूमाणुवेसु ।
उव्वरियपुण्णंदवीरपसु ।
पैत्तेसु आसि तावसतवेसु ।
विचरीयकण्णमुहपल्लवेसु ।
वसुसमसयपण्णासुत्तरेसु ।

5

10

जंबूदीवइ पुणु धाईदीवि
सत्तर सयगणियइं मुणि कहंति

पुक्खरवरद्धिदीवंतंजीवि ।
इय अज्जमहिहि खंडां हौंति ।

15

घत्ता—जो तेसु हवेण्णिणु गुरु पणवेण्णिणु लेइ धम्म कवडेण विणु ॥
तउ करइ अगाविं अकुडिलभाविं पंविंदियसुहु गणिवि तिणु ॥ २० ॥

५. S मणमहियलतणुअसुरासुहेसु.

20. १. ST वहरि. २. S साउएसु. ३. S कीलालएसु. ४. S भत्तेसु. ५. A धाइखंडि. ६. A दीवंतमंदि.

21

दुवई—दंसणणाणचरियरयणत्तयपरमाराहणाफलं ॥

सो दिवहेहिं लहइ मणिपुंगुउ केवलणाण पविमलं ॥ १ ॥

सम्मत्तु होइ सुरणारएसु	तवचरणु ण जम्मि वि ठाइ तेसु ।	
अणुवयइं कहिं मि तिरियइं हवंति	णर पंचमहव्वयभरु वहांति ।	
तं णिसुणिवि णिहयणियावयाइ	सम्मत्तु लइउ वणदेवयाइ ।	
पुणु पुच्छिउ गुरु महरइ गिराइ	चरणारविंदपणवियसिराइ ।	5
चउगइ पायालगई उइहि	दुत्तारघोरभवजलसमुहि ।	
णिवडंतहि पईं महु दिण्णु हत्थु	तुहुं देउ को वि पवयणसमत्थु ।	
तुहुं मज्झु सामि हउं तुज्झु दासि	भणु किं दिज्जइ गुणरयणरासि ।	
ता मेहविजयदुंदुहिसरेण	पडिबोल्लिउ देसजईसरेण ।	10
णिःवणि मच्छियउ ण भिणिहिणंति	णिम्मोहदिण्णदाणइं ण लंति ।	
ता देविइ जंपिउ साहु साहु	पुणं पुणु पणविवि भावेण साहु ।	
संभासिवि महिवइ पसुहुं घाउ	मा दिज्जसु होज्जसु सोमभाउ ।	
वणि उववणि चच्चरि एत्थु मेहि	बहु छिंदिय भिंदिय पाणि देहि ।	
सहजाइं बहुंय कित्तिमकियाइं	परिहिमि पाणइं पाणप्पियाइं ।	15
महु उहेसिवि जो देइ को वि	सकुहुंबउ हउं खउ णेमि सो वि ।	
इय भणिवि मणोहर तियसपत्ति	अहंसणहूईं गय सथत्ति ।	

घत्ता—ता मउलियलोयणु णिंदियणियगुणु हियइ सुद्धबुद्धिहि चाडिउ ॥

दिग्गयवरगामिहि खुट्ठयसामिहि मारिदत्तु पायहिं पडिउ ॥ २१ ॥

22

दुवई—भणइ महीमहंत परमेसर कित्तिमचूलिमारणं ॥

काउं तं भवेसु ममिऊण दुहं पत्तो सि दारुणं ॥ १ ॥

21. १. ST केवलणाणमविचलं. २. ST पुणु पणवेवि सब्भावेण साहु. ३. ST अहव कित्तिमइं जाइं. ४. ST णिहंसणहूईं.

मइं पुणु जीवउलइं जाइं जाइं
 हउं णिवडीसैमि रउरवतमालि
 दे देहि देव पावहो णिवित्ति
 भववासपासवेढणचुएण .
 आवेहु जाहं जिणणाहसिकल
 वयणेण तेण विंभियउ राउं
 हउं जणि महग्घु णरवंदणिज्ज
 मज्झु वि सुपुज्ज कुलदेवि आसि
 खुल्लयहो वि जइ गुरु अत्थि अवह
 जाणिवि संबोद्धिउ मारियत्तु
 अवहीसरु सुरणरवंदणिज्ज
 हयमोहु महामइ गुणसमिद्धु
 जज्जरित जेण बहुभेयकम्म
 इल लाइवि जाणुयसिरभुएण
 राएण वि तहो पयपंकयाइं

णिहयइं को लक्खइ ताइं ताइं ।
 णारयगणहणहणरववमालि ।
 अवलंबमि मणि णिगंथवित्ति ।
 ता भासिउ कुसुमावलिसुएण ।
 गुरु देइ महारहु तुज्जु दिक्ख ।
 आणंदु मणोहर तासु जाउ ।
 सामंतमंतिमंडलियपुज्ज ।
 सां संजाया खुल्लहो दासि ।
 तववंतहं जगि माहपु पवर ।
 एत्थंतरि आयउ गुरु सुदत्तु ।
 णिज्जियमयारि तिल्लोकपुज्ज ।
 सत्तहिं मि पवररिद्धीहिं रिद्धु ।
 तवि संठिउ दसविहु णाइ धम्म ।
 गुरु वंदिउ कुसुमावलिसुएण ।
 णवियइं उम्मूलियभवसयाइं ।

5

10

15

घत्ता—ता जगपरमेसरु संघाइउ गुरु धम्मविद्धि सुपयच्छिय ॥
 संतुट्टमणेणं तेण णिवेणं णियसीसत्त समिच्छिय ॥ २२ ॥

23

पुच्छइ मारियत्तु हरिसं गउ
 गोवहणसिद्धीहि भवंतर
 जोईसहु भरवहु चिराणउं

कहहि देव णियभवणमियं गउ ।
 महु भवाइं जं जेम णिरंतर ।
 चंडमारिदेविहि सुपहाणउं ।

22. १. ST को लक्खवि सक्खइ तित्थियाइं. २. ST णिवडिहीमि. ३. ST ताहि वि खुहुउ गुणरयणरासि. ४ S and T have after this line: वंदियइं सुरासुरपुज्जियाइं । तहु पायमूलि पणमियसिरेण पावज्ज लइय राएण तेण. ५. Portion beginning with this line and ending with कडवक 30 line 15 is omitted in S and T. ६. A तहिं अवसरि गुरुणा गुणगणगुरुणा धम्मविद्धि सुपयच्छिय.

23. १. Both A and P omit the दुवई from this कडवक onwards; but P gives in second hand the following as दुवई:—आसियवाउ पडिच्छिय राएं तह मणि आणंदकित्ति णं (?) । गुरुएवउ मुणिवि को दीसइ मुहु मणसंसउहेडणं ॥

निवइजसोहहो जसपरिपुण्हो
जसहररायहो अवगुणभरियहि
जसवइणामहो लच्छिसहायहो
माहिंदहो तुरयहो पुण खुज्जहो
अवहीसरु जंपइ सुपसिद्धउ
सालिल्लेत्तकणभरपूरियधरु
गंधजुत्तु गंधगिरि भणिज्जइ
गंधव्वायदणहिं परिसोहिउ
तहो सयासि घरसिरिअवरुंडिउ
निवसइ तहिं निवमगसयाणिउ
चायभोयभोयंकियविग्गहु
तहो विंझसिरि भज्ज कलकोइल
आयए जणिउ थणद्धउ केहउ
मयरद्धयहो रूउ किं किज्जइ
इहु गंधव्वसेणु जाणिज्जइ
रायहो घरि कोमलतणुअंगी
ताहि णामु गंधव्वसिरी सिय

चंदसिरीहि चंदमइ अण्हो ।
अभयमहाएविहि अहचरियहि । 5
कुसुमावलिहि सुमंडियकायहो ।
पयहं कह पयडेहि अणुज्जहो ।
अत्थि देसु गंधव्वु सुरिद्धउ ।
पक्ककलमझंकारमहुरसरु ।
अइउत्तुंगु सिहरु तहो लज्जइ । 10
गंधहरिणभसलेहिं णिरोहिउ ।
पुरु गंधव्वु धम्मघणमंडिउ ।
णिउ वइधव्वु णाम असमाणउ ।
परदलबल्लेचट्टणु कयविग्गहु ।
पइवय सच्चलील णावइ इल । 15
रूवें जो मयरद्धय जेहउ ।
पयहु ण दीसइ उप्पम दिज्जइ ।
सयलहिं लोयहिं थुत्ति थुणिज्जइ ।
पुत्ति रूवलक्खण्हइचंगी ।
अइलडहंग अंग विहिणा कय । 20

घत्ता—णियँपुत्तसमाणु पविहियमाणु सज्जनकमलदिनेसरु ॥

दुज्जणगयसीहु दीहरजीहु भुंजइ रज्जु णरेसरु ॥ २३ ॥

24

तहो रायहो मंतणइ महल्लउ
चंदलेहभज्जाइ अलंकिउ
पुत्तुप्पणु रूवगुणभायणु
हुयउ कणिट्टउ भीमु सहोयरु
णरवइणा किउ पुत्तिहि कारणि

मंति रामु मंतेण अभुल्लउ ।
दोसुज्झिउ गयदप्पु असंकिउ ।
जिणियसत्तु जियसत्तु परायणु ।
भीसावणु भीमु व्व अहोयरु ।
बद्धमंचदिप्पंतइ तोरणि । 5

२. A गुणपरिपुण्हो. ३. A लच्छिहसणाहो. ४. A आयहं. ५. A अरिबलदलवट्टणु; P अरिदलदलवट्टणु.
६. A गुणचंगी. ७. A पियपुत्त.

जाउ सयंवरमंडवि मेलउ
 तहिं गंधव्वलच्छि पइसारिय
 ताइ माल जियसत्तुहि उप्परि
 उच्छउ संखतूरभेरीसर
 मंतिणिहेलणि कंत सइत्तिय
 एत्थंतरि पारद्धि महीवइ
 किउ संघाणु गहेवि सरासणु
 अंतरि हुइय हरिणि मिगु णट्टउ
 विद्ध कुरंगी तेण गुरुकिं
 पारद्धियाहिं खंधि उच्चाइय
 आरद्धंतु मिगु संमुहु धायउ
 दिसि दिसि भमइ सकंत णिहालइ
 मोहंधु वि ण किं पि चितइ मणि
 एम रद्धंतु दिट्ठु वइधव्वे
 हुयउ विसायघत्थु हउं लुद्धउ
 एत्तिउ कालु ण किं पि वियाणिउं
 संवेयाउरु णियमणि झूरइ
 संसारासारत्तु मुणेविणु
 राय दोस विणिण वि संदाणिय
 सो वइधव्वु दियंवरु जायउ
 रज्जि बइट्ठु महारिउमइणु
 रायरिद्धि पिउपट्ठि णिसण्णउ
 विंझसिरी हुय मासोवासिणि

रायउत्त साहरण सचेलउ ।
 पुष्पमाल करि कयसंचारिय ।
 घल्लिय पुव्वसिणेहिं चप्परि ।
 कयंउ विवाहु तुट्ठणारीणर ।
 थिय गंधव्वलच्छि जुइजुत्तिय । 10
 गउ वणि दिट्ठउ तेत्थं मिगीवई ।
 मुक्कु बाणु परपाणविणासणु ।
 भज्जिवि गयउ दूरि भयतट्ठउ ।
 पंडिय घराणि लुभ पाणपिसकिं ।
 वलिवि ताम हरिणेण पलोइय । 15
 भुल्लउ कंदइ कलुणु वरायउ ।
 मोहिं बद्धउ भज्ज ण भालइ ।
 चितइ सा पिय खणि खणि पुणु मणि ।
 करुणारसपूरेण अगव्वे ।
 हउं इंदियरसलंपइ मुद्धउ । 20
 कयउ अहम्मु विसयसुहुं माणिउं ।
 दिक्ख लेमि किं रज्जि पूरइ ।
 लइय दिक्ख वइराउ करेप्पिणु ।
 तिव्वतवेण काय अवमाणिय ।
 एत्तहिं तासु पुत्तु गुणराइउ । 25
 हुउ गंधव्वसेणु घणसंदणु ।
 हयगयरहवरपयपरिपुण्णउ ।
 भयवंतायमभावपयासिणि ।

घत्ता—इक्कइया तेण गंधव्वेण णियखंधारहिं जुत्तउ ॥

कयजत्तपवित्तणिम्मलचित्तपिउरिसिपासि पट्टत्तउ ॥ २४ ॥

30

संणासि परिद्विउ दिट्ठु साहु
रिसिचयहो पहाविं होइ सिद्धि
तुसकंडखंड संगहिउ तेण
मरिऊण तेत्थु उज्जोणि पत्तु
णार्मि जसोहु जसपूरियासु
जा विंझासिरी भयवंतपाय
कयण्हाण मरेविणु तत्थ आय
चंदमइ णाम अइमंदमेह
तहो पुत्तुप्पण्णउ जसहरक्खु
जसहरहो रज्जु देविणु जसोहु
संणासु कियउ सुसमाहिजुत्तु
जा णिवसुय थिय मंतीहि सुण्ह
रइर्विभल चप्परि रयइ जाम
पिक्खेवि धिरत्तउ णारिसंगि
जिणदिक्ख लेवि जायउ णिसंगु
चारित्तु चरिवि चिरु छड्डि काउ
हुउ जसहर राउ जसोहतणउ
णिघसुयविलसिउ सुणि रामु मंति
किं किउं कुकम्मु सुण्हाइ केम
वंभव्वएण दिढ मरिवि ते वि
गंधव्वलाच्छि कुविसिट्ठकम्मु
गंधव्वसेणु गिण्हेवि दिक्ख
अणसणु णिवाहिवि किउ णियाणु

पुत्तहो खंधारु णिपवि साहु ।
ता होउ मज्झु परिसिय रिद्धि ।
रंयणोहु पमेल्लिउ णिगुणेण ।
जसबंधुररायहो हुयउ पुत्तु ।
णिवपट्ठु णिबद्धउ भालि तासु । 5
आराहिवि सोसिवि णिययकाय ।
अजियंगरायधरि पुत्ति जाय ।
परिणिय जसोहुरापं सुणेह ।
परिवारहो पोसणु कप्पविक्खु ।
किउ तउ बारसविहु चइवि मोहु । 10
वंभोत्तरसंगि जसोहु पत्तु ।
सा देवररत्तिय सुरयतण्ह ।
णियदइपं दिट्ठिय दुट्ठ ताम ।
गउ णिज्जणवणि जइवरह संगि ।
तवचरणु चरइ जियसत्तु चंगु । 15
चंदमइहि गग्भि जियारि जाउ ।
जणणिए जंपिउ जिं कियउ अणउ ।
वउ वंभचेरु किउ णिसुणि कंति ।
ता चंदलेह वउ गहइ तेम ।
विज्जाहरगिरिउप्पण वे वि । 20
आयणिवि णिंदिवि तियहं जम्मु ।
जिणमगगहो केरी परमासिक्ख ।
तुहुं मारिदत्त सो अप्पु जाणु ।

घत्ता—णिमुणहि हो राय अण्णु कहंतुरु जणंभरिय ॥

मिहिलाउरि रम्म धणकणकणयसमावरिय ॥ २५ ॥

25

तहिं सेट्टि अत्थि जिणपायभत्तु
 वयदाणकज्जि सावउ सुदच्छु
 जलु गाहंतउ सो अस्सरयणुं
 तहो सेट्टिहि सुरहीगग्भि जाउ
 अण्णहि दिणि मरणावत्थपत्तु
 अरुहक्खराइं भावेण तेण
 तत्थाउ राय तुव कंत उअरि
 होसइ धरबलइ पयावधारि
 जो भीमु मंतिस्सुउ दुव्विणीउ
 गंधव्वसिरी अइकुडिलचित्त
 होपविणु णेहु धरेवि सज्ज
 राएण विमलवाइणिण दिण्ण
 जसु वइयर णिसुणिउ मारिदत्त
 खयरायलि जो गउ रामु मंति
 अणुवय परिपालिवि वंभचेरु
 सो जसवइ णियकुलकमलभाणु
 जा चंदलेह चिरु खयरकुले
 सहउयरि उवण्णी तुज्झु राय
 घत्ता—सुहडहिं परिरिक्खिउ जाम णिरिक्खिउ रायतुरउ खरखुरचवलु ॥
 रोसाइद्धेणं माहिंदेणं मारिउ सो पीयंतु जलु ॥ २६ ॥

27

किं कारणु जंपहि गुणसायर
 कियउ कुपत्तदाणु अण्णहि भवि
 मरिवि जसोइहो पत्ति गुणगल

सम्मत्तरयणवयसीलजुत्तु ।
 जिणयत्तु णाम वणि दीहरच्छु ।
 महिसेण हयउ संपत्तु मरणु ।
 हुउ वच्छउ दिदु संपुण्णकाउ ।
 वणिणा तहो कण्णि जवेइ मंतु ।
 गिण्हय भवभयसमसंतपण । 5
 संभवियउ रुप्पिणिगग्भि पवरि ।
 रिउमदणु कुलसंतोसयारि ।
 सो खुज्जैउ हुउ पाविट्ठु कीउ ।
 किसु कियउ काउ संखीणगत्त । 10
 अमयमइ णाम सा खल अलज्ज ।
 जसहर परिणाविउ पावकण्ण ।
 अभयइसुहहो सुवत्त ।
 ससिलेहासमउ दिणिदकंति ।
 केण वि सुहधम्मोदण वीर । 15
 जसहरहो पुत्तु जससेयभाणु ।
 सा हुय कुसुमावलि विज्जविउले ।
 णउ चुक्कइ बुज्झहि मज्झु वाय ।

20

महु मणसंसउ हरहि दयावर ।
 खीणु करेवि काउ तावसतवि ।
 हई चंदलच्छि चंदुज्जल ।

26. १. A गुणगणविसालु सम्मत्तरयणपालणु गुणालु. २. A वयदाण. ३. A वणिवइ. ४. A धरवलय. ५. A खुज्जण. ६. A पावकिण्ण. ७. A अभयमइसुहहो जा सुय सवत्त.

27. १. A महु मणसंसउहरणदिवायर.

चंदमईहि सवसिविरोहउ
 पुव्ववइरवसु जीवहं धावइ
 वच्छउ हुयउ सेट्टिघरि हरिवइ
 संपइ तुह भज्जहि उरि अच्छइ
 चिर रायउरि राउं पयपालउ
 चित्तंगउ णामेण महाबलु
 अप्पुणु भगव दिक्ख पडिगाहिय
 धराणि भमंतु भमंतु परायउ
 तहिं ठिउ तवइ सचित्तह वंछइ
 वंछिउ लहु मरेवि गुरुकउ
 पुल्लिगाउ फिरिवि तियालिंगउ
 जणणी तुज्झ सरूव सुलक्खण
 उवसमगुणु परिपालिवि सुहरउ
 दंडपणामु जासु पइं विहियउ
 करुणारस पूरिवि णियविग्गहु
 उज्जेणिहि णयरिहि जसवंधुरु
 छइंसणभत्तउ मढ देउल
 महियालहो आयदणु मणोहरु
 सरसाहारहिं पीणिवि तावस
 जिणचेईहर धयमंडियसिर
 कारावेप्पिणु दाणु पयच्छिवि
 वणकीलावहुभोउ करेप्पिणु
 सुहभावणजुत्तीइ मरेप्पिणु
 मयगयपउरु कल्लिगाहिउ णिउ
 णांम सुदत्तु रायासिरिमंडिउ
 इक्कइया कुसुमालु गहेप्पिणु
 महु जानाविउ किं णिव किज्जइ

धरिवि चित्ति घाइउ सो णिव हउ ।
 रोसाणलु हुइ तं जइ पावइ । 5
 कणिण जाउ लज्जउ कियसुहमइ ।
 रज्जु करेसइ धर तुह पच्छइ ।
 भयवह पयजलेण पक्खालिउ ।
 छडि रज्जु तुह दिण्णु महीयलु ।
 सरिसरवरतित्थइं अवगाहिय । 10
 णियपुरवरि देविहि मढि आयउ ।
 होउ मज्झु इच्छेवयसंपइ ।
 चंदमारि देवय हुइ थकउ ।
 वप्पु तुमह हुउ असुहवसंगउ ।
 चित्तसेण णामेण वियक्खण । 15
 पाण चएवि जाउ सो भइरउ ।
 अच्छइ णेहिं जो महिमहियउ ।
 कप्पणिवासी देउ होसइ इहु ।
 राउ पसिद्धउ उण्णयकंधरु ।
 अड दीहिय पोक्खरि पविउल्लैजल । 20
 रयणजडिउ दिप्पंतउ सेहरु ।
 भयवजईसरबहुणिट्ठावस ।
 उण्णइवंत सवित्थर अइथिर ।
 मिच्छभाउ भावेण समिच्छिवि ।
 दीहु कालु णियपउं भुंजेप्पिणु । 25
 इट्ठदेउ णियहिंयइ धरेप्पिणु ।
 मयदत्तहो रायहो हउं सुउ ।
 करमि रज्जु रिउबलहिं अखांढिउ ।
 तलवरोहिं दिहु दिउ बंधेप्पिणु ।
 कारागारिं तरसा णिज्जइ । 30

२. A घाइउ णिव हउ. ३. A तुव. ४. A राय. ५. A जलपविउल. ६. A णिवपउ. ७. A णियमणि
 ५. { स्थाप्पिणु. ८. A णामु.

तहिं दियवर जे दंडु पउंजहिं
 आयहो कण्णणासकरछेयणु
 एहु सदोसउ पहु मारिजइ
 पाउ तुज्ज जइ इहु मारिजइ
 एम सुणेविणु चित्तु विरत्तउ
 जिणासिक्खा सीयरिवि भमंतउ

ते व लेवि महु पुरउ पयंपहिं ।
 चलणच्छेउ किज्जइ सिरछेयणु ।
 कस्स पाउ मइं वुत्तु ण किज्जइ ।
 छड्ढिज्जइ णिवयहु तुष जुज्जइ ।
 जुण्णतणु ष्व रज्जु परिचत्तउ ।
 पंचवार तुव पुरि संपत्तउ ।

35

घत्ता—एवहिं हउं एत्थु चउविहसंघसमावरित् ॥

तउ तिव्वु तवंतु तणकंचणु सम मित्तु रिउ ॥ २७ ॥

28

उज्जेणिहि रायजसोहमंति
 णियपइ ठवेवि सुउ णागदत्तु
 अप्पुणु घरि संठिउ दंदचत्तु
 सुहपरिणामिं तहिं चइवि काउ
 णामिं गोवज्जणु गुणाविसालु
 करुणायरु परमपरोषयारि
 अवलोयहि णिवइ णिसण्णु पहु
 णिसुणिवि भवाइं सयलइं णरिंदु
 ण तरामि हउं विणउ करेवि साहु
 सुपसण्णु होवि महु देहि दिक्ख
 ता गुरुणा दिण्णु दियंबरत्तु
 ता णरवइ णयणिज्जियकसायै
 भूसिउ दिक्खाइ पलोइ राउ
 भइरउ पभणइ भो सामिसाल
 मुणि जंपइ दिक्ख ण तुज्जु अत्थि

गुणासिंधु जणविहियसंति ।
 घरभारवहणु पिउपायभत्तु ।
 समभावणघिरइयभावजुत्तु ।
 सिरिवइवणिवइघरि पुत्तु जाउ ।
 सम्मत्तवंतु दिप्पंतभालु ।
 जसवइरायहो संबोहयारि ।
 महु संघाडइ तवलच्छिगेहु ।
 आणंदसोयपूरियउ णंदु ।
 संबोहिउ पहु किउ घम्मलाहु ।
 तवचरणु चरमि पालेमि सिक्खा
 थिउ मारिदत्तु णिवरिद्धिचत्तु ।
 पणतीसणिवइ णिमंगथ जाय ।
 जोईसरासु वइराउ जाउ ।
 दिक्खापसाउ करि गुणाविसाल ।
 छंगुलउ जेण तुहुं अत्थि हत्थि ।

5

10

15

28. १. A णिय २. P adds after this in second hand in the damaged margin: दहलखण-
 घम्मु वित्तजि.....त्तचारु.....यभाव.....य. The Hindi translation of this line, however, is not
 found. See page 300, lines 12-14 of the translation.

कई करमि देव तो भणइ साहु
थोआउसु दीसइ तुज्जु देहि
ता तेण कियँउ संणासु भव्व
चउविहआहारहि चत्तु काउ
अभएण पमेळिउ खुल्लयत्तु
मयरइयझाणपहायरुधु
अभयमई जाय विरत्तभाव
तहि पायमूलि खुल्लियहि वित्तु
णिगंथमँगु णिम्मलु सरेवि
गय दोणिण वि तहि देवीवणम्मि
आराहिवि दंसणु णाणु चरिउ
पंचदसदिणइ संणासु करिवि
ईसाणसग्गि ते दोणिण देव
सम्मत्तबलिं तियलिं गु छिणिण
वंदहिं जिणभवण अकिट्ठिमाइं
सम्मत्तिं लब्भइ सग्गु मोक्खु

अणसण परिपालहि करिवि गाहु ।
सिग्घउ उवाउ भल्लउ करेहि ।
बावीस दिवस पालेवि सव्वु ।
सो मइरउ तीयइ सग्गि जाउ ।
तहिं तक्खणि पडिवण्णउ रिसित्तु । 20
णिवकण्हि पुणु थणवट्ट बधु ।
कुसुमावलि अज्जिय सुद्धभाव ।
छडेवि धित्तु अज्जियचरित्तु ।
अभयरइ जईहि गुणगणु सरेवि ।
चउविहआराहण धरि मणम्मि । 25
तउ बारहविहु अवहरियदुरिउ ।
सुसमाहिण दोणिण वि पाण चइवि ।
उप्पण झत्ति सुरसयहिं सेव ।
कीलहिं विमाणि सुर तेत्थु दोणिण ।
पडिमांमंडियइं जगुत्तमाइं । 30
सम्मत्तिं लब्भइ अचल्लु सोक्खु ।

घत्ता—तत्थाउ मुणिहु चउविहसंधिं परियरिउ ॥

सिद्धइरिहि णाम संपत्तउ जइवइ तुरिउ ॥ २८ ॥

29

तहिं ठिउं चितइ भावण अणिञ्च
आराहिवि आराहण सुसच्च
संणासु कियउ सुसमाहिजुत्तु
सो जसवइ सो कल्लाणमित्तु
वणिक्कुलपंकयबोहणदिणसु

संसारहो गइ णउ होइ णिञ्च ।
अवहिण परियाणिवि सत्ततच्च ।
सत्तमइ सग्गि पत्तउ सुदत्तु ।
सो मारिदत्तु जइवर पवित्तु ।
सो गोवहणु गुणगणविसेसु । 5

२. A किं. ४. A गहिउ. ५. This line and the following are given in S and T as part of कडवक. २२, after राएण वि तहो पयपंकयाइं. ६. A णिगंथु मग्गु. ७. A जाइहि. ८. A अचल्लसोक्खु.

29. १. A घित्तु. २. ST give णिव जसवइ सो कल्लाणमित्तु सो अभयणउ सो मारिदत्तु as part of कडवक २२, after कवडक २८, line २१ of the present edition. ३. ST omit वणिक्कुल.....विसेसु.

साँ कुसुमावलि पालियतिगुत्ति अज्जिग्गुणु जाणिय धम्मवित्ति ।
 सर्व्वहं दुणयणिण्णासणेण तउ चरिवि चारु संणासणेण ।
 कालिं जंति संणासजुत्त जिणधम्मं ते सग्गग्ग पत्त ।

घत्ता—किउ उवरोहं जस्स कइयइ एउं भवंतर ॥

तहो भव्वहु णामु पायडमि पयडउ धर ॥ २९ ॥

30

चिरु पट्टणेच्छंगे (?) साहुसाहु तहो सुउ खेलागुणवंतु साहु ।
 तहो तणुरुहु वीसलु णाम साहु वीरो साहुणिग्गहि सुलहु णाहु ।
 सोयारु सुणाणगुणगणसणाहु एकइया चितइ चित्ति लाहु ।
 हो पंडियठक्कर कण्डपुत्त उवयारिय वल्लहपरममित्त ।
 कइ पुप्फयंति जसहरचरित्तु किउ सुट्टु सहलक्खणविचित्तु ।
 पेसहिं तहिं राउलु कउलु अज्जु जसहरविवाहु तह जणियचोच्चु ।
 सयलहं भवभमणभवंतराई महु वंछिउ करहि णिरंतराई ।
 ता स हुसमीहिउ कियउ सव्वु राउलु विवाहु भवभमणु भव्वु ।
 वक्खाणिउ पुरउ हवेइ जाम संतुट्टउ वीसलु साहु ताम ।
 जोइणिपुरवरि णिवसंतु सिट्ठु साहुहि घरे सुत्थयणहु घुट्टु ।
 पणसट्ठिसहियतेरहसयाई णिवविक्रमसंवच्छर गयाई ।
 वइसाहपडिल्लइ पक्खि बीय रविवारि सामित्थिउ मिस्सतीय ।
 चिरु वत्थुबंधि कइकियउ जं जि पद्धडियबंधि मइ रइउ तं जि ।
 गंधर्व्वे कण्डडणंदणेण आयइं भवाइं किय थिरमणेण ।
 महु देसु ण दिज्जइ पुर्व्वि कइउ कइवच्छराइं तं सुत्तु लइउ ।

घत्ता—जो जीवदयावरु णिप्पहरणकरु वंभयारि इयजरमरणु ॥

सो माणणिसुंमणु धम्मु णिरंजणु पुप्फयंतु जिणु महु सरणु ॥ ३० ॥

४. ST सा कुसुमावलि पालियतिगुत्ति सा अभयमइ त्ति णरिंदपुत्ति. ५. ST भव्वहं. ६. ST कालिं जंति सर्व्वहं मयाइं जिणधम्मं सग्गग्गहो गयाइं. ७. Portion beginning with this line and ending with कवडक 30, line 13 is omitted in PST and also not rendered in Hindi. ८. B. एय.

30. १. B. सज्जु. २. B. अहिय.

पावणिसुंभणि सुद्धांभणि-
कासवगोत्तिं केसवपुत्तिं
वयसंजुत्तिं उत्तमसत्तिं
पहसियतुंदि कइणा खंहे
जो आयणइ चंगउ मणणइ
जो मणि भावइ सो णरु पावइ
जणवयणीरसि दुरियमलीमसि
पडियकवालइ णरकंकालइ
पवरागारिं सरसाहारिं
महु उवयारिउ पुण्णि पेरिउ
होउ चिराउसु वरिसउ पाउसु
विलसउ गोमिणि णच्चउ कामिणि
संति वियंभउ दुक्खु णिसुंभउ
सुहु णंदउ पय जय परमप्पय
विमेलु सु केवलु णाणु समुज्जलु
मइं अमुणंतिं कव्वु करंतिं

उयरुप्पणं सामलवणं ।
जिणपयभात्तिं धम्मासत्तिं ।
वियलियसंकिं अहिमाणंकिं ।
राजियवुहसह कयजसहरकह ।
लिहइ लिहवइ पढइ पढावइ । 5
विहुणियवणरय सासयसंपय ।
कइणिदायरि दुसहे दुहयरि ।
बहुरंकालइ अइदुक्कालइ ।
सण्हिं चेळिं वरतंबोळिं ।
गुणभात्तिल्लउ णण्णु महल्लउ । 10
तिप्पउ मेइणि घण रुणदाइणि ।
घुम्मउ मंदलु पसरउ मंगलु ।
धम्मच्छाहिं सहुं णरणाहिं ।
जय जय जिणवर जय भयमयहर ।
महु उप्पज्जउ एत्तिउ दिज्जउ ।
जं हीणाहिउ काइं मि साहिउ ।

घत्ता—तं मायै महासइ देवि सरासइ णिहयसयलसंदेहदुह ॥

महु खमउ भडारी तिहुवणसारी पुष्पयंतजिणवयणकई ॥ ३१ ॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणणकण्णाहरणे महाकइपुष्पयंतविरइए महाकव्वे चंडमारिदेवय-
मारिदत्तरायधम्मलाहो णाम चउरथो परिच्छेज्ज समत्तो ॥ ४ ॥

31. १. ST पविमलु केवलु णाणु सुणिम्मलु. २. ST ण मुणंति. ३. AT माह. ४. T सरस्सइ. ५. AP सय-
लसंदोह. ६. AP रह. ७. S जसवइकल्लणमित्तमारियत्तअभयमइसगगमणो णाम.

शब्दकोशः

[In the following glossary of words occurring in the Jasaharacariu, pronouns and their derivatives are ignored altogether, while in the case of verbs only roots, primitive and causal, are included, dropping the different forms of finite verbs, infinitives and absolutes.]

अअ-अज
अइ-अति
अइअडु-अतिविकट (अडु विकटार्थे देशी)
अइकूर-अतिकूर
अइकोमल-अतिकोमल
अइक्कमिअ-अतिक्रान्त
अइघण-अतिघन
अइदीह-अतिदीर्घ
अइदुम्मण-अतिदुर्मनस्
अइयक-अज (क-क)
अइविउल-अतिविपुल
अइसयवन्त-अतिशयवत् (ज्ञानादिमूलातिशय-
चतुष्कसंपन्नः। चतुस्त्रिंशदतिशयोपेतः। निः-
स्वेदत्वाद्यतिशयोपेत इति टिप्पणम्)
अइसुंदर-अतिसुन्दर
अउव्व-अपूर्व
अकज्ज-अकार्य
अकिट्टिम-अकृत्रिम
अक्खर-अक्षर (वर्णावलि)
अक्खा-आ+ख्या (धातुः)
अखंडिअ-अखण्डित
अगव्व-अगर्व
अगाव-अगर्व
अग-अग्र
अग्नि-अग्नि
अग्निजाला-अग्निज्वाला

अगधवत्त-अर्घ्यपात्र
अचल-अचल
अचलत्तण-अचलत्व
अचेयण-अचेतन
अच्चण-अर्चन (पूजा)
अच्चंत-अत्यन्त
अचोक्खअ-अमृष्ट, अमार्जित (अशुचि)
अच्छ-आस् (धातुः)
अच्छरा-अप्सरस्
अच्छिअ-आसीन
अच्छि-अक्षि
अच्छिउड-अक्षिपुट
अच्छोडिय-आस्फोटित
अलम्म-अल्लभ्य (कपटरहित)
अज-अज
अजयर-अजगर
अजर-अजर
अजरामर-अजरामर
अजिय-अजित (द्वितीयतीर्थकरनाम)
अजियंग-अजिताङ्ग (राक्षो नामविशेषः)
अजुत्त-अयुक्त
अज्ज-अद्य
अज्जमहि-आर्यमही
अज्जव-आर्जव (ऋजुता)
अज्जणिज्ज-अर्जनीय
अज्जिय-अर्जित

अञ्जु-अञ्ज
 अट्ट-आर्त
 अट्टहास-अट्टहास (विकटहास)
 अट्ट-अष्टन्
 अट्टगुणी-अष्टगुण (अष्टमहाप्रातिहार्ययुक्त
 इत्यर्थः)
 अट्टम-अष्टम
 अट्टमि-अष्टमी
 अट्टविह-अष्टविध
 अट्टसिद्धगुण-अष्टसिद्धगुण
 अट्टंग-अष्टाङ्ग (अष्ट शरीरावयवा इत्यर्थः)
 अट्टि-अस्थि
 अट्टोत्तरसहास-अष्टोत्तरसहस्र
 अड-अट् (धातुः)
 अड-अवट् (कूप इत्यर्थः)
 अण-अनस् (शकट)
 अणअ-अनय
 अणउञ्छिअ-अवाञ्छित
 अणक्खर-अनक्षर
 अणगार-अनगार
 अणत्थ-अनर्थ
 अणलिय-अन्+अलीक (सत्य)
 अणवरय-अनवरत
 अणसण-अनशन
 अणंग-अनङ्ग
 अणंत-अनन्त (चतुर्दशतीर्थंकरनाम)
 अणंत-अनन्त
 अणंताणंत-अनन्त+अनन्त (अतिशयेन
 अनन्तमित्यर्थः)
 अणाइ-अनादि
 अणाह-अनाथ
 अणिच्च-अनित्य
 अणिट्ट-अनिष्ट
 अणिट्टिअ-अनिष्ठित (असमाप्त)
 अणिसाभोयण-अनिशाभोजन
 अणिहण-अनिघन (अनन्त इत्यर्थः)

अणिद-अनिन्द्य
 अणिदिअ-अनिन्दित
 अणु-अणु (परमाणुरित्यर्थः)
 अणुकंप-अणु+कम्प (धातुः)
 अणुकूल-अनुकूल
 अणुगय-अनुगत
 अणुगामिणि-अनुगामिनी
 अणुज्ज-अनवद्य (निर्दोष इत्यर्थः)
 अणुज्जय-अनुद्यत
 अणुट्ठा-अनु+स्था (धातुः)
 अणुट्ठाण-अनुष्ठान
 अणुदिणु-अनुदिनम्
 अणुबंध-अनुबन्ध (क्रमः संततिर्वा)
 अणुमग्ग-अनु+मार्ग
 अणुमग्गयर-अनुमार्गचर (अनुचर इत्यर्थः)
 अणुमाण-अनुमान
 अणुवय-अणुव्रत
 अणुवेक्ख-अनु+प्रेक्ष् (धातुः)
 अणुसंघट्टण-अनुसंघट्टन
 अणुहव-अनु+भू (धातुः)
 अणुहुंज-अनु+भुज् (धातुः)
 अणय-अनेक
 अण्ण-अन्य
 अण्णण-अन्य+अन्य
 अण्णत्त-अन्यत्व
 अण्णभव-अन्यभव
 अण्णव-अर्णव
 अण्णाण-अज्ञानिन्
 अण्णाण-अज्ञान
 अण्णायत्त-अन्यायत्त
 अण्णासत्त-अन्यासत्त
 अण्णुण-अन्योन्य
 अण्णेक्क-अनेक
 अण्णोण-अन्योन्य
 अण्हाण-अस्नान
 अतुट्टि-अतुष्टि

अतुल-अतुल
 अतुलसत्ति-अतुलशक्ति
 अत्तावण-आतापन
 अत्थ-अर्थ
 अत्थ-अस्त (अस्तपर्वत इत्यर्थः)
 अत्थवण-अस्तमन
 अत्थाण-आस्थान (सभामन्दिरमित्यर्थः)
 अत्थासिअ-अस्त+आसीन
 अदुम्मइ-अदुर्मति
 अदंसणहूअ-अदर्शनीभूत
 अद्ध-अर्ध
 अद्धद्ध-अर्ध+अर्ध
 अपत्त-अपात्र (कुपात्रमित्यर्थः)
 अपायड-अप्रकट
 अपेअ-अपेत (गत इत्यर्थः)
 अप्प-आत्मन्
 अप्पमत्त-अप्रमत्त
 अप्पवह-आत्मवध
 अप्पिअ-अर्पित
 अप्पुणु-आत्मना (स्वयमित्यर्थः)
 अब्भंगिअ-अभ्यक्त
 अब्भन्तर-अभ्यन्तर
 अब्भस-अभि+अस् अध्ययने (धातुः)
 अब्भिड-संमुखगमने देशी (धातुः)
 अब्भुय-अद्भुत
 अभग्ग-अभग्न (यथावदिति टिप्पणम्)
 अभयमहाएवी-अभयमहादेवी (राक्षीनाम-
 विशेषः)
 अभयरुइ-अभयरुचि (धुल्लकनाम)
 अभंग-अभङ्ग
 अभीअ-अभीत
 अभुल्ल-अभ्रान्त इत्यर्थे देशी
 अमणोज्ज-अमनोश
 अमय-अमृत
 अमयमइ-अमृतमति (राक्षीनामविशेषः)
 अमरणियर-अमरनिकर (देवसमूह)

अमरत्त-अमरत्व
 अमल-अमल
 अमलिय-अमलिन
 अमंगल-अमङ्गल
 अमाण-अमान (मानरहित इत्यर्थः)
 अभित्त-अभिन्न
 अमुणंत-अजानत्
 आमोसहि-आम+ओपधि
 अम्म-अम्ब (संबोधने)
 अम्माएवि-अम्मादेवी (मातेत्यर्थः)
 अम्मि-अम्ब (संबोधने)
 अय-अज
 अयवइ-अजपति
 अयसिर-अजशिरस् (अजो ब्रह्मेति टिप्पणम्)
 अर-अर (अष्टादशतीर्थेकरनाम)
 अरमाहर-अरमा (अलक्ष्मी) + हर (दारिद्र्य-
 नाशक इत्यर्थः)
 अरविंद-अरविन्द (कमलमित्यर्थः)
 अरहंत-अर्हत्
 अरहंतावलि-अर्हंतावलि (जिननामावलि-
 र्थः)
 अरुण-अरुण
 अरुणयर-अरुणकर (सूर्य इत्यर्थः)
 अरुणायवत्त-अरुणातपत्र
 अरुणिय-अरुणित
 अरुहक्खर-अर्हत् (इति) + अक्षर
 अरूअ-अरूप
 अरूवि-अरूपिन् (अरूप इत्यर्थः)
 अलक्खण-अलक्षण
 अलज्ज-अलज
 अलंकिअ-अलंकृत
 अलाउ-अलावु
 अलि-अलि (भ्रमर इत्यर्थः)
 अलिउल-अलिकुल
 अलिय-अलीक
 अलिङ्ग-अलिङ्ग

अलोय-अलोक
 अवगण-अव+गण् (धातुः)
 अवगण्ण-अव+गण् (धातुः)
 अवगाहिय-अवगाहित
 अवगुण-अवगुण
 अवज्ज-अवद्य
 अवत्थ-अवस्था
 अवमाणिय-अवमानित
 अवयपुण्ण-अवयवपूर्ण
 अवयास-अवकाश
 अवर-अपर
 अवरअ-अपर(क)
 अवरपक्ख-अपरपक्ष
 अवरुंडण-आलिङ्गने देशी
 अवरुंडिय-आलिङ्गिते देशी
 अवरोप्पर-परस्पर
 अवलंबमाण-अवलम्बमान
 अवलित्त-अवलित
 अवलोय-अव+लोक्य (धातुः)
 अवसर-अवसर
 अवसवण-अपस्वप्न, अपशकुन
 अवसाण-अवसान (अन्तः, समाप्तिः)
 अवसि-अवश्यम्
 अवसु-अवश्यम्
 अवहत्थिय-अपहस्तित
 अवहरिय-अपहत
 अवहीसर-अवधीश्वर (अवधिज्ञानवानित्यर्थः)
 अवन्तिराअ-अवन्तिराज
 अवन्ती-अवन्ति (जनपदनाम)
 अविगीय-अविनीत
 अवियड्ड-अविदग्ध
 अवियाणअ-अविज्ञानत्
 अविलासवंक-अ+विलास+वक्र
 (स्वभावसुन्दर इत्यर्थः)
 अविवंक-अ+वि+वक्र (अतिसरल इत्यर्थः)

अविहंग-स्वभावतः इत्यर्थे देशी
 अविहाअ-अविभाग
 अविहिण्ण-अविहीन
 अस-अस् (धातुः) अत्थि, अस्ति इत्यादि
 असइ-असकृत्
 असइ-अ+सती
 असच्च-असत्य
 असज्ज-असाध्य
 असण्णि-अ+संज्ञिन् (अचेतन इत्यर्थः)
 असमाण-असमान
 असमाहिल्ल-अ+समाधि+इल्ल (मत्वर्थीयः)
 असामण्ण-असामान्य
 असारत्त-असारत्व
 असि-असि (खड्ग)
 असिधेणुय-असि+धेनुका (क्षुरिकेत्यर्थः)
 असुइरस-अशुचिरस
 असुहरण-असु+हरण
 असेस-अशेष
 असोय-अशोक (वृक्षविशेषः)
 असंक-अशङ्क
 असंकिअ-अशङ्कित
 असंग-असङ्ग
 असुंदर-असुन्दर
 अस्स-अश्व
 अहचरिय-अघश्चरित (नीचवृत्त इत्यर्थः)
 अहम-अधम
 अहमं-अहमित्यर्थे
 अहम्म-अधर्म
 अहयर-अघश्चर
 अहर-अघर
 अहरुल्ल-अघर+उल्ल (स्वाथे)
 अहि-अहि (सर्प इत्यर्थः)
 अहिछत्त-अहिच्छत्र (नगरनामविशेषः)
 अहिणंदन-अभिनन्दन (चतुर्थतीर्थकरनाम)
 अहिणाण-अभिज्ञान
 अहिणाणिय-अभिज्ञानिक (अभिज्ञान)

अहिमाण-अभिमान
 अहिमाणमेरु-अभिमानमेरु (पुष्पदन्तकवेर्विरु-
 देध्वन्यतमम्)
 अहिमाणंक-अभिमानाङ्क (पुष्पदन्तकवेर्विरुदम्)
 अहिमाणिक-अभिमान+एक (अभिमानपर
 इत्यर्थः)
 अहियारिय-आधिकारिक
 अहिराय-अहिराज
 अहिव-अधिप
 अहिसिंचिय-अभिषिक्त
 अहिसेय-अभिषेक
 अहिहाण-अभिधान
 अहिस-अहिंसा
 अहिसाधम्म-अहिंसाधर्म
 अहु-अथ
 अहोगइ-अधोगति
 अहोगइण-अधोगगन (!)
 अहोभूमि-अधोभूमि
 अंकिअ-अङ्कित
 अंकुस-अङ्कुश
 अंग-अङ्ग
 अंगअ-अङ्गक
 अंगचाअ-अङ्गत्याग (कायोत्सर्ग इत्यर्थः)
 अंगय-अङ्गज
 अंगराअ-अङ्गराग
 अंगहार-अङ्गभार
 अंगारय-अङ्गारक (चोरनाम)
 अंगुल-अङ्गुलि
 अंगुलि-अङ्गुलि
 अंगुलियअ-अङ्गुलि (क-क)
 अंचिय-अञ्चित
 अंत-अन्त्र
 अंतरंग-अन्तरङ्ग
 अंतावलि-अन्त्र+आवलि
 अंतेउर-अन्तःपुर
 अंदोयण-आन्दोलन

अंध-अन्ध
 अंधयार-अन्धकार
 अंधार-अन्धकार
 अंबर-अम्बर (वस्त्र)
 अंभ-अम्भस्
 अंसु-अंशु
 अंसु-अश्रु
 अंसुवाह-अश्रु+वाह (अश्रुप्रवाह इत्यर्थः)

आइ-आदि
 आइअ-आगत
 आइद्ध-आविद्ध
 आउ-अप्
 आउक्खय-आयुःक्षय
 आउगंठि-आयुर्ग्रन्थि
 आउपमाण-आयुःप्रमाण
 आउस-आयुप्
 आउंच-आ+कुञ्च (धातुः)
 आउंचिय-आकुञ्चित
 आएस-आदेश (आज्ञेत्यर्थः)
 आकोस-आ+कुश् (धातुः)
 आगम-आगम (शास्त्रमित्यर्थः)
 आघोस-आ+घुप् (धातुः)
 आढत्त-आहत, आश्रय
 आणण-आनन (मुख अथवा द्वार)
 आणंद-आनन्द
 आणंदिअ-आनन्दित
 आणंदिय-आनन्दित
 आणंदिर-आनन्द+इर (शीलार्थे प्रत्ययः)
 आणा-आज्ञा
 आणाकारिणी-आज्ञाकारिणी
 आणाविअ-आज्ञापित
 आणिय-आनीत
 आणी-आ+नी (धातुः)
 आपीण-आपीन
 आमइसरिस-आमयसदृश

आमंतियअ-आमन्त्रित (क)
 आमिस-आमिष
 आमिसगसिर-आमिष+ग्रसनशील
 आमोय-आमोद
 आयअ-आगत
 आयण-आ+कर्णय् (धातुः)
 आयण्ण-आकर्णन
 आयदण-आयतन
 आयम-आगम
 आयर-आचार
 आयर-आदर
 आयवत्त-आतपत्र (छत्रमित्यर्थः)
 आयंब-आताम्र
 आयर-आचार
 आयावण-आतापन (व्रतविशेषः)
 आयास-आ+यस् (धातुः)
 आयास-आकाश
 आरडंत-आरट्
 आरडिय-आरटित
 आरत्त-आरक्त
 आरंभ-आरम्भ
 आराम-आराम (उपवनमित्यर्थः)
 आराहण-आराधन
 आरुह-आ+रुह् (धातुः)
 आरुहण-आरोहण
 आरूढ-आरूढ
 आलग-आलग्न
 आलिद्ध-आलिष्ट
 आलिङ्गण-आलिङ्गन
 आलुंखिय-आरुक्षित (आस्वादित इत्यर्थः)
 आलोइय-आलोचित
 आलोयण-आलोचन
 आलोयंत-आलोकयत्
 आव-आ+इ आगमने (धातुः)
 आवडिय-आपतित
 आवज्ज-आ+पद् (धातुः)

आवडिअ-आपतित
 आवत्त-आवर्त (अभ्रसां भ्रमः)
 आवया-आवद्
 आवलि-आवलि (पङ्क्तिरित्यर्थः)
 आविद्ध-आविद्ध (आवद्ध, खचित)
 आस-आस् (धातुः)
 आसण-आसन
 आसणवय-आसन्नपद
 आसत्त-आसक्त
 आसत्ती-आसक्ति
 आसव-आ+सु (धातुः)
 आसंका-आशङ्का
 आसंघ-आ+श्रि इत्यर्थे देशी
 आसाऊरिय-आशापूरित
 आसाय-आस्वाद
 आसायण-आस्वादन
 आसासिय-आश्वासित
 आसिअ-आश्रित
 आसीण-आसीन
 आसीवाअ-आशीर्वाद
 आसीसिय-आशीषित ! (आशीर्दत्ता इत्यर्थः)
 आह्य-आहत
 आहरण-आभरण
 आह्व-आह्व (युद्ध)
 आहाकम्म-आधाकर्मन् (हिंसा)
 आहार-आधार
 आहार-आहार
 आहास-आ+भास् (धातुः)
 आहिंड-आ+हिण्ड् (धातुः)
 इकइया-एकदा
 इट्ठ-इष्ट
 इच्छिय-इच्छित
 इच्छेवय-एष्टव्य
 इत्तिय-इत्वर (चपल इत्यर्थः)
 इत्तिय-एतावत्

इत्थ-अत्र
 इय-इति (वाक्यादावेव)
 इयर-इतर
 इयरह-इतरथा (अन्यथा)
 इल-इला (पृथ्वी)
 इला-इला (पृथ्वी)
 इसि-ऋषि
 इह-इह
 इहु-इह
 इहलोय-इहलोक
 इंगाल-अङ्गार
 इंत-यत् (इधातोः शान्तम्)
 इंती-यन्ती
 इंद-इन्द्र
 इंदणील-इन्द्रनील (मणिविशेषः)
 इंदिय-इन्द्रिय
 इंदियबल-इन्द्रियबल
 इंदियसुह-इन्द्रियसुख
 इंदु-इन्दु (चन्द्र)
 ईरिअ-ईरित (प्रेरित)
 ईसर-ईश्वर
 ईसाण-ईशान (स्वर्गनाम)
 ईसासिहि-ईर्ष्या+शिखिन् (अग्नि)
 उअर-उदर
 उकलिय-उत्कलिक (उत्कण्ठित इत्यर्थः)
 उकण्ठ-उत्कण्ठ
 उकुरड-उत्करसमूहस्थाने देशी (मराठी-
 उकिरडा)
 उक्कोइय-उत्पादित इत्यर्थे देशी
 उक्खय-उत्खात
 उग्ग-उग्र
 उग्गअ-उद्गत
 उग्गमिअ-उद्गत
 उग्गय-उद्गत
 उग्गिण्ण-उद्गीर्ण

उच्चाइय-उच्चीकृत
 उच्चासण-उच्चासन
 उच्चिट्ट-उच्छिष्ट
 उच्चिट्टय-उच्छिष्टक
 उच्चोलिय-उपानह
 उच्छअ-उत्सव
 उच्छल-उद्+क्षिप्धात्वर्थे
 उच्छलंत-उच्छलत्
 उच्छल्ल-उत्क्षुब्ध (देशी)
 उच्छव-उत्सव
 उच्छाइय-उत्सादित
 उच्छाह-उत्साह
 उच्छुवण-इक्षुवन
 उज्जल-उज्ज्वल
 उज्जलिय-उज्ज्वलित
 उज्जाण-उद्यान
 उज्जुय-ऋजु(क)
 उज्जुयत्त-ऋजुकत्व
 उज्जुवा-ऋजुका
 उज्जेणि-उज्जयिनी
 उज्झा-अयोध्या
 उज्झाअ-उपाध्याय
 उज्झाय-उपाध्याय
 उज्झाहिअ-अयोध्या+अधिप
 उट्ट-उत्तिष्ठ
 उट्टंत-उत्तिष्ठत्
 उट्टंतपडंत-उत्तिष्ठत्+गतत्
 उट्टा-उद्+स्था (धातु)
 उट्टावियअ-उत्थापित (क)
 उट्टिय-उत्थित
 उड्डु-उड्डु (नक्षत्र)
 उड्डुवइ-उड्डुपति (नक्षत्रराट्, चन्द्र इत्यर्थः)
 उड्डु-उद्+डी (धातुः)
 उड्डुणसील-उड्डुनशील
 उड्डाविय-उड्डित
 उड्डिय-उड्डित (ऊर्ध्वीकृत इत्यर्थे)

उड्डिर-उड्डुनशील
 उण्णइवंत-उन्नतिमत्
 उण्णय-उन्नत
 उण्णयकंधर-उन्नतकंधर
 उण्ह-उण्ण
 उक्त-उक्त
 उत्तम-उत्तम
 उत्तर-उद्+तृ (धातुः)
 उत्तार-उद्+तारय् (धातुः)
 उत्तिय-उक्त
 उत्तिम-उत्तम
 उत्तुंग-उत्तुङ्ग
 उदयायल-उदयाचल
 उद्देस-उद्+देशय् (धातुः)
 उद्देस-उद्देश
 उद्ध-उर्ध्व
 उद्धर-उद्+धृ (धातुः)
 उद्धरिय-उद्धृत
 उद्धहत्थ-उर्ध्वहस्त
 उद्धलिय-उद्धूलित
 उप्पज्ज-उद्+पद् (धातुः)
 उप्पण्ण-उत्पन्न
 उप्पम-उपमा
 उप्परि-उपरि
 उप्पाड-उद्+पाटय् (धातुः)
 उप्पाडण-उत्पाटन
 उप्पाय-उत्पात
 उप्पेल्लिय-उत्प्रेरित
 उप्फाल-आ+स्फालय्, अथवा, उद्+पाटय्
 (धातुः)
 उप्फुल-उत्फुल्ल
 उब्भड-उद्भूत
 उब्भमिय-उद्भूमित (उद्भ्रान्त)
 उब्भव-उद्भव
 उब्भंत-उद्भ्रान्त
 उब्भि-उद्+भृ (धातुः)

उब्भिय-ऊर्ध्वीकृत
 उब्भुब्भ-ऊर्ध्व+ऊर्ध्व
 उब्भूय-उद्भूत
 उम्मुच्छिअ-उन्मूर्छित
 उम्मूलिय-उन्मूलित
 उयर-उदर
 उर-उरस्
 उरअ-उरग
 उरचूर-उरश्चर (उरगजातिः)
 उरयर-उरश्चर
 उरयल-उरस्तल
 उल-कुल (उत्तरपदे एव)
 उल्लल-उद्+लल् (शोभायां धातुः)
 उल्ललण-उल्ललन
 उल्ललिय-उल्ललित (विकीर्ण इत्यर्थः)
 उल्लिय-आर्द्रित (आर्द्र इत्यर्थः)
 उल्लोवय-उल्लोच(क) (वितानमित्यर्थः)
 उवएस-उपदेश
 उवगरण-उपकरण
 उवमा-उपमा
 उवयंठएस-उपकण्ठदेश (समीपप्रदेशः)
 उवयार-उपकार
 उवयार-उपचार
 उवयारिअ-उपकारिन्
 उवरि-उपरि
 उवरिल्ल-उपरितन
 उवरुवरि-उपर्युपरि
 उवरोह-उपरोध
 उवलक्खिय-उपलक्षित
 उववण-उपवन
 उववाय-उपपाद
 उववास-उपवास
 उवसम-उप+शम् (धातुः)
 उवसम-उपशम
 उवसंत-उपशान्त
 उवाअ-उपाय

उर्विद-उपेन्द्र (विष्णुः)
 उव्वर-उर्वर इत्यधिकार्ये (धातुः)
 उव्वरिय-उर्वरित
 उव्वेविर-उद्+वेपनशील
 उंजिय-ऊर्जित
 उंजु-ऊजु
 उंदुर-उन्दुर (मूषक इत्यर्थः)

ऊसर-ऊषर

एइंदिय-एकेन्द्रिय
 एक-एक
 एकइया-एकदा
 एकखंभ-एकस्तम्भ
 एकखुर-एकखुर
 एकठाण-एकस्थान
 एकभत्त-एकभक्त
 एकमेक-एकैक
 एत्तहिं-एतावति (काले)
 एत्थंतरी-अत्रान्तरे
 एत्थु-अत्र
 एत्तिअ-एतावत्
 एम-एवम्
 एयारह-एकादशन्
 एयारहमअ-एकादशमय
 एयारिस-एतादृश
 एरिस-ईदृश
 एवड-एतावत्
 एवहिं-एवम्
 एवं-एवम्
 एहावत्थ-एषा+अवस्था
 ओइण्ण-अवतीर्ण
 ओट्ट-ओष्ठ
 ओणाविय-अवनामित
 ओल-आर्द्र

ओली-आवलि
 ओल्लंघिय-उल्लंघित
 ओसह-औषध
 ओसारिअ-अपसारित
 ओसासित्त-अवश्याय+सित्त
 ओह-ओष

क-क (उदक)

क-क (मस्तक) १-१४-६

कइ-कवि

कइत्तण-कवित्व

कइमइ-कविमति

कइयइ-कविपति

कइयण-कविजन

कइया-कदा

कइराअ-कविराज

कइवइ-कविपति

कइवय-कतिपय

कउल-कौल (कापालिकः कुलाचार्य इत्यर्थः)

कउलउल-कौलकुल (कापालिकादिदुष्टधार्मिक-
 समूह इत्यर्थः)

ककस-कर्कश

कक्खड-कक्ष (लतावृक्षादिगुल्मः)

कक्ख-कर्कश

कचोल-पात्रविशेषे देशी (मराठी-कचोले)

कच्छव-कच्छप

कज्ज-कार्य

कजाणुराअ-कार्यानुराग

कट्ट-कष्ट, कष्टम्

कट्ट-काष्ठ

कट्टकम्म-काष्ठकर्मन्

कडक्ख-कटाक्ष

कडयडिय-कडकडित (विद्युच्छब्दानुकारः)

कडाह-कटाह

कडि-कटि

कडिल्ल-कटी+इल्ल (मत्वर्थीयः)

कडिसुत्तय-कडिसुत्तक (मेखला)
 कडुयसर-कटुक+स्वर
 कड्ड-कृष्णधात्वर्थे देशी
 कड्डिय-कट्ट (आकट्ट)
 कड्डिय-कट्ट
 कट-कथ् (धातुः)
 कटिण-कठिन
 कण-कण् (धातुः)
 कण-कण
 कणभर-कणभर (धान्यभार)
 कणय-कनक
 कणयमय-कनकमय
 कणिस-कणिश
 कण्ण-कर्ण (श्रोत्रेन्द्रिय)
 कण्ण-कर्ण (कुन्तीसुत)
 कण्णसूल-कर्णशूल
 कण्णान्त-कर्णान्त
 कण्णा-कन्या
 कण्हण्डण-कृष्ण+नन्दन
 कण्हपुत्त-कृष्णपुत्र
 कत्तार-कर्तृ
 कत्ति-कृत्ति (व्याघ्रादिचर्मैत्यर्थः)
 कत्तिय-कर्तित (भिन्न)
 कथकेस-कथकैशिक (जनपदनाम)
 कद्दम-कर्दम
 कप्प-कल्प (युग)
 कप्पड-कर्पट (वस्त्र)
 कप्पधारि-कल्पधारिन्
 कप्पविकस्व-कल्पवृक्ष
 कप्पधिव-कल्पाङ्घ्रि (कल्पवृक्ष)
 कप्पूर-कर्पूर
 कप्पूरफार-कर्पूरस्फार
 कम-क्रम् (धातुः)
 कम-क्रम (चरणमित्यर्थः)
 कमंडलु-कमण्डलु

कम्म-कर्मन्
 कम्मचंड-कर्मचण्ड
 कम्मपास-कर्मपाश
 कम्मबन्ध-कर्मबन्ध
 कम्ममल-कर्ममल
 कम्मविवाय-कर्मविपाक
 कम्मायत्त-कर्मायत्त
 कय-कृत
 कयणिच्छय-कृतनिश्चय
 कयपारण-कृतपारण
 कयपुलय-कृतपुलक (कृतरोमाश्चकञ्चुकं यथा
 स्यात्तथेति टिप्पणम्)
 कयरअ-कतर (क)
 कयली-कदली
 कयसंचारिय-कृतसंचारिका
 कयसंवर-कृतसंवर
 कयंजलि-कृताञ्जलि
 कयंत-कृतान्त
 कयायर-कृतादर
 कर-कृ (धातुः)
 कर-कर (किरण)
 कर-कर (हस्त)
 करग्ग-कराग्र
 करग्ग-करग्र (अङ्गुलि)
 करड-कठिन इत्यर्थे देशी
 करण-करण
 करयरंत-करकरत् (शङ्खानुकरणे देशी)
 करयल-करतल
 करवत्त-करपत्र (शस्त्रविशेषः)
 करबंद-करमर्द (फलविशेषः)
 करसंजोइअ-कर+संयोजित
 करह-करभ
 करहाड-करहाकट (कन्हाड)
 करंड-करण्ड (क)
 करंत-कुर्वत्
 करंति-कुर्वती

करंविअ-करम्बित

कराल-कडार (कपिल, चित्रवर्ण)

कराल-कराल (भीषण इत्यर्थे)

करावलि-करावलि (किरणजाल)

करि-करिन्

करिकर-करिकर (शुण्डा)

करिकरसमोरु-करिकरसम+ऊरु

करिणि-करिणी (हस्तिनी)

करितासण-करिन्+आसन

करिमिहुण-करिमिथुन

करिंद-करीन्द्र

करुण-करुणा

कलकलाअ-कलाकलाप (कलासमूह)

कलकोइल-कलकोकिल

कलत्त-कलत्त

कलभ-कलभ

कलयल-कलकल

कलयल-कलकलं कृ (धातुः)

कलरव-कल+रव

कलस-कलश

कलहेकसील-कलहेकशील

कलाव-कलाप

कलि-कलि (युगविशेषः)

कलिया-कलिका

कलिंगवड्-कलिङ्गरति

कलिगाहिअ-कलिङ्गाधिप

कलुण-करुण

कलुसभाव-कलुष+भाव

कलेवर-कलेवर

कलोह-कला+ओष (कलासमूह)

कलाण-कल्याण

कलाल-मद्यविक्रयिन् इत्यर्थे देशी

कल्लोल-कल्लोल

कवण-कोऽपि (कः पुनः)

कवल-कवल (ग्रास)

कवलिय-कवलित

कवाड-कपाट

कवाल-कपाल (मृद्भाजनखण्डः)

कवि-कवि

कविल-कुक्कुर इति टिप्पणम्

कविल-कपिल

कवोल-कपोल

कवोलवत्त-कपोलपत्र

कव्व-काव्य

कव्वत्थ-काव्यार्थ

कसण-कृष्ण (वर्ण)

कसमसत्ति-कृश+शक्ति (दुर्बल इत्यर्थः)

कसाय-कपाय

कह-कथ्य (धातुः)

कह-कथा

कहकहंत-शब्दानुकरणे देशी

कहा-कथा

कहाणअ-कथानक

कहिअ-कथित

कहिय-कथित

कहं-कथम्

कहंतर-कथान्तर

कंक-कङ्क (पक्षिविशेषः)

कंकण-कङ्कण

कंकाल-कङ्काल (शरीरास्थि)

कंकेलि-कंकेलि (अशोकवृक्षः)

कंख-काङ्क्ष (धातुः)

कंख-काङ्क्षा

कंखिर-काङ्क्षा+इर (शीलार्थः)

कंचण-काञ्चन

कंचाइणि-कात्यायनी (चण्डमारिदेवता)

कंची-काञ्ची

कंचीकलाव-काञ्चीकलाप

कंचुइ-कञ्चुक (स्त्रीणामुत्तरीयम्)

कंचुइ-कञ्चुकिन् (अन्तःपुरवृद्ध इति टिप्पणम्)

कंचुलिय-कञ्चुकाविशेष (मराठीः कांचोळी)

कंजिअ-काञ्जिक

कंटय-कण्टक
 कंटयतरु-कण्टकतरु
 कंड-काण्ड (बाण इत्यर्थः)
 कंड-काण्ड (धनुर्दण्ड इत्यर्थः)
 कंडू-कण्डू
 कंडाहिय-मथित इत्यर्थे देशी (मराठी-कांड-
 लेले)
 कंत-कान्त (पतिः)
 कंता-कान्ता
 कंतार-कान्तार
 कंति-कान्ति
 कंती-कान्ति
 कंद-कन्द (धातुः)
 कंदअ-कन्द (क)
 कंदर-कन्दर
 कंदल-कन्द+ल (स्वाथे)
 कंदुल्ल-कन्द+उल्ल (मत्वर्थीयः)
 कंदोट्ट-नीलोत्पल इत्यर्थे देशी
 कंप-कम्प (धातु)
 कंपत-कम्पमान
 कंपति-कम्पमाना
 कंपिय-कम्पित
 कंपल-कम्पल
 कंस-कंस (नामविशेषः)
 काउरिस-किम्+पुरुष (निन्द्य इत्यर्थः)
 काउल-काक
 काण-काण (अश्विकलः)
 काणण-कानन
 काणि-काणी (अश्विकला)
 काणीण-कानीन (कन्यकाजातः)
 काम-काम (मदन)
 कामगह-काम+ग्रह
 कामजर-कामज्वर
 कामाउर-कामातुर
 कामालस-काम+अलस
 कामिणि-कामिनी

कामिणिया-कामिनि(का)
 कामी-कामिन्
 कामुअ-कामुक
 काय-काय
 कायउल-काककुल
 कारण-कारण
 कारंड-कारण्ड (चक्रवाक)
 कारागार-कारा+अगार
 कारावय-कारय (धातुः)
 कारिम-कृत्रिम
 कारुण-कारुण्य
 काल-काल
 कालगोयर-कालगोचर (यमगोचर इत्यर्थः)
 कालाणल-कालानल
 कालावेक्खा-कालापेक्षा (कालावेक्खइ समये
 समये इत्यर्थः)
 कासवगोत्त-काश्यपगोत्र
 कासायपड-काषायपट
 काहल-काहल (वाद्यविशेषः)
 काहलियवंस-काहिलो गोपः तेन वाद्यमानः
 वंशः इति टिप्पणम्
 किअ-कृत
 किज्ज-कृधातोः कर्मणि
 किण्ह-कृष्ण
 कित्तण-कीर्तन
 कित्ति-कीर्ति
 कित्तिम-कृत्रिम
 किमं-किम्+इमं=किमिदम्
 किमि-क्रिमि
 किमिउल-किमिकुल
 किय-कृत
 किर-किल
 किरण-किरण
 किरणोह-किरणौष (किरणसमूह)
 किरिया-क्रिया
 किलिकिलि-किलि इति शब्दानुकरणम्

किलेस-क्लेश
 किवाण-कृपाण (खड्ग)
 किस-कृश
 किसलय-किसलय
 किह-कुत्र
 किंकर-किंकर
 किंकिणि-किङ्किणी
 किंनर-किन्नर
 कीर-कीर (शुक्र)
 कीर-कृधातोः कर्मणि
 कील-क्रीड् (धातु)
 कील-क्रीडा
 कीलण-क्रीडन (क्रीडा)
 कीलंत-क्रीडत्
 कीला-क्रीडा
 कीलाल-क्रीलाल (रक्त)
 कुकडत्तण-कुकवित्त्व
 कुकम्म-कुकर्मन्
 कुकलत्त-कुकलत्र
 कुक-कुक इति शब्दानुकरणे (धातुः)
 कुकुर-कू इति शब्दं कृ (धातुः)
 कुकुड-कुकुट
 कुकुडअ-कुकुट् (क)
 कुकुडिया-कुकुटि (का)
 कुकुरी-कुकुरी (शुनी)
 कुगुरु-कुगुरु
 कुन्डिल-कुक्षि
 कुजम्म-कुजन्मन्
 कुट्टण-कुट्टन
 कुट्ट-कुट्ट
 कुडिल-कुटिल
 कुडिलत्तण-कुटिलत्त्व
 कुडिहर-कुटीरुह
 कुडुंगण-लतागृहमित्यर्थे देशी
 कुडुंब-कुटुम्ब
 कुण-कृ (धातुः)

कुणत-कुर्वत्
 कुतक्क-कुतर्क
 कुत्थिय-कुत्थित (दृष्ट)
 कुदेव-कुदेव
 कुपत्त-कुपात्र
 कुप्पर-कूर्पर
 कुमग्ग-कुमार्ग
 कुमरी-कुमारी
 कुमार-कुमार
 कुमारिलभट्ट-कुमारिलभट्ट (नामविशेषः)
 कुम्म-कूर्म
 कुरंग-कुरङ्ग
 कुरंगी-कुरङ्गी
 कुरर-कुरर (पक्षिविशेषः)
 कुरुल-अलक (रचनाविशेषः)
 कुल-कुल
 कुलउत्ती-कुलपुत्री
 कुलउत्तिया-कुलपुत्रिका
 कुलगुरु-कुलगुरु
 कुलदेवय-कुलदेवता
 कुलदेवी-कुलदेवी
 कुलमग्ग-कुलमार्ग
 कुलमग्गचारि-कुलमार्गचारिन्
 कुलयर-कुलकर
 कुलिंग-कुलिङ्ग (दृष्टतापसादिः)
 कुलीर-कुलीर (जन्तुविशेषः)
 कुवलय-कुवलय
 कुवाड-कुवादिन् (अन्यान्यदर्शनप्रवर्तक
 इत्यर्थः)
 कुविवेय-कुविवेक
 कुसल-कुशल
 कुसलत्त-कुशलत्व (कुशलवृत्त)
 कुसंग-कुसङ्ग
 कुसुम-कुसुम
 कुसुमसर-कुसुमशर (मदन)
 कुसुमावलि-कुसुमावलि (राज्ञीनामविशेषः)

कुसुमिय-कुसुमित
 कुसुमोह-कुसुम+ओष (समूह)
 कुह-कुध् (धातुः)
 कुहर-कुहर
 कुहिणी-मार्ग इत्यर्थे देशी
 कुहिय-कुद्ध
 कुहिय-क्षुभित (व्याधिविशेष इत्यर्थः)
 कुकुग-कुङ्कुम
 कुकुमपिंड-कुङ्कुमपिण्ड
 कुचण-कुञ्चन (आकुञ्चन)
 कुंजर-कुञ्जर
 कुंठ-कुञ्ज
 कुंठ-कुण्ठ
 कुंड-कुण्ड
 कुंडल-कुण्डल
 कुंत-कुन्त (भल्ल)
 कुंतल-कुन्तल (केश)
 कुंथु-कुन्थु (सप्तदशतीर्थकरनाम)
 कुंथु-कुन्थु (अतिसूक्ष्मशरीरः प्राणिविशेषः)
 कुंथुपहुअंगि-कुन्थुप्रभृत्यङ्गे(कुन्थुप्रभृतिप्राणेषु)
 कूआरव-कू इति रव
 कूडायर-कूट+आदर
 कूर-कूर
 कूर-ओदनार्थे देशी
 कूल-कूल (तीर)
 कूव-कूप
 केउ-केतु (चिह्नं ध्वजो वा)
 केकार-केङ्कार (पक्षिणां शब्दविशेषः)
 केयइ-केतकी
 केयार-केदार
 केर-तस्येदमित्यर्थे षष्ठ्यन्तात्प्रत्ययः
 केरअ-तस्येदमित्यर्थे षष्ठ्यन्तात्प्रत्ययः
 केरी-तस्येदमित्यर्थे षष्ठ्यन्तात्प्रत्ययः
 केलिदण्ड-केलिदण्ड
 केवट्ट-कैवर्त
 केवल-केवल (ज्ञानविशेषः)

केवलणाण-केवलज्ञान
 केस-केश
 केसरि-केसरिन् (सिंह इत्यर्थः)
 केसव-केशव
 केसुम्भड-केश+उद्भट (भयंकर इत्यर्थः)
 कोअंड-कोदण्ड (धनुः)
 कोऊहल-कौतूहल
 कोकंत-को इतिशब्द कुवंत्
 कोडि-कोटि
 कोडि-कुक्कट (मराठी-कौवडी)
 कोडु-कौतुक इत्यर्थे देशी
 कोडुावण-कौतुककरण इत्यर्थे देशी
 कोडुावणिय-कौतुककारक इत्यर्थे देशी
 कोडि-कोटि
 कोडिणि-कुष्ठवती (कुष्ठरोगदूषिता)
 कोमल-कोमला
 कोल-कोल (वराह)
 कोलाहल-कोलाहल
 कोव-कोप
 कोवगि-कोपाधि
 कोवारुण-कोपारुण
 कोवीण-कौपीन
 कोसियकिमि-कोशित (कोशस्थित) + किमि
 कोह-कोष
 कोडिल-कौण्डिण्य (गोत्रविशेषः)

खअ-क्षय
 खगाविजा-खगविद्या (आकाशसंचारसामर्थ्य-
 मित्यर्थः)
 खगिंद-खगेद्र (गरुड)
 खग-खङ्ग
 खञ्जेल-प्राणिविशेष [?]
 खज्ज-खाद्धान्तः कर्मणि
 खण-खन् (धातुः)
 खण-क्षण (कालविशेषः)
 खणद्ध-क्षणार्ध

खणंतर-क्षणान्तर
 खण्णु-खननशील [!]
 खत्तधम्म-क्षत्रधर्म
 खत्तधर-क्षत्रधर (दोषेभ्यो निवर्तको राजा धर्म-
 धरो वा क्षत्रजातिरिति टिप्पणम्)
 खट्ठ-खादित
 खप्पर-कर्पर (कपालखण्ड)
 खम-क्षम् (धातुः)
 खम-क्षमा
 खमवह-क्षमावह, क्षमापथ
 खय-खग
 खय-क्षय
 खयकाल-क्षयकाल
 खयर-खचर
 खयरकुल-खचरकुल
 खयरूव-क्षयरूप
 खयंकर-क्षयंकर
 खर-खर (तीक्ष्ण)
 खर-क्षर
 खरकिरण-खरकिरण (सूर्य)
 खल-खल
 खलहल-खलखल इति जलप्रवाहशब्दानुकरणे
 (धातुः)
 खलि-खले (संबोधनेऽव्ययम्)
 खलिअ-खलित
 खवण-क्षपण
 खविअ-क्षपित
 खविय-क्षपित (पीडित इत्यर्थः)
 खंचण-खंचन (खचित)
 खंड-खण्ड (धातुः)
 खंड-खण्ड (पुष्पदन्तकवेर्नामान्तरम्)
 खंडिअ-खण्डित
 खंडिर-खण्डनशील
 खंत-क्षान्त
 खंति-क्षान्ति
 खंध-स्कन्ध

खंधार-स्कन्धावार
 खंधोह-स्कन्ध+ओष
 खंभ-स्तम्भ
 खा-खाद् (धातुः)
 खाअ-खाद् (धातुः)
 खार-क्षार
 खाणी-खनि
 खित्त-क्षित
 खीण-क्षीण
 खीर-क्षीर
 खुड्डय-धुलक
 खुज्ज-कुब्ज
 खुज्जय-कुब्ज(क)
 खुज्जिया-कुब्जिका (दासीत्यर्थः)
 खुज्जुल्लिय-कुब्जा+उल्ल+क (स्वार्थे)
 खुद्-क्षुद्र
 खुम्भ-धुम्भ
 खुर-खुर
 खुरूप-शस्त्रविशेष (मराठी-खुरपें)
 खुल्ल-धुल्ल
 खुल्लय-धुल्लक (मुनिजातिविशेषः)
 खुट-स्तम्भ इत्यर्थे देशी
 खुद्-क्षुद् (धातुः)
 खेत्त-क्षेत्र
 खेत्तवाल-क्षेत्रपाल
 खेम-क्षेम (लब्धस्य रक्षणम्)
 खेयरत्त-खेचरत्त (आकाशगमनसामर्थ्य-
 मित्यर्थः)
 खेयरियसत्ति-खेचरिक+शक्ति
 खेरि-वैरिन् इत्यर्थः [?]
 खेला-खेला (पुरुषनामविशेषः)
 खेलिर-क्रीडनशील
 खेलोसहि-खेल (क्लेड)+ओषधि
 खोणियल-क्षोणीतल
 खोणी-क्षोणी (भूमिरित्यर्थः)
 खोल्ल-गम्भीर इत्यर्थे देशी (मराठी-खोल)

गअ—गत
 गइ—गति
 गइठाण—गतिस्थान
 गउरविय—गौरवित
 गगिरगिर—गद्वद+गिर
 गच्छ—गम् (गच्छ) (धातुः)
 गच्छमाण—गच्छत्
 गच्छंत—गच्छत्
 गण—गणय् (धातुः)
 गण—गण (समूह)
 गत्त—गात्र
 गह्भ—गर्दभ
 गळभ—गर्भ
 गळभासअ—गर्भाशय
 गमण—गमन
 गमिअ—गमित, गत
 गय—गत
 गय—गज
 गयकाल—गतकाल
 गयण—गगन
 गयणयल—गगनतल
 गयणयलवडिअ—गगनतलपतित
 गयणंगण—गगनाङ्गण
 गयदप्प—गतदर्प
 गयमंदगमण—गजमन्दगमन
 गयवर—गजवर
 गरल—गरल
 गरलुल्ल—गरल+उल्ल (स्वार्थे)
 गरह—गर्ह (धातुः)
 गरुय—गुरु (क)
 गरुयपवास—गुरुप्रवास (दीर्घप्रवास)
 गरुहण—गर्हण
 गल—गल
 गलकंदल—गलकन्दल
 गलच्छिय—पीडित इत्यर्थे देशी; (कदर्थित !)
 गलय—गल(क) (कण्ठ)

गालिअ—गलित
 गालियअ—गलित(क)
 गळ्व—गर्व
 गह—ग्रह (धातुः)
 गह—ग्रह (ग्रहण, निरोध)
 गहचक्का—ग्रहचक्रा (प्रासादभूमिनामविशेषः)
 गहवड्—ग्रहपति
 गहण—ग्रहन
 गहण—ग्रहण
 गहणुल्लअ—ग्रहण+उल्लअ (स्वार्थे)
 गहिअ—ग्रहीत
 गहिर—गभीर
 गहीर—गभीर
 गंजोल्लिय—गुब्ब इत्यर्थे देशी (मराठी-गांजलेले)
 गंड—गण्ड (कपोलदेशः)
 गंडय—गण्ड (जलमहिष, मराठी-गेंडा)
 गंथ—ग्रन्थ
 गंध—गन्ध
 गंधजुत्त—गन्धयुक्त
 गंधवंत—गन्धवत्
 गंधव्व—गन्धर्व (कविनाम)
 गंधव्वलच्छी—गन्धर्वलक्ष्मी
 गंधव्वसेन—गन्धर्वसेन (नामविशेषः)
 गंधविसय—गन्धविषय (त्वगिन्द्रिय) (गन्धो विषयो यस्येन्द्रियस्येति टिप्पणम्)
 गंधहरिण—गन्धहरिण (कस्तूरिकामृग)
 गंभीर—गम्भीर
 गाइजंत—गीयमान
 गाढ—गाढ
 गाम—ग्राम
 गामंतर—ग्रामान्तर
 गाय—गै (धातुः)
 गायण—गायन
 गारव—गौरव
 गास—प्रास
 गाह—गाह (धातुः)

गाह्—ग्राह
 गाह्—ग्राह (स्नेहार्थे)
 गाहंत—गाहमान
 गिण्ह—ग्रह (धातुः)
 गिज्ज—गैधातोः कर्मणि
 गिज्ज—गेय
 गिज्झ—ग्राह्य
 गिरा—गिर
 गिरि—गिरि
 गिल—गिल् (धातुः)
 गिलण—गिलन (ग्रसन)
 गिलंत—गिलन
 गिल्लगंड—गिल (शिविकार्थे देशी) + गण्ड
 (शिविकावाहक इत्यर्थः)
 गिंभ—ग्रीष्म
 गिंभारि—ग्रीष्म + अरि (वर्षर्तुरित्यर्थः)
 गीअ—गीत
 गीय—गीत
 गीयसद्—गीतशब्द
 गुज्झ—गुह्य
 गुण—गुण
 गुणगाल—गुणार्गल
 गुणठाण—गुणस्थान
 गुणमेलअ—गुणमेलन (गुणसमूह)
 गुणमोयण—गुणमोचन
 गुणवंत—गुणवत्
 गुणसायर—गुणसागर
 गुणसिंधु—गुणसिन्धु
 गुणसेढि—गुणश्रेणि (अण० मिच्छ मीस इत्या-
 दीनि क्षपकश्रेण्युक्तानि गुणस्थानानीत्यर्थः)
 गुणहणणि—गुणहननी (गुणघातिकेत्यर्थः)
 गुणिय—गुणित (अभ्यस्त)
 गुत्तिय—सक्त इत्यर्थे देशी (मराठी—गुंतलेली)
 गुप्प—गुप् (धातुः)
 गुरु—गुरु

गुरुक्रमारूढ—गुरुक्रमारूढ (गुरुपरंपराप्राप्त
 इत्यर्थः)
 गुरुक्क—गुरु(क), (महदित्यर्थे)
 गुरुयण—गुरुजन
 गुलगुल—गजशब्दानुकरणे (धातुः)
 गुह्—गुहा
 गुल्ल—गुच्छ
 गुंजा—गुञ्जा (फल)
 गुंफ—गुल्फ
 गूढ—गूढ
 गेय—गेय (गीत)
 गेह्—गेह
 गो—गो
 गोउर—गोपुर
 गोउल—गोकुल
 गोत्त—गोत्र
 गोदाण—गोदान
 गोदुह्—गोदोह
 गोमिणि—गोमिनी
 गोवइय—गोपति (क)
 गोवड्डण—गोवर्धन (श्रेष्ठिनाम)
 गोवाल—गोपाल
 गोवि—गोपी
 गोविट्ठिणिविट्ठ—गोविष्टिनिविष्ट (गोष्ठीनि-
 विष्ट ?)
 गोसिंग—गोशुङ्ग
 गोसुय—गोसुत
 गोसुंड—गो+शुण्डा
 गोह—पुरुष इत्यर्थे देशी
 गोह—गोधा (प्राणिविशेषः)
 गोहय—गोधा
 गोहण—गोधन
 घग्घरा—किङ्किणीशब्दार्थे देशी(मराठी-घागन्या)
 घग्घरोली—घग्घर+ओली (किङ्किणीपङ्क्तिः)

घट्टण-घट्टन (संसर्ग)
 घट्ट-घृष्ट
 घट-घटय् (धातुः)
 घड-घट
 घडिअ-घटित
 घण-घन (निबिड)
 घण-घन- (मेघ)
 घम्मवारि-घर्मवारि (स्वेदजलमित्यर्थः)
 घय-घृत
 घर-गृह
 घरत्थ-गृहस्थ
 घरदार-गृह+दार (कलत्र)
 घरदासि-गृहदासी
 घरभार-गृहभार
 घरलंजिया-गृहदासीत्यर्थे देशी
 घरवइ-गृहपति
 घरिणी-गृहिणी
 घल्ल-प्र+क्षिप् इत्यर्थे देशी (धातुः)
 घल्लिअ-क्षिप्त इत्यर्थे देशी
 घबघव-गन्धप्रसरणे देशी (धातुः)
 घंघल-कलहार्ये देशी
 घाअ-घात
 घाइअ-घातित
 घाण-घ्राण
 घार-गृध्रजातीयः पक्षिविशेषः
 घित्त-क्षिप्त, गृहीत इत्यर्थे देशी
 घित्तअ-क्षिप्त (क)
 घिप्प-ग्रहधात्वर्थे देशी
 घिव-क्षिप् इत्यर्थे देशी (धातुः)
 घुग्घुस-घू घू इति शब्दकरणशील
 घुट्ट-घुट्ट इति पानशब्दानुकरणे (धातुः)
 घुठ-घुष्ट
 घुम्म-धूतने देशी (धातुः) (मराठी-घुमणें)
 घुरुहुरंत-घुरुघुरुशब्दं कुर्वत्
 घुलिय-घुलित (चञ्चल इत्यर्थः)
 घुसिण-घुसण

घूय-घृक
 घोड-घोट (अश्व इत्यर्थः । मराठी-घोडा)
 घोणस-गोनस (सरीसृपविशेषः)
 घोर-घोर
 घोलंत-घोलत् (भ्रमन्नित्यर्थः)
 घोलिर-घोलनशील (लुण्ठनशील इत्यर्थः)
 घोस-गुच्छार्थे देशी (मराठी-घोस)
 घोस-घोष (शब्द)

चउ-चतुर्
 चउकसाय-चतुष्कपाय
 चउगइ-चतुर्गति
 चउत्थी-चतुर्थी
 चउदस-चतुर्दशन्
 चउदार-चतुर्द्वार
 चउप्पअ-चतुष्पद
 चउप्पय-चतुष्पद
 चउपास-चतुष्पाश
 चउभेय-चतुर्भेद
 चउरय-चक्रप (चक्रवाक !)
 चउरासी-चतुरशीति
 चउरि-लग्नमण्डप इत्यर्थे देशी (गुजराथी-चोरी)
 चउविह-चतुर्विध
 चउसण्णा-चतुःसंज्ञा
 चक्क-चक्र
 चक्कणाह-चक्रनाथ
 चक्कवट्टि-चक्रवर्तिन्
 चक्ख-आस्वादने देशी (धातुः)
 चक्खु-चक्षुप्
 चक्खुगम्म-चक्षुर्गम्य
 चच्चक्रिय-चर्चित
 चच्चर-चत्वर (चतुष्पथ)
 चच्चिअ-चर्चित
 चच्चिक्रिय-चर्चित (लिप्त इत्यर्थः)
 चच्चिय-चर्चित

चट्टण-नाशक (भक्षक) इत्यर्थे देशी
 चट्टय-उत्पूत इत्यर्थे देशी (!)
 चट्टुय-यष्टी इत्यर्थे देशी
 चट्टुयफल-यष्ट्यग्रनिहितलोहमयाङ्कुश इत्यर्थः
 चड-आ+रुह् इत्यर्थे देशी (धातुः)
 चडाविय-आरोहित इत्यर्थे देशी
 चडिर-आरोहणशील
 चत्त-त्यक्त
 चत्तअ-त्यक्त (क)
 चत्तारि-चतुर्
 चप्प-पीडने देशी (धातुः)
 चप्पड-तैलाभ्यङ्गे देशी (धातुः)
 चप्परि-सत्वरम्
 चमक्क-चमत्कार
 चमर-चमर (पुच्छ)
 चमर-चामर
 चमराणिल-चामरानिल
 चम्म-चर्मन्
 चम्मचक्खु-चर्मचक्षुप्
 चम्मट्टिसेस-चर्मास्थिशेष
 चय-त्यज् (धातुः)
 चयारि-चत्वारि
 चर-चर् (धातुः)
 चरण-चरण (पद)
 चरण-चरण (व्रताद्यनुष्ठानम्)
 चरणजुयल-चरणयुगल
 चरंत-चरत्
 चरित्त-चरित, चारित्र
 चरिय-चारित्र, चरित
 चरु-चरु
 चरुअ-चरु (क) (नैवेद्य इत्यर्थः)
 चल-चल् (धातुः)
 चल-चल
 चलचामर-चलच्चामर
 चलण-चरण (पद)

चलवल-धूनने (धातुः)
 चलिअ-चलित
 चलिय-चलित
 चलियअ-चलित (क)
 चल्ल-चल् (धातुः)
 चल्लिय-चलित
 चव-वच्धात्वर्थे देशी
 चवल-चपल
 चविअ-उक्त, जल्पित
 चंग-सुन्दरार्थे देशी
 चंचल-चञ्चल
 चंचु-चञ्चू
 चंचूजीविअ-चञ्चूजीविक (पक्षीत्यर्थः)
 चंड-चण्ड
 चंडमारी-चण्डमारी (कात्यायनी)
 चंडयम्म-चण्डकर्मन् (राजपुरुषनामविशेषः)
 चंडाल-चाण्डाल
 चंडियसमाण-चण्डीसमान (देवीतुल्य)
 चंद-चन्द्र
 चंदण-चन्दन
 चंदप्पह-चन्द्रप्रभ (अष्टमतीर्थकरनाम)
 चंदमइ-चन्द्रवती, अथवा, चन्द्रमति
 (यशोधरजननीनाम)
 चंदमुही-चन्द्रमुखी
 चंदसिरि-चन्द्रश्री
 चंदायण-चान्द्रायण (तपोविशेषः)
 चंदावहत्त-चन्द्राभवक्त्र (पूर्णिमाचन्द्रसदृश-
 वदनयुक्तः । अथवा, चन्द्रः अधोवृत्तो यस्य;
 अष्टमतीर्थकरस्य चन्द्रचिह्नत्वात्)
 चंदुज्जल-चन्द्रोज्ज्वल
 चंप-पीडने देशी (धातुः)
 चंपय-चम्पक
 चाअ-त्याग (औदार्य)
 चामर-चामर
 चामीयर-चामीकर
 चामुंडचंड-चामुण्डचण्ड (भयंकर इत्यर्थः)

चाय-त्याग
 चायय-चातक (पक्षिविशेषः)
 चारण-चारण
 चारित्त-चारित्र
 चारु-चारु
 चालुय-चालन्या शोधित इत्यर्थे देशी (मराठी-
 चाळलेले)
 चालण-चालन
 चास-चाष (पक्षिविशेषः)
 चि-चित् (अवधारणे एवार्थेऽव्ययम्)
 चिक्रम-चक्रम् (धातुः)
 चिकिखल-कर्दमार्ये देशी
 चिच्चि-अभिज्ञादर्थे देशी
 चिण्ण-चीर्ण
 चित्त-चित्र (आश्चर्येऽव्ययम्)
 चित्त-चित्त
 चित्तय-व्याप्रजातिविशेषः (मराठी-चित्ता)
 चित्तल-चित्रल (चित्रित इत्यर्थः)
 चित्तसेण-चित्रसेन
 चित्तंगअ-चित्रंगत
 चितुवलक्ख-चित्त+उपलक्ष
 चिया-चिता
 चिर-चिरम्
 चिरजीविन्-चिरजीविन्
 चिरजीविअ-चिरजीवित
 चिरणर-चिरनर (पुराणपुरुष इत्यर्थः)
 चिराउस-चिरायुष्
 चिराण-चिरंतन
 चिरु-चिरम्
 चिलाय-किरात
 चिलिसावण-जुगुप्साकर इत्यर्थे देशी
 (मराठी-चिलसवाणे)
 चिहुर-चिकुर (केश)
 चिहुरभार-चिकुरभार
 चिंचइय-चर्चित (भूषित इत्यर्थः)
 चित्त-चिन्तय (धातुः)

चिंध-चिह्न (केतुः ध्वजादिकं वा)
 चिंध-वखखण्डमित्यर्थे देशी (मराठी-चिंधी)
 चीर-चीर (वस्त्र)
 चीरखंड-चीरखण्ड
 चीरिया-चीरिका (मराठी-चिरडी)
 चीवर-चीवर
 चुअ-च्युत
 चुक्क-भ्रंश् इत्यर्थे देशी (धातुः)
 चुण-भक्षणे देशी (धातुः) (पक्षिणां भक्षणे
 एव युज्यते)
 चुमुचुम-कीरशद्धानुकरणे (धातुः)
 चुंव-चुम्भ (धातुः)
 चुवण-चुम्बन
 चुवंत-चुम्बत्
 चुंबिअ-चुम्बित
 चूडामणि-चूडामणि
 चूडारयण-चूडारत्न
 चूय-चूत
 चूरिय-चूर्ण
 चूलि-कुक्करी
 चे-मृ इत्यर्थे देशी (धातुः) (चेइवि=मृत्वा)
 चेईहर-चैत्यगृह
 चैयण-चेतन
 चैयणाल-चेतना+आल (मत्वर्थीयः)
 चेल-चेल (वस्त्र)
 चेलिय-चेटी
 चेली-चीरी (वस्त्र)
 चोज्ज-कौतूहलार्थे देशी
 चोप्पड-प्रक्षणे देशी (धातुः)
 चोर-चोर
 चोरउल-चोरकुल
 छ-षट्
 छइय-छादित, शोभित
 छज्ज-शोभायां देशी (धातुः)
 छज्जीवणिकाय-षड्जीवणिकाय (पृथिव्यप्ते-

जोवायुत्रसवनस्पतिकायाः)

छट्ट-षष्ठ

छडय-उपलेप इत्यर्थे देशी (गोमयादिभिः

प्राङ्गणादिकस्योपलेपः । मराठी-सडा)

छडया-छटा

छडु-त्यज्धात्वर्थे देशी

छण-क्षण

छणयंद-क्षण+चन्द्र (पूर्णिमाचन्द्र इत्यर्थः)

छण्ण-छन्न (आच्छादित)

छत्त-छत्र

छत्तछाय-छत्र+छाया

छहंसण-पङ्दर्शन (सांख्ययोगन्यायवैशेषिक-

पूर्वोत्तरमीमांसारूपाणि)

छप्पय-षट्पद (मधुकरो धूर्तश्चेति टिप्पणम्)

छम्म-छन्न

छल-छल (मिष)

छंगुलिमिअ-पङ्गुलिमित

छड-त्यज्धात्वर्थे देशी

छंद-छन्द (अभिप्रायविशेषः)

छंद-छन्दः (शास्त्र)

छाइअ-छादित

छाइय-छादित

छाय-छादय् (धातुः)

छार-क्षार (भस्मेत्यर्थः)

छाली-छागी (अजा)

छाव-शाव (वत्स)

छाहा-छाया

छाही-छाया

छिज्ज-छिद्धातोः कर्मणि

छिज्जंतर-छेद्यान्तर (कलास्वन्यतमा)

छिण्ण-छिन्न

छिण्णंगुलि-छिन्नाङ्गुलि

छित्त-क्षेत्र

छित्त-स्पृष्ट (छिद्धातोर्निष्ठान्तम् !)

छिद्-छिद्र

छिप-स्पृष्टात्वर्थे देशी

छिव-स्पृष्टात्वर्थे देशी

छिद्-छिद् (धातुः)

छिदण-छेदन

छुडु-क्षिप्रमित्यर्थेऽव्ययम् (देशी)

छुरिय-छुरित

छुह-क्षुध्

छुह-सुधा (चूर्ण)

छुहा-सुधा (चूर्ण)

छुहावस-क्षुद्रश्च

छूढ-क्षित

छेअ-छेद

छेत्त-क्षेत्र

छेयण-छेदन

छेल-छाग (अज)

छेवि-छित्वा

छोक्करण-छूत्कार (उड्डापनशब्द इति टिप्पणम्)

छोहिय-क्षोभित

जइ-यदि

जइ-यति

जइयहु-यदा

जइवइ-यतिपति

जइवर-यतिवर

जक्ख-यक्ष

जक्खिखद्-यक्षेन्द्र

जक्खी-यक्षी (यक्षिणी)

जग-जगत्

जगजीव-जगजीव

जगपरमेसर-जगत्परमेश्वर

जगमंडव-जगन्मण्डप

जगुत्तम-जगदुत्तम

जगरवि-जगद्रवि

जच्चंध-जात्यन्ध

जज्जर-जर्जर

जज्जरिय-जर्जरित

जड-जटा

जड-जड
 जडत्तण-जडत्व
 जडा-जटा
 जडिय-जडित (युक्त इत्यर्थः)
 जढराणल-जठर+अनल
 जण-जन
 जणण-जनन
 जणणी-जननी
 जणणुल्ल-जनन+उल्ल (स्वार्थे)
 जणात्तिहर-जनार्तिहर
 जणवअ-जनपद
 जणवय-जनपद
 जणु-इवार्थेऽव्ययम्
 जण्ण-यज्ञ
 जत्त-यात्रा
 जत्ता-यात्रा
 जत्थ-यत्र
 जम-यम (नियम)
 जम-यम (मृत्युदेव)
 जमदूअ-यमदूत
 जमसासण-यमशासन
 जम्म-जन्मन्
 जय-जगत्
 जय-जयकारशब्द
 जय-जि (धातुः)
 जयकारिअ-जयकारित
 जयलच्छि-जयलक्ष्मी
 जयसिरी-जयश्री
 जर-जरा
 जरदासी-जरा (एव) दासी
 जरमरण-जरामरण
 जरसरि-जरा (एव) सरित्
 जल-जल
 जल-ज्वल् (धातुः)
 जलण-ज्वलन
 जलणिहि-जलनिधि

जलयर-जलचर
 जलवइ-जलमति (मकर इत्यर्थः)
 जलहर-जलधर
 जलहि-जलधि
 जालिय-ज्वलित
 जलोह-जल+ओघ (जलसमूह)
 जल्ल-मल इत्यर्थे देशी
 जल्लोसहि-जल्ल (एव) ओषधि
 जव-जप् (धातुः)
 जवालअ-जव+आलअ (मत्वर्थीयः)
 जस-यशस्
 जसपूरियास-यशःपूरिताश (दिगन्तव्यापि-
 यशाः इत्यर्थः)
 जसबंधुर-यशोबन्धुर (राज्ञो नामविशेषः)
 जसमइ-यशोमति (यशोधरपुत्रस्य नाम)
 जसवइ-यशोमति (यशोधरपुत्रस्य नामान्तरम्)
 जससेस-यशःशेष (सकलमपि भुवनस्थं यश
 इत्यर्थः)
 जसहर-यशोधर
 जसहरक्ख-यशोधराख्य
 जसोह-यशोर्ह, यशोर्ध, यशओघ इति वा
 (यशोधरपितुर्नाम)
 जह-यथा
 जहि-यत्र
 जंगल-जाङ्गल (मांस)
 जंगलय-जाङ्गल (क)
 जंघा-जङ्घा
 जंघावल-जङ्घावल
 जंत-यात्
 जंप-जल्प् (धातुः)
 जंपति-जल्पन्ती
 जंपाण-यानविशेषे देशी
 जंबुदीव-जम्बूद्वीप
 जंबूणय-जाम्बूनद (सुवर्ण)
 जा-या (धातुः)
 जाअ-जात

जाइ-जाति
 जाण-ज्ञा (धातुः)
 जाण-यान
 जाणवत्त-यानपात्र
 जाणिय-ज्ञात (प्रसिद्ध इत्यर्थः)
 जाणु-जानु
 जाणुय-जानु (क)
 जाम-यावत्
 जायअ-याचक
 जार-जार (उपपत्ति)
 जारासत्त-जारासक्त
 जाल-जाल
 जाल-जाल (समूहार्थे समासान्ते एव)
 जाल-ज्वाल्य (धातुः)
 जाल-ज्वाला
 जालगवक्ख-जालगवाक्ष
 जालंधर-जालंधर (धीवर इत्यर्थः)
 जाव-यावत्
 जि-चित् (अवधारणे एवार्थेऽव्ययम्)
 जिअ-जीव
 जिज्ज-याधातोः कर्मणि (यायते, याप्यते
 इत्यर्थे)
 जिण-जिन
 जिणदिक्खा-जिनदीक्षा
 जिणधम्म-जिनधर्म
 जिणमग्ग-जिनमार्ग
 जिणमंदिर-जिनमन्दिर
 जिणयत्त-जिनदत्त
 जिणवयण-जिनवचन
 जिणवर-जिनवर
 जिणसुत्त-जिनसूक्त, जिनसूत्र (जिनभाषित-
 मित्यर्थः)
 जिणियसत्तु-जितशत्रु
 जिणुत्त-जिनोक्त
 जिप्प-जिधातोः कर्मणि
 जिमिअ-जेमित (भुक्त)

जिमिय-जेमित (भुक्त)
 जिम्म-भुज्धात्वर्थे देशी
 जिय-जित
 जिय-जीव (धातुः)
 जियसत्तु-जितशत्रु
 जियारि-जितारि
 जिह-यत्र
 जीअ-जीव
 जीर-जीरक (मराठी-जिरे)
 जीरवण-जीरण (पाचन इत्यर्थे)
 जीव-जीव
 जीवउल-जीवकुल
 जीवकण-जीवकृते
 जीवदया-जीवदया
 जीवंत-जीवत्
 जीवमित्ती-जीवमैत्री
 जीवरासि-जीवराशि
 जीवसहाअ-जीवस्वभाव
 जीवहिंस-जीवहिंसा
 जीवावहारी-जीवापहारिन्
 जीवाहार-जीवाहार
 जीविअ-जीवित
 जीह-जिह्वा
 जीहादल-जिह्वादल
 जुअ-युत
 जुइजुत्तिय-युतियुक्त
 जुज्ज-युज्धातोः कर्मणि
 जुज्झिर-योधनशील
 जुत्त-युक्त
 जुत्ति-युक्ति
 जुण्ण-जीर्ण
 जुय-युग
 जुयल-युगल
 जुयल्ल-युगल+उल्ल (स्वार्थे)
 जुव-युग
 जुवई-युवति

जुवरायपट्ट-युवराजपट्ट
 जुवाण-युवन्
 जुहिट्टिल-युधिष्ठिर
 जूरिअ-खेदित इत्यर्थे देशी
 जूह-यूथ
 जूहाहिअ-यूथाधिप
 जूहिंद-यूथेन्द्र
 जूहेस-यूथेश
 जेत्तहिं-यत्र, यावति
 जेत्थ-यत्र
 जेत्थु-यत्र
 जेम-यथा
 जेवणवेल-जेमन (भोजन)+वेला
 जोअ-योग (अलब्धस्य लाभ इत्यर्थः)
 जोइ-योगिन्
 जोइणि-योगिनी
 जोइणिपुज्ज-योगिनीपूजा
 जोइणिपुर-योगिनीपुर (नगरनाम)
 जोइस-ज्यौतिष (शास्त्र)
 जोईस-योगीश
 जोईसर-योगीश्वर
 जोगवट्ट-योगपट्ट
 जोग्ग-योग्य
 जोणी-योनि (प्रभव)
 जोण्ह-ज्योत्स्ना
 जोण्हा-ज्योत्स्ना
 जोय-अवलोकने देशी (धातुः)
 जोव्वण-यौवन
 जोह-योध
 जोहेयअ-यौधेय(क) (जनपदनामविशेषः)

झडत्ति-झटिति
 झडप्पण-आक्रमणार्थे देशी (मराठी-झडप)
 झड-विद्रावणे देशी (धातुः)
 झत्ति-झटिति
 झरंत-क्षरत

झल-उष्मा इत्यर्थे देशी (मराठी-झळ)
 झल्लिर-धारायुक्त इत्यर्थे देशी
 झस-झष (मत्स्य)
 झस-झष (आयुधविशेष)
 " झळक-कयुधात्वर्थे देशी
 झंकार-झङ्कार
 झंख-आच्छादने देशी (धातुः)
 झंप-आच्छादने देशी (धातुः)
 झंपडिय-मुक्तविरल इत्यर्थे देशी (मुक्तविरल
 इति टिप्पणम्)
 झा-ध्वै (धातुः)
 झाइय-ध्यात
 झाण-ध्यान
 झाणारूढ-ध्यानारूढ
 झाय-ध्वै (धातुः)
 झिल्लिरि-झिल्लिरी (प्राणिविशेष)
 झीण-क्षीण
 झुण-ध्वन् (धातुः)
 झुणि-ध्वनि
 झुलंत-वेपमान इत्यर्थे देशी (मराठी-झुलणें)
 झूर-खेदे देशी (धातुः) (मराठी-झुरणें)

टिविल-वाद्यविशेष
 टोप्पी-शिरआच्छादने देशी (मराठी-टोपी)

ठक्कुर-ठक्कुर (वंशनाम)
 ठव-स्थापय (धातुः)
 ठा-स्था (धातुः)
 ठाण-स्थान
 ठिअ-स्थित
 ठिय-स्थित

डज्झ-दह (धातुः)
 डर-भये देशी (धातुः)
 डस्-दश (धातुः)
 डसण-दशन

डह-दह (धातुः)
 डह-दहर (बाल इत्यर्थः)
 डंभ-दम्भ
 डंभधारि-दम्भधारिन्
 डंस-दश (धातुः)
 डाइणि-डाकिनी (प्रेतपिशाचादिस्त्रीविशेषः)
 डिडिम-डिण्डिम (वाद्यविशेषः)
 डिंभ-डिम्भ (शिशु, बालक)
 डिंभय-डिम्भ (क)
 डुल्ल-धूनने देशी (धातुः)
 डोर-सूत्र इत्यर्थे देशी (मराठी-दोर)
 डोल्ल-धूनने देशी
 डोंब-चाण्डालजातिविशेष

ढक्का-ढक्का (वाद्यविशेष)
 ढङ्गुर-राक्षसप्रेतपिशाचादय इति टिप्पणम्
 दुंख-शुष्क इत्यर्थे देशी (पत्रपुष्पफलादि-
 रहित इत्यर्थे)
 ढिड्डिस-पिष्ट (धान्यादीनां पिष्टमिति टिप्पणम्)
 दुक्क-दौकित (प्रसृत इत्यर्थे देशी)
 ढेक्कर-वृषभशङ्खानुकारशब्दः (मराठी-ढेकर)
 दोअ-दौक्य (धातुः)
 दोइय-दौकित

ण-न (निषेधेऽव्ययम्)
 णअ-नय
 णइ-नदी
 णइतीर-नदीतीर
 णइवाह-नदीप्रवाह
 णउल-नकुल
 णक्क-नासाशङ्खार्थे देशी (मराठी-नाक)
 णक्ख-नख
 णग्ग-नम
 णग्गी-नम
 णग्गुडि-चारणादिबान्दिवर्ग इत्यर्थे देशी (भट्ट-

भाट ? इति टिप्पणम्) १-२७-१.

णग्गोह-न्यग्रोध
 णच्च-वृत् (धातुः)
 णच्चण-नर्तन
 णच्चंत-वृत्यत्
 णच्चावय-नर्तय (धातुः)
 णच्चिय-नर्तित
 णज्ज-ज्ञा (धातुः)
 णट्ट-नाटय
 णट्ट-नष्ट
 णड-नट
 णडिअ-वञ्चित इत्यर्थे देशी
 णण-नन्न (नन्द !) (भरतमहामन्त्रिणः
 पुत्रः)
 णण-न+अन्य
 णत्ति-नञ्ची
 णत्थि-न + अस्ति
 णमि-नमि (एकविंशतीर्थकरनाम)
 णमिय-नमित
 णय-नत
 णय-नय (नीतिशास्त्र)
 णय-नय (राजपुत्रनामाविशेषः)
 णयण-नयन
 णयणंजण-नयनाञ्जन
 णयणंसु-नयन + अश्रु
 णयणिट्ट-नयन + इष्ट
 णयणुल्ल-नयन + उल्ल (स्वार्थे)
 णयर-नगर
 णयरी-नगरी
 णयरोह-नय + रोध (दुर्नय इत्यर्थः)
 णयाणय-नय + अनय
 णर-नर
 णरअ-नरक
 णरजम्म-नरजन्मन्
 णरणाह-नरनाथ
 णरत्थ-नर + अर्थ

णरय-नरक

णरयबिल-नरकबिल (छिद्र)

णरवइ-नरपति

णरवर-नरवर

णरवरिंद-नरवरेन्द्र

णरिंद-नरेन्द्र

णल-नल

णरंग-नराङ्ग

णव-नम् (धातुः)

णव-नव

णवकमल-नव + कमल

णवखंड-नव + खण्ड

णवपल्लव-नवपल्लव

णवयारिवि-नमस्कृत्य, १-२७-१०.

णवल्ल-नव + ल (स्वार्थे)

णवविह-नवविध

णविअ-नत

णविय-नत

णह-नख

णह-नभस्

णह्यर-नभश्चर

णहंत-नभस् + अन्त

णहयल-नभस्तल

णहर-नखर (नख)

णहसिरि-नभःश्री

णहुस-नहुष

णहोयरंत-नभस् + अवतरत्

णं-ननु

णंद-नन्द (धातुः)

णंद-नन्द (आनन्द)

णंदण-नन्दन

णंदणवण-नन्दनवन

णंदंत-नन्दत्

णंदिणि-नन्दिनी (धेनुः)

णंदिय-नन्दित

णा-ज्ञा (धातुः)

णाअ-न्याय

णाइ-ननु इत्यर्थे (उत्प्रेक्षायाम् अव्ययम्)

णाइणि-नागिनी

णाइंद-नागेन्द्र

णागदत्त-नागदत्त (नामविशेषः)

णागय-न + आगत

णाडिवह-नाडीपथ

णाण-ज्ञान

णाणमअ-ज्ञानमय

णाणा-नाना

णाणागुण-नानागुण

णाणाविह-नानाविध

णाम-नामन्

णारय-नारक (नरकोद्भव इत्यर्थः)

णारिसंग-नारीसंग

णारी-नारी

णारीरूव-नारीरूप

णावइ-उपमार्थे उत्प्रेक्षार्थे वाध्ययम्

णावइ-न + आगच्छति

णाव-न + आप् (धातुः)

णास-नश् (धातुः)

णास-नाश

णास-नाशय् (धातुः)

णासा-नासा

णासउडि-नासापुटी

णाह-नाथ

णाहल-अरण्यचाण्डाल इत्यर्थे देशी

णाहि-नाभि

णिउत्त-नियुक्त

णिउणयर-निपुणतर

णिउंजिय-नियुक्त

णिए-अवलोकने देशी (धातुः)

णिकाय-निकाय (समूह)

णिकेय-निकेत (रह)

णिकल-निष्कल (निःशरीर इति टिप्पणम्)

णिकलुण-निष्करण

णिक्काम-णिक्काम
 णिक्किअ-णिक्कुप
 णिक्किट्ठ-निकुट्ट (नीच)
 णिक्किट्ठअ-निकुट्ट (क)
 णिक्खिय-निखात
 णिक्खिय-निक्षिप्त
 णिग्गम-निर्गम
 णिग्गमण-निर्गमन
 णिग्गयमइ-निर्गतमति
 णिग्गह-निग्रह
 णिग्गह-नि + ग्रह (धातुः)
 णिग्गंत-निर्गच्छत्
 णिग्गंथवित्ति-निर्ग्रन्थवृत्ति
 णिग्गुण-निर्गुण
 णिग्घण-निर्घृण
 णिच्च-नित्य
 णिच्चं-नित्यम् (अव्ययम्)
 निच्चल-निश्चल
 निच्चलमइ-निश्चलमति
 निच्चिट्ठ-निश्चेष्ट
 निच्चैयण-निश्चेतन
 निच्चोरमारि-निस्+चोर+मारी (जनपदोद्ध्वं-
 सनो रोगादिः)
 निच्छअ-निश्चय
 निच्छवि-निश्चवि (निस्तेजस्)
 निज्ज-नीधातोः कर्मणि
 निज्जण-निर्जन
 निज्जर-निर्जर
 निज्जिय-निर्जित
 निज्जियमइय-निर्जितमति (क)
 निज्जीव-निर्जीव
 निज्झर-निर्झर
 निट्ठा-निष्ठा
 निट्ठावस-निष्ठावश
 निट्ठिय-निष्ठित (समाप्त, मृत)
 निट्ठुर-निष्ठुर

णिड्डह-निर्दह (धातुः)
 णिणह-निनाद
 णिणाअ-निनाद
 णिणाइय-निनादित
 णिण्णाण-निर्ज्ञान (अज्ञान)
 णिण्णाम-निर्नाम (अज्ञातनामा)
 णिण्णासण-निर्नाशन
 णिण्णेह-निःस्नेह
 णित्त-नीत, (प्राप्त) (नीधातोर्निष्ठान्तम्)
 णित्तेय-निस्तेजस्
 णित्थाम-निःस्थामन्
 णिह-निद्रा
 णिहय-निर्दय
 णिहलिय-निर्दलित
 णिहिट्ठ-निर्दिष्ट
 णिद्ध-स्निग्ध
 णिद्धण-निर्धन
 णिद्धम्म-निर्धर्म
 णिद्धाड-प्रेरणे देशी (धातुः)
 णिद्धाम-निर्धामन्
 णिप्पहरण-निष्प्रहरण
 णिप्पाण-निष्पाण
 णिप्पेय-निष्पेय
 णिप्फल-निष्फल
 णिबद्ध-निबद्ध
 णिबद्धी-निबद्धा (विराचितेत्यर्थः)
 णिबन्ध-निबन्ध (निबन्धन)
 णिब्बन्धु-निर्बन्धु
 णिब्बुड-निस्+मस्ज्धात्वर्थे देशी
 णिब्भच्छिय-निर्भस्सित
 णिब्भण्ण-निर्भिन्न
 णिब्भोइल्ल-निर्+भोग+इल्ल (मत्वर्थीयः)
 णिमीलण-निमीलन
 णिमेस-निमेष
 णिम्मल-निर्मल
 णिम्मलय-निर्मल (क)

णिम्मंसं-निर्मास
 णिम्महण-निमथन
 णिम्मा-निर्+मा (धातुः)
 णिम्मुक्क-निर्मुक्त
 णिम्मुक्कताण-निर्मुक्तत्राण
 णिम्मोह-निर्मोह
 णिय-अवलोकने देशी (धातुः)
 णिय-निज
 णिय-नीत
 णियघर-निजगृह
 णियच्छ-दृशधात्वर्थे देशी
 णियच्छिय-निरीक्षित
 णियडअ-निकट(क)
 णियडिय-निकर्तित
 णियम-नियम
 णियमण-निजमनस
 णियय-निज(क)
 णिययसिरि-निजक+श्री
 णियर-निकर
 णियाण-निदान
 णिरअ-निरत
 णिरलंकार-निरलंकार
 णिरवसेस-निरवशेष
 णिरस-नीरस
 णिरसिय-निरसित (पारित्यक्त)
 णिरत्थ-निरर्थ (व्यर्थ)
 णिरत्थ-निरस्त
 णिरंजण-निरञ्जन
 णिरंतर-निरन्तर
 णिरंस-निरंश (अखण्ड इत्यर्थः)
 णिरिक्खिअ-निरीक्षित
 णिरु-नितराम्
 णिरुत्त-निरुक्त
 णिरुवम-निरुपम
 णिरुविय-निरूपित
 णिरोहिअ-निरुद्ध

णिलअ-निलय (गृह)
 णिलाड-ललाट
 णिलीण-निलीन
 णिल्लुण-निल्लवन (छेद इत्यर्थः)
 णिल्लुत्त-निल्लस
 णिव-नृप
 णिवइ-नृपति
 णिवड-नि+पत् (धातुः)
 णिवडिय-निपतित
 णिवस-नि+वस् (धातुः)
 णिवसण-निवसन
 णिवसुया-नृपसुता
 णिवह-निवह
 णिवारण-निवारण
 णिवारणिअ-निवारणीय
 णिवास-निवास
 णिविट्ठ-निविष्ट
 णिविड-निविड
 णिविडत्थवंत-निविड+अर्थवन्
 णिवित्ति-निवृत्ति
 णिव्वट्ठिअ-निर्वर्तित
 णिव्वण-निर्वन
 णिव्वाइअ-प्रसारित इति टिप्पणम्
 णिव्वाण-निर्वाण
 णिन्विण्ड-निर्विकट
 णिन्विण्यप्प-निर्विकल्प
 णिव्वूढ-निर्व्यूढ
 णिव्वेअ-निर्वेद
 णिस-निशा
 णिसण्ण-निषण्ण
 णिसंग-निःसंग
 णिसा-निशा
 णिसायर-निशाचर
 णिसायरि-निशाचरी
 णिसिचार-निशिचार (निशि वृत्तमित्यर्थे)
 णिसिद्ध-निषिद्ध

णिसिभोयण-निशाभोजन
 णिसियग्ग-निशिताग्र
 णिसियर-निशिचर (भूतप्रेतपिशाचादि)
 णिसुण-नि+श्रु (धातुः)
 णिसुम्भ-नि+शृम्भ् (धातुः)
 णिसुम्भ-निश्चब्ध (निःस्तब्ध इत्यर्थः)
 णिस्संक-निःशङ्क
 णिहअ-निभ(क) (सदृशार्थे)
 णिहण-निधन
 णिहय-निहत
 णिहाण-निधान
 णिहाल-नि+भालय् दर्शने (धातुः)
 णिहालण-निभालन (प्रेक्षण)
 णिहालिय-निभालित (दृष्ट)
 णिहि-निधि
 णिहित्त-निहित
 णिहिप्प-नि+धा (धातुः)
 णिहुय-निभृत (शान्त इत्यर्थः)
 णिहेलण-निहेलन (गृहमित्यर्थे)
 णिंद-निन्द् (धातुः)
 णिंद-निन्दा
 णिंदण-निन्दन
 णिंदमग्ग-निन्द्य+मार्ग
 णी-नी (धातुः)
 णीअ-नीत
 णीणिय-निर्णीत
 णीयरय-नीच+रत
 णीर-नीर
 णीरस-नीरस
 णीरोयत्तण-नीरोगत्व
 णील-नील
 णीलय-नीलक
 णीसण-निःस्वन
 णीसरिअ-निःसृत
 णीसेस-निःशेष
 णेउर-नूपुर

णेत्त-नेत्र
 णेभि-नेभि (द्वाविंशतीर्थकरनाम)
 णेभि-नेभि (रथचक्रधारेति टिप्पणम्)
 णेयार-नेवृ
 णेवाविअ-नायित (नीधतोरिज्जन्तान्निष्ठा-
 न्तम्)
 णेह-स्नेह
 ण्हविअ-स्नापित
 ण्हा-स्ना (धातुः)
 ण्हाअ-स्नात
 ण्हाण-स्नान

तइ-तदा
 तइ-त्रयी
 तइय-तदा
 तइय-तृतीय
 तइयच्छि-तृतीय+अभि
 तइयहु-तदा
 तउ-तपस्
 तक्कर-तस्कर
 तक्खण-तत्क्षण
 तज्जिय-तर्जित
 तट्ट-त्रस्त
 तट्टअ-धृष्टशब्दार्थे देशी (मराठी-ताठ)
 तड-तट
 तड-तड् (आरुह इत्यर्थे देशी, धातुः)
 तडतड-शब्दानुकरणे
 तण-तृण
 तणअ-तस्येदमित्यर्थे देशी प्रत्ययः
 तणअ-तनय
 तणय-तनय
 तणयर-तृणचर
 तणयरी-तृणचरी
 तणियड-तद्+निकट
 तणु-तनु (शरीर)
 तणुअंगि-तन्वङ्गी

तणुतावअ-तनुतापक
 तणुफंस-तनुस्पर्श
 तणुरुह-तनुरुह
 तणुल्लय-तनुलता
 तण्हा-तृष्णा
 तत्त-तप्त
 तत्तिय-तृप्त
 तत्थ-तत्र
 तप्प-तपधातोः कर्मणि
 तम-तमस्
 तमतमपह-तमस्तमःप्रभ (सप्तमनरकनाम)
 तमपह-तमःप्रभ (षष्ठनरकनाम)
 तमाल-तमाल
 तमोह-तमस्+ओघ
 तर-शकधात्वर्थे देशी
 तर-तृ (धातुः)
 तरच्छ-तरक्षु (प्राणिविशेषः) (मराठी-
 तरस)
 तरणि-तरणि (सूर्य)
 तरसा-तरसा (वेगेनेत्यर्थः)
 तरंग-तरङ्ग
 तरंगिणि-तरङ्गिणी
 तरु-तरु
 तरुकाय-तरुकाय (वनस्पतिकाय इत्यर्थः)
 तरुण-तरुण
 तरुणी-तरुणी (युवति)
 तरुणीवस-तरुणी+वस
 तरुवेल्लीहल-तरु+वल्ली+फल
 तरुसाहागय-तरु+शाखा+गत
 तरुसाहार-तरु+सहकार
 तल-तैलादिभर्जने (धातुः)
 तलण-तलन
 तलवर-ग्रामरक्षको राजपुरुष इत्यर्थे देशी
 तलारअ-तलवर (क)
 तलिय-तलित
 तव-तप् (धातुः)

तव-तपस्
 तवपहाअ-तपःप्रभाव
 तवमंडण-तपोमण्डन
 तवयरण-तपश्चरण
 तवलच्छी-तपोलक्ष्मी
 तववंत-तपस्+वत् (मत्वर्थीयः)
 तवसत्ति-तपःशक्ति
 तवसित्तण-तपस्वित्त
 तवंग-उपरितनो भागः (उच्चप्रदेश इति टिप्प-
 णम् । मराठी-तवंग !)
 तवंत-तप्यमान
 तविअ-तप्त
 तस-त्रस् (धातुः)
 तहिं-तत्र
 तहु-तदा, तत्र, तस्य
 तंणयर-तद्+नगर
 तंत-तन्त्र
 तंति-तन्त्री
 तंतु-तन्तु
 तंदुल-तण्डुल
 तंव-ताम्र
 तंवचूल-ताम्रचूड (कुक्कुट)
 तंबोल-ताम्बूल
 तंबोललग्ग-ताम्बूल+लग्ग
 तंवार-तंवार (नरकनाम)
 ता-तावत्
 ताडण-ताडन
 ताडिय-ताडित
 ताम-तदा
 तामस-तामस (पापमित्यर्थः)
 तार-तार (शुभ्र)
 ताराणियर-तारानिकर
 तारावलि-तारा+आवलि
 ताल-ताल
 तालिअ-ताडित
 ताव-ताप

तावस-तापस
 तासिय-त्रासित
 ति-त्रि
 तिक्ख-तीक्ष्ण
 तिक्ख-तिक्त
 तिगिच्छ-पद्मरज इत्यर्थे देशी
 तिगुत्ति-त्रिगुति (कायवाङ्मनोगुतिः)
 तिजगम्भन्तर-त्रिजगदभ्यन्तर
 तिट्ठा-तृष्णा
 तिण-तृण
 तिथ-तीर्थ
 तिथयर-तीर्थकर (शास्त्रप्रवर्तक इत्यर्थः)
 तिथु-तत्र
 तिदंड-त्रिदण्ड
 तिप्प-तृप् (धातुः)
 तिम्मण-तेमन (मर्दन)
 तिमिर-तिमिर
 तिमुंड-त्रिमुण्ड
 तिय-स्त्री
 तियचित्त-स्त्रीचित्त
 तियडुय-त्रिकटुक (शुण्ठी मरिचं पिप्पलीति
 त्रयाणां चूर्णम्)
 तियमइ-स्त्रीमति
 तियसपत्ति-त्रिदशपत्नी (देवीत्यर्थः)
 तियाल-त्रिकाल
 तिरयण-त्रिरत्न (ज्ञानदर्शनचारित्राणि)
 तिरिय-तिर्यच्
 तिरिक्ख-तिर्यच्
 तिरियलोअ-तिर्यग्लोक (मनुष्यलोक इति
 टिप्पणम्)
 तिलअ-तिलक
 तिलपिंड-तिल+पिण्ड (पिण्याक) (मराठी-
 पेंड)
 तिलयल्लेअ-तिल(क)+ल्लेद (स्नेहाभाव इति
 टिप्पणम्)
 तिलिंग-स्त्रीलिङ्ग

तिल्लोअ-त्रैलोक्य
 तिल्लोक्क-त्रैलोक्य
 तिल्लोय-त्रैलोक्य
 तिक्क-तीव्र
 तिविह-त्रिविध
 तिसल्ल-त्रिशल्य
 तिसूल-त्रिशूल
 तिसूलिणि-त्रिशूलिनी (कात्यायनी)
 तिह-तत्र
 तिहुयण-त्रिभुवन
 तिहुवण-त्रिभुवन
 तीय-तृतीया
 तीस-त्रिशत्
 तुच्छोअरिल्ल-तुच्छ+उदर+इल्ल (मत्वर्थीयः)
 तुट्ट-तुष्ट
 तुट्ठि-तुष्टि
 तुडिय-तुष्टित
 तुप्प-घृतशद्वार्थं देशी
 तुम्हारिस-युष्मादृश
 तुरअ-तुरग
 तुरयणिहणयारि-तुरगनिधनकारिन्
 तुरंग-तुरङ्ग
 तुरंत-त्वरमाण
 तुरिउ-त्वरितम् (अव्ययम्)
 तुलकूड-तुलाकूट (वञ्चनार्थं प्रयुक्तानि
 न्यूनातिरिक्तानि मानोन्मानानीत्यर्थः)
 तुलाकोडि-तुलाकोटि (पादाङ्गुदम्)
 तुस-तुप् (धातुः)
 तुस-तुप (धान्यादीनां तुषम्)
 तुसार-तुषार
 तुहार-त्वदीय
 तुंग-तुङ्ग (उच्च)
 तुंगत्थणि-तुङ्गस्तनी
 तुंड-मुखशद्वार्थं देशी
 तूर-तूर्य (वाद्यविशेषः)
 तेअ-तेजस्

तेत्तहि-तत्र
 तेत्थ-तत्र
 तेत्थु-तत्र
 तेय-तेजस्
 तेयाविद्धी-तेजस्+आविद्धा
 तेरह-त्रयोदश
 तेरहसय-त्रयोदशशत
 तेल्ल-तैल
 तोडिअ-तुटित
 तोमर-तोमर (आयुधविशेषः)
 तोरण-तोरण
 तोस-तोष
 तोसिअ-तोषित

थक्क-स्था (धातुः)
 थक्क-स्तब्ध, स्थित इत्यर्थे देशी
 थत्ति-स्थान इत्यर्थे देशी
 थण-स्तन
 थणवट्ट-स्तनपट्ट, स्तनवर्त (वर्तुल)
 थणाल-स्तन+आल (मत्वर्थीयः)
 थरहर-कम्पने देशी (धातुः)
 थल-स्थल
 थलयर-स्थलचर
 थंभ-स्तम्भम् (धातुः)
 था-स्था (धातुः)
 थाणु-स्थाणु
 थाल-स्थाली
 थिअ-स्थित
 थिप्प-गलने देशी (धातुः)
 थिय-स्थित
 थिर-स्थिर
 थिरमण-स्थिरमनस्
 थी-स्त्री
 थीयण-स्त्रीजन
 थुइवयण-स्तुतिवचन
 थुण-स्तु (धातुः)

थुत्ति-स्तुति
 थुय-स्तुत
 थूण-अश्वशद्वार्थे देशी
 थूल-स्थूल
 थेरि-स्थविरा
 थोअ-स्तोक
 थोट्ट-छिन्नहस्त इत्यर्थे देशी (मराठी-थोटा)
 थोर-स्थूल
 थोरंसुय-स्थूल+अश्रु (क)
 थोव-स्तोक

दइच्च-दैत्य
 दइय-दयित
 दइव-दैव
 दक्खविय-दर्शित
 दक्खालय-दर्शय (धातुः)
 दट्ट-दष्ट
 दड्ड-दग्ध
 दढयर-दढतर
 दप्प-दर्प
 दप्पसंग-दर्पसंग
 दप्पिट्ट-दर्पिष्ठ
 दप्पुब्भड-दर्पोद्भट
 दब्भ-दर्भ
 दम्-दम् (धातुः)
 दम-दम
 दमण-दमन
 दमिय-दमित
 दय-दया
 दयविवेअ-दयाविवेक (दयायाः विवेकः भावः,
 दयाबुद्धिरित्यर्थः)
 दयवेल्लि-दयावल्ली
 दया-दया
 दयावर-दयापर
 दल-दल (पत्रमित्यर्थः)
 दलण-दलन

दव-दव (दवानल इत्यर्थे)
 दविण-द्रविण
 दविणवइ-द्रविणपति (कुबेर)
 दव्व-द्रव्य
 दस-दशन
 दससहस-दशसहस
 दह-दशन
 दह-इद
 दहत-द्वान्त (द्वदमध्य इत्यर्थः)
 दहि-दधि
 दंड-दण्ड
 दंडणीइ-दण्डनीति
 दंडधारि-दण्डधारिन्
 दंडपणाम-दण्ड(वत्)+प्रणाम
 दंडय-दण्ड (क)
 दंडिय-दण्डित
 दंडी-दण्डिन् (यम इत्यर्थः)
 दंत-दन्त
 दंत-दान्त
 दंतगा-दन्ताग्र
 दंतपंति-दन्तपङ्क्ति
 दंति-दन्तिन्
 दंतुर-दन्तुर
 दंद-दन्द्
 दंसण-दर्शन
 दंसिय-दर्शित
 दंसिर-दश्+इर (शीलार्थे प्रत्ययः)
 (दर्शनशील इत्यर्थः)
 दा-दा (धातुः)
 दाहणी-दायिनी (उत्तरपदे एव)
 दाढा-दंष्ट्राशब्दार्थे देशी
 दाढाकराल-दंष्ट्राकराल
 दाढाल-दंष्ट्रा+आल (मत्वर्थीयः)
 दाण-दान
 दाणोल्लिय-दान+आर्द्र (मदजलाद्रि इत्यर्थः)
 दाम-दामन्

दार-दार (स्त्री)
 दार-द्वार
 दारिअ-दारित
 दारिइ-दारिद्य
 दारिय-दारित
 दारुण-दारुण
 दालि-दालि (शिम्बीधान्यादिदलमित्यर्थे)
 देशी)
 दालिहठाण-दारिद्र्यस्थान
 दालिहिअ-दरिद्रित
 दाविअ-दर्शित
 दाविर-दर्शनशील
 दासिसुअ-दासीसुत
 दासी-दासी
 दाह-दाह
 दाहिण-दक्षिण
 दाहिणुल्लिय-दक्षिण+उल्लिय (स्वार्थे)
 दिक्ख-दीक्षा
 दिक्खा-दीक्षा
 दिक्खिअ-दीक्षित
 दिक्खपत्त-दीक्षाप्राप्त (दीक्षित)
 दिगिंछा-जुगुप्सा
 दिग्गाय-दिग्गज
 दिज्ज-दाघातोः कर्मणि
 दिट्ठ-दृष्ट
 दिट्ठपरंपर-दृष्ट+परंपरा
 दिट्ठि-दृष्टि
 दिठ-दृढ
 दिण-दिन
 दिणयर-दिनकर (सूर्य)
 दिणिंद-दिनेन्द्र (सूर्य)
 दिणेसर-दिनेश्वर (सूर्य)
 दिण्ण-दत्त
 दित्त-दीप्त
 दिप्पंत-दीप्यमान
 दिय-दत्त

दियउल-द्विजकुल
 दियगुरु-द्विजगुरु
 दियवर-द्विजवर
 दियह-दिवस
 दियंवर-दिगम्बर
 दिवस-दिवस
 दिवायर-दिवाकर
 दिव्व-दिव्य
 दिसा-दिश
 दिसि-दिश
 दिसिणारि-दिश+नारी
 दिहि-धृति
 दिहियर-धृतिकर
 दिहीहर-धृतिहर
 दीव-द्वीप
 दीवय-द्वीप (क)
 दीवयजुइल-दीपकयुति + इल (मत्वर्थीयः)
 दीवंत-दीप्यमान
 दीस-दशधातोः कर्मणि
 दीह-दीर्घ
 दीहर-दीर्घ
 दीहरच्छ-दीहर (दीर्घ) + अक्षि (दीर्घाक्ष
 इत्यर्थः)
 दीहिय-दीर्घिका
 दु-द्वि
 दुकाल-दुष्काल
 दुकिय-दुष्कृत
 दुक्रियणिवह-दुष्कृतनिवह
 दुक्ख-दुःख
 दुक्खावण-दुःख + आपण (प्रापण)
 (दुःखदायीत्यर्थः)
 दुक्खिय-दुक्खित
 दुगुंछ-गुप् (जुगुप्सार्थे धातुः)
 दुग्ग-दुर्ग (दुर्गम)
 दुग्गअ-दुर्गत (दुर्ग्राह्य इत्यर्थे)
 दुग्गइ-दुर्गति

दुग्गंध-दुर्गन्ध
 दुग्घर-दुर्गह
 दुचित्त-दुश्चित्त (बुष्टाभिप्राय इत्यर्थः)
 दुचार-दुश्चार (दुराचार)
 दुज्जण-दुर्जन
 दुज्जोहण-दुर्योधन
 दुट्ठ-दुष्ट
 दुण्णय-दुर्नय
 दुण्णयगारी-दुर्नयकारिन्
 दुण्णिरिक्ख-दुर्निरीक्ष्य
 दुतीस-द्वात्रिंशत्
 दुत्तर-दुस्तर
 दुत्तार-दुस्तार
 दुत्थिय-दुःस्थित
 दुदम-दुर्दम
 दुदस्सिण-दुर्दशिन्
 दुदंत-दुर्दान्त
 दुद्ध-दुग्ध
 दुद्धर-दुर्धर
 दुप्पेच्छ-दुष्पेक्ष्य
 दुव्वल-दुर्बल
 दुव्वभ-दुब्ध (धातुः)
 दुव्वभव-दुर्भव (कुजन्म)
 दुम-द्रुम
 दुमणि-शुमणि (सूर्य)
 दुमसाहा-द्रुमशाला
 दुम्मण-दुर्मनस्
 दुम्मह-दुर्मथ (अभङ्ग इति टिप्पणम्)
 दुरग्गह-दुराग्रह
 दुरिअ-दुरित (पाप)
 दुरिय-दुरित (पाप)
 दुरियठाण-दुरितस्थान
 दुरियरासि-दुरितराशि
 दुरुत्त-दुरुक्त
 दुवार-दार
 दुविह-द्विविध

दुब्बार-दुर्वार
 दुब्बासा-दूर्वा+आशा
 दुब्बिणीअ-दुर्विनीत
 दुब्बिलसिय-दुर्विलसित
 दुसह-दुःसह
 दुसज्झ-दुःसाध्य
 दुस्सह-दुःसह
 दुह-दुःख
 दुहडि-द्वि+घटी (कालमात्रा)
 दुहणिहाअ-दुःख+निघात (समूह)
 दुहपोट्टलअ-दुःख+पोट्टल
 दुहयर-दुःखकर
 दुहरीण-दुःख+रीण (खिन्नार्थे देशी)
 दुहिअ-दुःखित
 दुहोहखणि-दुःख+ओष+खनि
 दुन्दुभि-दुन्दुभि (वाद्यविशेषः)
 दुन्दुहि-दुन्दुभि
 दूइया-दूषिका
 दूण-दून
 दूमिअ-दून
 दूरं-दूरम् (अव्ययम्)
 दूरंतरिय-दूरान्तरित
 दूवाखंड-दूर्वाखण्ड (दूर्वावनमित्यर्थः)
 दूसह-दुःसह
 दूसिअ-दूषित
 दूसिय-दूषित
 दूसियअ-दूषित (क)
 दूहवअ-दुर्भग (क)
 दूहविय-दुःखित
 देअ-देव
 देउल-देवकुल
 देव-देव
 देवउल-देवकुल
 देवया-देवता
 देवर-देवर
 देवरइ-देवरति (नामविशेषः)

देवंगअ-देव+अङ्ग (क)
 देवायरिअ-देव+आचार्य
 देवालअ-देवालय
 देवाविअ-दापित
 देवि-देवी
 देविघर-देवीगृह
 देविया-देवी
 देवी-देवी (विमलवाहनराज्ञीनाम)
 देस-देश
 देसिअ-देशिक (वैदेशिक)
 देह-देह
 देहि-देहिन्
 देहुणअ-देह+ऊन (क)
 दोआसा-द्वि+पार्श्व, अथवा, द्वि+आशा
 दोखंडीभूय-द्विखण्डीभूत
 दोफालिय-द्वि+पाटित
 दोर-तन्तुशद्वार्थे देशी (मराठी-दोर)
 दोवास-द्विपार्श्व
 दोसहारी-दोषहारिन्
 दोसायर-दोष+आकर
 दोसुज्झिअ-दोषोज्झित (उज्झितदोष इत्यर्थः)
 दोहाविअ-द्विधाकृत
 दोहीयरण-द्वैधीकरण (संशय इत्यर्थः)

धगत्ति-अग्निज्वलनशद्धानुकरणे
 धगधग-अग्निज्वलनशद्धानुकरणे (धातुः)
 धण-धन
 धणधण्ण-धन+धान्य
 धणहीण-धनहीन
 धणिय-धनिक
 धणु-धनुस्
 धणुवेअ-धनुर्वेद
 धम्म-धर्म
 धम्म-धर्म (पञ्चदशतीर्थकरनाम)
 धम्मचक्कि-धर्मचक्रिन्
 धम्मज्ञाण-धर्मध्यान (ध्यानप्रकारः

धम्मत्थकाम-धर्मार्थकाम
 धम्मलाह-धर्मलाभ
 धम्मवाइ-धर्मवादिन्
 धम्मविज्ज-धर्मविद्या
 धम्मंधिव-धर्माङ्घ्रिप (धर्मवृक्ष इत्यर्थः)
 धम्मक्खाण-धर्माख्यान
 धम्मासत्त-धर्मासक्त
 धम्माहम्म-धर्माधर्म
 धम्मिल्ल-धम्मिल्ल (केशपाशः)
 धम्मच्छाह-धर्मात्साह
 धय-ध्वज
 धर-धृ (धातुः)
 धर-धरा (पृथ्वी)
 धरणि-धरणि
 धरणिणाह-धरणीनाथ
 धरणियल-धरणीतल
 धरपडिय-धरापतित
 धरवीढ-धरापीठ
 धरायल-धरातल
 धरिअ-धृत
 धरिय-धृत
 धरिसमाणि-धरासमाना
 धवल-धवल
 धवल-धवल (शुक्लवर्ण, सुधावर्ण)
 धवलच्छि-धवलाक्षी
 धंस-ध्वंस (धातुः)
 धा-तृसौ (धातुः)
 धाइदीव-धातकीद्वीप
 धाउ-धातु
 धाउ-धातु (गैरिकादि)
 धाम-धामन्
 धायअ-धावित
 धार-धारा
 धारिणी-धारिणी (उत्तरपदे एव)
 धारिय-धारित
 धाव-धाव् (धातुः)

धावंत-धावत् (सधातोः शत्रन्तम्)
 धाविय-धावित
 धाहावंत-धा, हा इति शोकशब्दं कुर्वन्
 धाहाविअ-शोकयुक्त इत्यर्थे
 धिट्ठ-धृष्ट
 धीवर-धीवर
 धुअ-धुत (कम्पित)
 धुउ-ध्रुवम् (अव्ययम्)
 धुत्त-धूर्त
 धुत्तिय-धूर्तित
 धुप-धूप (धातुः)
 धुरंधर-धुरंधर
 धुव-ध्रुव
 धूमकेउ-धूमकेतु
 धूमगंध-धूमगन्ध
 धूमप्पह-धूमप्रभ (पञ्चमनरकनाम)
 धूया-दुहितृ
 धूली-धूली
 धूलिर-धूलियुक्त
 धूसर-धूसर
 धूसरिय-धूसरित
 धोय-धौत
 धोयअ-धौत (क)
 धोरणिकिअ-धोरणिकृत
 पअ-पद
 पइज्ज-पञ्चातोः कर्मणि
 पइट्ठ-प्रविष्ट
 पइपत्त-पति+पात्र
 पइवय-पतिव्रता
 पइसर-प्रति+सृ (धातुः)
 पइहर-प्रतिगृह (अन्तर्यहमित्यर्थे)
 पईसर-प्रति+सृ (धातुः)
 पउ-पयस्
 पउत्त-प्रवृत्त, प्रोक्त
 पउत्त-पौत्र

पउत्थ-प्र+उषित
 पउमा-पद्मा (लक्ष्मी)
 पउमप्पह-पद्मप्रभ (पद्मतीर्थकरनाम)
 पउमराय-पद्मराग (मणिविशेषः)
 पउमिणी-पद्मिनी
 पउर-पौर (पौरजन, पुरसंबन्धि)
 पउर-प्रचुर
 पउलण-प्रेरण
 पउलाविय-पाचित
 पउंज-प्र+युज् (धातुः)
 पएस-प्रदेश
 पओय-प्रजौघ (!) (प्रजासमूह इति हिन्दी भाषानुवादः)
 पओहर-पयोधर (स्तन)
 पकोक्किअ-आहूत इत्यर्थे देशी
 पक्क-पक्क
 पक्कल-समर्थ इत्यर्थे देशी (समर्थ इति टिप्पणम्)
 पक्ख-पक्ष
 पक्खालिय-प्रक्षालित
 पक्खवाअ-पक्षपात
 पक्खि-पक्षिन्
 पखित्त-प्रक्षित
 पघे-प्र+ग्रह् (धातुः)
 पघोस-प्र+घुष् (धातुः)
 पक्खस्व-प्रत्यक्ष
 पक्खंत-प्रत्यन्त (सीमा)
 पक्खुत्तर-प्रत्युत्तर
 पच्छइ-पश्चात्
 पच्छाहोत-पश्चाद्भवत् (पश्चात्स्थित इत्यर्थः)
 पच्छिअ-पथ्ययुक्त
 पच्छित्त-प्रायश्चित्त
 पच्छिम-पश्चिम
 पजल-प्र+ज्वल् (धातुः)
 पज्जत्त-पर्याप्त (पज्जत्तउ इत्यलमर्थेऽव्ययम्)
 पज्जल-प्र+ज्वल् (धातुः)

पज्जलिय-प्रज्वलित
 पज्जाअ-पर्याय
 पट्ट-पट्ट (चिह्न)
 पट्टण-पत्तन
 पट्टबन्ध-पट्टबन्ध
 पट्टविय-प्रस्थापित
 पड-पत् (धातुः)
 पडपिहियासण-पट+पिहित+आसन
 पडरइअ-पटरचित
 पडल-पटल
 पडह-पटह (वाद्यविशेषः)
 पडाविय-पटित, पटयुक्त (आच्छादित)
 पडिअ-पतित
 पडिआवंत-प्रत्यावर्तमान
 पडिकूल-प्रतिकूल
 पडिक्खणं-प्रतिक्षणम्
 पडिखलण-परि+स्खलन
 पडिखलिय-परिस्खलित
 पडिगह-प्रति+ग्रह् (धातुः)
 पडिच्छ-प्रति+इप् (धातुः)
 पडिजंपिय-प्रतिजल्पित
 पडिबिं-प्रतिबिम्ब
 पडिबिंविअ-प्रतिबिम्बित
 पडिचुद्ध-प्रतिबुद्ध
 पडिबोळिअ-प्रत्युक्त
 पडिम-प्रतिमा
 पडिय-पतित
 पडियार-प्रतिकार
 पडियावय-प्रतियापक (!) प्रत्याख्यात
 पडिलव-प्रति+लप् (धातुः)
 पडिवज्ज-प्रति+पद् (धातुः)
 पडिवण्ण-प्रतिपन्न (प्रतिपादनं कथनमित्यर्थः)
 पडिवण्णी-प्रतिपन्ना
 पडिवयण-प्रतिवचन
 पडिवहु-प्रतिबधू (सपत्नीत्यर्थः)
 पडिसवण-प्रति+स्वप्न

पडिसिविण—प्रतिस्वप्र
 पडिहार—प्रतिहार
 पडिहारिय—प्रतिहारी
 पडिंद—प्रति+इन्द्र
 पडु—पटु
 पढ—पट् (धातुः)
 पढम—प्रथम
 पढमिल—प्रथम+इल (स्वार्थे)
 पढमुज्जल—प्रथम+उज्ज्वल
 पढत—पठत्
 पढाव—पाठय् (धातुः)
 पढुक्क—प्रवृत्त इत्यर्थे देशी
 पणइणी—प्रणयिनी
 पणच्चिर—प्र+नृत्+इर (शीलार्थे)
 पणविज्ज—प्र+नम् धातोः कर्मणि
 पणट्ट—प्रनष्ट
 पणयभंग—प्रणयभङ्ग
 पणयंगणा—पण्याङ्गना (वेदयेत्यर्थः)
 पणव—प्र+नम् (धातुः)
 पणविय—प्रणत
 पणसट्ठि—पञ्चषष्टि
 पणालिया—प्रणालिका
 पण्णयरिउ—पन्नगरिपु
 पणिवाअ—प्रणिपात
 पत्त—पत्र (अश्वादिवाहनम्)
 पत्त—पात्र
 पत्त—प्राप्त
 पत्तछेअ—पत्रच्छेद (अगुरुकुङ्कुमादिभिर्विरचितः
 शरीरे शोभाविशेषः)
 पत्तल—कृश इत्यर्थे देशी
 पत्तल—यवीयस् इत्यर्थे देशी
 पत्तलिया—कृशा इत्यर्थे देशी
 पत्तवाडिय—पात्रपतित
 पत्तिय—प्रति+इ (धातुः)
 पत्ति—पत्नी
 पत्थ—प्रस्थ (धान्यादिपरिमाणविशेषः)

पत्थर—प्रस्तर
 पत्थिअ—प्रार्थित
 पत्थियअ—प्रार्थित (क)
 पत्थिव—पार्थिव
 पत्थिप्पर—प्र+गलत् इत्यर्थे देशी
 पद्धडिय—पद्धटिका, पद्धटिका (वृत्तनाम)
 पधाइअ—प्रभावित (प्रसृत इत्यर्थः)
 पपुच्छ—प्र+प्रच्छ (धातुः)
 पप्फुल्लवयण—प्रफुल्लवदन
 पबुद्ध—प्रबुद्ध
 पबोल्ल—प्र+वद् धात्वर्थे देशी
 पभट्ट—प्रभष्ट
 पभण—प्र+भण् (धातुः)
 पभाल—प्रभा+आल (मत्तार्थीयः)
 पमाण—प्रमाण
 पमाणिअ—प्रमाणित (प्रमाणीकृत)
 पमियपडिग्गाह—प्रमितपरिग्रह
 पमुच्च—प्र+मुच् (धातुः)
 पमेल्ल—प्र+मुच् इत्यर्थे देशी (धातुः)
 पय—पद
 पय—पद (पदातिरित्यर्थः)
 पयच्छ—प्र+दा (धातुः)
 पयक्ख—प्रत्यक्ष
 पयजुअ—पदयुग
 पयजुयल—पदयूगल
 पयट्ट—प्र+वृत् (धातुः)
 पयड—प्रकटय् (धातुः)
 पयड—प्रकट
 पयत्त—प्रयत्न
 पयत्थ—पदार्थ
 पयपंकय—पदपङ्कज
 पयपालण—प्रजापालन
 पयलिय—प्रचलित
 पयवाडिय—पदपतित
 पयंड—प्रचण्ड
 पयंप—प्र+जल्प् (धातुः)

पया—प्रजा
 पयाव—प्रताप
 पयाविअ—पाचित
 पयास—प्रकाशय् (धातुः)
 पयास—प्रकाश
 पयासिअ—प्रकाशित
 पयासिर—प्रकाश + इर (शीलार्थे)
 पयोहर—पयोधर
 पर—पर (अतीतानागत)
 परड—वनकुक्कुट
 परत्त—परत्र
 परभवत्थ—परभवस्थ
 परमत्थ—परमार्थ
 परमधम्म—परमधर्म
 परमपर—परमपर (परमा गणधरदेवादयस्ते-
 भ्योऽपि पर उत्कृष्ट इति टिप्पणम्)
 परमप्प—परमात्मन्
 परमप्पअ—परमपद
 परममित्त—परममित्र
 परमहंस—परमहंस
 परमागम—परम + आगम (जिनशासन-
 मित्यर्थः)
 परमाणु—परमाणु
 परमेद्धि—परमेष्ठिन्
 परमेसर—परमेश्वर
 परमेसरि—परमेश्वरी
 परमोवएस—परमोद्देश
 परमंडलिय—पर + माण्डलिक
 परयार—परकार
 परलोय—परलोक
 परवच्चणयर—परवच्चनकर
 परव्वस—परवश
 परसप्पर—परस्परम्
 परहिय—परहित
 परंपर—परंपरा
 परंमुह—पराङ्मुख

पराङ्ण—परा + दा (निष्ठाऽन्तम्)
 परायण—परायण
 परिअंच—परि + अञ्च (भ्रमणे धातुः)
 परिकरिय—परिकरित
 परिकखा—परीक्षा
 परिक्विअ—परीक्षित
 परिगण—परि + गण् (धातुः)
 परिगल—परि + गल् (धातुः)
 परिग्गहिअ—परि + गृहीत
 परिघुल—परि + घुल् (धातुः)
 परिघोलिर—परिघोलनशील
 परिचत्त—परित्यक्त
 परिचुक्किअ—परिभ्रष्ट इत्यर्थे देशी
 परिट्ठविअ—प्रतिष्ठापित
 परिट्ठा—प्रति + स्था (धातुः)
 परिट्ठिअ—प्रतिष्ठित
 परिणइ—परिणति
 परिणम—परि + नम् (धातुः)
 परिणय—परिणत
 परिणाव—परि + नायय् (नीषातोर्णिजन्तम्)
 परिणिय—परिणीत, परिणायित
 परितत्त—परितप्त
 परिता—परि + त्रै (धातुः)
 परिपक्क—परिपक्व
 परिपुण्ण—परिपूर्ण
 परिपोस—परि + पुप् (धातुः)
 परिभम—परि + भ्रम् (धातुः)
 परिभमिअ—परिभ्रान्त
 परिमट्ठ—परिमृष्ट
 परिमल—परिमल
 परिमाण—परिमाण
 परियत्त—परित्यक्त
 परियत्तण—परिवर्तन
 परियण—परिजन
 परियर—परिचर
 परियरिअ—परिचरित

परियल-परितल (भाजनमित्यर्थे)
 परियलिअ-परिगलित
 परियंच-परि + अञ्च् (धातुः)
 परियंचिअ-पर्यञ्चित
 परियाण-परि + ज्ञा (धातुः)
 पणियाणिय-परिज्ञात
 परियाणियअ-परिज्ञात (क)
 परिरक्ख-परि + रक्षा
 परिरक्खिअ-परिरक्षित
 परिवारअ-परि + उक्त (?)
 परिवाइय-प्रतिपादित
 परिवाडी-परिपाटी
 परिवार-परिवार
 परिवारे-परि + वारय् (धातुः)
 परिवेडिय-परिवेष्टित
 परिसेस-परि+शिप् (धातुः)
 परिसेसिय-परिशेषित (त्यक्त इत्यर्थः)
 परिसोहिय-परिशोधित
 परिहण-परिधान
 परिहर-परि+हृ (धातुः)
 परिहा-परिखा
 परिहाण-परिधान
 परिहास-प्रति+भाप् (धातुः)
 परोवयारि-परोपकारिन्
 पल-पल (मांस)
 पलट्टिय-प्र+लक्ष्णित
 पलवंति-प्र+लपन्ती
 पलंब-प्रलम्ब
 पलाव-प्रलाप
 पलिअ-पलित
 पलित्त-प्रलाप (इति णिप्पणम्)
 पलोइय-प्रलोकित
 पलोट्ट-प्रलोटित (प्रक्षिप्त)
 पल्ल-पल्ल (संख्याशब्दः आयुःप्रमाणवाची)
 पल्लव-पल्लव (वस्त्रादीनामञ्चल इत्यर्थे)
 पल्लवोह-पल्लव+ओह (पल्लवसमूह इत्यर्थः)

पल्लहत्थ-पर्यस्त
 पल्लहत्थिअ-पर्यस्तित (आवर्जित इत्यर्थः)
 पवण-पवन
 पवणवस-पवनवश
 पवणुद्धय-पवनोद्धत (पवनप्रकम्पित इत्यर्थः)
 पवड्डिय-प्रवर्धित
 पवण्ण-प्रपन्न (प्राप्त इत्यर्थः)
 पवण्णिय-प्रवर्णित
 पवपालिया-प्रपापालिका
 पवयण-प्रवचन
 पवर-प्रवर
 पवसिय-प्रोषित
 पवसियपिय-प्रोषितप्रिय (प्रोषितभर्तृकेत्यर्थः)
 पवसियपियाली-प्रोषितप्रियालि (प्रोषितभर्तृ-
 कापङ्क्तिरित्यर्थः)
 पवास-प्रवास
 पवासिअ-प्रवासिन्
 पवाह-प्रवाह
 पवि-पवि (वज्रमित्यर्थः)
 पविउल-प्रविपुल
 पवित्त-पवित्र
 पवित्ति-प्रवृत्ति
 पविमल-प्रविमल
 पविहिय-प्रविहित
 पव्व-पर्वन् (अमावास्यादि)
 पव्वइअ-प्रवाजित
 पसइ-प्रसृति
 पसण्ण-प्रसन्न
 पसत्थ-प्रशस्त
 पसप्पिय-प्रसृत, प्रसारित
 पसम-प्र+शम् (धातुः)
 पसमंत-प्र+शाम्यत्
 पसर-प्र+सृ (धातुः)
 पसर-प्रसर
 पसरिय-प्रसृत
 पसंगय-प्रसक्त (क)

पसविअ-नकुल इत्यर्थे देशी
 पसवी-नकुलस्त्री
 पसंगय-प्रसक्त
 पसंस-प्र+शंस् (धातुः)
 पसाअ-प्रसाद
 पसार-प्र+सारय् (धातुः)
 पसाह-प्र+श्रावय् (कथनार्थे धातुः)
 पसाहिय-प्रसाधित, प्रकथित
 पसिद्ध-प्रसिद्ध
 पसु-पशु
 पसुय-पशु (क)
 पसुमारण-पशुमारण
 पह-पथिन्
 पहट्ट-प्रभ्रष्ट
 पहत्य-प्रहस्त
 पहभट्ट-पथिन्+भ्रष्ट (भ्रष्टपथ इत्यर्थः)
 पहर-प्र+हृ (धातुः)
 पहर-प्रहार
 पहरण-प्रहरण
 पहरवेविय-प्रहारवेपित
 पहराल-प्रहारशील
 पहरिअ-प्रहृत
 पहस-प्र+हस् (धातुः)
 पहसिय-प्रहसित
 पहंतर-पथान्तर
 पहा-प्रभा
 पहाग-प्रधान
 पहाय-प्रभाव
 पहार-प्रहार
 पहाव-प्रभाव
 पहावण-प्रभावना
 पहिअ-पथिक
 पहियविंद-पथिकवृन्द
 पहिलार-प्रथम+आर (स्वार्थे)
 पहिल्ल-प्रथम
 पहिल्लिय-प्रथम+इय (स्वार्थे)

पहिसियतुंड-प्रहसिततुण्ड
 पहु-प्र+भू (धातुः)
 पहु-प्रभु
 पहुत्त-प्राप्त
 पंक-पङ्क
 पंकय-पङ्कज
 पंकप्पह-पङ्कप्रभ (चतुर्थनरकनाम)
 पंकिय-पङ्कित (पङ्कयुक्त इत्यर्थः)
 पंगण-प्राङ्गण
 पंगु-पङ्गु
 पंगुत्त-प्रावृत इत्यर्थे देशी
 पंगुरुण-प्रावरण इत्यर्थे देशी
 (मराठी-पांग्रुण)
 पंगुल-पङ्गु+ल (स्वार्थे)
 पंगुलणिमित्त-पङ्गु+निमित्त
 पंच-पञ्चन्
 पंचकलाण-पञ्चकल्याण
 पंचत्त-पञ्चत्व
 पंचदश-पञ्चदशन्
 पंचम-पञ्चम
 पंचमगइ-पञ्चमगति (मोक्ष इत्यर्थः)
 पंचमहवय-पञ्चमहावत
 पंचवण-पञ्चवर्ण
 पंचवार-पञ्चवारम्
 पंचसमिति-पञ्चसमिति (ईर्या भाषा-एषणा-
 दान-उत्सर्गाः)
 पंचाचार-पञ्चाचार
 पंचास-पञ्चास्य (सिंह इत्यर्थः)
 पंचासव-पञ्चासव
 पंचिंदिय-पञ्चेन्द्रिय
 पंचुवरि-पञ्च+उदुम्बर
 पंजर-पञ्जर
 पंजलियर-प्राञ्जलि+कर
 पंजली-प्राञ्जलि
 पंडव-पाण्डव
 पंडिअ-पण्डित

पंडिय-पण्डित
 पंडुर-पाण्डुर
 पंथ-पथिन्
 पंथिय-पान्थ, पथिक
 पाअ-पाद (किरण इत्यर्थे)
 पाअ-पाद (चरण इत्यर्थे)
 पाअ-पाप
 पाइक-पादिक, पादचारिन् (सेवक इत्यर्थे)
 पाउडियजुम्म-(पादयोरलंकारयुग्ममित्यर्थे ।
 हिन्दी-पावडी)
 पाउय-खनित्रविशेषे देशी (मराठी-पावडें)
 पाउस-प्रावृत्
 पाउसकाल-प्रावृत्काल
 पाडीण-पाठीन (मत्स्यविशेषः)
 पाडल-पाडल
 पाण-प्राण (स च दशप्रकार इति टिप्पणे)
 पाणक्खअ-प्राणक्षय
 पाणचंडाल-अरण्यचाण्डाल इति टिप्पणम्
 पाणप्पिय-प्राणप्रिय
 पाणविणासन-प्राणविनाशन
 पाणावसान-प्राण+अवसान (अन्त)
 पाणि-प्राणिन्
 पाणियल-पाणितल
 पाणिवह-प्राणिवध
 पाय-पाद
 पायगा-पादाग्र
 पायड-प्रकट
 पायडिय-प्रकटित
 पायपोम-पादपद्म
 पायंत-पादास्त
 पायार-प्राकार
 पायाल-पाताल
 पारद्ध-प्रारब्ध
 पारद्धिय-व्याध इत्यर्थे देशी (मराठी-पारधी)
 पारंभ-प्रारम्भ
 पारावअ-पारावत

पारोह-प्ररोह
 पाल-पाधातोर्णिजन्तम्
 पालण-पालन (पालक-उत्तरपदे एव)
 पालिय-पालित
 पाव-प्र+आप् (धातुः)
 पाव-पाद
 पाव-पाप
 पावइय-प्रापित, प्रव्रज्या
 पावग्गह-पावग्रह
 पावज्ज-प्रव्रज्या
 पावपर-पापपर
 पावफल-पापफल
 पावमल-पापमल
 पावयम्म-पापकर्मन्
 पाववेरि-पापवैरिन्
 पाविअ-प्रापित
 पाविट्ट-पापिष्ट
 पास-पाश (पाश इव पाशः, कर्मबन्ध इति
 टिप्पणम्)
 पास-पार्श्व (त्रयोविंशतीर्थकरनाम)
 पासगाम-पार्श्वग्राम
 पासत्थ-पार्श्वस्थ (समीपस्थ इत्यर्थः)
 पासय-पास (क) (कुन्तविशेषः)
 पासिय-पाशित (पाशबद्ध)
 पासुलिय-पांशुल
 पासेय-प्रस्वेद
 पाहुड-प्राभृत (उपायन)
 पाहुणअ-प्राधूर्णक
 पिआ-पितृ
 पिउपट्ट-पितृपट्ट (पितृसिंहासन)
 पिउवण-पितृवन (श्मशान)
 पिक्क-पक्क
 पिक्ख-प्र+ईक्ष् (धातुः)
 पिच्छ-प्र+ईक्ष् (धातुः)
 पिज्ज-पाधातोः कर्मणि
 पिट्ट-पिष्ट (चूर्ण)

पिठमअ-पिष्टमय
 पित्त-पित्त
 पिम्म-प्रेमन्
 पिय-प्रिय
 पिय-प्रिया
 पियपत्ती-प्रिय+पत्नी
 पिययम-प्रियतम
 पियर-पितृ
 पियरवग-पितृवर्ग
 पियविरह-प्रियाविरह
 पियसंजोग-प्रियासंयोग
 पिया-प्रिया
 पियामह-पितामह
 पिल्ल-डिम्भ इत्यर्थे देशी (मराठी-पिल्लू)
 पिसक्क-पिशाच इत्यर्थे देशी
 पिसक्क-पृषत्क (बाण इत्यर्थः)
 पिमुण-पिशुन
 पिमुणिय-पिशुनित (सूचित)
 पिहिय-पिहित
 पिहुल-पृथुल
 पिंग-पिङ्ग
 पिंगल-पिङ्गल
 पिंछ-पिच्छ
 पिंछाल-पिच्छ+आल (मत्वर्थीयः)
 पिंछोह-पिच्छ+ओष (समूह)
 पिंजर-पिञ्जर
 पिंड-पिण्ड
 पिंडदाण-पिण्डदान
 पीडकर-पीडाकर
 पीढ-पीठ
 पीण-प्री (धातुः)
 पीण-पीन
 पीणभुअ-पीनभुज
 पीणिय-प्रीत
 पित्तल-पित्तल (धातुविशेषः, मराठी-पितल)
 पीय-पीत

पीयंत-पिबत्
 पीययंगणभय-पीत+अङ्गण+अम्भम्
 पील-पीड (धातुः)
 पीलण-पीडन
 पुक्खर-पुष्कर
 पुगल-पुद्गल
 पुच्छ-प्रच्छ (धातुः)
 पुच्छ-पुच्छ
 पुच्छिय-पृष्ट
 पुज्ज-पूज्य
 पुज्ज-पुत्रातोः कर्मणि
 पुज्जणिज्ज-पूजनीय
 पुज्जाणुपुज्ज-पूज्यानां पूज्यः (पूज्यानां गणधर-
 देवादीनामपि पूज्यः आराध्य इति टिप्पणम्)
 पुज्जिअ-पूजित
 पुट्ठि-पुष्टि
 पुट्ठि-पुष्ट
 पुट्ठिपलट्ठियंग-पुष्टि + पल + अस्थि + अङ्ग
 (पुष्ट्या उपाचितं पलं मांसं अस्थीनि
 अङ्गानि च यस्य)
 पुट्ठिवंस-पृष्ठवंश
 पुणु-पुनर्
 पुणो-पुनर्
 पुण्ण-पुण्य
 पुण्ण-पूर्ण
 पुण्णपुंज-पुण्यपुञ्ज
 पुण्णालि-पुंश्चलीत्यर्थे देशी
 पुण्णाहिलास-पूर्णाभिलाष
 पुत्त-पुत्र
 पुत्ति-पुत्री
 पुप्फ+पुष्प
 पुप्फमाल-पुष्पमाला
 पुप्फयंत-पुष्पदन्त (चन्द्रसूर्यौ; कवेर्नाम)
 पुप्फयंत-पुष्पदन्त (नवमतीर्थकरनाम)
 पुर-पुर
 पुरवर-पुरवर

पुरउ-पुरतः
 पुरवहि-पुरावधि (पुरमुद्दिश्येत्यर्थः)
 पुरंदर-पुरंदर
 पुरारि-पुरारि (शिवः)
 पुरिस-पुरुष
 पुरुएअ-पुरुदेव (इन्द्रादयो देवा इति
 टिप्पणम्
 पुरुहुंत-पुरोभवत्
 पुलिद-पुलिन्द
 पुल्लि-शबरजातिविशेषे देशी
 पुल्लिग-पुल्लिङ्ग
 पुन्वयाल-पूर्वकाल
 पुन्वसिणेह-पूर्वस्नेह
 पुहवि-पृथ्वी
 पुंकोइल-पुंस्कोकिल
 पुंछ-पुच्छ
 पुंज-पुञ्ज
 पुंजिअ-पुञ्जित
 पुंजिय-पूजित
 पुंजीकय-पुञ्जीकृत
 पुंड-पुण्ड्र (इक्षुजातिविशेषः)
 पूइवाअ-पूतिवात
 पूय-पूत
 पूरय-पूरय (धातुः)
 पूरिय-पूरित
 पूस-प्रच्छधात्वर्थे देशी
 पूसकोइल-पुंस्कोकिल
 पेच्छ-प्र+ईक्ष् (धातुः)
 पेट्ट-उदर इत्यर्थे देशी (हिन्दी-पेट)
 पेम्म-प्रेमन्
 पेय-प्रेत
 पेयंतावलि-प्रेत+अन्त्र+आवलि
 पेरिअ-प्रेरित
 पेरिय-प्रेरित
 पेल्लण-प्रेरण
 पेल्लय-पेलव

पेल्लिय-प्रेरित
 पेस-प्रेषय (धातुः)
 पेसण-प्रेषण
 पेसल-पेशल
 पेसिय-प्रेषित
 पेहुणय-पिच्छशद्वार्थे देशी
 पोक्खर-पुष्कर
 पोट्ट-उदर इत्यर्थे देशी (मराठी-पोट)
 पोट्टलअ-ग्रन्थिशद्वार्थे देशी (मराठी-पोटली)
 पोद्दुल्ल-पोट्ट+उल्ल (स्वार्थे)
 पोढ-प्रौढ
 पोढत्तण-प्रौढत्व
 पोत्थयवायण-पुस्तकवाचन
 पोम-पद्म
 पोमराय-पद्मराग
 पोमाइय-अवलोकित इत्यर्थे
 पोमिणि-पाञ्चिनी
 पोमिणिय-पाञ्चिनी
 पोसण-पोषण
 पोसह-उपवासदिन इत्यर्थे
 पोसिअ-पोषित
 पोसिय-पोषित
 फट्ट-विदीर्ण इत्यर्थे देशी (मराठी-फाटणें)
 फडा-फटा
 फणि-फणिन् (सर्प)
 फणिंद-फणीन्द्र (शेषः)
 फरुस-परुष
 फरुसभासिणि-परुषभाषिणी
 फल-फल
 फलभोयण-फलभोजन
 फलिय-फलित
 फलिह-स्फटिक
 फलोह-फल+ओष (समूह)
 फंफावय-बन्दिचारणादय इत्यर्थे देशी
 फंफावयसर-बन्दिन्+स्वर

फंस-स्पर्श
 फंस-स्पृश (धातुः)
 फंसण-स्पर्शन
 फाडिअ-पाटित
 फार-प्रचुर इत्यर्थे देशी (मराठी-फार)
 फार-स्फार, स्फीत (अतिशयार्थे)
 फाल-पाटय् (धातुः)
 फालिय-पाटित
 फास-स्पर्श
 फासवंत-स्पर्शवत्
 फासाइय-स्पर्शादिक (विषयः)
 फामुअ-प्राशुक (प्रशस्त इत्यर्थे)
 फिर-परावर्तने देशी (धातुः) (मराठी-फिरणे)
 फुट्ट-स्फुटित
 फुट्ट-भिन्न इत्यर्थे देशी (मराठी-फुटणे)
 फुट्टपाय-स्फुटित+पाद्
 फुडवत्ति-स्फुट+वृत्ति
 फुफुव-फूल्क (धातुः)
 फुर-स्फुर (धातुः)
 फुरिअ-स्फुरित (दीप्त)
 फुरिय-स्फुरित
 फुलिङ्ग-स्फुलिङ्ग
 फुल्ल-पुष्प (मराठी-फूल)
 फुल्ल-फुल्ल
 फुल्लोह-पुष्प+ओष (समूह)
 फेड-मुच्चात्वर्थे देशी
 फेण-फेन
 फेणरासि-फेनराशि
 फोडिय-स्फोटित
 बइट्ट-उपविष्ट इत्यर्थे देशी
 बइसावय-उपवेशय् इत्यर्थे देशी (धातुः)
 बज्झ-बन्धधातोः कर्मणि
 बज्झावयास-बाह्य + अवकाश (बाह्यप्रदेश इत्यर्थः)
 बज्झ-बाह्य

बद्ध-बद्ध
 बद्धाउस-बद्धायुष्
 बप्प-पितृशब्दार्थे देशी
 बप्प-चातक
 बरिहण-बर्हिन् (मयूरः)
 बल-बल
 बलखीण-बलक्षीण
 बलवंत-बलवत्
 बलसणाह-बलसनाथ
 बलि-बलि
 बलिय-बलिन
 बलिविहाण-बलिविधान (पूजाविधिः)
 बहल-बहल
 बहिणी-भगिनी
 बहिणुली-भगिनिका (यवीयसी भगिनीत्यर्थः)
 बहिर-बधिर
 बहिरअ-बधिर (क)
 बहिरंध-बधिर+अन्ध
 बहु-बहु
 बहुदुक्खाउर-बहुदुःखातुर
 बहुभेय-बहुभेद
 बहुरोयहर-बहुरोगहर
 बहुवणभेय-बहुवर्णभेद
 बहुविह-बहुविध
 वंदियण-वन्दीजन
 वंदी-वन्दी
 बंध-बन्ध
 बंधण-बन्धन
 बंधु-बन्धु
 वंचुल-बन्बुल (वृक्षनाम । मराठी-बामूल)
 वंभ-ब्रह्मन् (ब्रह्मदेव)
 वंभण-ब्राह्मण
 वंभणव्वअ-ब्राह्मणवत्
 वंभणी-ब्राह्मणी
 वंभयारि-ब्रह्मचारिन्
 वंभव्वअ-ब्रह्मवत् (ब्रह्मचर्यमित्यर्थः)

बंभोत्तर-ब्रह्मोत्तर (स्वर्गनाम)
वायर-वादर (बदरप्रमाण इत्यर्थः)

वार-द्वार

वारह-द्वादश

वारहविह-द्वादशविध

बाल-बाल

बालय-बालक

बावीस-द्वाविंशति

बाहा-बाहु

बाहु-बाहु

वि-द्वि

विणिण-द्वौ, द्वे

विल-विल

विन्दु-विन्दु

विवाहर-विम्बाहर

वित्रीहलाह-विम्बीकलाभ

वीय-द्वितीय

वीय-वीज

वीयंद-द्वितीयाचन्द्र

वीह-भी (धातुः)

बुज्ज-बुध् (धातुः)

बुज्झर-बोधनशील

बुद्ध-बुद्ध

बुद्ध-बुद्ध (तथागत)

बुद्धि-बुद्धि

बुन्वुअ-बुद्दुद

बुन्वुय-बुद्दुद

बुह-बुध

बुहयण-बुधजन

वे-द्वि

वेक्खुर-द्विखुर

बोक्कड-अज इत्यर्थे देशी (मराठी-बोक्कड)

बोल्लिअ-कथित इत्यर्थे देशी

बोहि-बोधि

भअ-भय

भअ-भव

भइरअ-भैरव

भइरव-भैरव

भइरवाणंद-भैरवानन्द (कापालिकनामविशेष)

भउहा-भृकुटि

भक्ख-भक्ष् (धातुः)

भक्ख-भक्ष्य

भग्ग-भग्न (वशीकृत इति टिप्पणम्)

भज्ज-भज्ज् (धातुः)

भज्ज-भार्या

भज्ज-भज्ज्धातोः कर्मणि

भट्ट-भट्ट

भट्ट-भ्रष्ट

भड-भट

भडारअ-भट्टारक, भगवत्

भडारिआ-भट्टारिका, भगवती

भडारी-भट्टारिका

भडिय-पक्क इति टिप्पणम् (मराठी-भरित)

भण-भण् (धातुः)

भणिअ-भणित

भणिज्ज-भण्धातोः कर्मणि

भत्ति-भक्ति

भत्तिभर-भक्तिभर

भत्तिल्ल-भक्तियुक्त

भद्द-भद्र

भद्दी-भद्रा

भप्पर-भस्म इत्यर्थे देशी

भम-भ्रम् (धातुः)

भमर-भ्रमर

भमरोह-भ्रमर+ओघ (समूह)

भमंत-भ्रमत्

भमाड-भ्रम् (धातुः)

भमाडिअ-भ्रामित

भमिअ-भ्रमित

भमिय-भ्रमित

भमिर-भ्रमणशील

भय-भय
 भयउल-भयाकुल
 भयगारी-भयकारिन्
 भयदाइणि-भयदायिनी
 भयधातु-सप्तधनुर्भित इति टिप्पणम्
 भयवइ-भगवती
 भयवन्त-भगवत्
 भयंकर-भयंकर
 भयाउर-भयातुर
 भयाउल-भयाकुल (भयावह इत्यर्थः ?)
 भर-भर (भार)
 भरह-भरत (वर्षनाम)
 भरह-भृत (आच्छादित इति टिप्पणम्)
 भरिअ-भृत, भरित
 भरिय-भरित
 भल-भद्र
 भल-शुनक इति टिप्पणम्
 भल्लुय-भल्लूक (प्राणिविशेषः)
 भल्लू-भल्लूक
 भव-भव (संसारगति)
 भवकद्म-भवकर्दम
 भवचरिय-भवचरित
 भवण-भवन
 भवबद्ध-भवबद्ध
 भवन्तर-भवान्तर
 भव्व-भव्य
 भव्वयण-भव्यजन
 भस-भप् (धातुः)
 भसण-भषक (मनसा तुष्ट इति टिप्पणम्)
 भसण-भषक (शुनक इत्यर्थः)
 भसल-भृङ्गशद्वार्थे देशी
 भसलउल-भ्रमरकुल
 भंगाल-भृङ्ग+आल (मत्वर्थीयः) (सभृङ्ग
 इत्यर्थः)
 भंगुर-भङ्गुर
 भंड-भाण्ड

भंडण-भण्डन (कलह इत्यर्थः)
 भंति-भ्रान्ति
 भंतिअ-भ्रान्त
 भंभा-भम्भा (वाद्यविशेषः)
 भाण-भाजन
 भाणिअ-भाणित (कथित)
 भाणु-भातु
 भायण-भाजन
 भार-भार
 भारह-भारत (महाभारत इति टिप्पणम्)
 भाल-भालय अवलोकने (धातुः)
 भाल-भाल (ललाट)
 भाव-भाव
 भाव-भावय् (धातुः)
 भावण-भावना
 भाविष्फुरन्त-भा+विस्फुरत्
 भाविर-भाव+इर (मत्वर्थीयः)
 भास-भाप् (धातुः)
 भास-भास (पक्षिविशेषः)
 भासा-भाषा
 भासिय-भाषित
 भासुर-भासुर
 भिउडि-भुकुटि
 भिक्ख-भिक्षा
 भिक्खयर-भिक्षाचर
 भिक्खपत्त-भिक्षापात्र
 भिक्खा-भिक्षा
 भिक्खाणिमित्त-भिक्षानिमित्त
 भिच्च-भुञ्ज
 भिच्चउल-भुञ्जकुल
 भिज्ज-भिद्घातोः कर्मणि
 भिड-अभिगमने देशी (धातुः)
 भिण्ण-भिन्न
 भिणिहिण-भ्रमरादिशब्दानुकरणे धातुः
 (भराटी-भिणभिण)
 भिण्णी-भिन्ना

भित्ति-भित्ति
 भिल्ल-भिल्ल (शबरजातिविशेषे देशी)
 भिस-भिस
 भिंग-भृङ्ग
 भिंगार-भृङ्गार (पात्रविशेषः)
 भिन्द-भिद् (धातुः)
 भीअ-भीत
 भीम-भीम
 भीयर-भीकर (भीजनकमित्यर्थः)
 भीस-भीष्म (भीषण)
 भीमण-भीषण
 भीसावण-भेषण
 भुअ-भुज
 भुक्खा-बुभुक्षा
 भुक्खिया-बुभुक्षिता
 भुत्त-भुक्त
 भुत्तुवरिअ-भुक्त+उर्वरित (भुक्तशेष इत्यर्थः)
 भुय-भुज
 भुयग-भुजाग्र
 भुयंग-भुजङ्ग (सर्पो विटश्चेति टिप्पणम्)
 भुल्लअ-भ्रान्त इत्यर्थे देशी
 भुवण-भुवन
 भुवणयल-भुवनतल
 भुंज-भुज् (धातुः)
 भुंजाविय-भोजित
 भू-भू
 भूदाण-भू+दान
 भूमी-भूमि
 भूमीयल-भूमितल
 भूमीस-भूमीश (नृप इत्यर्थः)
 भूय-भूत
 भूरि-भूरि
 भूवाल-भूपाल
 भूसण-भूषण
 भूस-भूप् (धातुः)
 भूसिय-भूषित

भेय-भेद
 भेरी-भेरी (वाद्यविशेषः)
 भो-भो (संबोधनेऽव्ययम्)
 भोअ-भोग
 भोउवभोय-भोग+उपभोग
 भोज्ज-भोज्य
 भोम-भौम (भूमिसंबन्धि)
 भोयण-भोजन
 भोयणवेल-भोजनवेला
 म-मा (निपेधेऽव्ययम्)
 मअ-मद
 मअ-मृग
 मअ-मृत
 मइ-मति
 मइभंस-मतिभ्रंश
 मइरक्खण-मतिरक्षण
 मइरंग-मदिर+अङ्ग (मदजललितशरीर इत्यर्थः)
 मइरा-मदिरा
 मइल-मलिन
 मइलणिय-मलिनित
 मइलिय-मलिनित
 मइंदासन-मृगेन्द्र+आसन (सिंहासन)
 मई-मति
 मउ-मृदु
 मउअ-मृदुक (प्रियंवदः कोमलश्चेति टिप्पणम्)
 मउड-मुकुट
 मउडगकोडि-मुकुट+अग्र+कोटि
 मउल-मुकुल
 मउल-मौल (मौलिः=शिरस्) १ २ ३-६
 मउलिय-मुकुलित
 मऊरी-मयूरी
 मओयर-मृतोदर
 मग-मार्गय् (याच) (धातुः)
 मग-मार्ग

मगण—मार्गण (वाण)
 मगिगज्ज—मार्गयधातोः कर्मणि
 मच्छ—मत्स्य
 मच्छर—मत्स्य
 मच्छर—मत्सर
 मच्छंधि—मत्स्यधर
 मच्छंधिणीवाल—मत्स्यधरवाल
 मच्छियअ—मत्स्य (क)
 मज्झ—मध्य
 मज्झत्थ—मध्यस्थ
 मज्झखीणा—मध्येक्षीणा
 मज्झिम—मध्यम
 मज्ज—मद्य
 मज्ज—मस्ज् (धातुः)
 मज्ज—मजा (शरीरधातुविशेषः)
 मज्जखंड—मजाखण्ड
 मज्जमाण—मज्जत्
 मज्जाय—मर्यादा
 मडय—मृत (क)
 मढ—मठ
 मण—मन् (धातुः)
 मण—मनस्
 मणगमण—मनोगमन (मनोजव इत्यर्थः)
 मणचडुल—मनश्चटुल (मनोवचटुल)
 मणतणय—मानसिक
 मणरावअ—मनोरञ्जक
 मणहर—मनोहर
 मणहरण—मनोहरण
 मण्ण—मन् (धातुः)
 मणिअ—मणित (रतिकूजितमित्यर्थः)
 मणिजासवणहेउ—मणि+जपा+हेतु (मणि-
 जपादृष्टान्तः । स्फटिकमणिर्यथा जपापुष्प-
 सांनिध्यादतिरक्तो दृश्यते तथा शुद्धोऽप्यात्मा
 संसारिणां योगे तादृशो भवति, अरूपित्वात्
 इति टिप्पणम्)
 मणिमय—मणिमय

मणिमुद्दी—मणिमुद्रिका
 मणुअ—मनुज
 मणुय—मनुज
 मणुस्—मनुष्य
 मणोज्ज—मनोज्ञ
 मणोरह—मनोरथ
 मणोहर—मनोहर
 मणिअ—मानित
 मत्त—मत्त
 मत्थअ—मस्तक
 मत्थिक्क—मस्तिष्क
 मद्—मृद् (धातुः)
 मद्दण—मर्दन
 मद्दल—मर्दल (वाद्यविशेषः)
 मद्दव—मार्दव
 मम्मण—मम्मण (कामोद्रेककारिवचनम्)
 मय—मद
 मय—मृग
 मय—मृत
 मयउल—मृगकुल
 मयगह—मदग्रह
 मयचक्क—मदचक्र (अष्टविधमदसमूह इत्यर्थः)
 मयच्छि—मृगाक्षी
 मयण—मदन
 मयणाहि—मृगनाभि
 मयणुम्मायअ—मदनोन्मादक
 मयर—मकर
 मयरद्वय—मकरध्वज
 मयलच्छण—मृगलाञ्छन
 मयवह—मृगवध
 मयवंत—मदवत्
 मयंक—मृगाङ्क
 मयारि—मद+अरि
 मर—मृ (धातुः)
 मरगय—मरकत
 मरट्ट—गर्व इत्यर्थे देशी

मरण—मरण
 मराल—हंस
 मरालिया—मरालिका (हंसवधूः)
 मरिय—मरिच (मराटी—मिरे)
 मरु—मरुत्
 मरुद्धय—मरुदुद्धत
 मरुहय—मरुद्+हत
 मल—मल
 मलण—मलन
 मलहेउ—मलहेतु
 मल्ल—मल्ल
 मलिण—मलिन
 मलीमस—मलीमस
 मल्लि—मल्ली (एकोनविंशतीर्थकरनाम)
 मल्लिया—मल्लिका (कुमुदविशेषः)
 मसाण—मशान
 मसि—मपी
 मसिण—मसृण
 महएवी—महादेवी
 महएविणिकेय—महादेवी+निकेत
 महघ—महार्घ, अथवा, महार्ह
 महणव—महार्णव
 महत्थ—महार्थ
 महमह—गन्धोद्धाने देशी (धातुः)
 महयर—महत्तर
 महयाल—महाकाल (उजयिनीस्थशिवनाम)
 महरिसि—महर्षि
 महल्ल—महत् (वृद्ध इत्यर्थः)
 महव्वय—महाव्रत
 महत्त—महत्
 महाउह—महायुध
 महाएवी—महादेवी
 महागह—महाग्रह
 महाजइ—महायति
 महाजस—महायशस्
 महाणुभाव—महानुभाव

महापयत्थ—महापदार्थ
 महापसाअ—महाप्रसाद
 महापह—महापथ
 महाबल—महाबल
 महामइ—महामति
 महामुणि—महामुनि
 महारह—महारथ
 महारुंद—पूर्ण इत्यर्थे देशी, अथवा, महस्
 (तेजः) + रुंद (विस्तीर्ण) १-१८-१
 (तेजसा विस्तीर्ण इत्यर्थः)
 महावच्छ—महावस्त्र
 महासइ—महासती
 महि—मही (पृथ्वी)
 महिअ—महित (पूजित)
 महिच्छिया—मही+इच्छा (मही+ईप्सा इति
 ईप्सणम्)
 महिणाह—महीनाथ
 महिमहिय—मही+महित
 महिमहिल—मही+महिला (स्त्री)
 महियाल—महीपाल
 महिल—महिला (स्त्री)
 महिला—महिला (स्त्री)
 महिवइ—महीपति
 महिचल—मही+चल
 महिचलअ—मही + वलय (भूमण्डल—
 मित्यर्थः)
 महिवहु—मही+वधू
 महिस—महिष
 महिसासुर—महिषासुर
 महिसी—महिषी (महिषस्त्री)
 मही—मही
 महीमहत्त—मही+महत् (पूज्य)
 महीयल—महीतल
 महीहर—महीधर
 महु—मधु
 महुमह—मधुमथ (न), (विष्णुरित्यर्थः)

महुय-मधुकर
 महुयल-मधुकर
 महुयला-मधुलता
 महु-मधुर
 महुकर-मधुराक्षर
 महेली-महिला
 महोर-महोरग
 मंगल-मङ्गल
 मंच-मञ्च
 मंजर-मार्जार
 मंजरिया-मञ्जरी
 मंजीर-मञ्जीर (पादभूषणविशेषः)
 मंठ-मन्द (मराठी-मठ)
 मंठ-मृष्ट
 मंठुवयंठ-मृष्ट+उपकण्ठ (समीप-
 स्थप्रदेशः)
 मंडअ-मण्डप
 मंडण-मण्डन
 मंडय-मण्डक (खाद्यविशेषः ।
 मराठी-मांडा)
 मंडलचरण-मण्डलचरण (सरीसृप-
 विशेषः)
 मंडलिय-मण्डलित (वर्तुल)
 मंडलिय-माण्डलिक (मण्डलवर्तिनृपसमूहः)
 मंडलिल-मण्डल+इल (मत्वर्थीयः)
 मंडव-मण्डप
 मंडिअ-मण्डित
 मंडिय-मण्डित
 मंत-मन्त्र
 मंतगुंफ-मन्त्र+गुंफ, अथवा, मन्त्र-गुप्त
 (गुप्तमन्त्र इत्यर्थः)
 मंतण-मन्त्रण
 मंति-मन्त्रिन्
 मंतिअ-मन्त्रित
 मंतिमहल-मन्त्रिन्+महत
 मंतिसुअ-मन्त्रिसुत

मंथर-मन्थर (मन्द)
 मंद-मन्द
 मंदरगिरि-मन्दरगिरि
 मंदल-मर्दल (वाद्यविशेषः)
 मंदार-मन्दार (वृक्षविशेषः)
 मंदिर-मन्दिर
 मंधाय-मांधातृ (नृपविशेषः)
 मंस-मांस
 मंसासिण-मांसाशिन्
 मा-मा (प्रतिपेक्षेऽव्ययम्)
 माइ-मातृ
 माइअ-मात (माघातोर्निष्ठान्तम्)
 माउच्छिआ-मातृत्वम्
 माउपण्णअ-मातृ+पन्नग
 माऊर-मायूर (मयूरसंबन्धि)
 माण-मान
 माणअ-मानव
 माणवभव-मानवभव
 माणावमाण-मानापमान
 माणिक्क-माणिक्य
 माणिणि-मानिनी
 माणुस-मनुष्य
 माय-मातृ
 मायरि-मातृ
 मायंग-मातङ्ग (हस्ती)
 मायंगणर-मातङ्गनर (चाण्डाल)
 मायाकसाअ-मायाकषाय
 मायापियरुल्लअ-मातापितृ+उल्लअ (स्वार्थे)
 मायाभाव-मातृभाव
 मायामअ-मायामय
 मायार-माया+आचार
 मायासुअ-मातृ+सुत
 मार-मार (मदन)
 मारण-मारण
 मारणसील-मारणशील
 मारय-मारय (धातुः)

माराव-मारय् (धातुः)
 माराविअ-मारित
 मारि-मारी (इननशीलदेवताविशेषः)
 मारिअ-मारित
 मारिदत्त-मारिदत्त (राज्ञो नामविशेषः)
 मारियत्त-मारिदत्त (राज्ञो नामविशेषः)
 मारी-मारी (कात्यायनी)
 माल-माला
 मालइ-मालती (लताविशेषः)
 माला-माला
 मास-मांस
 मासावसाण-मास+अवसान
 मासाहार-मांसाहार
 माहप्प-माहात्म्य
 माहिंद-माहेन्द्र
 मि-अपि (अनुस्वारानुनासिकयोः परे एव)
 मिउ-मृदु
 मिग-मृग
 मिगीवइ-मृगीपति
 मिच्छत्त-मिथ्यात्व
 मिच्छभाअ-मिथ्याभाव
 मिच्छमअ-मिथ्यामद, मिथ्यामत
 मिच्छ-मा+इच्छ
 मिच्छामअ- मिथ्यामद
 मिट्ठ-मिष्ट
 मिट्ठ-मृष्ट
 मिट्ठ-मेण्ठ (हस्तिपाल)
 मित्त-मित्र (सुहृद्)
 मित्त-मित्र (सूर्य)
 मिल-मिल् (धातुः)
 मिलिय-मिलित
 मिस-आमिष
 मिहिलाउर-मिथिलापुर
 मिहुण-मिथुन
 मिहुणल्ल-मिथुन+अल्ल (स्वार्थे)
 मिहुणुल्ल-मिथुन+उल्ल (स्वार्थे)

मिढय-मेपशद्धार्य देशी (मराठी-मैढा)
 मिंढी-मेपखी इत्यर्थे देशी (मराठी-मैढी)
 मीणधर-मीनधर (धीवर)
 मीणी-मीनी (मत्स्यस्त्री)
 मुअ-मुच् (धातुः)
 मुअ-मृत
 मुक्क-मुक्त
 मुक्ख-मूर्ख
 मुग्गस-नकुल इत्यर्थे देशी (मराठी-मुंगुस)
 मुच्छ-मूर्च्छ (धातुः)
 मुच्छ-मूर्च्छा
 मुच्छा-मूर्च्छा (यमदूतीति टिप्पणम्)
 मुच्छावण-मूर्च्छा + आपन्न
 मुच्छावस-मूर्च्छावश
 मुच्छिज्ज-मूर्च्छधातोः कर्मणि
 मुच्छिय-मूर्च्छित
 मुज्झ-मुद् (धातुः)
 मुट्ठिगाहिअ-मुष्टिग्रहीत
 मुडियट्ठि-मोटित (भग्न)+अस्थि
 मुण-मन् चिन्तायाम् (धातुः)
 मुण-ज्ञा इत्यर्थे (धातुः)
 मुणि-मुनि
 मुणिज्ज-ज्ञाधातोः कर्मणि
 मुणिदिक्ख-मुनिर्दक्ष
 मुणिपुंगव-मुनिपुंगव
 मुणिंद-मुनीन्द्र
 मुणी-मुनि
 मुणीसर-मुनीश्वर
 मुत्ताहल-मुक्ताफल
 मुत्ति-मुक्ति
 मुत्ति-मूर्ति (शरीर)
 मुत्तिय-मौक्तिक
 मुद्दा-मुद्रा (अङ्गविक्षेपप्रकारः)
 मुद्ध-मुग्ध
 मुद्ध-मुग्धा
 मुय-मृत

मुयंग-मृताङ्ग
 मुररिउ-मुररिपु (विष्णुः)
 मुरारि-मुरारि (विष्णुः)
 मुसावाय-मृषावाद
 मुह-मुद् (धातुः)
 मुह-मुख
 मुहर-मुखर
 मुहरत्त-मुखरत्त (शुको विटश्च)
 मुहल-मुखर
 मुहलिय-मुखरित
 मुहवड-मुखपट
 मुहामुक्क-मुखामुक्त
 मुहावट्टिय-मुखावर्तित
 मुंड-मुण्ड (धातुः)
 मुंड-मुण्ड (मूर्धन्)
 मुंडपसाहणि—मुण्ड + प्रसाधना
 (मुण्डालंकृतेत्यर्थः)
 मुंडिय-मुण्डित
 मूअ-मूक
 मूढ-मूढ
 मूढत्तण-मूढत्व
 मूढमइ-मूढमति
 मूल-मूल
 मेहणी-मेदिनी (भूमिः)
 मेकरत्त-मे इति मेपशब्दं कुर्वत्
 मेच्छ-भ्लेच्छ
 मेमण—मेइति शब्दविशेषः
 मेम्मायत्त-मे मे इतिशब्दं कुर्वत्
 मेर-मर्यादा इत्यर्थे देशी
 मेरु-मेरु (पर्वतनाम)
 मेलअ-मेलन
 मेलण-मीलन
 मेल्ल-मुत्त इत्यर्थे देशी (धातुः)
 मेल्लविअ-(मेलित)
 मेल्लिअ-मुक्त इत्यर्थे देशी
 मेस-मेष

मेसउल-मेषकुल
 मेसय-मेष (क)
 मेह-मेष
 मेहजाल-मेषजाल
 मेहा-मेषा
 मेहुण-मैथुन
 मोक्ख-मोक्ष
 मोडिय-मोटित (भग्न)
 मोण-मौन
 मोत्तिय-मौक्तिक
 मोयय-मोदक
 मोर-मयूर
 मोरुल्ल-मयूर+उल्ल (स्वार्थे)
 मोरय-मयूर
 मोल्ल-मूल्य
 मोसिअ-मोषित, मुषित
 मोह-मोह
 मोहणसील-मोहनशील
 मोहरयंघ-मोहरजस्+अन्ध
 मोहंघ-मोहान्ध
 मोहिअ-मोहित

य-च (स्वरात्परे एव)
 या-ज्ञा (धातुः)
 याण-ज्ञा (धातुः)
 युत्त-युक्त

रइ-रति
 रइअ-रचित
 रइय-रचित
 रइरमण-रतिरमण (मदन)
 रइलासस-रतिलालस
 रइविमल-रतिविह्वल
 रउद्-रौद्र
 रउरव-रौरव
 रक्ख-रक्ष (धातुः)

रक्खस-राक्षस
 रक्खसी-राक्षसी
 रक्खिअ-रक्षित
 रज्ज-राज्य
 रज्ज-रज्जधातोः कर्मणि
 रज्जंग-राज्याङ्ग
 रज्जु-रज्जु (प्रमाणविशेषः)
 रज्जुया-रज्जुका
 रड-रट् (धातुः) (रोदनेऽपि दृश्यते)
 रडंत-रटत्, रुदत्
 रण-रण
 रणझणंत-रणझणशब्दं कुर्वत्
 रण्ण-अरण्य
 रत्त-रक्त (रक्तवर्ण)
 रत्त-रक्त (आसक्त)
 रत्तच्छ-रक्ताक्ष
 रत्तत्त-रक्त+अक्त (रक्तरञ्जित इत्यर्थः)
 रत्तपत्तंचिअ-रक्तपत्राञ्जित
 रत्तसिहर-रक्ताशिखर (कुक्कुट)
 रत्तिदिवसु-रात्रिदिवसम्
 रत्तुप्पल-रक्तोत्पल
 रम-रम् (धातुः)
 रमण-रमण (वल्लभ)
 रमण-रमण (रतिः, क्रीडा)
 रमणिज्ज-रमणीय
 रमणी-रमणी
 रमंत-रममाण
 रम्म-रम्य
 रमिअ-रत
 रय-रजस्
 रयई-रजकी
 रयण-रत्न
 रयणत्त-रत्नत्व
 रयणत्तय-रत्नत्रय (ज्ञानदर्शनचारित्राणि)
 रयणप्पह-रत्नप्रभ (प्रथमनरकनाम)
 रयणायर-रत्नाकर

रयणि-रजनि
 रयणी-रजनी
 रयणीयर-रजनीकर (चन्द्र)
 रयणुज्जल-रत्नोज्ज्वल
 रयणोह-रत्नौघ
 रव-रव
 रवण्ण-रमणीय इत्यर्थे देशी
 रवि-रवि
 रवियर-रविकर (रविकिरण)
 रविवार-रविवासर
 रस-रस
 रस-रस (रक्तादिधातवः) १०१६०९.
 रसणा-रशना
 रसय-रस (क)
 रसयागी-रसकारिन् (सुखजनक इति
 टिप्पणम्)
 रसवस-रसवश
 रसविण्णास-रस + विजिज्ञासा
 रसंत-रसत्
 रसिय-रसित (शब्द इत्यर्थः)
 रसोई-रस + इल्ल (मत्वर्थीयः) (पाकइत्यर्थः)
 रसिल्ल-रसवती (ओदनादिपाक इत्यर्थः)
 रसोल्ल-रस + उल्ल (मत्वर्थीयः)
 रह-रथ
 रहवर-रथवर
 रहस-रभस
 रहसजुत्त-रभसयुक्त
 रहासिर-रभस + हर (शीलार्थे प्रत्ययः)
 रहासिल्ल-रभस + इल्ल (मत्वर्थीयः)
 रहिअ-रहित
 रहुवइ-रघुपति
 रंग-रङ्ग
 रंगंत-रङ्गत् (मराठी-रांगणें)
 रंगावलि-रङ्गावलि (प्राङ्गणादिषु विविधवर्ण-
 चूर्णैः क्रियमाणो विच्छित्तिविशेषः । मराठी-
 रांगोळी)

रंगिर-रङ्ग + इर (रङ्गयुक्त)
 रंजिअ-रञ्जित
 रंजिय-रञ्जित
 रंध-रन्ध्र
 राअ-राग
 राअ-राजन्
 राई-राजि (धान्यविशेषः । मराठी-मोहरी)
 राउ-राजन्
 राउल-राजकुल
 राणअ-राजन्
 राणासण-राजासन
 राणिया-राज्ञी
 राम-राम (रामचन्द्र)
 राम-राम (मन्त्रिनाम)
 राय-राग
 राय-राजन्
 रायउत्त-राजपुत्र
 रायउर-राजपुर
 रायघरिणि-राजगृहिणी
 रायगेह-राजगेह
 रायट्टाण-राजस्थान (राजसभेत्यर्थः)
 रायतुरअ-राजतुरग
 रायपुरिस-राजपुरुष
 रायमग्ग-राजमार्ग
 रायराएस-राजराजेश
 रायसिरी-राजश्री
 रायसोवाण-राजसोपान
 रायाणिया-राज्ञी
 रायाहिराय-राजाधिराज
 राव-रव (शब्द)
 रावण-रावण
 रासह-रासभ
 रासि-राशि
 राहा-शोभा इति टिप्पणम्
 रिउ-रिपु
 रिउपहरण-रिपुप्रहरण

रिच्छ-रुक्ष
 रिण-रुण
 रिद्ध-रुद्ध
 रिद्धि-रुद्धि
 रिया-रुन् (वेदपङ्क्तयः)
 रिसह-रुपभ (प्रथमतीर्थकरनाम)
 रिसि-रुषि
 रिसित्त-रुषित्व
 रिसिवअ-रुषिवत
 रिसीसर-रुषीश्वर
 रिंछोलि-श्रेणिशब्दार्थे देशी
 रीण-दीन, श्रान्त इत्यर्थे देशी
 रुइ-रुचि
 रुइरहियक्क-रुचिरहितार्क (रुच्या दीप्त्या
 प्रच्छादितादित्य इति टिप्पणम्)
 रुक्ख-वृक्ष
 रुक्खिअ-रुक्षित
 रुद्ध-रुघ्वातोः कर्मणि
 रुट्ट-रुष्ट
 रुण्ण-रुदित
 रुह-रुद्र
 रुह-रौद्र
 रुद्ध-रुद्ध
 रूप-रौप्य
 रुपिणी-रुक्मिणी
 रुवंत-रुदत्
 रुसा-रोपेण
 रुह-रुह् (धातुः)
 रुहिर-रुधिर
 रुहत्थल-रुद्ध+स्थल
 रुहिरंचाइणि-रुधिर+अर्चिता
 रुहिरावलि-रुधिरावलि
 रुहिरोलवोल-रुधिर+ओल + वोल (रुधिरेण
 आर्द्राद्रि इत्यर्थः)
 रुंजिय-रुञ्जित
 रुंठ-गुञ्जइत्यर्थे देशी (धातुः)

रुंड-रुण्ड (कवन्व)
 रुन्द-विरतीर्ण इत्यर्थे देशी
 रुंधण-रोधन
 रुंभ-रुध् (धातुः)
 रुव-रुप
 रुववंत-रुपवत्
 रुस-रुप् (धातुः)
 रेणु-रेणु
 रेल्-शुम् धात्वर्थे देशी
 रेल्डिय-भाप् धात्वर्थे देशी
 रेहा-रेखा
 रेहातियंक-रेखा+त्रिक+अङ्क
 रोअ-रुद् (धातुः)
 रोझ-रोझ (प्राणिविशेषः)
 रोमंचिय-रोमाञ्चित
 रोमंथण-रोमन्थ
 रोमावलि-रोमावलि
 रोयत्तण-रोगित्व
 रोयाउर-रोगातुर
 रोर-दारिद्र इत्यर्थे देशी
 रोरत्तण-दारिद्र्य
 रोस-रोष (क्रोध)
 रोसह-! शेषेणान्योन्यं प्रन्तीति टिप्पणम् ।
 रोसिर-रोषशील
 रोहय-रोहित (मत्स्यविशेषः)
 रोहिय-रोहित (मत्स्यविशेषः)

लइ-अतिशयार्थेऽव्ययम् (देशी); लोकोक्ताविति
 तु हेमचन्द्रः ।

लइ-शीघ्रम्
 लइअ-गृहीत
 लइय-गृहीत (व्याप्त इत्यर्थः)
 लक्ख-लक्ष्य (धातुः)
 लक्ख-लक्ष (संख्या)
 लक्खण-लक्षण
 लक्खणालु-लक्षण+आलु (मत्वर्थीयः)

लगग-लग् (धातुः)
 लगग-लग्न
 लगग-लग्न (योगविशेषः)
 लच्छि-लक्ष्मी
 लच्छिसहि-लक्ष्मी+सखी
 लच्छीपियल्ल-लक्ष्मीप्रिय+ल्ल (स्वार्थे)
 लज्ज-लजा
 लजा-लजा
 लडह-सुन्दर इत्यर्थे देशी
 लट्टि-यष्टि
 लड्डुय-लड्डुक (मोदकादि)
 लणह-लक्षण
 लद्ध-लब्ध
 लद्धी-लब्धि (प्राप्ति)
 लद्ध-लभधातोः कर्मणि
 लयामंडव-लतामण्डप
 लयाहर-लताग्रह
 लल-लल् (धातुः)
 ललणा-ललना
 ललललिय-चञ्चल इत्यर्थे देशी
 ललंत-ललत्
 लल्ल-अस्पृष्टभाषीत्यर्थे देशी
 लल्लक-रौद्र इत्यर्थे देशी
 ललिय-ललिता
 ललिया-ललिता
 लवण-लवण
 लविय-लपित (उक्त)
 लह-लभ् (धातुः)
 लहंत-लभमान
 लहु-लघु
 लहुय-लघुक
 लंगूल-लाङ्गूल
 लंग-लङ्घ् (धातुः)
 लंगिय-लङ्घितः
 लंछण-लाञ्छन
 लंजिया-दासीशब्दार्थे देशी

लंपड-लम्पट
 लंब-लम् (धातुः)
 लंबत-लम्बत्
 लंबिय-लम्बित
 लंबिर-लम्बनशील
 लाइअ-लात (गृहीत इत्यर्थः)
 लायण-लावण्य
 लाल-लाला
 लालस-लालस
 लालारस-लाला+रस
 लावण-लावण्य
 लाह-लाभ
 लाहालाह-लाभालाभ
 लित्त-लित्त
 लियअ-लात (गृहीत)
 लिह-लिख् (धातुः)
 लिहाव-लेखय् (धातुः)
 लिहिय-लीढ, लिखित
 लिंग-लिङ्ग (चिह्न)
 लिंगि-लिङ्गिन् (ब्रह्मचारीत्यर्थः)
 लित-लात् (लाधातोः शत्रन्तः)
 लीण-लीन
 लीला-लीला
 लुअ-लून
 लुट्टण-लुट्टन
 लुण-लू (धातुः)
 लुद्ध-लुब्ध
 लुद्धअ-लुब्धक (व्याध इत्यर्थः)
 लुल्लक-यमदूत इत्यर्थे (!)
 लुंचण-लुञ्चन
 ले-ला (धातुः)
 लेप-लेप (कलास्वन्यतमा)
 लेप्प-लेप (वर्णादिः)
 लेव-लेप
 लेसा-लेश्या
 लोअ-लोक

लोइय-लोचित
 लोण-लावण्य
 लोय-लोक
 लोयण-लोचन
 लोयत्तय-लोकत्रय
 लोयालोय-लोकालोक
 लोल-लोल
 लोलंत-लोलत्
 लोलिर-लोलनशील
 लोहवलय-लोहवलय
 लोहिय-लोहित
 लोहियलुद्ध-लोहितलुब्ध

वइतरणि-वैतरणी (नरकनदीनाम)
 वइधव्व-वैधव्य
 वइयर-व्यतिकर
 वइर-वैर
 वइराअ-वैराग्य
 वइराड-वैराट
 वइरि-वैरिन्
 वइरिमारि-वैरिमारिणी
 वइसवण-वैश्रवण (कुबेर)
 वइसाह-वैशाख
 वउ-व्रत
 वउत्थ-व्रतस्थ
 वक्खाण-व्याख्यान
 वग्ग-वर्ग (समूह)
 वग्गुरिया-वागुरा (मृगबन्धनी रज्जुः)
 वग्घ-व्याघ्र
 वच्छ-वत्स
 वच्छ-वक्षस्
 वच्छराअ-वत्सराज (पूर्वकवेर्नाम)
 वच्छल-वत्सल
 वच्छल्ल-वात्सल्य
 वज्ज-वज्र
 वज्ज-वर्जय् (धातुः)

वज्र-वाद्य
 वज्रअ-वाद्य (क)
 वज्रणिहाअ-वज्रनिघात
 वज्रमाण-वाद्यमान
 वज्रर-कथ् इत्यर्थे देशी (धातुः)
 वज्रावय-वादय् (धातुः)
 वट्ट-वृत् (धातुः)
 वट्टण-वर्तन
 वट्टावयास-बाह्य+अवकाश (नगरबाह्यप्रदेश
 इति टिप्पणम्)
 वट्टिय-वर्तित (आवर्तित, अभ्यस्त इत्यर्थः)
 १. १७. १०
 वट्ठ-वृध् (धातुः)
 वट्ठमाण-वर्धमान (चतुर्विंशतीर्थकरनाम)
 वट्ठमाण-वर्धमान
 वट्ठिअ-वर्धित
 वट्ठिय-वर्धित
 वण-वन
 वण-व्रण
 वणदेवया-वनदेवता
 वणमकड-वनमर्कट
 वणयर-वनचर
 वणयरि-वनचरी
 वणलच्छी-वनलक्ष्मी
 वणवाल-वनपाल
 वणि-वणिक्
 वणिअ-कदर्धित इति टिप्पणम्
 वणिय-व्रणित (जर्जरित इत्यर्थः)
 वणिवइ-वणिक्पति
 वणिवर-वणिक्वर
 वण्ण-वर्णय् (धातुः)
 वण्ण-वर्ण
 वण्णण-वर्णन
 वण्णवंत-वर्णवत्
 वण्णुकड-वर्णोत्कट

वत्त-वृत्त
 वत्त-वक्त्र
 वत्त-वार्ता
 वत्त-वार्ता (कृषिवाणिज्यपशुपालनं वार्ता इति
 टिप्पणम्)
 वत्थ-वस्त्र
 वत्थु-वस्तु
 वत्थुबंध-वस्तुबन्ध
 वम्म-वर्मन्, मर्मन्
 वम्मह-मन्मथ
 वम्मीसर-मदन इत्यर्थे देशी
 वम्मुल्लूरिय-वर्मोल्लूरित (मर्मणि विद्ध इत्यर्थः)
 वयण-वचन
 वयण-वदन
 वयणभंग-वचनभङ्ग (स्यादस्ति स्यान्नास्ती-
 त्यादिसप्तभङ्गीप्रतिपादकवचनप्रकार इति
 टिप्पणम्)
 वयणुल्ल-वदन + उल्ल (स्वार्थे)
 वर-वर (श्रेष्ठ)
 वरइत्त-वरीता (पतिरित्यर्थः)
 वरचेल-वर + चेल (वस्त्र)
 वराई-वराकी
 वराय-वराक
 वरिट्ट-वरिष्ठ
 वरिस-वर्ष (धातुः)
 वरिस-वर्ष (संवत्सर इत्यर्थे)
 वरिसोण-वर्ष + ऊन
 वल-वल् चलने (धातुः)
 वल-युक्त इत्यर्थे २-२-११.
 वलय-वलाका
 वल्लह-वल्लभ
 वल्लह-वल्लभ (राष्ट्रकूटनरेन्द्राणां विरुदेध्वन्यत-
 मम् । कृष्णमहाराजस्य नामान्तरमिति
 टिप्पणम्)
 वल्ली-वल्ली
 ववहर-वि + अव + ह (धातुः)

ववहारकूड-व्यवहारकूड (कूटव्यवहार इत्यर्थः)

वविय-उत्त

वस-वश

वस-वस् (धातुः)

वस-वसा (रसादिशरीरधातूनामन्यतमम्
१-१६-९.)

वसकहम-वसा + कर्दम

वसचोप्पड-वसावलित इत्यर्थे देशी

वसण-व्यसन

वसह-वृषभ

वसहि-वसति

वसा-वसा

वसातुप्पगिह-वसाघृतभक्षक

वसुह-वसुधा

वसुहाहिअ-वसुधा + अधिप

वसुंधर-वसुंधरा (पृथ्वी)

वह-वध् (धातुः)

वह-वद् (धातुः)

वहु-वधू

वक-वक्र

वंच-वञ्च् (धातुः)

वंचण-वञ्चन

वंचणपर-वञ्चनपर

वंछ-वाञ्छ् (धातुः)

वंछिअ-वाञ्छित

वंझ-वन्ध्या

वंठ-शुष्कवृक्ष इत्यर्थे देशी (मराठी-वठलेला)

वंदण-वन्दन

वंदणिज्ज-वन्दनीय

वंदिय-वन्दित

वंभचेर-ब्रह्मचर्य

वंस-वंश (कुल)

वा-वा (धातुः)

वा-इवार्थेऽव्ययम्

वाअ-वात

वाइत्त-वादित

वाउ-वायु

वाएसरि-वागीश्वरी

वाड-वाट (वसतिस्थानम् । मराठी-वाडा)

वाणर-वानर

वाणी-वाणी

वाय-वात

वायडउल-शुककुल इत्यर्थे देशी

वायरण-व्याकरण

वाय-वाचय् (धातुः)

वाया-वाच्

वारण-वारण

वारवार-वारंवारम्

वारिअ-वारित

वारीयर-वारिचर (जलचर)

वाल-वाल (केश)

वाल-व्याल

वालपूलोलि-वालपूलाः केशपुञ्जास्तेषामोलि-
पङ्क्तिरिति टिप्पणम्

वालुयपह-वालुकाप्रभ (तृतीयनरकनाम)

वावग-वामन

वावर-वि+आ+पृ (धातुः)

वावरिअ-व्यापार

वावार-व्यापार

वावी-वापी

वास-व्यास

वास-वास (वसतिः)

वासअ-वर्षर्तुसंबन्धि (दूर्वादिकम्)

वासट्टिविह-द्विषष्टिविध

वासणा-वासना

वासर-वासर (दिनम्)

वासवसेण-वासवसेन (कविनामविशेषः)

वासिअ-वासित

वासुएअ-वासुदेव

वासुपुज्ज-वासुपूज्य (द्वादशतीर्थकरनाम)

वाह-वाण

वाह-वाहय् (धातुः)

वाह—व्याध
 वाहण—वाहन
 वाहायर—वाधाकर
 वाहि—व्याधि
 वाहिज्ज—वधधातोर्णिजन्तात् कर्मणि
 वाहिय—वाहित
 वाहियालि—वाह्यालि (वाह्यमार्गः; वाहनाना-
 मश्वजगादीनां शिक्षार्थं परिकल्पितः प्रदेश
 विशेषः । बाणधारेत्यर्थान्तरम्)
 वाहिल्ल—व्याधि+इल्ल (मत्वर्थीयः)
 वि—अपि (स्वरात्परे एव)
 विइण्ण—वितीर्ण
 विउल—विपुल
 विउस—विद्वस्
 विउससह—विद्वत्सभा
 विओय—वियोग
 विओयण—वियोजन (वियोग)
 विक्रमसंवच्छर—विक्रमसंवत्सर
 विकिरि—वि+कृ (क्षरणे धातुः)
 विक्खित्त—विक्षिप्त (विहित)
 विगव्व—विगर्व
 विगगह—विग्रह
 विगगहवन्त—विग्रहवत्
 विगघमहाणइ—विघ्नमहानदी
 विचित्त—विचित्र
 विच्च—वर्त्मनित्यर्थे देशी
 विच्छड्डु—विच्छर्द
 विच्छाय—विच्छाय (निस्तेजा इत्यर्थः)
 विच्छिण्ण—वि+छिन्न
 विच्छुल—विच्छुर
 विच्छुलिय—विच्छुरित
 विच्छोह—विक्षोभ
 विजय—विजय
 विज्ज—विद्या
 विज्ज—वैद्य
 विज्जविउल—विद्याविपुल

विज्जावच्च—वैयापृत्य (व्यापारः सेवादिकं वे-
 ल्यर्थः)
 विज्जाहर—विद्याधर
 विज्जिज्जन्त—वीज्यमान
 विज्जु—विद्युत्
 विज्जुपुंज—विद्युत्पुञ्ज
 विज्जुलिय—विद्युत्
 विज्जुविराइय—विद्युद्विराजित
 विट्ठल—अपवित्रार्थे, अस्पृश्यसंसर्गे वा देशी
 विट्ठलअ—अपवित्रार्थे देशी
 विट्ठर—विष्टर (आसन)
 विड—विट
 विणअ—विनत
 विणअ—विनय
 विणडिअ—वाञ्छित इत्यर्थे देशी
 विणविय—विज्ञप्त
 विणास—विनाश
 विणासयर—विनाशकर
 विणिउत्त—विनियुक्त
 विणिग्गम—वि+निर्गम
 विणिग्गय—विनिर्गत
 विणिवारिय—विनिवारित
 विणिवेइय—विनिवेदित
 विणिहय—विनिहृत
 विणु—विना
 विण्णाण—विज्ञान
 विण्हु—विण्णु
 विणोअ—विनोद
 विणोय—विनोद
 वित्त—वित्त
 वित्त—वृत्त
 वित्थर—वि+स्तृ (धातुः)
 वित्थरिअ—वित्तृत
 वित्थार—विस्तार
 वित्थरिअ—विस्तारित
 वित्थिष्ण—विस्तीर्ण

विदुम-विदुम
 विद्ध-विद्ध
 विद्धंसण-विध्वंसन
 विद्धंसिय-विध्वस्त
 विद्धि-वृद्धि
 विद्धी-विद्धा
 विष्प-विप्र
 विष्पागम-विप्र+आगम (वेद इत्यर्थः)
 विष्पिअ-वि+प्रिय (हिंसादिकर्म)
 विष्पिय-विप्रिय
 विष्पोसहि-विप्रौषधि (!) योगिनां प्रभाव-
 विशेषेण मूत्रविष्टादिभ्यो निष्पाद्यमाना-
 न्यौषधानि)
 विष्फुर-वि+स्फुर (धातुः)
 विव्भम-विभ्रम
 विव्भयंत-विभावयत्
 विभिण्ण-विभिन्न
 विमद्-विमर्द
 विमल-विमल (त्रयोदशतीर्थकरणाम्)
 विमल-विमल
 विमलवाहण-विमलवाहन (राज्ञो नामविशेषः)
 विमाण-विमान (रथादिकम्)
 विमाणय-विमानक (गृहं प्रासादो वा)
 विमीस-वि+मिश्र
 विमुक्क-विमुक्त
 वियाक्किअ-वितर्कित
 वियक्खण-विचक्षण
 वियड्ड-विकट
 वियर-वि+चर् (धातुः)
 वियर+वि+तृ दाने (धातुः)
 वियराल-विकराल
 वियल-वि+गल् (धातुः)
 वियलिय-विगलित
 वियलियसंक-विगलिशतङ्क
 वियस-वि+कस् विकसने (धातुः)
 वियंभ-वि+जृम्भ (धातुः)

वियार-विकार
 वियारणक्खम-विदारणक्षम
 वियारभग्ग-विकारभग्य (व्याधित इत्यर्थः)
 वियारविज्ज-विचारविद्या (आन्वीक्षिका)
 वियारिअ-विचारित
 वियारिअ-विदारित
 विरइय-विरचित
 विरइयकर्णय-विरचित + कर्णिका (कुन्ता-
 दीनामग्रभागः)
 विरत्त-विरक्त
 विरत्त-विशेषेण रक्त १-१४-३
 विरज्जइअ-विरज्जित
 विरम-विराम
 विरहिअ-विरहित
 विरल-विरल
 विरस-वि+रस् शब्दे (धातुः)
 विरस-विरस
 विरह-विरह
 विराम-विराम (नाश)
 विलअ-विलय (विनाश)
 विलआ-वनिता इत्यर्थे देशी १-१४-१०
 विलग्ग-विलग्न
 विलस-वि+लस् (धातुः)
 विलसिअ-विलसित
 विलंबंत-विलम्बमान
 विलास-विलास
 विलित्त-विलित
 विलिहिय-विलिखित
 विलिहिय-विलीढ
 विल्लि-वल्ली
 विलीण-विलीन
 विलुक्क-विलुप्त (!)
 विलुलिय-विलुलित
 विलुच-वि+लुञ्च (धातुः)
 विलोल-विलोल (चञ्चल)
 विलोहिय-विलोभित

विब-इवार्थेऽव्ययम्
 विबज्जिअ-विबर्जित
 विवणम्मण-विमनस्क (!)
 विवण्ण-विपन्न
 विवरीअ-विपरीत
 विवरीय-विपरीत
 विवरेर-विपरीत
 विवरेर-विवरणकार
 विवंच-वि+मुच् धात्वर्थे
 विवाय-विपाक
 विवाह-विवाह
 विविह-विविध
 विविहासण-विविध + आसन
 विस-विप
 विसअ-विषय (देशः भोगादिर्वा)
 विसाज्जिय-विसर्जित
 विसण्ण-विपण्ण
 विसदंस-विषदंश (सर्प इत्यर्थः)
 विसमी-विपमा
 विसय-विषय
 विसयम्म-विश्वकर्मन्
 विसयासत्त-विषयासक्त
 विसरिस-विसदृश
 विसवेअ-विषवेग
 विससत्ति-विपशक्ति
 विसहर-विपधर (सर्प)
 विसहरारि-विपधरारि (नकुल इत्यर्थः)
 विसहिय-विपह्य, विसोढ
 विसाणय-विषाण (क)
 विसायघत्थ-विश्वासधातिन्
 विसाल-विशाल
 विसुद्धि-विशुद्धि
 विसेस-विशेष
 विसेसिय-विशेषित
 विहअ-विभव
 विहट्टिय-विघट्टित

विहडण्ड-विस्फुरित इत्यर्थे देशी
 विहत्ति-विभक्ति
 विहत्तिय-विभक्ति (क)
 विहलंघल-विह्वल इत्यर्थे देशी (अचेतन
 इति तु टिप्पणम्)
 विहव-विभव
 विहवत्तण-विभव
 विहंग-विहङ्ग
 विहंज-वि + भञ्ज (धातुः)
 विहंडण-विखण्डन
 विहंडिर-विभण्ड+इर (शीलार्थे) (कलहशील
 इत्यर्थः)
 विहा-वि + भा (धातुः)
 विहाण-विधान
 विहार-विहार
 विहाव-वि + भावय् (धातुः)
 विहावरि-विभावरी
 विहाविअ-विभावित (कथित इति टिप्पणम्)
 विहि-विधि
 विहिअ-विहित
 विहिय-विहित
 विहियछाय-विहितच्छाय (विहितप्रसाद
 इत्यर्थः)
 विहिवसभग्ग-विधिवशभग्ग (कर्मवशात्प्रेरित-
 मिति टिप्पणम्)
 विहीण-विहीन
 विहुणिय-विधूत, विधूनित
 विहुर-विधुर (विकल इत्यर्थे)
 विहुर-विधुर (दुःख इत्यर्थे)
 विहुरवडण-विधुरपतन (दुःखपतन)
 विहूई-विभूति
 विहूसण-विभूषण
 विहूसिय-विभूषित
 विंझ-विन्ध्य
 विंझसिरि-विन्ध्यश्री
 विंद-वृन्द

विंभल-विह्वल
 विंभिय-विस्मित
 वीणत-वीणयत् (वादयन् इत्यर्थे)
 वीणा-वीणा
 वीणारव-वीणारव
 वीयराअ-वीतराग
 वीर-वीर
 वीरवइ-वीरवती (स्त्रीनामविशेषः)
 वीसरिय-विस्मृत
 वीसल-वीसल (पुरुषनामविशेषः)
 वीसास-विश्वास
 वुक्करंत-भू भू इति श्वशब्दं कुर्वत्
 वुड्ड-वृद्ध
 वुड्डत्तण-वृद्धत्व
 वुड्डहूव-वृद्ध + भूय
 वुत्त-उक्त
 वूह-व्यूह
 वेअ-वेद
 वेइय-वेदित (निवेदित)
 वेउळवणा-विकुर्वणा (विकार)
 वेढण-वेष्टन
 वेढिअ-वेष्टित
 वेण-वेन (नृपविशेषः)
 वेणु-वेणु (वंश)
 वेयण-वेदना
 वेयमूढ-वेदमूढ
 वेयवंत-वेदवत्
 वेयागम-वेद + आगम
 वेयालअ-वेताल (क)
 वेयालकाल-विकाल + काल (संख्यासमयः ।
 वेतालादिभ्रमणकाल इति तु टिप्पणम्)
 वेयालिय-वैतालिक
 वेर-वैर
 वेरमण-विरमण (विराम)
 वेल्-वेला
 वेल्पडिच्छिअ-वेला + प्रतीष्ट

वेह्लि-वल्ली
 वेह्ली-वल्ली
 वेव-वेप् (धातुः)
 वेविर-वेपनशील
 वेस-वेप
 वेह्विअ-विह्वलित (रोपितोऽनुरजितो वेति
 टिप्पणम्)
 वेहाविय-वि + भावित
 वोक्कय-वृक्क (शरीरभागः)
 वोल्-आर्द्र इत्यर्थे देशी
 वोलीण-व्यतिक्रान्त इत्यर्थे देशी
 वोह्लिअ-आर्द्राकृत (अभ्यक्त)
 व्व-इवार्थेऽव्ययम् (द्रुत्वात्स्वरादुत्तरभेद
 प्रयुज्यते)

सइ-सती
 सइ-स्वयम्
 सइरिणि-स्वैरिणी
 सउच्च-शौच
 सउण-शकुन
 सउण्ण-सपुण्य, १-२५-१०
 सउह्यल-सौधतल
 सउहलय-सौधतल
 सकलत्त-स्व + कलत्र
 सकहंतर-स्व + कथान्तर
 सकंत-स्व + कान्ता
 सक-शक् (धातुः)
 सक-शक्र
 सकर-शर्करा
 सकरपह-शर्कराप्रभ (द्वितीयनरकनाम)
 सकुंतलिय-स + कुन्तल (सुकेशीत्यर्थः)
 सकोह-सक्रोध
 सखंड-स + खण्ड
 सक्खीयर-साक्षिचर
 सग्ग-स्वर्ग
 सग्गत्य-स्वर्गस्थ

सगसिर—स्वर्गशिरस्
 सगपावेग—स्वर्गापवेग
 सगुण—स + गुण
 सगुण—स्व + गुण
 सगुणोद्—सद्गुणौघ
 सच्च—सत्य
 सच्चमूल—सत्यमूल
 सच्चवंत—सत्यवत्
 सच्चविअ—साक्षात्कृत, दृष्ट
 सच्चसंध—सत्यसंध
 सच्चित्त—सचित्त (सचेतन इत्यर्थः)
 सचेयण—सचेतन
 सचेलअ—सचेल (क)
 सच्चेयण—सचेतन
 सच्छ—स्वच्छ
 सच्छाय—सच्छाय
 सच्छिकर—साक्षीकृ दर्शने (धातुः)
 सज्ज—सज्ज (सद्यः !)
 सज्जण—सज्जन
 सज्जिअ—सज्जित
 सज्जीअ—सजीव
 सजोद्—सयोध
 सज्ञाण—स्व+ध्यान
 सड—शातय् (धातुः)
 सडंग—पडङ्ग
 सडिय—शातित
 सढ—शठ
 सढत्तण—शठत्व
 सणाद्—सनाथ
 सणिउं—शनैः
 सणिद्ध—स्निग्ध
 सण्ण—संज्ञा
 सण्णा—संज्ञा
 सणिण—संज्ञिन् (सचेतन इत्यर्थः)
 सण्ह—श्लक्ष्ण
 सत्त—सत्तन्

सत्ततच्च—सत्य+तथ्य
 सत्तभेय—सत्तभेद
 सत्तभोम—सत्तभौम (सत्तभूमिवद्)
 सत्तम—सत्तम
 सत्तमअ—सत्तम (क)
 सत्तर—सत्तति
 सत्तविद्—सत्तविध
 सच्चसील—सत्यशील
 सत्तंग सताङ्ग (स्वाभ्यमात्यादिशज्याङ्गानीत्यर्थः)
 सत्थ—शास्त्र
 सत्थ—सार्थ
 सतामस—सतामस (अज्ञान इति टिप्पणम्)
 सत्ति—शक्ति
 सत्तितय—शक्तित्रय (प्रभावोत्साहमन्त्ररूपा
 राजास्तिसः शक्तयः)
 सत्तुंड—सत्तुण्ड
 सत्तु—शत्रु
 सत्तित्ति—स्व+स्थान
 सदय—सदय
 सदल—सदल (सपथ)
 सदह—शद्व
 सदय—शद्व (क)
 सदल—सदल (नीलपत्रयुक्त इति टिप्पणम्)
 सदहवंत—शद्ववत्
 सदहवेह—शद्ववेध
 सदहिय—शद्वित
 सदहसण—सददर्शन
 सदहूल—शार्दूल
 सधअ—सध्वज
 सपरिग्गह—सपरिग्रह
 सप्प—सर्प
 सन्भाव—सन्भाव
 सन्भावपयासण—सन्भावप्रकाशन
 सम—शम
 सम—सम
 समअ—सममित्यर्थेऽव्ययम्

समकखयं-समक्ष (कं)
 समग-समग्र (संपूर्ण)
 समञ्चिय-यम् + अञ्चित
 समाजिय-यम् + अञ्जित
 समतण्डुल-समतुण्डाक्षर
 समत्त-समस्त
 समत्थ-समर्थ
 समाप्पिय-समर्पित
 समवभसिअ-सम् + अभ्यस्त
 समभावण-समभावना
 समय-समय (व्यवस्थेत्यर्थः)
 समर-शर २-२९-६.
 समरउल-शरकुल
 समरट्ट-स+मरट्ट (सर्ग इत्यर्थे देशी)
 समल-स + मल (पापयुक्त)
 समवयस-समवयस्
 समसरिस-सम + सदृश
 समंजस-समञ्जस
 समाइट्ट-समादिष्ट
 समागय-समागत
 समागयचेयण-समागतचेतन (लब्धचेतन
 इत्यर्थः)
 समाण-समान (सममित्यर्थः)
 समाणत्त-सम् + आज्ञत
 समाया-सम् + आगता
 समाया-स+माया (मायायुक्ता)
 समावरिय-समावृत
 समाहि-समाधि
 समिउ-सम
 समियमअ-शमितमद
 समिच्छ-सम् + इप् (धातुः)
 समिच्छिय-सम् + इप्
 समिद्ध-समृद्ध
 समिय-शमित
 समीर-समीर
 समीरण-समीरण

समीह-सम् + ईह (धातुः)
 समीहिअ-समीहित
 समुगघायंत-सम् + उद् + जिघ्रत्
 समुज्जल-यम् + उज्जल
 समुद्-समुद्र
 समुद्-स+मुद्रा (लक्षणधर इत्यर्थः)
 समुद्धरिअ-सम् + उद् + धृत
 समुद्धव-समुद्धव
 समुण्ड-समुण्ड
 समूससिअ-समुच्चलित
 समूह-सम्
 समोड-सम् + मोटय (धातुः)
 सम्मत्त-सम्भक्त
 सम्महंसण-सम्भर्तृ
 सम्मय-साम्य, सम्भक्त
 सय-शत
 सयगुणिय-सतगुणित
 सयज्ज-स्व + कार्य
 सयड-शकट
 सयण-शयन (गृहमिति टिप्पणम्)
 सयण-स्वजन
 सयणु-स्वतेनु
 सयणाअ-शयन + उर (शयनामय इत्यर्थः)
 सयदल-शतदल (पत्र इत्यर्थः)
 सयमह-शतमल (इन्द्र)
 सयर-स्वकर
 सयरायर-सचराचर
 सयल-सकल
 सयवत्त-शतपत्र
 सयासि-सकाशे
 सयंभु-स्वयंभू
 सयंभुअ-स्व + भुज
 सयंवरमंडव-स्वयंवरमण्डप
 सया-सदा
 सर-स (धातुः)

सर-स्वर
 सर-शर
 सर-सरस्
 सरज्ज-स्व + राज्य
 सरढ-सरठ (सरीसृपविशेषः (मगठी सरडा)
 सरण-शरण
 सरण-शरण (रक्षितृ इत्यर्थे)
 सरणि-सरणि (मार्ग)
 सरय-सरजम्
 सरल-सरल
 सरलामल-सरल + अमल
 सरवर-सरोवर
 सरस-सरस (रसयुक्त)
 सरस-सरस (स्निग्ध इति टिप्पणम्)
 सरसइणिलय-सरस्वतीनिलय (पुण्ड्रन्त-
 कवेर्यिरुदेष्वन्यतमम्)
 सरह-शरभ (अष्टापदः प्राणिविशेषः)
 सरहंस-सरोहंस
 सरंतगव्व-सरद्गर्व (!) (गर्वयुक्त इत्यर्थः)
 सरास-कथ् इत्यर्थे देशी
 सरासइ-सरस्वती
 सरासण-शरासन (धनुः)
 सरि-सरित्
 सरिगमपधणी-गीतस्थस्वरश्रेणि
 सरिविवर-सरिद्विवर
 सरीर-शरीर
 सरूअ-स्वरूप
 सलह-श्लाघ् (धातुः)
 सलहण-श्लाघन, श्लाघा
 सलिल-सलिल
 सलीलगइ-सलीलगति
 सल्ल-शल्य
 सल्लेहण-संलेखन (तपोविशेषः)
 सल्लेहणय-संलेखन(क) (तपोविशेषः)
 सव-सु (धातुः)
 सवडंमुह-संमुख इत्यर्थे देशी

सवण-श्रवण (कर्ण)
 सवत्ति-सपत्नी
 सवत्तिविरोह-सपत्नीविरोध
 सविणय-सविनय
 सवित्तोपउत्त-स्व+वृत्त+उपयुक्त (स्ववृत्तान्त-
 सहितमित्यर्थः)
 सवित्थर-सविस्तर
 सविब्भम-सविभ्रम (सावर्तानि, अथवा,
 सह वीनां पक्षिणां भ्रमैः भ्रमणैः वर्त-
 मानानि इति टिप्पणम्)
 सविब्भम-सविभ्रम (कामोद्रेकजनितभ्रूयुगा-
 दिभ्रमणमिति टिप्पणम्)
 सवियाणिया-स+विजानती (विज्ञानवती-
 त्यर्थः)
 सवियार-सविचार (विकृत इत्यर्थः)
 सविस-सविप
 सविसाण-स्वविप्राण
 सविसेस-सविशेष
 सव्व-सर्व
 सव्वगासि-सर्वग्रासिन्
 सव्वण्ण-सर्वज्ञ
 सव्वंग-सर्वाङ्ग
 सव्वोसहि-सर्वोपधि
 सस-स्वस्
 ससय-शशक
 ससहर-शशधर (चन्द्र)
 ससहरमुही-शशधरमुखी (चन्द्रमुखी)
 ससंघ-ससंघ (संघसहित)
 ससि-शशिन्
 ससिमुह-शशिमुख
 ससिर-स्वाशिरस्
 ससिलग्ग-शशिलग्ग
 ससी-शशिन्
 सह-शोभायां देशी (धातुः)
 सह-सद् (धातुः)
 सह-सभा

सह-सह (अव्ययम्)
 सहउयरी-सहोदरी
 सहज-सहज
 सहङ्ग-स+अस्थि
 सहमञ्ज-सभामध्य
 सहमंडव-सभामण्डप
 सहयर-सहचर
 सहंत-सहमान
 सहाय-सहाय
 सहाव-स्वभाव
 सहास-सहस
 सहास-सहास, स + भास् (सशोभ इत्यर्थः)
 सहिअ-सहित
 सहिय-सह्य
 सहिय-सहित
 सही-सखी
 सहु-सह (अव्ययम्)
 संक-शङ्क (धातुः)
 संकड-संकट
 संकडिल-संकट + इल (स्वार्थे) (व्याप्त
 इत्यर्थे)
 संकमिय-संक्रान्त
 संका-शङ्का
 संकाराविय-संस्कारित
 संकास-संकाश
 संकुल-संकुल
 संकेयत्थ-संकेतस्थ
 संख-शंख
 संखदीव-शंखद्वीप
 संखल-शृंखला
 संखला-शृंखला
 संखाण-संख्यान
 संखीणगत्त-संक्षीणगात्र
 संखेव-संक्षेप
 संखोहिय-संक्षोभित

संग-संग
 संगम-संगम
 संगर-संगर (युद्ध)
 संगह-सम् + ग्रह् (धातुः)
 संगहण-संग्रहण
 संगहिय-सम् + गृहीत
 संगामरंग-संग्रामरङ्ग
 संगिल-सम् + गृ (धातुः)
 संघ-संघ (जैनधर्मानुयायिनां वर्गः)
 संघट्ट-संघट्ट
 संघट्टण-संघट्टन
 संघाअ-संघात
 संघाय-संघात (गात्रमित्यर्थः)
 संघार-सम् + हृधातोर्णिजन्तम्
 संघारअ-संहारक
 संघारिअ-संहारित (मारित इत्यर्थः)
 संचलिअ-संचलित
 संचार-संचार
 संचि-सम् + चि (धातुः)
 संचिय-संचित
 संचितिय-संचिन्तित
 संछइअ-संछन्न
 संजइअ-संयतिक
 संजम-संयम
 संजाय-संजात
 संजायअ-संजात (क)
 संजुअ-संयुत
 संजुत्त-संयुक्त
 संजोइय-संयोजित
 संजोयभेअ-संयोगभेद
 संझ-संध्या
 संझा-संध्या
 संठव-सम् + स्थापय् (धातुः)
 सठिय-संस्थित
 संड-पण्ड (वृन्द)
 संढ-पण्ड

संणास-संन्यास
 संणिसंण-संनिपण
 संणिह-संनिभ
 संणिहिय-संनिहित
 संत-शान्त
 संत-सत् (अस्मातोः शत्रन्तम्)
 संतअ-संतत
 संतत्त-संतत
 संताण-संतान
 संताव-संताप
 संताविअ-संतापित
 संति-शान्ति (पौडशनीयकरनाम)
 संति-शान्ति
 संतियरि-शान्तिकरी
 संतुट्टमण-संतुष्टमनस
 संतोस-संतोष
 संथुअ-संस्तुत
 संदाणिअ-संदानित (वद्ध इत्यर्थः)
 संदाणिय-संदानित
 संदेह-संदेह
 संधाण-संधान
 संधि-संधि
 संपइ-संपद्
 संपइ-संप्रति
 संपज्ज-सम् + पद् (धातुः)
 संपत्त-संप्राप्त
 संपत्तिअ-संप्राप्त
 संपया-संपद्
 संपासिअ-संप्राशित
 संपिच्छ-सम् + प्र + ईक्ष् (धातुः)
 संपुण्ण-संपूर्ण
 संपुण्णकाअ-संपूर्णकाय
 संफार-संस्पर्श
 संबोह्यारी-संबोधकारी
 संबोहिअ-संबोधित
 संभरिय-संस्मृत

संभव-संभव (तृतीयतीर्थकरनाम)
 संभव-संभव (संसार इति टिप्पणम्)
 संभव-सम् + भू (धातुः)
 संभाल-सम् + भाल्य निरीक्षणे (धातु) :
 संभविअ-संभूत
 संभासण-संभाषण
 संभु-संभु
 संम-श्रम
 संमद्-संमर्द
 संमदण-संमर्दन
 संमुह-संमुख
 संवर-संवर
 संवर-संवर (पशुविशेषः)
 संवरवेउल्ल-संवरवेगवत्
 संवेयायर-संवेगकर
 संसअ-संशय
 संसयार-संस्कार
 संसर-सम् + सु (धातुः)
 संसार-संसार
 संसारसरणि-संसार + सरणि (मार्गः)
 संसिद्धी-संसिद्धि
 संसिचिय-संसिञ्चित
 संसेविय-संसेवित
 सा-सा (लक्ष्मी)
 साअ-स्वाद ३.३६.९.
 साइअ-स्वादित
 साइणि-शाकिनी (प्रेतपिशाचादिस्त्रीविशेषः)
 सागार-स + अगार
 साडी-शाटी (मराठी साडी)
 साण-श्वन्
 साणंदभाअ-सानन्दभाज् (सानन्द इत्यर्थः)
 साम-श्याम (वर्ण)
 सामण्ण-सामान
 स मथ-सामर्थ्य
 सामरि-शात्मली (वृक्षनाम)
 सामल-श्यामल

सामलिया-श्यामला
 सामन्त-सामन्त
 सामाङ्ग्य-सामयिक (आचारविशेषः)
 सामि-स्वामिन्
 सामिणी-स्वामिनी
 सामी-स्वामिन्
 सामीवय-सामीप्य
 सामुद्-सामुद्रिक (लक्षणशास्त्र)
 सायर-सागर
 सायरसम्-सागरोपम (आयुःप्रमाणम्)
 सार-सार (स्थिरांश)
 सार-सार (श्रेष्ठ)
 सारणि-(सरणि) (प्रवाह इत्यर्थः)
 सारमेअ-सारमेय
 सारस-सारस (जलचारिपक्षिविशेषः)
 सारंग-सारङ्ग
 सारिच्छ-सदृश
 सारिच्छचक्षु-सदृशचक्षुः
 सारिस-सदृश
 साल-श्याम
 सालंकारवह-स+अलंकार+पथिन् (सालंकारे-
 त्यर्थः)
 सालि-स+अलि (सम्बृद्धमित्यर्थः)
 सालि-शालि (धान्यविशेषः)
 सालिलेत्त-शालिक्षेव
 सालूर-शालूर (मेक)
 सावअ-श्रावक
 सावय-श्रावक
 सावयवअ-श्रावकव्रत
 सावयवड-श्रावकपति (साधुरित्यर्थः)
 सावयास-सावकाश
 सास-श्रास
 सासण-शासन
 सासय-शाश्वत
 साह-श्रावय (कथंघात्वर्थे देशी धातुः)
 साहण-साधन

साहस-साहस
 साहरण-स + आभरण
 साहसिअ-साहसिक
 साहा-शाखा
 साहामय-शाखामृग (वानर इत्यर्थः)
 साहार-स+आधार
 साहार-सहकार (आम्रवृक्ष)
 साहिअ-श्रावित (कथित)
 साहिणाण-स+अभिज्ञान
 साहिलास-सामिलाप
 साहु-साधु
 सिक्ख-शिक्ष (धातुः)
 सिक्ख-शिक्षा (उपदेशः)
 सिक्खा-शिक्षा (दीक्षा)
 सिक्खिअ-शिक्षित
 सिग्गिरि-नीलवर्ण इत्यर्थे देशी (!)
 सिग्घ-शीघ्र
 सिज्जमाण-पच्यमान इत्यर्थे देशी (मराठी-
 शिज्जणारा)
 सिज्जंत-पच्यमान
 सिट्ठ-शिष्ट
 सिट्ठि-श्रेष्ठिन्
 सिट्ठि-सृष्टि
 सिट्ठसंहारकारि-सृष्टिसंहारकारिन्
 सिट्ठिल-शिथिल
 सिणिद्ध-सिन्धु
 सिण्ह-पक्व
 सित्त-सिक्त
 सिद्ध-सिद्ध
 सिद्धइरि-सिद्धगिरि (क्षेत्रनाम)
 सिद्धंत-सिद्धान्त
 सिद्धि-सिद्धि
 सिप्पा-शिप्रा (नदीनाम)
 सिप्पिउड-शुक्तिपुट
 सिप्पिसंपुड-शुक्तिसंपुट

सिप्पीर—धान्यादीनां तुपमित्यर्थे देशी (पलाल
इति टिप्पणम्)

सिमिसिम—कथनशब्दानुकरणे देशी (धातुः)

सिय—सित (शुक्लवर्ण)

सियलुत्त—सितच्छत्र

सियसेविआ—श्रीभेविता (सश्रीका, मुन्दरेत्यर्थः)

सियाल—शृगाल

सिर—शिरस्

सिरि—श्री

सिरिकलस—श्रीकलश

सिरिपोमिणी—श्रीपद्मिनी (शोभायुक्तं कमल-
सर इत्यर्थः)

सिरिमंत—श्रीमत्

मिरिवइ श्रीपति (वणिजो नामविशेषः)

सिरिवंत—श्रीमत्

सिल—शिला

सिलणाव—शिला+नौ

सिला—शिला

सिलायल—शिलातल

सिलोह—शिला+ओघ (समूह)

सिव—शिव

सिव—शिवा (शृगालस्त्री)

सिवसत्थवम—शिवशास्त्रवश

सिविणअ—स्वप्न (क)

सिविणयसमान—स्वप्नसमान

सिविया—शिविका (यात्राविशेषः)

सिसु—शिशु

सिसुत्तण—शिशुत्व

सिसुससि—शिशुशशिन (प्रतिपच्चन्द्रः)

सिह—शिखा

सिहर—शिखर

सिहि—शिखिन् (अग्निः)

सिहि—शिखिन् (मयूरः)

सिहिधूमोलि—शिखिधूमावलि

सिहिसाण—शिखिन्+श्वन्

सिहिसिह—शिखिशिखा (अग्निज्वाला)

सिंग—शृङ्ग

सिंगग—शृङ्गाग्र (नरकपालदेशः)

सिंगार—शृङ्गार

सिंगि—शृङ्गिन्

सिंचिअ—सिक्त

सिंदूर—सिन्दूर

सिंधु—सिन्धु (देशनाम)

सिंधुविसय—सिन्धुविषय (देश)

सिंभ—श्लेष्मन्

सीमंतिणी—सीमन्तिनी

सीमावड—सीमा+वट

सीय—सीता

सीयर—स्वी+कृ (धातुः)

सीयल—शीतल

सीयल—शीतल (दशमतीर्थकरनाम)

सीयल—शीतल

सीर्यालय—शीतलित (संसारदुःखस्फोटनकर
इति टिप्पणम्)

सीयार—सीत्कार

सील—शील

सीस—शास्त्रातोः कर्मणि

सीस—शिष्य

सीसत्त—शिष्य व

सीह—सिंह

सीहसदूल—सिंह+शार्दूल

सीहासण—सिंहासन

सु—श्रु (धातुः)

सु—सु (सुष्टु इत्यर्थः)

सुअ—श्रुत

सुअ—सुत

सुअ—सूप

सुअवट्टण—श्रुतवर्तन

सुअव्वत्त—सु+अव्यक्त (गूढ इत्यर्थः)

सुइ—शुचि

सुइ—श्रुति

सुइह-सु+इह
 सुइरु-सु+चिरम्
 सुकइकह-सुकवि + कथा
 सुकय-सुकृत
 सुकुंतल-सु+कुन्तल (केश)
 सुक्कियहल-सुकृत + ल
 सुक-शुक
 सुक-शुक
 सुकड-शुक इत्यर्थे देशी
 सुकलेम-शुकलेभ्यायुक्त
 सुक्ख-शुक
 सुक्ख-सौख्य
 सुक्खणिहि-सौख्यनिधि
 सुखंचिय-सु+च्यति
 सुगय-सुगत
 सुच्छाय-सुच्छाय
 सुज्ज-सूर्य
 सुज्ज-शुष् (धातुः)
 सुहु-सुष्टु
 सुडिय-दुःखित इत्यर्थे देशी
 सुण-श्रु (धातुः)
 सुण-श्वन्
 सुणह-शुनक
 सुणहुल्लअ-शुनक+उल्लअ (स्वार्थे)
 सुणिय-श्रुत
 सुणेह-सुस्नेह
 सुण्ण-श्रुत्य
 सुण्ह-स्तुपा
 सुण्हा-स्तुपा
 सुत्त-सुत
 सुत्त-सूत्र
 सुत्थिय-सुस्थित
 सुद-श्रुत
 सुदच्छ-सुदक्ष
 सुदत्त-सुदत्त (मुनिनाम)

सुदल्लिह-सुदल+इह (भत्वर्थीयः)
 सुदीण-सु+दीन
 सुदुण्णिक्ख-सुदुर्निरीक्ष्य
 सुद्ध-शुद्ध
 सुद्धोयण-शुद्धोदन
 सुद्धभाअ-शुद्धभाव
 सुद्धमइ-शुद्धगति
 सुद्धसई-शुद्धमती
 सुप्पसण-सुप्रसन्न
 सुप्पसत्थ-सुप्रशस्त
 सुप्पमिद्ध-सुप्रमिद्ध
 सुप्पहाण-सुप्रधान
 सुप्पहाय-सुप्रभात
 सुप्पाम-सुपार्श्व (सप्तमतीर्थकरनाम)
 सुप्पामगत-सुपार्श्वगात्र (शोभने पार्श्वे गात्रं
 च यस्येति टिप्पणम्)
 सुप्पज्ज-सुप्पज्ज
 सुप्पसिय-सु+पुसिय (मार्जित इत्यर्थे देशी ।
 मराठी-पुराणं)
 सुप्पहाअ-सुप्रभात
 सुमइ-सुमति (पञ्चमतीर्थकरनाम)
 सुमइ-सुमति
 सुमण-सुमनस
 सुमर-स्मृ (धातुः)
 सुमरण-स्मरण
 सुय-शुक
 सुय-श्रुत
 सुय-सुत
 सुयण-सुजन
 सुयपय-श्रुतपद
 सुया-सुता
 सुर-सुर
 सुरकामिणी-सुरकामिनी
 सुरगणिया-सुर+गणिका (अप्सरेत्यर्थः)
 सुरधनु-सुरधनुस्
 सुरपुरंधि-सुरपुरव्री

सुरय-सुरत
 सुरवइ-सुरपति
 सुरवइदिमि-सुरपतिदिश (प्राचीत्यर्थः)
 सुरसरि-सुरमगित् (गङ्गा)
 सुरमुअ-सुरमुत
 सुरहर-सुरगृह (देवालय)
 सुरहि-सुरभि
 सुरहिय-सुरभित
 सुरही-सुरभि (धेनुरित्यर्थः)
 सुरहुत्तिभय-सुरथ+ऊर्ध्वीकृत
 सुरावलि-सुरावाले (देवसमूह)
 सुरिंद-सुरेन्द्र
 सुरेसर-सुरेश्वर
 सुरेसरि-सुरेश्वरी (देवी)
 सुलक्खण-सुलक्षण
 सुललिय-सुललित
 सुवण-सुवर्ण
 सुवत्त-सुवृत्त
 सुवाय-सुवाच्
 सुविउल-सुविपुल
 सुविरत्त-सुविरक्त
 सुविसम-सुविपम
 सुविसुद्ध-सुविशुद्ध
 सुविहाण-सु+वि+भान (सुप्रभात इत्यर्थः)
 सुवेल-सुवेल (पर्वतविशेषः)
 सुववय-सुव्रत (विंशतीर्थकरनाम)
 सुववय-सुव्रत
 सुसउच्च-सु+शौच
 सुसच्च-सुसत्य
 सुसमत्थ-सुसमर्थ
 सुसाल-सु+शाला
 सुसिअ-शोषित
 सुसेव-सुसेव्य
 सुसीम-सुसीमन् (व्रतियुक्तमित्यर्थः)
 सुह-सुख
 सुह-श्वन्

सुहकम्म-शुभकर्मन्
 सुहचरिय-शुभचरित
 सुहजोअ-शुभयोग (कालविशेषः)
 सुहजोइ-शुभज्योतिष्
 सुहड-सुभट
 सुहद-सुभद्र
 सुहधम्मोदअ-शुभधर्मोदय
 सुहम-सुक्षम
 सुहयत्तण-सुभगत्व
 सुहयर-सुवकर
 सुहरअ-शुभगत
 सुहकर-सुवकर
 सुहाइ-सु+भाति १. २०. १२
 सुहावअ-सुखावह
 सुहावण-सुख+आपण (प्रापण)
 सुहासुह-शुभ+अशुभ
 सुहि-सुहृद्
 सुहिअ-सुग्नित
 सुधिअ-आघ्रात इत्यर्थे देशी
 सुंड-शुण्डा
 सुंडीर-शौण्डीर
 सुंदर-सुन्दर
 सुंसुयार-शिशुमार (मकर इत्यर्थः)
 सुंसुवार-शिशुमार (मकर इत्यर्थः)
 सुंसुवारिआ-शिशुमारिका
 सूअर-सूकर
 सूअरि-सूकरी
 सूआर-सूपकार
 सूणार-सूना (वध्यस्थानं वधो वा) + कर्तृ
 सूयर-सूकर
 सूयारय-सूपकार (क)
 सूर-सूर्य
 सूल-शूल
 सूलच्छ-शूलाक्ष
 सूलभिण्ण-शूलभिन्न
 सूळारूढ-शूळारूढ

सूवार—सूपकार
 सेट्टि—श्रेष्ठिन्
 सेट्टी—श्रेष्ठिन्
 सेट्टि—श्रेणि
 सेणी—श्रेणि
 सेण्ण—सैन्य
 सेय—श्रेयम् (एकादशतीर्थकरनाम)
 सेय—श्वेत
 सेय—स्वेद
 सेयमाणु—श्वेतमानु (चन्द्रः)
 सेयवह—स्वेद+पथिन्
 सेरिह—सैरिभ (महिप)
 सेल्ल—शैल
 सेव—सेव् (धातुः)
 सेवय—सेवक
 सेविअ—सेवित
 सेविज्जंत—सेव्यमान
 सेस—शेष
 सेहा—सेधा (प्राणिविशेषः)
 सोअ—शुच् (धातुः)
 सोअ—शोक
 सोइय—सोचित
 सोक्ख—सौक्ख
 सोणइय—श्वपालक, सौनिक
 सोणिय—शोणित
 सोत्तिय—श्रोत्रिय
 सोत्तियवाअ—श्रोत्रियवाद
 सोदामणि—सौदामिनी
 सोम—सौम्य
 सोमभाअ—सौम्यभावा
 सोमभावा—सौम्यभावा
 सोमाल—सुकुमार
 सोयण—शोचन
 सोयरस—शोकरस
 सोयामणि—सौवामणि (यज्ञविशेषः)
 सोयार—श्रोतृ

सोयारवयण—सूपकार+वचन
 सोवहि—स+उ गधि
 सोसिय—शोपित
 सोह—शुम् (धातुः)
 सोह—शोभा
 सोहग्ग—सौभाग्य
 सोहग्गथत्ति—सौभाग्यस्थान
 सोहण—शोभन
 सोहा—शोभा
 सोहिय—शोभित

ह—अहम् (हं इत्यस्य स्थाने)
 हअ—हत
 हडाविय—दूरोत्सारित इत्यर्थे देशी (मराठी—
 हटविलेले)
 हडि—अभ्यस्त इत्यर्थे देशी
 हड्डु—अस्थिशब्दायं देशी
 हड्डाल—अस्थियुक्त इत्यर्थे देशी
 हड्डावलि—हड्डु+आवलि
 हण—हन् (धातुः)
 हणण—हनन
 हणहण—हणहण इतिशब्दः
 हत्थ—हस्त
 हत्थगिज्ज—हस्तग्राह्य
 हत्थि—हस्तिन्
 हम्म—हर्म्य
 हम्म—हन्धातोः कर्मणि
 हय—हत
 हय—हय (अश्व)
 हयदइव—हत+दैव
 हयमोह—हतमोह
 हयसल्ल—हतसल्य
 हयारि—हय+अरि (महिप इति टिप्पणम्)
 हर—ह (धातुः)
 हरण—हरण
 हरि—इरि (सिंह)

[N. B.—The Notes supplement the glossary. Knowledge of technical terms of Jain philosophy is presumed in the Reader. The first figure indicates the kaṭavaka and the second the line.

I

1. The poet, after saluting the Jina, says that he was staying in the house of his patron Nanna, the favourite of the Vallabha king, Kṛṣṇarāja III, and thought of writing upon a pious theme rather than a theme relating to wealth and women.

1. 7-8. It is only in the fifteen bhūmis, five Bharatas, five Airāvatas and five Vidarbhas that Dharma is born or proclaimed, and out of these fifteen bhūmis, it is constant or perpetual in five Vidarbhas only, while it has a fluctuating existence in the remaining ten bhūmis. This Dharma was first proclaimed by Rṣabha in this Jambudvīpa, while the remaining Tīrthamkaras repeated the same when occasion arose.

3. Description of the Yaudheya country. 3. 17. The poet fancies that the flags and banners on the lofty palaces of the city of Rajapura were scratching the sky as if by their arms.

4. Description of the city of Rajapura. 4. 6. The city was surrounded by a wall on which the weapons such as tomara, Jha etc. of the enemies were baffled, *paṇḍikhaliga*.

5. Description of king Māridatta. 5. 10. The poet says wherever there is pride of youth and pride of wealth, there is naturally all darkness. How can in such a place be found the right path (*sahamagga*), so long as there are no rays of light from wise men? 5. 19. The king performed his duties according to his own whim (*chanda*), and could not find the right path in the absence of wise men.

6. Description of Bhairavānanda. 6. 8. Bhairavānanda himself proclaimed his own greatness and even though nobody asked him (*apaṇḍichu*) he praised his own self. 6. 23. *Asis'u* seems to be used in the sense of "was blessed", "was given blessings".

8. 1. The word *camakku* is used in the sense of *camatkāra*, āścārya. 8. 14. The poet says that those who live on himṣā fall into the saṃsāra, while abstinence from it forms the solid base of śubha karman. 8. 15. For this line see Introduction.

9. Description of Candamārī, goddess Kālī of the town. 9. 1. *Taṃnagāra* stands for *tat* + *nagara*, and means 'of that town'. 9. 9. *Viṣṇorabhagga* are the decrepits by diseases, *vikāra*.

10. List of pairs of different animals. 10. 9-10 The poet says that it is only a fool who desires to live by killing the lives of others.

11. 6-9. When Māridatta found that his servants did not procure a human pair, he got angry and asked Caṇḍakarman, one of his officers, to procure a good human pair

which he would kill first. His servants accordingly searched the region in the neighbourhood of the city (*ṇayarabajjhāvayāsa*).

12. A fine description of the pleasure garden of the king. 12. 16. The Kolhapur MS. reads "*aham intīe*" which is superior to the one in the text as *ahamaṃ* in the sense of *aham* does not seem to be a recognised form of *asmad*.

13. Description of the burning ground. 13. 12-13. The pupils of Sudatta asked permission of their teacher in the usual terms if they could go out for begging alms, and then the teacher allowed them to do so.

14. 4. *Guruṇā mukka* means permitted by their teacher, Sudatta. 14. 5. *Puravāhi dḥukka*, proceeded towards the city. 14. 6. *Laviyaṃ samalaṃ*, they talked a wicked talk that this pair of Ksullakas is a good one to be offered as victims. 14. 11. *Saṇṇukiraṇamūlāphuriu*, bright in the cluster of rays of their own body.

15. 9. *Jai ṇa muṇī* etc. The meaning of the passage seems to be that though the ksullakas may not reach a higher stage of asceticism in this life if they are killed, they will at least be born as gods possessing eight guṇas. 15. 20. *Jamalullakka*, frightening like the god of death.

16. Description of the temple of goddess Candamārī.

17. 16. The pair had on their persons auspicious signs, *samudda*, Sk. *Sāmudra* as mentioned in the *Sāmudrikaśāstra*, which indicated that they were fit to enjoy the kingdom of the whole earth.

19. 9. *Matthai sūlaha*, to one who bears on his forehead the mark of trident indicating his faith in the Kāpālika tenets.

20. 7. *Leppi viḥu*, as if made of plaster. 20. 12. *Suhāi*, su + bhāti

21. Description of the Avanti country. 21. 12-14. The idea is that the elephant mistook the dark-green rays of the emerald-pavements for green *dūrvā* grass and therefore was reluctant to leave it. The conductor of the elephant drove it away with great difficulty. The reading *durvāsae* Sk. *dūrvāsāyā*, of ST is to be preferred to the one in the text.

22. 3. The young woman of dark complexion was detected by her sparkling smiles in the Indranila houses of the city.

23. 2. Prince Jasoha is here described as ksatradharma in a human garb.

24. 8. Abhayaruci says that in his former life as prince Jasahara he had his body in youth well-developed in flesh, bones, and limbs by good nourishment, *putṭhi-palatṭhiyanga*.

25. This kaḍavaka describes how the princess of Krathakaisika was offered to Jasahara in marriage. A minister of Krathakaisika came to the court of Jasahara's father and said that his master proposed to offer his daughter Amayamahādevi, i. e., Amrtamati to prince Jasahara. The king agreed and the marriage was celebrated as described in the following Kaḍavakas. Note roughness of language of the passage.

NOTES

28. Description of the effects of old age on the body 28. 10. The ten constituent parts of the Jain dharma are kṣamā, mārḍava etc.

29. 4 *Mai munīu* etc. I controlled myself by the first lore (ānviksiki) which is capable of conquering the senses: *vijaillīya* of ST is a better reading 29 5. *Cauvaṇṇu*, the four castes. 29. 6. The seven dangers of kingship are gambling etc. 29. 7. The king enjoyed pleasures of senses, not out of attachment, but only as a diversion, *vinodamātra*.

II

1. King Jasahara describes his attachment to Amṛitamati. 1. 18. There is a pun on the word *attha* which means the setting mountain as well as money.

2. Description of the evening. 2. 3. *Ahogaiṇum*, under the dome of the sky, i. e., set. 2. 11-12. The sky is compared to a threshing ground of the field with twelve heaps of corn. There is a dark spot on the moon which is kept there as a sign that prevents bad omens spoiling the harvest.

3. The king proceeds to the palace of queen Amṛitamati on a moon-light night.

4. Description of the eight quadrangles of the queen's palace.

6. 1-5. The king enjoys pleasures of the company of the queen. 6. 9. The queen went to a hump-back who never attempted, *anujjaya*, any good deeds of the human life, i. e., he was low. 6. 17. *Sijasevī*, the queen who was adorned by beauty, *siya*, Sk. *Śrī*.

7. 12-13. Amṛitamati says to her paramour: "If Jasahara dies (goes to the house of Yama, I shall dance (with delight), and shall myself worship the goddess Kātyāyāni in the month of Caitra with an offering of cooked rice (*caruḡāsa*, Sk. *carūgrāsa*)."

An offering in the month of Caitra to the goddess is considered as specially auspicious.

8. 9-10. The king is pained to see that his queen in dallying with the hump-back did not pay any regard to her family, her status or even her royal husband.

8. 11-12. A creeper (*vellī*) climbs up and then stands suspended from a mango tree which is a (fitting) supporting tree for it; but the same creeper (sometimes) kisses a wretched (*ṇihīṇa*) and harsh thorny plant.

9. 5. *Sihidhūmeli* is a heap of soot from the burning fire which gives a dark tinge to the whitewash of the house. 9. 6. The king compares the crooked mind of a woman (*ṭiyamañ*) to the course of the river which is always *nicarata* (attached to a low-born person: with the river, flowing on the slope). 9. 8-19. This passage tells us two stories of wicked women; of these the first was named Gopavati, whose husband, being disgusted with her want of chastity, married another lady. Now one day Gopavati cut off the head of her rival and kept it at some secret place. The husband returned home after having attended to the funeral of the headless trunk of his young wife, and while he sat for meals, Gopavati placed on his plate the head of her rival saying 'eat it'. Horrified at this conduct of his wife, the husband began to run away when Gopavati stabbed him to death. The second story tells us the wicked conduct of Viravati who was the wife of

Sudatta or Datta, but was in criminal intimacy with a thief called Aṅgāraka. Now this Aṅgāraka was one day found to be guilty by the king of the place and was ordered to be impaled in the burning ground. On learning this news Viravati left her husband's bed at night and went to meet Aṅgāraka who, before dying, kissed her and while kissing, cut off her lower lip. Now Viravati returned home covering her face, and raised a cry that her husband cut off her lip. The king thereupon ordered him to be killed, but a traveller who had watched the conduct of Viravati the previous night, saved him by revealing to the king and the people the wicked conduct of the woman, and convincing the people by showing to them the piece of the lower lip of the lady inside the the mouth of the impaled thief. 9. 17. *Sāhiṇāna*, Sk. *Sabhiṇāna*.

9. 18-19. It appears that the thief cut off with his sword the fingers of the lady which were lying under the tree, while the lower lip remained in his mouth.

10. 1-2. These two lines refer to the story of queen Raktā who, for the sake of her lame lover, threw her husband Devarati, king of Ayodhyā, into the stream of the river. This queen Raktā, as the story goes, was attached to a lame gardener. Finding the king a nuisance, she got a garland woven by means of a fine iron thread, put this garland on the neck of Devarati, strangled him and threw him into the river.

10. 3-17. Abhayaruci lectures on the worthlessness of the pleasures of senses. 10. 13. The *Īsāsīhi* is the fire of jealousy.

11. A lecture on the nature of human body which is here said to be a bundle of misery and impurities and diseases. 11. 11. *Pacchiu* Sk. *pathya* means wholesome food and drink. The line means that human body is subject to the attack of leprosy even if man takes wholesome food and drink.

12. Jasahara was disgusted with the conduct of his queen and also with the worldly life, and thinks he should become an ascetic, but in the morning he felt he should not do so immediately as his resolve to become an ascetic would be regarded by people as due to some disagreeable things in the harem; so he took to normal life for the time being.

13. The king declared his intention in the court to his mother to place his son Jasamai or Jasavai on the throne in order to respect, as he said, a bad dream which he saw the previous night

14. Jasahara's mother proposes to him that the effects of an evil dream can be nullified by offering living beings as victims to the goddess; but he shows his disapproval of killing a living being.

17. 10-14. The king says to his mother :—"If by killing animals as victims merit is obtained, then one should salute a hunter or a butcher in preference to a monk."

19. 4. The king dragged his sword in order to cut off his own head, as the thought he was not able to persuade his mother, but the mother, immediately came round and suggested that an inanimate victim should be offered to the goddess to which Jasahara gave his consent by silence. The mother thereupon asked the statue-maker to bring a cock made of flour.

NOTES

22. 9-10. Queen Amṛtamati says to Jasahara that in case she does not accompany him to the forest, people will ridicule her by pointing their fingers to her youth and therefore she would like even death in his company.

24. The king describes several articles of food prepared by the queen as suggesting an approaching death.

25. and 26. These kaḍavakas describe the wailings of Jasahara's son and wives. In the latter part of 26, it is mentioned that several obsequious rites were performed by his son in order that Jasahara might get good life after death. But, as the fate would have it, Jasahara was born as a peacock in the forest.

28. 4 *Pakkhini-pakkhavāu* is an uncertain expression; the line may mean that the young peacock could not at first walk and therefore sought the support of the wings of its mother. (The marginal note in one of the MSS. is: 'padacāritvāt paksapāte dbrtah.) 28. 10. Note the word *lai* which means 'much' and is still preserved in the Marathi language of the lower class people of Mahārāstra in this sense, while Hemacandra explains it as '*lai iti lokoktau*'.

29. The hunter brought the young peacock and its mother home, but offered the hen to the police-officer and kept only the young one for himself. At this the hunter's wife got angry. The hunter thereupon sold the young peacock to the police-officer who brought it up in a cage.

30. The police-officer offers the peacock, when grown up, to Jasavai. Candramati, Jasahara's mother, who was also poisoned by Amṛtamati, was born in Ujjayini as a bitch and was presented to Jasavai.

32. 10-11. A fine fancy that the row of clouds is likened to a young maid, lightning as her kañcukī and the rainbow as her cloak, *upparijana*, Sk. *uparitana*, upper garment.

33. The peacock saw here Amṛtamati dallying with the hump-back and out of jealousy of the previous life attacked them both. Amṛtamati struck it with her girdle and thus broke its leg. 33. 9-10. The peacock remarks:—When I was king, I did not strike the hump-back and the woman who were not my equal, but now as a young and low peacock, I caught the hand of the woman as this time it was not objectionable.

34. Maids of Amṛtamati soon arrived on the scene and attacked the peacock with whatever weapon they could catch hold of. On hearing this din and cry of the maids, the bitch, the peacock's mother in the previous life, came there, and caught it in the neck.

35. Jasavai held the bitch fast with the chain, but when it could not let go the peacock, he struck the bitch with the iron end of the spear, so that both the peacock and the bitch died. Jasavai bewailed the loss of both.

36. In his next birth Jasahara was born as a mangoose, and as its mother could not efficiently feed it on her milk, the young mangoose began its career by devouring snakes. Candramati also was born in her next life as a snake in the same forest. One

day while the snake was entering into its hole, the mangoose caught its tail. 36. 9. *Lihi sūu* Sk., svādam labdhvā, forming taste (for the blood of the snake).

37. 'When the mangoose was eating the snake, it was itself caught from behind by a wild animal *taracchu*, Sk. tarakṣu. 37. 11-12. Abhayaruci winds up the second pariccheda by appealing to Māridatta that if he understood the significance of the narrative, he should give up doing injury to creatures and should resort to the doctrine of Puṣpadanta, the ninth Tirthamkara (or the words of the poet Puṣpadanta).

III

1. The first six kaṭavakas of this pariccheda describe the next birth of Candramati who was born as a crocodile and of Jasahara who was born as a big fish in the river Śiprā near Ujjayini. The first kaṭavaka gives a fine description of the river in Duvaḥ metre rounded off by the usual Ghattā. In fact the kaṭavakas in this pariccheda open with a Duvaḥ and close with a Ghattā. 1. 13. *maṇṭhuvayanṭha* is a clean bank adjoining the river which was resorted to by ascetics.

2. 12. *Daivaviṅambhayan*. Sk. daivavijṃbhita, the wonderful working of destiny.

3. 3. Gominī etc., are the names of maids.

4. The great fish was caught and was shown to king Jasavai who got it examined by Brahmins. They said the fish belonged to that species from which the Matsyāvātara of Viṣṇu came; 4. 6. *Thotta* is either sthūla or samartha according to marginal notes; 4-9. *dhammaniddhūḍai*, from which dharma has disappeared.

5. Jasavai took the fish to his mother Amṛtamati who cooked, fried and seasoned it.

6. 7-12. In the next birth Candramati was born a she-goat. Jasahara became her child; while in youth he began to enjoy sexual pleasures with the mother-she-goat when he was killed by his father-goat.

7. Jasahara was again born into the womb of his mother she-goat. King Jasavai caught the pregnant she-goat one day as he did not get any other chase, and when he cut the she-goat into two, he found the child alive and handed it over to the shepherd. 7. 10. Kusumāvali, the name of Jasavai's queen.

8. One day Jasavai made a promise to the goddess that he would offer as victim a buffalo if he would find good chase in the forest. 8. 14. *Parivāṇi* after having offered the flesh of the buffalo to the goddess in a particular way. This act of parivāraṇa is usually expressed by uttāraṇa and consists of raising the offering from the ground, showing it to the deity and then again placing it on the ground.

9. One day Jasavai performed the annual śrāddha of his father. For this various articles of food were prepared, and were offered to Brahmins, friends and relatives. Amṛtamati did not figure amongst these as she was suffering from leprosy and maids were openly talking of this. 9. 13. *Aṅgu vūi*, the body of Amṛtamati is giving out this bad smell.

NOTES

10. Condition of the body of Amṛtamati is described here. 10. 12-14. Amṛtamati did not like the flesh of buffalo and asked for some other kind of meat.

11. Amṛtamati asked the cook to have the meat of a deer or of a pork, but king Jasavai said that the meat of the goat would do well. He therefore asked the cook to cut the hinder leg of the goat for the queen-mother. 11. 10. *Veyadhammavehāviya-māṇasu*, one whose mind is deluded (*vehāviya*) by the law proclaimed in the Veda. The soul of Candramati in the meanwhile was born as a buffalo in Sind,

12. This buffalo was used to carry goods for a merchant, and once came to Ujjayini. There the buffalo met, while enjoying the bath in the river Śiprā, the royal horse attended by its keepers. The buffalo attacked the horse and killed it. Immediately the keepers caught hold of the buffalo and brought it before the king. The king ordered it to be killed with all possible cruelty. The goat also was killed on the same day.

13. 11. Candramati and Jasahara in their next birth were born as young ones of a hen, and from this line onwards right upto the end of kaḍavaka 33, we get the happenings in their life as young ones of hen.

15. These young ones of hen were in due course presented to the king who wanted to see a cock-fight and asked the keeper to bring them up well.

16-17. The next morning they were taken to a specially erected tent and were placed under the Āśoka tree. The king's officer saw a Jain monk seated under the tree in a meditating posture.

18-33. Then follows a long conversation between the monk and the officer on the religious views of Jains and Cārvākas, and when the monk mentioned that the young ones of hen by his side were formerly king Jasahara and his mother Candramati, the officer accepted the vows of a Śrāvaka. The young ones of the hen also recollected their previous births, in mind decided to observe the vows, and in delight cried aloud. But Jasavai, who was in the company of his queen Kusumāvali, wanted to show his skill in archery by sound to his queen, discharged an arrow at them, and both the young ones were killed. They were born as twins into the womb of the queen.

34. 17. The king on seeing monk Sudatta thought it to be a bad omen and says:—"How can this monk (*khavaṇau*) if he is other than the three gods, Brahmā Viṣṇu and Maheśa (*taiya*, Sk. *trika*) go away (from here) without being killed by me?

35. 15. *Jaivara vayasahiya*, a great monk observing the (five great) vows.

36. The king gets angry when asked by the merchant to fall at the feet of the monk, and says that he would not do so as the monk was very dirty. 36. 17. *Nayaroghasarapasara*, like the stream of the dirty gutter-water of the town.

37. 2. The merchant says: Even the dirt of these monks is capable of curing diseases and therefore, O king (*iśa*), bow down to such monks. Why this hatred? 37. 4. *Ahayamahāṇasaddhi* is a doubtful expression. The marginal note gives its equivalent as *akṣīnamahāṇasa*; in the light of this we can say that the monks possess the power of making the kitchen inexhaustible and prosperous. To me it appears that the correct reading might be *ahayamāṇasaddhi*, Sk. *ahatamāṇasaddhi*, inexhaustible or

full possession of mental powers. 37. 17-18. The merchant tells Jasavai that the monk is no other than the king of the Kalinga Country and that he took to the life of an ascetic because, by having wrongly punished a person charged with theft, he got disgusted with his kingship.

40. 17. *Avatapakkha* is the second and dark half of Bhādrapada during which a mahālaya śrāddha is offered to the manes. 40. 18. *Khūu*, Sk. khāditum.

IV.

1. 5. *Kheri* is a deśi word meaning vaira or vairin; here it is used in the former sense.

2. The king says to Sudatta that he would place his son Abhayaruci on the throne and like to be a monk.

3. Ladies of the king's harem try to persuade him by saying that he would not get anything better in heaven by practising penance. For, they say, they are as good as nymphs, the king Indra and the palaces heavenly abodes; thus the possession of (union with) what is good constitutes Svarga. Is there on the head of Svarga (conceived as a being) a crooked horn? *Kim saggasire kuḍilam viśāyayam* has a corresponding phrase in the current Marathi language. 3. 8. *Siggiri* is a word of uncertain meaning, does it mean nilavarna?

4. Both Abhayaruci and Abhayamati recollected their previous births on hearing this narrative from Sudatta and fainted. Kusumāvali also fainted on seeing her children in that condition. Other ladies of the harem came to her help and she and the children soon recovered. 4. 16. *Mahaeṇi* of course is queen Kusumāvali.

5. 14-15. Abhayaruci, on recollecting that he was in one of his former life the father of Jasavai, says:—'He was formerly my dear son, so delightful to my eyes, and I myself placed him on the throne; but now I am (born) as his son with a moonlike face; destiny has taught me a fine (*cangau*) lesson!'

6. 1. *Diṇṇalaiya arivūdi*, one, who by turn has given and taken the same position, one who was the father of Jasavai and placed him on the throne has become the son of the same Jasavai, who now thinks of placing him on the throne. 6. 2. *Muhavaḍu*, mukhapataḥ, cover for the face.

7. 17. *Guṇamaṇicincāiya*, decked (*cincāiya*) by the gems of guṇa, the vows of Jain ascetics; *Pāvaya* is pravrajā, taking to the life of an ascetic.

8. 1 Abhayaruci handed over the kingdom to his step-brother, Naya. 8. 2. *Kuhini* the path.

9. 1. *Surahubbhiya*, erected on a good chariot. The sense of the passage is that mere penance without right faith is like a banner on the top of the chariot, without soldiers. 9. 10. *Angacāu*, Sk. āngatyāga, i. e., kāyotsarga posture. 9. 15. *Anuvekkhau*, the twelve anupreksās, impermanence (adhrura) etc.

15. 12. *Khullayattu*, the stage of ksullaka consists of complete renunciation of worldly things, wearing only one white garment and a loin-cloth, the gourd, the beg-

NOTES

ging bowl and tonsuring the head. 15. 16. *Purakantiyā* is the nun Kusumāvali who along with Jasavai, became a Gāṇinī.

17. 15. *Saveuvvaṇāe*, by the supernatural power of creation (*vikurvaṇā*).

18. Cāṇḍamāri requests the kṣullaka to initiate her and teach her the rules of penance. The kṣullaka thereupon says that there is no penance for gods of sixty-two types.

19-20 These two kaḍavakas give the list of persons who cannot practise penance.

23. King Māridatta asks Sudatta to tell him the various previous births of the Govardhana Merchant, Goddess Cāṇḍamāri, Bhairavānanda and of himself. It has been explained in the Introduction that the portion beginning with this kaḍavaka down to kaḍavaka 30, line 15 is added by Gandharva.

28. 3. *Dandcatta*, free from pairs (of pleasant and unpleasant things). 28. 33 *Siddhuiri*, Sk. Siddhagiri, name of a holy place.

29. 9-10 For the interpretation of these lines and the following kaḍavaka see Introduction.

31. 4. *Kaiṇā Khaṇḍem*, Puspadanta was also known by this name Khaṇḍa as could be seen from some of the verses at the opening of saṁdhis in the Mahāpurāṇa MSS.

मुग्धे श्रीमदनित्यखण्डसुकवेर्वन्धुर्गुणैरुन्नतः

स्वप्नेऽप्येव पराङ्गनां न भरतः शौचाम्बुधिर्वाञ्छति ॥

ADDENDA ET CORRIGENDA

Page,	Kadavaka,	Line	For	Read
२	१	१०	पुरुएउ सामि	पुरुदेवसामि
४	२	१३	परिहवि	परिहि वि
५	४	४	चि क्कमंति	चिक्कमंति
५	४	१२	कहिमि	कहि मि
६	५	८	तरुणसरंत	तरुण सरंत
६	५	१४	पउहर	पओहर
६	६	१	तीह	तहि
६	६	६	पाउडियजम्मु	पाउडियजुम्मु
७	६	९	जुयचयारि	जुय चयारि
८	८	४	पुरेहु	पूरेहु
१०	१०	७	गो या	गोहया
१०	११	९	णयरि वहावयासि	णयरिबज्जावयासि
११	१२	२	कहिमि	कहि मि
११	१२	१६	अहमं तीए	अहमिंतीए
१२	१४	६	लवियंसमलं	लवियं समलं
१२	१४	११	सयणु किरण	सयणुकिरण
१३	१५	१	णिल्लणण	णिल्लुणण
१३	१५	९	जइण	जइ ण
१५	१८	७	कहिमि	कहि मि
१५	१८	९	तिणाणं	तिणा णं
१५	१८	११	सरज्जाय भट्टो	सरज्जा पभट्टो
१७	२१	१४	विणडिउ वासइं	विणडिउ दुव्वासए
१७	२१	note	कसिण	कणिस
१८	२३	९	चंदमइदेवितह	चंदमइ देवि तहु
२०	२५	२१	पइमि	पइं मि
२१	२६	१८	दोहिमि	दोहिं मि
२१	२७	६	ता सुपत्ति	तासु पत्ति

२१	२७	१०	णवयारि वि	णवयारिवि
२२	२८	६	चि क्कमंति	चिक्कमंति
२४	१	७	पुत्तं	युत्तं
२५	२	४	संज्ञावेळि वणीसरिय	संज्ञा वेळि व णीसरिय
२८	७	९	अवरइमि	अवरइ मि
२९	८	१२	वेळिणिहीणु	वेळि णिहीणु
३०	१०	१७	सवइ	सेवइ
३१	१२	१८	विमुहिउ	वि सुहिउ
३४	१७	३	णिच्छाम	णित्थाम
३४	१७	८	दणलाइं	दलणाइं
३४	१७	१०	हिसइ	हिंसइ
४४	३३	४	पडिउ	पडिउ
४९	३	७	भीसावेण	भीसावणे
४९	४	९	धम्म णिद्धाडइ	धम्मणिद्धाडइ
५१	७	३	णिवसणेचली	णिवसण चेली
५१	७	१०	लंहंति	लंहंति
५३	९	१२	वाइ	वाइ
५३	९	१३	अंगुवाइ	अंगु वाइ
५४	१२	१	वणि भंडभारु	वणिभंडभारु
५५	१२	१७	पच्छिमहारिं	पच्छिमदारिं
६१	२२	५	अणुमाणि	अणुमाणि
७०	३७	२	मच्छरोकओ	मच्छरो कओ
७४	४१	१४	णायणइ	णायणइ
८२	११	७	विभिणु	वि भिणु
८५	१६	४	हड्डुब्भडेहिं	हड्डुब्भडेहिं
८९	२०	१५	सयगणियइं	सयगुणियइं
९९	३०	१	पट्टणेच्छंगे (!)	पट्टणे छंगे
९९	३०	१	खेलागुणवंतु	खेला गुणवंतु
१००	३१	१३	णिसुंभउ	णिसुंभउ
१००	३१	१६	सयल	सयल

